SRI JAIN SIDHANT BHAWAN GRANTHAWALI

VOL.--2

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

भाग–२

जैन–सिद्धान्त–भवन–ग्रंथावली

(देव कुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार, जैन सिद्धान्त भवन, आरा की सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एव हिन्दी की हस्तलिखित पाण्डुलिपियो की विस्तृत सूची)

भाग–२

प्रस्तवन .

डा० गोकुलचन्द्र जैन

अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, सपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,

वाराणसी

सपादन .

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, दर्शनाचार्य

शोधाधिकारी, देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, आरा

(बिहार)

सकलन

शशीभूषण त्रिपाठी, M. A. (संस्कृत)

कविराज दिवाकर ठाकुर, G.A.M.S. (आयुर्वेद)

गुप्तेश्वर तिवारी, आचार्य

श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रकाशन.

भगवान महावीर मार्ग, आरा–८०२३०१

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली
(भाग–२)

प्रथम संस्करण १९८७

मूल्य—१३५)

प्रकाशक

श्री देवकुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार

श्री जैन सिद्धान्त भवन

आरा (बिहार)–८०२३०१

मुद्रक ·

शाहाबाद प्रेस

महादेवा रोड, आरा

आवरण शिल्प ·

क्रिएटिव आर्ट ग्रुप

दिल्ली

SRI JAINA SIDHANTA BHAWAN GRANTHAWALI (Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Hindi mss. Published by Sri D.K. Jain Oriental Library, Sri Jain Sidhanta Bhawan, Arrah (Bihar) India.

First Edition - 1987 Price Rs. 135/-

Jaina Siddhant Bhawana Granthavali

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa & Hindi Manuscripts

of

Sri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah

Vol.-2

Introduction ·
Dr. Gokulchandra Jain
Head of the department of Prakrit & Jainagama.
Sampurnananda Sanskrit Vishvavidyalaya, Varanasi

Editor ;
Rishabhachandra Jain Fouzdar,
Research Officer
Devakumar Jain Oriental Research Institute, Arrah (Bihar)

Compilation :
Shashi Bhushan Tripathi, M A.(San.)
Kaviraj Diwakar Thakur, G. A. M S. (Aurveda)
Gupteshwar Tiwari

Sri Jaina Siddhant Bhawan
PUBLICATION
Bhagwan Mahavir Marg, Arrah-802301

Foreword

Bihar has played a great role in the history of Jainism. Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his massage of peace and ahimsa. It is from the land of Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period. And in the modern age the Jain Siddhanta Bhavan at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of of Jainism burning. It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture. This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning.

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution. Some of the manuscripts contain rare Jain paintings. These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the socio-economic life of ancient India.

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhavan Granthavali" being the Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes. Each volume contains two parts First parts consists of the list of manuscripts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size, date etc Part second which is named as Parisista (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part.

The author has taken great pains in preparing the present Catologue and deserves congratulations for the commendable job, This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture particularly Jainism

(Naseem Akhtar)
Director, Museums
Bihar, Patna.

February 29, 1988.
Vikas Bhavan, Patna

प्रकाशकीय नम्र निवेदन

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का दूसरा भाग प्रकाशित होते देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। लगभग पाँच वर्ष पहले से इस सपने को साकार करने का, प्रयत्न चल रहा था। अब यह महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है। एक पंचवर्षीय योजना के रूप में इसके छः भाग प्रकाशित करने में सफलता मिलेगी ऐसी पूरी आशा है।

'जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली' का यह दूसरा भाग जैन सिद्धात भवन, आरा के ग्रन्थागार में संग्रहीत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, कन्नड एवं हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की विस्तृत सूची है। इसमे लगभग एक हजार ग्रन्थो का विवरण है। हर भाग मे इसका विभाजन दो खण्डो मे किया गया है। पहले खण्ड मे अंग्रेजी (रोमन) मे ग्यारह शीर्षको द्वारा पाडुलिपियों के आकार, पृष्ठ सख्या आदि की जानकारी दी गई है। 'भवन' के ग्रंथागार मे लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एवं ताडपत्र के ग्रथो का संग्रह है। इनमें अनेक ऐसे भी ग्रन्थ है जो दुर्लभ तथा अद्यावधि अप्रकाशित है। अप्रकाशित ग्रन्थों को सम्पादित कराकर प्रकाशित करने की भी योजना आरम्भ हो गई है। वर्तमान मे जैन सिद्धान्त भवन, आरा मे उपलब्ध 'राम यशोरसायन रास (सचित्र जैन रामायण) का प्रकाशन हो रहा है जो शीघ्र ही पाठको के हाथ मे होगा। इसमे २१३ दुर्लभ चित्र है।

'जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली' के कार्य को प्रारम्भ कराने मे काफी कठिनाइयों का सामना करना पडा लेकिन श्रीजी और माँ सरस्वती की असीम कृपा से सभी संयोग जुडते गए जिससे मैं यह ऐतिहासिक एव महत्व पूर्ण कार्य आरम्भ कराने में सफल हुआ हूँ। भविष्य मे भी अपने सभी सहयोगियो से यही अपेक्षा रखता हूँ कि हमे उनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रन्थावली एव रामयशोरसायन रास के प्रकाशन के सबसे बडे प्रेरणा-स्रोत आदरणीय पिता जी श्री सुबोध कुमार जैन के सहयोग एव मार्गदर्शन को कभी विस्मृत नही किया जा सकता। अपने कार्यकर्त्ताओं की टीम के साथ उनसे विचार विमर्श करना तथा सबकी राय से निर्णय लेना उनका ऐसा तरीका रहा है जिसके कारण सभी एकजुट होकर कार्य मे लगे हैं।

बिहार सरकार एव भारत सरकार के शिक्षा विभाग एवं संस्कृति विभाग ने इस प्रकाशन को अपनी स्वीकृति एवं आर्थिक सहयोग प्रदान कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिसके लिये हम निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, निदेशक पुरातत्व एवं निदेशक संग्रहालय बिहार सरकार तथा भारत सरकार के सभी संबंधित

अधिकारियों के कृतज्ञ है और उनसे अपेक्षा रखेंगे कि भवन के अन्य अप्रकाशित हस्त-लिखित ग्रंथों के प्रकाशन में उनका सहयोग देश की सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु भविष्य में भी हमें प्राप्त होगा।

डा० गोकुलचन्द जैन, अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली की विद्वतापूर्ण प्रस्तावना आंग्ल भाषा में लिखी है। बिहार म्यूजियम के विद्वान एवं कर्मठ निर्देशक श्री नसीम अख्तर साहब ने समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, संस्कृत-प्राकृत विभाग, जैन कालेज, आरा तथा मानद निदेशक श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोधसंस्थान, आरा ने आवश्यकता पड़ने पर हमें इस प्रकाशन के सम्बन्ध में बराबर महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन दिया है। हम तीनोंही जाने माने विद्वानों का आभार मानते है।

श्री ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार', जैनदर्शनाचार्य परिश्रम और लगन से ग्रन्थावली का संपादन कर रहे हैं। श्री ऋषभ जी हमारे संस्थान में मानद शोधा-कारी के रूप में भी कार्यरत हैं। ग्रन्थावली के दोनों खण्डो के संकलन के संपूर्ण कार्य यानी अंग्रेजी भाषा में एक हजार ग्रंथों की ग्यारह कालमों में विस्तृत सूची तथा प्राकृत एवं संस्कृत आदि भाषाओं में परिशिष्ट के रूप में सभी ग्रंथों के आरम्भ की तथा अंत के पदों का और उनके कोलाफोन के भी विस्तृत विवरण देने जैसा कठिन कार्य श्री विनय कुमार सिन्हा, एम० ए० और श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा, बी० ए० ने बहुत परिश्रम करके योग्यता पूर्वक किया है। डा० दिवाकर ठाकुर और श्री मदनमोहन प्रसाद वर्मा ने पुस्तक के अंत में 'वर्ण-क्रम के आधार पर ग्रन्थकारों एवं टीकाकारों की नामावली और उनके ग्रन्थो की क्रम संख्या का संकलन तैयार किया है।

श्री जिनेश कुमार जैन, पुस्तकालय-अधिक्षक, श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का सहयोग भी सराहनीय है जिनके अथक परिश्रम से ग्रन्थों का रखरखाव होता है। प्रेस मैनेजर श्री मुकेश कुमार वर्मा भी अपना भार उत्साह पूर्वक संभाल रहे हैं। इनके अतिरिक्त जिन अन्य लोगों से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सभी का हृदय से अभारी हैं।

अजय कुमार जैन

मन्त्री

श्री देवकुमार जैन ओरिएन्टल लाईब्रेरी

देवाश्रम,

आरा

ABBREVIATION

V. S.	—	Vikrama Samvata
D.	—	Devanāgarī
Stk.	—	Sanskrit
Pkt.	—	Prakrit
Apb,	—	Apabhramśa
C.	—	Complete
Inc.	—	Incomplete

Catg. of Skt. Ms. - Catalogue of Sanskrit manuscripts in Mysore and coorg. by Lewis Rice. M. R. A. S,, Mysore Government Press, Bangalore, 1884.

Catg. of Skt. & Pkt Ms - Catalogue of Sankrit & Prakrit manuscripts in the Central Provinces & Berar by. Rai Bahadur Hiralal B A. Nagpur, 1926.

(१) आ० सू० — आमेर सूची—डा० कस्तूरचन्द, कासलीवाल।

(२) जि० र० को० — जिनरत्नकोश –डा० वेलणकर, भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना।

(३) जै० ग्र० प्र० स० — जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह—पं० जुगलकिशोर मुख्तार।

(४) दि० जि० ग्र० र० — दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली—श्री कुन्दनलाल जैन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।

(५) प्र० जै० सा० — प्रकाशित जैन साहित्य—श्री० पन्नालाल अग्रवाल।

(६) प्र० स० — प्रशस्ति संग्रह डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल।

(७) भ सं० — भट्टारक सम्प्रदाय –विद्याधर जोहरापुरकर।

(८) रा० सू० — राजस्थान के शास्त्र भंडारों की सूची—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान)।

समर्पण

देवाश्रम परिवार में
पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,
राजर्षि बाबू देवकुमार जी,
ब्र० पं० चन्दा माँश्री,
और
बाबू निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी
यशस्वी तथा गुणीजन हुए है ।
उन सभी की पावन
स्मृति को यह
श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली
सादर समर्पित है ।

देवाश्रम आरा — *सुबोधकुमार जैन*

१४-३-८७

INTRODUCTION
(VOL—I.)

I have great pleasure in introducing *Śrī Jaina Siddhānta Bhavan Granthāvalī* - a descriptive Catalogue of 997 Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, popularly known as Jaina Sidhānta Bhavan, Arrah. The actual number of MSS exceeds even one thousand as some of them are numbered as *a* and *b*. Being the first volume, it marks the beginning of a series of the Catalogues to be prepared and published by the Library.

The Catalogue, devided into two parts, covers about 500 pages and each part numbered separately. In the first part, descriptions of the MSS have been given while the second part contains the Text of the opening and closing portions of MSS along with the Colophon. The catalogue has been prepared strictly according to the scientific methodology developed during recent years and approved by the scholars as well as Government of India The description of the MSS has been recorded into eleven columns viz. 1. Serial number, 2. Library accession or collection number, 3. Titleof the work, 4. Name of the author, 5. Name of the commentator. 6. Material, 7 Script and language, 8. Size and number of folio, lines per page and letters per line. 9. Extent, 10. Condition and age, 11. Additional particulars These details provide adequate informations about the MSS. For instance thirteen MSS of *Dravyasaṁgraha* have been recorded (S. Nos. 213 to 224) It is a well known tiny treatise in Prakrit verses by Nemicanda Siddhānti and has had attracted attention of Sanskrit ond other commentators. Each Ms preserved in the Bhavana's Library has been given an independent accession number Its justification could be observed in the details provided

From the details one finds that first four MSS (213 to 215/2) contain bare Prakrit text. All are paper, written in *Devanāgarī* Script, their language being natured in poetry. Each Ms has different size and number of folios Lines per page and letters per line are also different. All are complete and in good condition. Only one Ms (216) is a Hindi verson in poetry by some unknown

writer and is incomplete. Two MSS (218, 222) are with exposition in *Bhāṣā* (Hindi) prose and poetry by Dyānatarāya and three are in Bhāsā poetry by Bhagavatidas. Ms No. 223 dated 1721 v. s., is with Sanskrit commentary in Prose. Ms No. 229 is a *Bhāṣā vacanikā* by Jayacanda. These details could be seen at a glance as they are presented scientifically.

The Manuscripts recorded in the present volume have been broadly classified into following eleven heads : -

1.	Purāna, Carita, Kathā	1 to 155
2	Dharma, Darśana, Ācāra	156 to 453
3.	Nyāyaśāstra	454 to 480
4.	Vyākarana	481 to 492
5.	Kośa	493 to 501
6.	Rasa. chanda, Alaṅkāra & Kāvya	502 to 531
7.	Jyotiṣa	532 to 550
8.	Mantra Karmakāṇḍa	551 to 588
9.	Āyurveda	589 to 600
10.	Stotra	601 to 800
11.	Pūjā, Pāṭha-vidhāna	801 to 997

The details have been presented in Roman scripts in Hindi Alphabetic order. The classification is of general nature and help a common reader for consultation of the Catalogue. However, critical observations may deduct some MSS which do not fall under any of these eleven categories (see MSS 295, 511, 512).

The Second Part of the volume is entitled as *Pariśiṣṭa* or Appendix. This part furnishes more details regarding the MSS recorded in the first part. Along with the text of the opening and closing portions of each Ms, colophons have been presented in *Devanāgarī* script. The text is presented as it is found in the MSS and the readers should not be confused or disheartened even if the text is currupt. The cross references of more than ten other works deserve special mention. Only a well read and informed scholar could make such a difficult task possible with his high industry and love of labour-

From the details presented in the Second part we get some very interesting as well as importnt informations. A few of them are noted below :—

(1) Some Mss belong to quite a different category and do not come under the heads, they have been enumerated, such as *Navaratnaparīkṣā* (295) which deals with Gemeology. The opening & closing text as well as the colophon clearly mention that it is a *Ratna śāstra* by Buddhabhatt. Similarly, *Nītivākyāmṛtam* (511. 512) is the famous work on Polity by Somadeva Suri (10th cent.). *Trepanakriyākośa* (498, 499) is not a work on Lexicon. It deals with rituals and hence falls under *Ācāraśāstra*. These observations are intended to impress upon the consultant of the catalogue that he should not by pass merely by looking over the caption alone but should see thoroughly the details given in the Second part of the catalogue which may reveal valuable informations for him.

(2) Some of the MSS of *Āptamīmāṃsā* contain *Āptamīmāṃsālaṅkṛti* of Vidyānanda (455) *Āptamīmāṃsāvṛtti* of Vasunandi (456) and *Āptamīmāṃsābhāṣya* of Akalaṅka (457). These three famous commentaries are popularly known as *Aṣṭasahasrī*. *Aṣṭaśatī* and *Devāgamavṛtti*. Though these works have once been published, yet these can be utilised for critical editions.

(3) In the colophon of some of the MSS the parential MSS have been mentioned and the name of the copyist, its date and place where they have been copied, have been given These informations are of manifold importance. For instance the information regarding parential Ms is very important If the editor feels necessary to consult the original Ms for his satisfaction of the readings of the text, he can get an opportunity for the same. It is of particular importance if the Ms has been written into different scripts then that of the original one. Many Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works are preserved on palm leaves in *Kannada* scripts. When these are rendered into *Devanāgarī* scripts there are every possibility of slips, difference in readings and so on. It is not essential that the copyist should be well acquainted with all its languages and subject matter of each Ms. The difference of alphabets in different languages is obvious. Thus the reference of parential Ms is of great importance (373).

(4) The references of places and the copyists further authenticate the MSS. Some of the MSS have been copied in Karnataka at Moodbidri and other places from the palm leaf MSS written in *Kannada* scripts (7, 318, 373) whereas some in Northen India, in Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and Delhi.

5) It is also noteworthy that copying work was done at Jaina Siddhanta Bhavana. Arrah itself. MSS were borrowed from different collections & copying work was conducted in the supervision of learned Scholars.

(6) The study of colophon reveals many more inportant references of *Saṁgh s Ganas, Gacchas, Bhaṭṭārakas* and presentation of *Śāstras* by pious men and women to ascetics. copying the Ms for personal study - *svā hyāya*, and getting the work prepared for his son or relative etc. Such references denote the continuity of religious practice of *śāstradāna* which occupy a very high position in the code of conduct of a Jaina household,

(7) The copying work of MSS was done not only by paid professionals but also by devout *śrāvakas* and desciples of *Bhaṭṭārakas* or other ascetics.

(8) In most of the MSS counting of alphabets, words, *ślokas*, or *gāthās* have been given as *granthaparimāna* at the end of the MSS. This reference is very important from the point of the extent of the Text. Many times the author himself indicates the *grantha-parimāna* Even the prose works are counted in the form of ślokas (32 alphabets each). The *Āptamimāṁsā Bhāṣya* of Akalaṅka is more popularly known as *Aṣṭaśatī* and *Āptamimāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda is famous as *Aṣṭasahaśrī*. Both works are the commentaries on the *Āptamimāṁṣā* (in verse) of Samanta Bhadra in Sanskrit prose, Vidyananda himself says about his work :—

"*Śrotavy – aṣṭasahasrī śrutaiḥ kimanyaiḥ sahasrasaṁkhyānaiḥ.*"
Counting in the form of ślokas seems a later development. When the teachings of Vardhamāna Mahāvira were reduced to writing counting was done in the form of *Padas*. For instance the *Āyāramga* is said to contain eighteen thousand *Padas*.

" *Āyāraṁgamatthāraha—pada - sahassehi* "

(Dhavalā p. 100)

Such references are more useful for critical study of the text.

(9) Some references given in the colophons shed light on some points of socio-cultural importance as well. The copying work was done by Brāhmins, Vaiśyas, Agarawālas, Khandelāwāls, Kāyasthas and others. There had been some professionally trained persons with very good hand writing who were entrusted with the work of copying the MSS. The remuneration of writing was decided per hundred words. For the purpose of the counting generally the copyist used to put a particular mark (I) invariably without punctuation. In the end of some of the MSS even the sum paid, is mentioned. Though it has neither been recorded in the present catalogue nor was required, but for those who want to study the MSS these informations may be important.

The study of Colophons alone can be an independent and important subject of research.

From the above details it is clear that both the parts of the present volume supplement each other. Thus, the *Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a highly useful reference work which undoubtedly contributes to the advancement of oriental learning. With the publication of this volume the Bhavana has revived one of its important activities which had been started in the first decade of the present Centuty.

Shri Jaina Siddhant Bhavan, Arrah, established in the beginning of the present century had soon become famous for its threefold activities viz. 1) procuring and preserving rare and more ancient MSS, 2) publication of important texts with its english translation in the series of Sacred Books of the Jaina's and 3) bringing out a bilingual research journal *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*. Under the first scheme, many palm leaf MSS have been procured from South India, particularly from Karnataka, and paper MSS from Northern India However the copying work was done on the spot if the Ms was not lent by the owner or otherwise was not transferable. The earliest Śauraseni Prakrit *Siddhānta Śāstra Saṭkhaṇḍāgama*

with its famous commentaries *Davalā*, *Jayadavalā*, and *Mahādavlā* was copied from the only surviving palm leaf Ms in old *Kannaḍa* scripts, preserved in the *Siddhānta Basadi* of Moodbidri.

Bhavan's Collection became known all over the world within ten years of establishment. In the year 1913, an exhibition of Bhavan's collection was organised at Varanasi by its sister institution on the occasion of Three Day Ninth Annual Function of *Śrī Syād-vāda Mahāvidyālaya*. A galaxy of persons from India and abroad who participated in the function greatly appreciated the collection. Mention may specially be made of Pt. Gopal Das Baraiya, Lala Bhagavan Din, Pt. Arjunlal Sethi, Suraj Bhan Vakil, Dr. Satish Chandra Vidyabhusan, Prof. Heraman Jacobi of Germany, Prof. Jems from United States of America, Ajit Prasad Jain, and Brahma-chari Shital Prasad. A similar exhibition was organised in Calcutta in 1915. Among the visitors mention may be made of Sir Asutosh Mukherjee, Shri Aurvind Nath Tegore, Sir John woodruf and Sarat Chandra Ghosal.

The other activity of the publication of *Biblothica Jainica— The Sacred Books of the Jainas* began with the publication of *Dravya Saṁgraha* as Volume I (1917) with Introduction, English translation and Notes etc. In this series important ancient Prakrit texts like *Samayasāra*, *Gommatasāra*, *Ātmānuśāsana* and *Puruṣārtha Siddhyupāya* were published. Alongwith the Sacred Book Series books in English on Jaina tenets by eminent scholars were also published. *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*, a bilingual Research Journal was published with the objectiveto bring into light recent researches and findings in the field of Jainalogical learning.

Thanks to the foresight of the founders that they could conceive of an Institution which became a prestigious heritage of the country in general and of the Jainas in particular. The palm leaf MSS in *Kannada* scripts or rendered into *Devanāgari* on paper are valuable assets of the collection. It is undoubtedly accepted that a manu-scipt is more valuable than an icon or Architectural set-up. An icon may be restalled and similarly an Architectural set-up can be re-built, but if even a piece of any Ms is lost, it is lost for ever. It is how plenty of ancient works have been lost. It is why the followers of Jainism paid a thoughtful consideration to preserve

the MSS which is included in their religious practice. A Jaina Shrine, particularly the temple was essentially attached with a *Śāstra-Bhandāra*, beeause the *Jina*. *Jinavānī* and *Jinaguru* were considered the objects of worship. Almost all the Jaina temples are invariably accompanied with the *Śāstra-Bhandāras*. During the time of some of the Mughal emperors like Mahmud Gaznai (1025 A.D.) and Aurangzeb (1661-1669 A.D) when the temples were destroyed, a new awakening for preservation of the temples and *Śāstra* started and much interior places wēre choosen for the purpose. A new sect of the Bhattārakas and Caityavāsīs emerged among the Jaina ascetics who undertook with enthusiasm the activity of building up the *Śāstra Bhandaras*. As a result, many MSS collections came up all over India. The collections of Sravanabelagola, Moodbidri and Humach in Karnataka, Patan in Gujrat, Nagaur, Ajmer, Jaipur in Raj asthan, Kolhapur in Maharastra, Agra in Uttar Pradesh and Delhi are well known. A good number of copies of important MSS were prepared and sent to different *Śāstra Bhandāras*. One can imagine how the copies of a works composed in South India could travel to North and West And likewise works composed in North-West reached the Southern coast of India. A great number of Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works were rendered into Kannada, Tamil and Malayalee Scripts and were transcribed on the Palm Leaf. It is a historical fact that the religious enthusiasm was so high that Shāntammā, a pious Jaina lady, got prepared one thousand copies of *Śāntipurāna* and distributed them among religious people. At a time when there were no printing facilities such efforts deserved to be considered of great significance.

The above efforts saved hundreds thousands MSS. But along with the development of these new sects these social institutions became almost private properties. This resulted into two unwanted developments viz. 1) lack of preservation in many cases and 2) hardship in accessiblity. Due to these two reasons the MSS remained locked for a long period for safety, and consequently the valuable treasure remained unknown to scholars. The story of the *Siddhānta Śāstra Satkhandāgama* is now well known. It is only one example.

With the new awakening in the middle or last quarter of the Nineteenth Century some enlightened Jaina householders came out

with a strong desire to accept the challenge of the age and started establishing independent MSS libraries. This continued during the first quarter of 20th century- In such Institution, Eelak Pannalal Sarasvati Bhavan at Vyar, Jhalara Patan and Ujjain, and Shri Jaina Siddhanta Bhawan at Arrah stand at the top. More significant part of these collections had been their availability to the scholars all over the world. Almost all the eminent Joinologist of the present century studing the MSS, have utilized the collection of Sri Jaina Siddhanta Bhawan. It had been my proud privilege and pleasure that I too have used Bhavan's MSS for almost all my critical editions of the works I edited.

During last few decades catalogues of some of the MSS collections, in Government as well as in private institutions, have been published Through these catalogues the MSS have become known to the world of Scholars who may utilise them for their study.

In the series of the publications of catalogues relating to Jainalogy, *Jinaratnakośa* by Velankar deserves special mention. It is quite a different type of reference work relating to MSS. Bharatiya Janapitha, Kashi published in Hindi in Devanagari script the *Kannadaprāntiya Tāḍapatrīya Grantha* Sūchī in 1948 recording descriptions of 3538 Palm leaf MSS. The catalogues of the MSS of Rajasthan prepared by Dr. Kastoor Chand Kasliwal and published in five volumes by Shri Digambar Jaina Atisaya Ksetra Shri Mahavirajī, Jaipur also deserve mention. L. D. Institute of Indology, Ahmedabad have published catalogue in several volumes. Among the publication of new catalogues mention may be made of *Dillī Jina-Grantha-Ratnāvālī* published by Bharatiya Jnanpith, New Delhi and the catalogue of *Nāgaura Jaina Śāstra-Bhandāra* published by Rajasthan University.

In the above range of catalogues, the present volume of *Śrī Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a valuable addition. As already started this is the beginning of the publication of catalogues of the MSS preserved in Sri Jain Siddhant Bhavan now Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, Arrah. It is likely to cover eight volumes each covering about 1000 MSS. I am well aware that preparation and publication of such works require high industrious zeal, great

passions and continued endeavour of a team of scholars with keen insight besides the large sum required for such publications.

It is not the place to go into many more details regarding the importance of the MSS and contribution of Bhavan's collection, but I will be failing in my duty if I do not record the contribution of the founder Sriman Devakumarji and his worthy successors. I sincerely thank Shriman Babu Subodh Kumar Jain, Honorary Secretary of Shri Jain Siddhant Bhavan, who is carrying forward the activities of the Institute with great enthusiasm. Shri Risabh Chandra Jain deserves my whole hearted appreciation for preparing, editing and seeing through the press the Catalogue with fullest sincerity, ability and insight. His associates also deserve applause for their due assistance. I also thank my esteem friend Dr. Rajaram Jain, who is a guiding force as the Honorary Director of the Institute.

In the end I sincerely wish to see other volumes published as early as possible

Dr Gokul Chandra Jain
Head of Department of Prakrit
and Jaināgam, Sampurnanand
Sanskrit Vishvavidyalay,
VARANASI

सम्पादकीय

श्री देवकुमार जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी तथा श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा 'सेन्ट्रल जैन ओरिएन्टल लायब्रेरी' के नाम से देश-विदेश मे विख्यात है। यह ग्रन्थागार आरा नगर के प्रमुख भगवान महावीर मार्ग (जेल रोड) पर स्थित है। वर्तमान में इसके मुख्य द्वार के ऊपर सरस्वती जी की भव्य एवं विशाल प्रतिमा है। अन्दर बहुत बडा संगमरमर का हॉल है, जिसमे सोलह हजार छपे हुए तथा लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थों का संग्रह है। जैन सिद्धान्त भवन के ही तत्वावधान में श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 'श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन कला दीर्घा' है। इस कला दीर्घा मे शताधिक दुर्लभ हस्तनिर्मित चित्र, ऐतिहासिक सिक्के एवं अन्य पुरातत्त्व सामग्री प्रदर्शित है। यहीं ८४ वर्ष पूर्व एक महत्वपूर्ण सभा मे श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का उद्घाटन (जन्म) हुआ था।

सन् १९०३ मे भट्टारक हर्षकीर्ति जी महाराज सम्मेद शिखर की यात्रा से लौटते समय आरा पधारे। आते ही उन्होने स्थानीय जैन पंचायत की एक सभा मे बाबू देवकुमार जी द्वारा सगृहीत उनके पितामह प० प्रभुदास जी के ग्रन्थ सग्रह के दर्शन किये तथा उन्हे स्वतन्त्र ग्रन्थागार स्थापित करने की प्रेरणा दी। बाबू देवकुमार जी धर्म एव संस्कृति के प्रेमी थे, उन्होने तत्काल श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना वहीं कर दी। भट्टारक जी ने अपना ग्रन्थसग्रह भी जैन सिद्धान्त भवन को भेंट कर दिया।

जैन सिद्धान्त भवन के संवर्द्धन के निमित्त बाबू देवकुमार जी ने श्रवणबेलगोला के यशस्वी भट्टारक नेमिसागर जी के साथ सन् १९०६ मे दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की, जिसमे विभिन्न नगरों एव गांवो मे सभाओं का आयोजन करके जैन संस्कृति की सुरक्षा एव समृद्धि का महत्व बताया। उसी समय अनेक गावों और नगरो से हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थ सिद्धान्त भवन के लिए प्राप्त हुए तथा स्थानो पर शास्त्रभडारो को व्यवस्थित भी किया गया। इस प्रकार कठिन परिश्रम एवं निरन्तर प्रयत्न करके बा० देवकुमार जी ने अपने ग्रन्थकोश को समुन्नत किया। उस समय यात्राएं पैदल या बैलगाडियो पर हुआ करती थीं। किन्तु काल की गति को कौन जानता है? १९०८ ई० में ३१ वर्ष की अल्पायु मे ही बाबू देवकुमार जी स्वर्गीय हो गये, जिससे जैन समाज के साथ-साथ सिद्धान्त भवन के कार्य-कलाप भी प्रभावित हुए। तत्पश्चात् उनके साले बाबू करोड़ीचन्द्र ने भवन का कार्य सभाला और उन्होंने भी दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तो की यात्रा करके हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह कर सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र

ने भवन की उन्नति हेतु कलकत्ता और बनारस मे बड़े पैमाने पर जैन प्रदर्शिनियो और सभाओं का आयोजन किया। भवन के वैभव सम्पन्न संग्रह को देखकर डा० हर्मन जैकोबी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि जगत् प्रसिद्ध विद्वान प्रभावित हुए तथा उन्होने बाबू देवकुमार की स्मृति मे प्रशस्तियाँ लिखी एवं भवन की सुरक्षा एव समृद्धि की प्रेरणाएँ दीं।

सन् १६१६ मे स्व० बाबू देवकुमार जी के पुत्र बाबू निर्मलकुमार जी भवन के मंत्री निर्वाचित हुए। मत्री पद का भार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार जी ने भवन के कार्य-कलापो मे गति भर दी। १६२४ मई में जैन सिद्धात भवन के लिए स्वतन्त्र भवन का निर्माण कार्य आरम्भ करके एक वर्ष मे भव्य एव विशाल भवन तैयार करा दिया। तत्पश्चात् धार्मिक अनुष्ठान के साथ सन् १६२६ मे श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन श्री जैन सिद्धात भवन ग्रन्थागार को नये भवन मे प्रतिष्ठापित कर दिया। उन्होंने अपने कार्यकाल मे ग्रन्थागार मे प्रचुर मात्रा मे हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रथों का सग्रह किया।

जैन सिद्धात भवन आरा मे प्राचीन ग्रथो की प्रतिलिपि करने के लिए लेखक (प्रतिलिपिकार) रहते थे, जो अनुपलब्ध ग्रन्थो को बाहर के ग्रन्थागारो से मगाकर प्रतिलिपि करते थे तथा अपने संग्रह मे रखते थे। यहाँ नये ग्रन्थो की प्रतिलिपि के अतिरिक्त अपने सग्रह के जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थो की प्रतिलिपि का भी कार्य होता था। इसका पुष्ट प्रमाण ग्रन्थो मे प्राप्त प्रशस्तियाँ हैं। जैन सिद्धान्त भवन, आरा से अनेक ग्रन्थ प्रतिलिपि कराकर सरस्वती भवन बम्बई एव इन्दौर भेजे गये है।

सन् १६४६ में बाबू निर्मलकुमार जैन के लघुभ्राता चक्रेश्वरकुमार जैन भवन के मत्री चुने गये। ग्यारह वर्षों तक उन्होने पूरे मनोयोग से भवन की सेवा की। पश्चात् सन् १६५७ से बाबू सुबोधकुमार जैन को मत्री पद का भार दिया गया, जिसे वे अभी तक पूरी लगन एव जिम्मेदारी के साथ निर्वाह रहे हैं। बाबू सुबोधकुमार जैन भवन के चतुर्मुखी विकास के लिए दृढप्रतिज्ञ है। इनके कार्यकाल मे भवन के क्रिया-कलापो मे कई नये अध्याय जुड़ गये है, जिनसे बाबू सुबोधकुमार जैन का व्यक्तित्व एव कृतित्व दोनो उभर-कर सामने आये है।

जैन सिद्धात भवन, आरा के अन्तर्गत जैन सिद्धान्त भास्कर एव जैना एण्टीक्वायरी शोध पत्रिका का प्रकाशन सन १६१३ से हो रहा है। पत्रिका द्वैभाषिक, हिन्दी-अंग्रेजी तथा षाण्मासिक है। पत्रिका में जैनविद्या सम्बन्धी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सामग्री के अतिरिक्त अन्य अनेक विधाओ के लेख प्रकाशित होते है। शोध-पत्रिका अपनी उच्चकोटि की सामग्री के लिए देश-देशान्तर मे सुविख्यात है। इसके अंक जून और दिसम्बर मे प्रकट होते हैं।

जैन सिद्धान्त भवन, आरा का एक विभाग श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान है। इसमें प्राकृत और जैनविद्या की विभिन्न विधाओ पर शोधार्थी कार्य कर रहे है। संस्थान मे शोध सामग्री प्रचुर मात्रा मे भरी पड़ी है। सस्थान सन् १६७२ ई० से मगध विश्वविद्यालय, बोध गया द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान मे इसके मानद् निदेशक, डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, प्राकृत-संस्कृत विभाग, हर-प्रसाद दास जैन कॉलेज (मगध वि. वि.) आरा हैं। इस समय सस्थान के सहयोग से १५ शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं तथा अनेक पी. एच, डी की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं।

इस सस्था द्वारा अबतक अनेक महत्वपूर्ण पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं। इस सस्था के हस्तलिखित ग्रन्थो के सूचीकरण कार्य मे यह दूसरा उपहार 'जैन सिद्धान्त भवन ग्रथावली, का द्वितीय भाग है। इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस एवं हिन्दी भाषाओ के १०२३ ग्रथो की विवरणात्मक सूची प्रकाशित है। ग्रथ को प्रथम भाग की तरह दो खडो मे विभक्त किया गया है। प्रथम खड मे पाण्डुलिपियो का विवरण रोमन लिपि मे दिया गया है। दूसरे खण्ड मे परिशिष्ट शीर्षक से ग्रन्थो के प्रारम्भिक अश, अन्तिम अश तथा प्रशस्तियाँ दी गई है। सूची मे आधुनिक पद्धति से ग्रन्थो का विवरण व्यवस्थित किया गया है। विवरण निम्न ग्यारह शीर्षकों मे प्रस्तुत है—

(१) क्रम सख्या। (२) ग्रन्थ सख्या। (३) ग्रन्थ का नाम। (४) लेखक का का नाम। (५) टीकाकार का नाम। (६) कागज या ताडपत्र। (७) लिपि और भाषा। (८) आकर सेमी-मे, पत्रसख्या, प्रत्येक पत्र की पंक्ति सख्या एवं प्रत्येक पक्ति की अक्षर सख्या। (९) पूर्ण-अपूर्ण। (१०) स्थिति तथा समय (११) विशेष जानकारी यदि कोई है।

ग्रन्थावली को सामान्य रूप मे विषय वार निम्नलिखित शीर्षको के अन्तर्गत विभक्त किया गया है —

(१) पुराण-चरित-कथा।

(२) धर्म दर्शन-आचार।

(३) रस छन्द, अलकार काव्य.।

(४) मत्र-कर्मकाण्ड,।

(५) आयुर्वेद।

(६) स्तोत्र. (७) पूजा-पाठ विधान।

अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं, जिनका विषय निर्धारण बिना आद्योपान्त अध्ययन के सम्भव नही हो सकता है, उन ग्रन्थो को भी इन्ही शीर्षकों के अन्तर्गत व्यवस्थित किया गया है।

क्र० ६६८ से १०६८ के बीच लगभग पचास ऐसे ग्रन्थ हैं जो पूजा से-सम्बन्ध रखते हैं. क्योंकि वास्तव में यह प्रायः व्रत-कथाएँ हैं। ऐसी कथाओं मे पूजा-अर्चना की प्रधानता होती है। इसी के साथ कथा कही जाती है, जिससे जनसामान्य धर्म से प्रभावित होकर आत्मोन्नति की ओर प्रवृत्त होता है। क्योंकि बाल-बुद्धि लोगों के प्रतिबोध के लिए कहानी ही सबसे अधिक उपयोगी एवं सरल विधा है।

प्रस्तुत सूची में तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह, भक्तामरस्तोत्र, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, विषापहार स्तोत्र, सिद्धपूजा आदि की प्रतियाँ बहुसख्यक हैं। क्रम संख्या १३६१ से २०२० तक स्तोत्र एवं पूजा-विधान के ही ग्रंथ हैं। एक विषय के इतने अधिक ग्रन्थों का एक साथ संग्रह होना, अपने आपमें महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद के शारदातिलक सटीक, वैद्यमनोत्सव, योगचिन्तामणि, वैद्यभूषण प्रभृति ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ विशेष महत्व की तथा प्राचीन भी हैं।

अन्य ग्रंथागारों में उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियों के सन्दर्भ यथास्थान दिये गये हैं। इसमें जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली भाग —१ के भी सन्दर्भ दिये गये हैं। यह सन्दर्भ प्रतियों के खोजने मे सहयोगी होंगे। इससे यह भी ज्ञात होता है कि देशभर के अनेक शास्त्रभण्डारों, मंदिरों तथा संस्थानों मे हस्तलिखित ग्रन्थों की भर-मार है। जो अभी तक अप्रकाशित पड़े हुए हैं। उन्हें प्रकाश में लाने की दिशा मे जो प्रयत्न हो रहे हैं, वे पर्याप्त नहीं हैं। विद्वानों, अनुसन्धाताओं, तथा सम्बद्ध संस्थाओं को इसे एक आन्दोलन के रूप आगे बढ़ाने का उपाय करना चाहिए।

ग्रन्थावली के इस भाग को तैयार करने मे डा० गोकुलचन्द्र जैन, वाराणसी, श्री सुबोधकुमार जैन, श्री अजयकुमार जैन आदि व्यक्तियों का महत्वपूर्ण निर्देशन रहा है। उक्त सभी का हृदय से आभारी हूँ। आशा है भविष्य मे भी सबका निर्देशन एवं सहयोग आशीष पूर्वक प्राप्त होता रहेगा। ग्रंथावली के सम्पादन, संयोजन मे जो त्रुटियाँ हुई हैं, उनके लिए विद्वज्जन क्षमा करेंगे।

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार
शोधाधिकारी,
देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान
आरा (बिहार)

INTRODUCTION TO SECOND VOLUME

In continuation to my introduction to first volume of *Śrī Jaina Sidhānta Bhavana Granthāvalī*, I have great pleasure in introducing the Second Volume of the same series. Like the First Volume the Second Volume contains descriptions of more than One Thousand Sanskrit, Prakrit, Aprabhraṁśa and Hindi Manuscripts preserved in *Shri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah*. It has been prepared strictly according to the Scientific Methodology adopted in First Volume In the introduction to First Volume, I have discussed in detail various points related to the Catalogue in general and *Śrī Jaina Sidhānta Bhavana Granthāvalī* in particular.

The Second Volume is also divided into two parts. In the first part descriptions of manuscripts have been given, and in the second part the text of the opening and closing portions of MSS along with Colophons have been recorded in Devanāgarī scripts. The MSS have been classified under some general heads like Purāna-Carita-Kathā, Dharma-Darśana-Ācāra etc This classification helps a common reader. Those who want to go into details, they should have a keen eye on the contents while looking on the titles. The MSS recorded under the head of *Kathā* (nos 998 to 1026) are the part of *Ācāra* or *Pūja-Vidhāna* and not related with the narrative literature in its strict sense.

The manuscripts recorded in the present volume have their own importance By publication of this volume they have became accessable to scholars, and now could be best adjudged when utilized for study or critical editions, Here I would like to draw the attention on certain points which seems to me significant to this volume

It has been generally observed by scholars and religious critics that due importance to *Bhakti* and *Karmakānda* (rituals) have not been given in Jaina religion A large number of MSS recorded in the present volume are related to various type of rituals, devotional songs-*Stotras-Stuti-Pūjā Pātha, Pratisthā* etc and other related matters. The number and variety of MSS clearly testify that *Bahkti and Karmakānda* occupy an important position in Jaina Tradition. It is true that according to Jainism *Bhakti* and *Kriyākāda* alone can not lead to liberation or *Mokṣa*.

In this volume seven more MSS of Dravyasaṁgraha have been recorded. It shows the popularity of the treatise. All the MSS related to it should be taken into consideration while undertaking a critical study of the Text.

Some important Prakrit and Apabhraṁśa MSS like Samaya sāra (1165–1168, Pravacanasāra (1158–1160), Saṭpāhuḍa (1172–1173), Kārtikeyānuprekṣā (1133) Paramātmaprakāśa (1154, 1155) have also been recorded in this volume.

Seventeen MSS relating to Indian medicine i. e. *Āyurveda* have been mentioned some of which like Aṣṭāṅgahṛdaya of Vāgbhata (1344), Śāraṅgadhara-saṁhitā (1356) o Śāradātilaka (1355), Madanavinoda (1349) deserve special mention.

A good number of MSS is related to stotra literature. Some of them are close to *tantra*. It is true that Tantrism could not be developed in Jainism like some other schools of Indian religions, still some trends can be seen in the works like *Padmāvatīkalpa*, *Jvālāmālinīkalpa*, *Sarasvatīkalpa* etc.

In the end I like to thank the editors and publishers for bringing the Second Volume with in a short time after the publication of first volume. I do hope that the same enthusiasm will continue in preparing and publication of other volumes of the Catalogue.

—Dr. Gokul Chandra Jain

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

SHRI DEVAKUMAR JAIN ORIENTAL LIBRARY,
JAIN SIDDHANT BHAVAN, ARRAH (BIHAR)

S. No.	Library accession or Collection No. if any	Title of Work	Name of Author	Name of Commentator
1	2	3	4	5
998	Nga/48/15/4	Ananta-Caudaśa-Kathā	Jnānasāgara	—
999	Nga/47/4/43	,, ,, ,,	—	—
1000	Ta/42/50	Ananta-Vrata-Kathā	—	—
1001	Nga/47/4/54	Anantanāth-Kathā	—	—
1002	Nga/411 Jha/	Aṣṭānhikā Kathā	Jnānasāgara	—
1003	Nga/48/15/6	,, ,,	—	—
1004	Nga/47/4/64	Aṭhāī ,,	Bhairondāsa	—
1005	Nga/47/4/47	Ādityavāra ,,	—	—
1006	Nga/40/1	,, ,,	—	—
1007	Nga/41/Ga	,, ,,	—	—
1008	Nga/47/4/48	,, ,,	—	—

Mat. or Subt.	Script	Size in cms. No. of folios or leaves lines per page & No. of letters Per line	Extent	Condition and age	Additional Particulars
6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	17 5×13 5 7 14 15	C	Good	
P	D; H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13.16	C	Old	
P.	D; H Poetry	17 5×13 5 3 14 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 0×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D; H. Poetry	20 6×18 0 11 16 18	C	Old	
P.	D; H Poetry	14 2×9 0 22 9 22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 3 13.16	C	Good	
P.	D; H, Poetry	20.6×18 0 3.16 18	C	Old	

1	2	3	4	5
1009	Nga/48/25	Ādityavāra Kathā	—	—
1010	Ta/42/45	Ākāśa-Pañcamı Kaṭhā	Jnânasāgar	—
1011	Nga/41 Ta	,, , ,,	—	—
1012	Ta/12/1	Bhavıṣyādatta Kathā	—	—
1013	Nga/40/7	Canda Kathā	Rajācanda	—
1014	Ng/41 (Gha)	Catuıdaśı Kathā	Jnânasāgara	—
1015	Nga/40/2	Caturavacanoccārını Kathā	—	—
1016	Ta/26/1	Dāna-Kathā	Bhārāmalla	—
1017	Nga/47/4/63	Daśa-Lākṣnı Kathā	—	—
1018	Nga/47/4/68	,, ,, ,,	Bhaırondāsa	—
1019	Nga/41/ Cha	,, ,, ,,	Jnānasāgara	—
1020	Nga/48/15/3	,, ,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H. poetry	23.0×16 7 8 12 29	C	Good	
P.	D, H Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 9 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	24 2×16 0 68 10 30	C	Good 1948 V S	
P	D, H Poetry	14 2×9 0 31 9 22	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 8 13 16	C	Good	
P	D, Skt Prose	14 2×9 0 11 9 22	C	Old	
P	D; H Poetry	20 3×17 5 38.14.21	C	Good	
P	D, H. Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 6×18 0 8 16 18	C	Old	
P	D; H. Poetry	14 5×11 0 8.13.16	C	Old	
P.	D; H, Poetry	17.5×13 5 7.14.18	C	Good	

1	2	3	4	5
1021	Ta/42/52	Daśa-lākṣanī-vrata-Kathā	Jnānasāgara	—
1022	Nga/44/16/1	,, ,, ,, ,,	—	—
1023	Ta/27/1	Darśana-Kathā	Bhārāmalla	—
1024	Nga/40/4	Dhama-pāpa-buddhi Kathā	—	—
1025	Ja/60	Dhūpa-daśami Kathā	—	—
1026	Nga/47/4/79	Dudhārasa-vrata ,,	—	—
1027	Ja/53	Hari-vaṁsa Purāna	—	—
1028	Ja/27/1	,, ,, ,,	—	—
1029	Jha/10/3	,, ,, ,,	—	—
1030	Ja/59	Jambū-caritra	—	—
1031	Nga/46/8	Labdhi-vidhāna Kathā	—	—
1032	Ja/6/1	Mahāvira-Purāṇa	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D; H Poetry	13 0×10 3 5 9 10	Inc	Old	There are so many opening pages are not available.
P	D; H Poetry	19 7×16.5 48 14 21	C	Good	
P.	D, Skt Prose	14.2×9.0 14 9 22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	24 5×10 5 5 8 28	Inc	Good	Its three to twelve pages aae lost.
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old	
P.	D, Skt./ H Poetry	27 9×17 3 149 14 40	C	Good	
P.	D, Skt / H Prose/ Poetry	21 5×14 4 41 15.38	Inc	Old	The heading of this book his clouvayed
P.	D; H. Prose	26 8×10 5 8.12 37	Inc	Old	It has no opening and clysing.
P.	D, H Poetry	29.4×14 1 22 13 38	C	Good 1933 V S.	Rajyakumāra canda seems to be copiar.
P.	D; H. Poetry	19 0×17 0 5.15.22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	30.2×15.0 85.12.49	Inc		Ope pages are missing.

1	2	3	4	5
1033	Nga/37/9	Nemi-nātha-Vivāha	Vinadilāla	—
1034	Nga/47/4/62	Niskānkṣita-guṇa Kathā	—	—
1035	Ta/42/46	Niśśalyāṣṭamī ,,	Jnānasamudra	—
1036	Nga/41/Jha	Nirdoṣa-saptamī ,,	Jnānasāgara	—
1037	Nga/48/15/8	Pancamī ,,	Surendra-Bhūsana	—
1038	Ja/11	Parśva-purāna	Lālā Candulāla	—
1039	Ja/10	,, ,,	—	—
1040	Nga/41/Cha	Ratnatraya Kathā	—	—
1041	Ta/42/51	,, ,	Jnānasāgara	—
1042	Nga/84/15/5	Ratnatraya-vrata Kathā	,,	—
1043	Nga/44/16/2	,, ,, ,,	—	—
1044	Ta/42/44	Ravivrata ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	22.0×13.0 6.15.13	C	Old	
P.	D, H Poetry	20.6×18.0 7 16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 3 33 37	C	Good	
P	D, H. Poetry	14.5×11.0 6.13 16	C	Old	
P	P, H Poetry	17.5×13.5 10 14 15	C	Good	
P.	D; H Poetry	28.0×13.0 144 13.27	C	Good	
P.	D; H Poetry	29.0×14.0 11 12 28	Inc	Good	
P.	D, H Poetry	14.5×11.0 6 13 16	C	Old	
P	D; H Poetry	32.3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.5×13.5 5.14 15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.0×10.2 11.9.10	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 4 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1045	Nga/48/15/1	Ravi-vrata Kathā	—	—
1046	Ja/34/1	,, ,, ,,	Bhanukīrti	—
1047	Ta/26/2	Rātri Bhojana-tyāga Kathā	Bhārāmalla	—
1048	Ta/42/54	Rohinī Kathā	—	—
1049	Nga/48/15/7	,, ,,	—	—
1050	Nga/41/ṭha	Rohiṇī-vrata Kathā	—	—
1051	Ja/62	Roṭa-tīja ,,	Dyānatarāya	—
1052	Ta/42/56	,, ,,	—	—
1053	Nga/46/9/1	,, ,,	—	—
1054	Nga/46/9/2	,, ,,	—	—
1055	Nga/41	Salūnā ,,	Vinodīlāla	—
1056	Nga/46/3	Śīla-Kathā	Malla-sena ?	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	17.5×13.5 4.14.15	C	Good	
P.	D; H. Prose/ Poetry	19 0×14.9 8 11.15	C	Old	
P.	D, H Poetry	20.3×17 5 33 14.21	C	Good	
P	D; H / Skt. Poetry	32.3×19 0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	17 5×13 5 9 14.15	C	Good	
P.	D; H Poetry	14 5×11.0 9 13 16	C	Old	
P.	D; H Poetry	22 3×13 0 9 8 23	C	Good	
P.	D; H Prose	32 3×19 0 1 33.37	C	Good	
P	D; H. Prose	18 8×17 6 2.17.23	C		
P.	D; H. Poetry	18.8×17.6 3 14 17	C		
P.	D; H, Poetry	14.5×11.0 19.13.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	25.6×16.6 27.13.36	C	Old	

1	2	3	4	5
1057	Ta/28/2	Śila-vrata Kathā	Bhārāmalla	—
1058	Nga/40/3	Śilavatī ,,	—	—
1059	Nga/41/Ja	Solahakārana Kathā	Jnānasāgara	—
1060	Nga/46/6	,, ,,	,,	—
1061	Nga/48/15/2	Ṣodaśa-kārana ,,	,,	—
1062	Ta/42/48	Ṣravana-dwādasī ,,	,,	—
1063	Nga/45/1	Saipāla-Caritra	Jivarāja	—
1064	Nga/45/12	,, ,,	—	—
1065	Ta/42/47	Sugandha-daśamī Kathā	Jnānasagara	—
1066	Nga/48/15/9	,, ,, ,,	—	—
1067	Nga/47/4/78	,, ,, ,,	—	—
1068	Nga/41	Sugandhadaśamī ,,	Jnānasāgara	—

(Purāna-Carita-Kathā)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	19.8×17 2 45.14.23	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	14 2×9 0 50 9 22	C	Old	
P	D; H. Poetry	14 5×11 0 5 13 16	C	Old	
P	D; H Poetry	23 2×15.0 4 16.15	C	Old	
P	D; H. Poetry	17 5×13 5 4 14 15	C	Good	
P.	D; H Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Good	
P	D; Skt. Prose	24 7×11 2 40.13 37	C	Good	
P,	D, H. Poetry	24.5×11 3 38.15 35	C	Old	
P	D; H. Poetry	32.3×19 0 2.33 37	C	Good	
P	D; H. Poetry	17.5×13.5 4.14.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18 0 4.16.18	C		
P.	D; H. Poetry	.5 ×11.0 5.13.16	C		

1	2	3	4	5
1069	Nga/40/5	Swarūpa-sena Kathā	—	—
1070	Ta/14/35	Vira Jinaṅda	—	—
1071	Ja/34/5	Viṣnu Kumāra ,,	Vinodilāla	—
1072	Ta/11/1	Arihant -Kevali	Rama-gopālā	—
1073	Ta/6,9	Ārādhanāsāra	—	—
1074	Nga/38/10	Arādhanā-pratibodha	—	—
1075	Ja/1	Artha Prakāṣikā	—	—
1076	Ta/9/1	Ātmānuśāsana	Guna-bhadra	—
1077	Ja/38	Banārasi-Vilāsa	Banarasidāsa	—
1078	Nga/47/4/67	Bāraha-bhāvanā	—	—
1079	Nga/47/15/6	,, ,,	—	—
1080	Ta/6/18	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. prose	14.[illegible]×9.0 32 9 22	C	Old	
P.	D; H Poetry	15.2×12.8 3 11.15	C	Old	
P	D; H Poetry	19.0×14.9 19 15 16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	14.5×11.7 29 9.15	C	Good 1917 V. S.	
P	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 8.18 15	C	Old	
P.	D; H Poetry	15.7×9.0 7.9.22	C	Good	
P	D; H Prose	33.4×18.9 411 13 33	C	Good	The opening pages are damaged.
P.	D; Skt Prose	19.0×14.5 37.15 13	C	Old 1928 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.1 107.12.31	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	16.5×16.0 2.12.19	C	Old	
P.	D; H, Poetry	22.2×14.7 1.20.17	C	Old	

1	2	3	4	5
1081	Nga/44/13/7	Bisa Tirthaṅkaranāmāvalı	—	—
1082	Ja/15	Brahma-Vilāsa	Bhagavatidāsa	—
1083	Nga/45/7	,, ,,	,,	—
1084	Ta/42/3	Caitya-Vandanā	—	—
1085	Ta/14/3	,, ,,	—	—
1086	Nga/45/10	Cāturmāsa Vyākhyā	—	—
1087	Ja/40	Caudaha-guna-sthāna	—	—
1088	Ja/45/3	,, ,, ,,	—	—
1089	Ja/51/21	Catvāri-dandaka	—	—
1090	Ta/14/42	Caubisa ,,	Daulata-rāma	—
1091	Ja/65/1	,, ,,	,,	—
1092	Ja/23/1	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.5×8.5 3 6 13	C	Old	
P	D; H. Poetry	25.0×12.0 170 11.34	C	Good	
P.	D; H Poetry	26.8×13.9 168 11 33	C	Old 1967 V S.	
P	D, Skt Poetry	32 3×19.0 1 30 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	15 2×12.6 3 13 18	C	Old	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	24 7×11 3 72 13 38	C	Old	
P	D; H Prose	22 0×13 5 63 12.27	C	Old	
P	D; H. Prose	15 0×11 3 8 10.19	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	32 3×20 1 1 13.35	C	Good	
P.	D. H. Poetry	15.2×12.8 6.12.20	C	Good	Other subjects are also written in last pages.
P.	D; H. Poetry	11.5×10 0 10.10 14	C	Good	
P.	D; H. Prose	22.4×14.2 18.17.18	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1093	Ja/45/2	Caubisa ṭhānā	—	—
1094	Ja/41	Carcā-Saṅgraha	—	—
1095	Ja/8	Carcā-Samādhāna	Bhūdharadāsa	—
1096	Ja/30	" "	—	—
1097	Nga/45/11	Daśāskandha	—	—
1098	Ja/35/6	Dāna-Vāvanī	Dyānatarāva	—
1099	Ja/16/6	" "	"	—
1100	Nga/37/4	Dāna-sila-tapa-bhāvanā	—	—
1101	Nga/30/2/1	Devagaman	Samantabhadra	—
1102	Ja/41/1	Digambara āmnāya	—	—
1103	Ja/12	Dharma-grantha	—	—
1104	Ja/25	" "	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	15.0×11.3 5.10.20	C	Old	
P	D; H. Poetry	21.2×13.6 148.11.33	C	Old	
P.	D; H Poetry	29.7×14.0 83.11.44	C	Good 1893 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20.8×14.2 157.16.17	C	Good	
P.	D; Pkt. Prose/ Poetry	23.4×10.3 42.13.40	C	Old 1735 V. S.	
P	D; H Poetry	18.3×11.5 10.16.15	C	Good	
P	D; H Poetry	23.3×19.0 10.15.18	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.3×11.5 13.9.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 14.9.26	C	Old	
P.	D; H. Prose	21.2×13.6 2.11.30	C	Old	
P.	D; H. Poetry	12.9×27.4 230.9.19	C	Old	
P.	D; H Prose/ Poetry	22.0×14.4 110.20.14	Inc	Old	Its opening 48 pages and last page are missing.

1	2	3	4	5
1105	Nga/44/8	Dharmāmṛtasâra	—	—
1106	Nga/44'13/4	Dharmâṣṭaka	—	—
1107	Ja/9	Dharma-parīkṣâ	Manohara	—
1108	Ja/14	Dharmaratna	—	—
1109	Ja/13	,, ,, granthā	—	—
1110	Ja/35/8	Dharma-rahasya	Dyānatarāya	—
1111	Nga/30/1	Dharmasāra Satasai	Śiromaṇidāsa	—
1112	Ta/61/14	Dravya-Sangraha	Nemicanda	—
1113	Nga/30/2/2	,, ,,	,,	—
1114	Ta/37	,, ,,	—	—
1115	Ta/4/1	,, ,,	Nemicanda	—
1116	Ta/6/1	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose/ Poetry	21.0×16 5 60.15.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.5×8.5 4.6.13	C	Old	
P.	D; H. Poetry	29.8×15.0 181.12.48	C	Good	
P.	D; H. Poetry	26.9×13.2 181.9.24	C	Good	
P.	P; H. Poetry	26.6×14.0 206.9.24	C	Good	
P	D; H. Poetry	18.3×11 5 10.16 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	17 5×14.3 75 13 22	C	Good 1832 V. S.	
P	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 10.23.15	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.0×14.8 5 9 26	C	Old	
P	D;H /Skt. Poetry	16 0×12.0 41.10.16	C	Old	Starting three pages are missing so it has opening
P.	D;H./Pkt. Prose	23.2×19.5 20.13.32	C	Old 1871 V. S.	
P.	D;Pkt./H. Poetry/ Prose	22.2×14.7 49.18 20	C	Old	

1	2	3	4	5
1117	Ja/23	Dravya-Saṁgraha	Nemicandra	—
1118	Nga/16/2	,, ,,	,,	—
1119	Ta//14/33	Dvādaśānuprekṣā	—	—
1120	Ja/51/19	Eryā-patha Sāmāyika	—	—
1121	Nga/38/13	Gati-Lakṣana	—	—
1122	Ja/49	Gommata-sāra	Nemicandra	—
1123	Ta/3/46	Gyāna kē aṭh aṅga	—	—
1124	Nga/28/1	Hanavanta anuprēkṣā	Paṇḍita Bacharāja	—
1125	Nga/48/11/5	Jina-gāyatrī trikāla-sandhyā	—	—
1126	Ta/24/3	Jina-guna-sampatti	—	—
1127	Ja/65/7	Jina-mahimā	—	—
1128	Nga/47/4/77	Jēva-rāsi-kṣamā-vaṇī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt./ H. Prose/ Poetry	22.4×14.2 19 17.15	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	13 0×15.0 6.11.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.2×12 8 4.13.16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32 3×20.1 2.13.35	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	15.7×9.0 2.9.22	C	Good	
P.	D; H. Prose	36.5×18.7 454.11 38	C	Good	
P.	D; Pkt./ H Poetry	22.5×15 0 3.12 31	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	14.6×14.1 7.14.19	C	Good	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	16.5×13.2 0.10 13	Inc	Old	
P	D; Skt. Poetry	30.2×20 0 3.37.33	C	Old	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 4.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1129	Nga/40/6	Jnāna-pacisi	Banarasidāsa	—
1130	Ja/23/4	Jnānāmava-Vacanika	Śubhacandra	—
1131	Nga/16/3	Karma-prakṛti-granthā	Nemicandra	—
1132	Ta/17/1	Karma-battisi	—	—
1133	Nga/20,2	Kāratikeyānu preksā	Kārtikeya	—
1134	Ja/51	Laghu-tattvārtha sūtra	—	—
1135	Ta/3/12	Laghu-sāmāyika	—	—
1136	Ta/42/80	,, ,,	—	—
1137	Nga/38/9	Leśyā-Swarūpa	—	—
1138	Ta/4/3	Lilāvati-prakirnaka	Bhāskarācārya	—
1139	Ja/18	Mithyātva Khandana	Padmasāgara	—
1140	Ja/4	Mokṣamārga	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	14.2×9.0 3.9.22	C	Old	
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	22.4×14.2 40.18 15	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13.0×15.0 18.11.21	C	Good	
P	D; H Poetry	15.5×9.5 10 10 19	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	25 6×15 0 38 15 21	C	Good	
P	D; Skt Prose	32 3×20 1 2 13 34	C	Good	It is also named Arhat pravacana.
P	D; Skt. Poetry	22 5×15 0 2 12 36	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 1.33.37	C	Good	
P	D, Skt / Pkt Poetry	15 7×9 0 2 9 22	C	Good	
P	D; Skt Pros / Poetry	19.3×13.0 167.17.16	C	Old	
P	D; H. Poetry	23.9×10.8 113.9.32	C	Good	
P	D;H./Pkt. Prose/ Poetry	32.1×15.0 224.12.50	Inc	Good	

1	2	3	4	5
1141	Ja/65/5	Mokṣa-mārga paidī	Banārasidāsa	—
1142	Ta/14/36	,, ,, ,,	,,	—
1143	Ta/6/13	Mṛtyu-mahotsava	—	—
1144	Nga/16/1	Mukti Suktāvali	—	—
1145	Ta/18/11	Navakāra-māhātmya	—	—
1146	Ja/27/5	Naya cakra	Devasena	—
1147	Nga/16/5	,, ,,	,,	—
1148	Ja/41/2	,, ,, Vacanikā	Hemarāja	—
1149	Nga/28/6	,, ,, ,	Devasena	Hemarāja
1150	Nga/20/3	Nirvāna-kānda	—	—
1151	Nga/20/4	,, ,,	Bhaiyā Bhagavatidāsa	—
1152	Ta/6/22	Panca Viṁśatikā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 7.10.14	C	Good	
P.	D. H. Poetry	15.2×12.8 5.11.15	C	Old	
P	D; Pkt./Skt. Poetry	22.2×14.7 3.20.19	C	Old	
P.	D; H Poetry	13.0×15.0 23.11.21	C	Good	Opening two pages are missing.
P.	D; H. Poetry	11.0×11.0 6 12 17	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	21.5×14.4 12 19.13	C	Old	It is also called Ālāpapaddhati
P.	D, Skt. Prose	13.1×15 0 13.11.21	C	Good	
P.	D; H, poetry	21.2×13 6 17 11.34	C	Old	
P.	D; H. Poetry	13.4×17.6 26.11 19	C	Good 1962	
P.	D; Pkt. Poetry	25 6×15.0 3 15.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.6×15.0 3.14.18	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 2.20.20	C	Old	The charts of Mantra and Tantra are in its last pages.

1	2	3	4	5
1153	Ja/45/1	Panca-purmeṣṭhī	—	—
1154	Ta/6/8	Parmātma-prakāśa	Yogīndradeva	—
1155	Nga/16/6	" "	"	—
1156	Ja/6/3	Parīkṣā-mukha Vacanikā	—	—
1157	Nga/76/4	Praśna-mālā	—	—
1158	Jha/5/2	Pravacana-sāra	Candrakīrti-mahārāja ?	—
1159	Jha/10/1	Pravacanasāra	—	—
1160	Jha/10/2	" "	Hemarāja	—
1161	Ta/11/2	Prāyaścitta-grantha	Akalaṅka-swāmī	—
1162	Nga/47/4/70	Pāpa-punya-māhātmya	—	—
1163	Nga/47/4/69	Punya-māhātmya	—	—
1164	Ta/12/2	Samyyktva Koumudī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	15.0×11.3 9.10.20	C	Good	
P.	D; Apb. Poetry	22.2×14.7 25.19 13	C	Old	
P.	D; Apb. Poetry	13.0×15.0 29.11.21	C	Good	It is also called paramappayāsu.
P.	D; H. Prose	30.2×15.0 1.11.37	Inc	Good	
P.	D; H Prose	20.3×15.8 57 17 19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29 8×14 4 27 14.35	C	Old	
P.	D, Skt. Prose/ Poetry	26 6×10 5 14 14 39	Inc	Old	
P.	D; H Prose/ Poetry	26 8×10.5 28 12.47	Inc	Old	
P	D; Skt. Poetry	145.×11 7 6.11 18	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 9 16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18 0 1.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	24.2×16.0 44.10.30	C	Good	

1	2	3	4	5
1165	Nga/39/2	Samayasāra-gāthā	—	—
1166	Ja/37	,, nāṭaka	—	—
1167	Nga/12/1	,, ,,	Banārasīdāsa	—
1168	Nga/42/2	,, ,,	,,	—
1169	Nga/16/8	Samavaśarana	—	—
1170	Nga/16/7	Samudghāta	—	—
1171	Ta/11/8	Saṭdarśana	—	—
1172	Ta/6/1	Saṭpāhuda	Kundakunda	—
1173	Nga/16/4	,,	,,	—
1174	Nga/47/4/55	Sadleśyābheda	—	—
1175	Ta/14/40	Sāmāyika	—	—
1176	Ta/14/15	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.7×9 0 3.9 22	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	21.0×14 5 81 13.31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.0×8.0 344 6 16	C	Old 1884 V. S.	
P.	D; H Poetry	15.0×14 0 128.13.19	C	Good 1840 V. S.	
P.	D; H Poetry	13 0×15 0 40 11 21	C	Good	
P	D; H Poetry	13 0×15 0 3.11 21	C	Good	
P.	D, H Poetry	14 5×11 7 2.11 20	C	Good	
P	D; Pkt Poetry	22 2×14 7 35 10 15	C	Old	
P.	D, Pkt. Poetry	13 0×15.0 36 11 21	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D; Skt, Poetry	15.2×12 8 2 12.13	C	Old	
P.	D; Pkt/ Skt. Prose/ Poetry	15.2×12.8 25.11.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1177	Ta/42/95	Sāmāyika	—	—
1178	Ja/51/20	,,	—	—
1179	Nga/19	,,	—	—
1180	Ta/26/3	Sāṣācāra	—	—
1181	Ja/45/4	Sātatattva	—	—
1182	Ja/3	Siddhāntasāra	Nathamala	—
1183	Ja/65/3	Sindūra-Prakarana (Sūktimuktavali)	Somaprabhācārya	Harṣakirti
1184	Ta/9/3	Sindūra-Prakarana		—
1185	Nga/31/2/6	,, ,,	Somaprabhācārya	Harṣakirti
1186	Nga/47/4/76	Śila-Vrata	—	—
1187	Jha/5/1	Śrāvakācāra	Gumāni-Lāla	—
1188	Ta/14/14	Śrāvaka-pratikramaṇa	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Pkt. Poetry	32.3×19.0 4.33.21	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	15.7×9 2 8.7.18	Inc	Old	
P.	D;Skt. Poetry	16.5×13.2 6.12.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18 0 2.16 18	C	Old	
P.	P; H Poetry	28 4×17 0 2.24 17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.5×12 5 5.9.25	C	Old	
P	D; H Poetry	30.2×15 0 43 15.38	Inc	Good	
P.	D, Pkt Poetry	22 2×14 7 4 21.21	C	Good	
P.	D; Skt Prose	32 3×20.2 10 23.17	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	22.5×13 0 24.18 13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	20.6×18 0 13.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	13.5×8.5 38.6.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1201	Nga/48/7	Tatvārtha-sūtra	Umāswāmi	—
1202	Ta/14/24	„ „	„	—
1203	Ta/42/17	„ „	„	—
1204	Nga/38/6	„ „	„	—
1205	Ja/23,2	„ „	„	—
1206	Ta/6/6	„ „	„	—
1207	Ja/27/3	„ „	„	—
1208	Nga/25/6	„ „	„	—
1209	Nga/20/1	„ „	„	—
1210	Nga/17/2/1	„ „	„	—
1211	Nga/20/1/2	„ „	„	—
1212	Ja/33/2	„ „	„	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Poetry/ Prose	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×20.1 3.13 35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.8×9.0 2.9.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.3×17.5 3.14.21	C	Old	
P.	D; Skt Prose	15.0×11 3 7.10 20	C	Old	
P.	D; H. Prose	32 1×16.0 26.11.47		Good	
P.	D; H. Poetry	11.5×10 0 51.10.14	C	Good	
P,	D; Skt. Poetry	19 0×14.5 19.15.13	C	Old	Pandita Paramānanda seems to be copier.
P	D; H. Poetry	12.3×16.0 21.15.16	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	29.8×14.4 151.12.48	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 19.11.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1189	Ta/42/94	Śrāvaka-Pratikramaṇa	—	—
1190	Nga/48/6/1	Śrāvaka-Vrata-Sandhyā	—	—
1191	Nga/48/11/4	,, ,, ,,	—	—
1192	Nga/47/4/60	,, ,, Vidhāna	—	—
1193	Nga/25/11	Śrī-pāla-darśana	—	—
1194	Nga/44/19/1	,, ,, ,,	—	—
1195	Ja/6/2	Sudṛṣṭi Taraṅginī	—	—
1196	Ta/6/4	Tattwasāra	Devasena	—
1197	Nga/44/12/1	Tatvārtha-Sūtra	Umā Swāmī	—
1198	Nga/46/12/1	Tatvārthā-sūtra	—	—
1199	Nga/47/4/38	,, ,,	Umā Swāmī	—
1200	Nga/47/4/38	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	15.5×11.6 23.8.20	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	15.2×12 8 19.11.15	C	Old	
P	D; Skt. Prose	32.3×19.0 4.33 39	C	Good	
P.	D; Skt Prose	15 8×9.0 4.9 22	C	Good	
P.	D; H. Prose/ Poetry	22 4×14.2 57.19.15	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	22.2×14 7 9.20 20	C	Good	
P.	D,H./Skt. Prose	21 5×14.4 56.17 13	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	28 4×17.0 9.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.6×15.0 13 15.21	C	Good	
P.	D,Skt./H. Prose	25.0×17.0 45 20.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	29.0×17.8 11 21.17	C	Good	
P.	D; S. Prose	19.7×13.0 10.18.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1213	Ja/34/2	Tattvārtha Sūtra	Umāswāmi	—
1214	Ja/27	,, ,,	,,	—
1215	Nga/31/2/2	,, ,,	,,	—
1216	Nga/29/3	,, ,,	,,	—
1217	Ja/2	,, ,, Vacanikā	Jayacanda	—
1218	Nga/32	Trepanakriyā	—	—
1219	Ta/5/12	..	—	—
1220	Nga/48/26/1	Trikāla-Caturviṁśati	—	—
1221	Ta/16/3	Trivarnācāra	Jinasenācārya	—
1222	Ja/5	Trilokasāra	—	—
1223	Ja/1 (Kha)	Vacanikā	—	—
1224	Ta/6/10/Ka	Vairāgya-pacisi	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	19.0×14.9 18.11.15	C	Old	
P.	D Skt. Prose	20.2×14.5 14.15.18	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	12.3×16.6 3 17 16	C	Good	
P.	D;H /Skt. Prose	13 2×21 0 71.16.13	C	Good	
P	D; H. Prose	32.2×15.3 272.12.56	Inc	Good	
P.	D; H. Prose/ Poetry	25.3×15 0 175.16.18	C	Old	The language of this Mss. is not clear.
P.	D; Skt. Poetry	25 0×15 0 2 26 25	Inc	Old	
P.	D, H poetry	17 5×13.5 3 8 24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×9.5 28 9 16	C	Old	It has no heading or opening.
P.	D; H. Prose	31.0×16.2 295.11.59	C	Good	Two pages are damaged.
P	D; H. Prose	33.4×18.9 18.13.33	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 2.18.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1225	Ja/27/4	Yoga	Śubhacandra	—
1226	Nga/31/2/5	Yogī-rāsā	Jinadāsa	—
1227	Nga/44/19/9	Akṣara Battīsī	Bhagavatīdāsa	—
1228	Nga/47/4/52	,, Vavanī	—	—
1229	Nga/33/7	Anyamata Śloka	—	—
1230	Nga/47/4/44	Aṭhāī-Rāsā	Vinayakīrti	—
1231	Ta/14/32	,, ,,	—	—
1232	Ta/3/49	Bāraha-māsā	Vinodīlāla	—
1233	Nga/47/4/50	,, ,,	—	—
1234	Ja/40/2	Candra-śataka	—	—
1235	Nga/46/2/1	Careā-śataka	Dyānatarāya	—
1236	Nga/46/2/2	Caubola-pacīsī	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	21.5×14.4 50.22.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	12.3×16.6 5.13.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 10.8.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23.8×18.2 10.18.21	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.13.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22 5×15.0 4.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 6×18.0 6.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.5 16.13.34	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 12.13.28	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good	

1	2	3	4	5
1237	Ja/16/7	Dasa-bola-pacisi	Dyānatarāya	—
1238	Ja/35/7	,, ,, ,,	—	—
1239	Nga/46/2/3	Daśa-thānaCaubisi	Dyānatarāya	—
1240	Ja/35/1	Dhāla-gana	—	—
1241	Ja/16/3	,, ,,	—	—
1242	Ta/6/17	Dohā	Rūpa-canda	—
1243	Ja/26	Dohāvali	—	—
1244	Ja/27/2	,,	—	—
1245	Ja/28	,,	—	—
1246	Nga/31/4/10	Dwipancāśatikā	Banarsidāsa	—
1247	Nga/44/11	Futakara-Kāvya	—	—
1248	Ta/9/2	Jnāna-Sūryodaya Nāṭaka	Vādicandra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	23.3×19.0 6 15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11.5 7.16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.2×11 5 10 16.15	C	Good	
P.	D; H Poetry	23.3×19.0 9 15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 7.18.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22 0×15.0 4 18.15	C	Old	
P.	D; H Poetry	21 5×14.4 16.18.18	C	Old	
P.	D; H Poetry	21.0×14.7 4.18.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.3×12.4 13 25.20	C	Old	Opening pages are missing.
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	13.0×10.0 20.10.15	Inc	Old	
P.	D; Skt/ Poetry	19.0×14.5 25.15.17	C	Old 1928 V. S.	

1	2	3	4	5
1249	Ta/35/7	Jaina-rāso	—	—
1250	Ta/3/44	Jakarī	Bhūdharadāsa	—
1251	Ta/14/34	Jogī-Rāso	—	—
1252	Ta/3/55	Kavitta	—	—
1253	Ta/3/54	,,	—	—
1254	Ja/40/3	,,	Trilokacanda	—
1255	Nga/41/Ka	Kṛpana-Pacisī	—	—
1256	Ta/42/55	Māla-Pacīsī	—	—
1257	Nga/44/20	Nāmamālā	Nandadāsa	—
1258	Ja/65/4	Navaratna-Kavitta	—	—
1259	Nga/31/3/9	Nemi-Candrikā	—	—
1260	Nga/41/ba	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt. Skt. Poetry	15 5×12 0 22.10.19	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15 2×12 8 4 14 21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15 0 2.12 31	C	Good	
P.	P; H Poetry	22.5×15 0 2 12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22 0×13 5 2 12.31	C	Old	
P.	D, H. Poetry	14 5×11.0 7.13.16	C	Old	
P.	D, H. Poetry	32 3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.7×11.2 26 17 16	C	Old 1806 V. S	It is also called Mānamañjari
P.	D, H. Poetry	11.5×10.0 5.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18 2×13.5 168.14.16	C	Old	The mss. is damaged and very old.
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6.13.16	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1261	Nga/44/10/5	Nemicandrikā	—	—
1262	Nga/37/8	Neminātha Bārahamāsā	Vinodilāla	—
1263	Ja/16/4	,, Vivāha	,,	—
1264	Ta/3/47	,, ,,	,,	—
1265	Ja/35	,, ,,	,,	—
1266	Nga/47/4/73	Pakhavārā	Tulasī	—
1267	Ta/3/39	Paramārtha Jakarī	Śrīrāma	—
1268	Nga/46/1	Piṅgala	Śrīdhara	—
1269	Nga/47/4/51	Rājula Pacīsī	—	—
1270	Nga/44/10/4	,, ,,	Vinodilāla	—
1271	Nga/44/9/2	,, ,,	,,	—
1272	Nga/44/Pa	,, ,,	,,	—

(Rasa-Chand-Alaṅakāra, Kāvya)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18.5×13.1 15.13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.0×22.0 6.16.12	C	Old	
P.	D; H. Poetry	23.8×19.0 5.15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 4.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.2×11.5 6.16.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	30.0×15.8 16.10.37	C	Old	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	18.5×13.0 6.13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.0×10.5 11.12.12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 9.13.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1273	Nga/44/19/5	Rājula Pacisi	—	—
1274	Nga/44/19/2	Rastā	—	—
1275	Nga/47/4/81	,,	—	—
1276	Ja/65/8	,,	—	—
1277	Ja/40/1	Rūpacanda-Śataka	Rūpacanda	—
1278	Ja/58	Satasaiyā	Vṛndāvana	—
1279	Nga/45/5	Samkitadhikāra	—	—
1280	Ta/3/2	Sammeda Śikhara Māhātmya	—	—
1281	Nga/45/8	,, ,, ,,	—	—
1282	Nga/45/6	,, ,, ,,	Lohācārya	—
1283	Ja/46	Śikhara Māhātmya	Lālacanda	—
1284	Nga/46/5/2	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D H. Poetry	19.5×12.5 13.10.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 2.9. 5	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old 1853 V. S.	
P.	D; H. Poetry	11.5×10 0 12.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13 5 6.12.35	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.3×16.4 131.14.16	C	Old 1953 V S.	
P.	D; H. Poetry	23.5×9.0 31.20.58	C	Old 1702 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22 3×15.0 3.9.21	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	24.0×12 2 11.9 25	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.7×15.0 103.9.23	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	19.3×10.6 72.10.28	C	Old 1892 V. S.	All the pages are Damaged.
P.	D; H. Prose	23.1×15.1 70.18.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1285	Nga/47/4/45	Solaha-kārana-rāsā	Sakalakirti	—
1286	Ta/42/53	Śruta-pañcamī-rāsā	—	—
1287	Nga/46/5/1	Srī-pāla-darśana	—	—
1288	Ta/10	Subhāṣitāvali	—	—
1289	Nga/47/4/49	Bāhubali	—	—
1290	Ta/6/15	Viveka Jakarī	Rūpa-canda	—
1291	Nga/46/2/4	Vyavahāra-pacīsī	—	—
1292	Nga/26/11	Bhaktāmara-stotra-mantra	Mānatunga	—
1293	Nga/26/3	,, ,,	,,	—
1294	Nga//26/9	Caubisa tīrthankara mantra	—	—
1295	Ja/51/15	Gāyatri mantra	—	—
1296	Nga/43/3/1	Ghantā-karṇa-mantra	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.10.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P	D; H· Poetry	23.1×15.1 2.14.14	Inc	Good	
P	D; Skt. Poetry	15.0×13 0 178.6.14	C	Old	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 14.19.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good	
P.	D; H./ Skt. Prose/ Poetry	29 0×17.0 20.24.17	C	Good	Opening pages are missing.
P.	D; H./ Skt. Prose/ Poetry	20.0×16.4 49.13.22	C	Good	It has fourty eight mantra charts.
P.	D,H./Skt. Poetry	29.0×17.0 6 24.17	C	Good	
P	D; Skt. Prose	32.3×20.1 3.13.35	C	Good·	
P.	D; Skt. Poetry	17.0×13.0 1.9.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1297	Nga/43/6/7	Ghaṇṭā-karṇa-mantra	—	—
1298	Ta/5/6	Homa-Vidhi	—	—
1299	Nga/13,4	Jaina-gāyatrī	—	—
1300	Nga/13/3	Jaina-Saṁkalpa	—	—
1301	Nga/26/7	Jinendra-stotra	—	—
1302	Nga/48/11/7	Kāmadā-Yantra	—	—
1303	Nga/48/6/3	Kriyā-kāṇḍa-mantrā	—	—
1304	Nga/26/8	Mahālakṣmī-ārādhanā	—	—
1305	Ja/51/18	Mantra	—	—
1306	Ta/11/4	,,	—	—
1307	Nga/43/2	,, Saṁgraha	—	—
1308	Nga/48/11/6	Mantra-Yantra	Rāmacandra	—

(Mantra, Karmakāṇḍa)

6	7	8	9	10	11
P	D. Skt. Prose	17.3×13.0 2.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	25.0×15.0 7.25.18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.3×18.3 2.20.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.3×18.3 1.21.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 4.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	16.5×13 2 2.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. poetry/ Prose	15.7×9.2 10.7.18	C	Old	It is so demage that it cannot read and write.
P.	D;H.Skt. Poetry	29 0×17.0 2.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3×20.1 2.13.35	C	Good	It has mantra charts also.
P.	D; Skt. Prose	14.5×11.7 9.11.22	C	Good	
P.	D; Skt, Prose	16.4×13.4 10.13.16	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	16.5×13.2 1.11.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1309	Ta/3/51	Namokāra-mantrā	Vinodilāla	—
1310	Ta/42/84	Padmāvatī-daṅdaka	—	—
1311	Nga/43/4/2	,, Kalpa	Malliṣena	—
1312	Nga/43/6/2	,, ,,	—	—
1313	Ta/42/85	,, Kavaca	—	—
1314	Ta/42/104	,, ,,	—	—
1315	Nga/48/11/2	,, ,,	—	—
1316	Nga/26/12	,, ,,	—	—
1317	Nga/48/6/2	,, ,,	Rāmacandra	—
1318	Ta/30/2	,, Mantra	—	—
1319	Nga/43/6/12	,, ,,	—	—
1320	Ta/42/83	,, Paṭala	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12.31	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.3×14.0 11.10.20	C	Old	
P.	D; Skt Prose	17.3×13.0 7.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	32.3×19.0 1.33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×19.0 1.33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	16.5×13.2 2.12 17	C	Old	
P,	D;H./Skt. Prose	29.0×17.0 4.24.17	C	Good	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	15.7×9.2 6 7 18	C	Old	
P	D;H /Skt. Poetry	20.1×15.6 3.13 20	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	17.3×13.0 3.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1321	Ta/16/6	Pandraha-yantra-vidhi	—	—
1322	Nga/26/2	Pārśwanāthā-stotra-mantra	—	—
1323	Nga/43/6/4	,, ,,	—	—
1324	Nga/26/3	,, ,,	—	—
1325	Nga/48/20	Prāta-gāyatri	Harayaśa-miśra	—
1326	Nga/13/6	Sakali-karana vidhāna	—	—
1327	Nga/45/4	Sāmāyika-vidhi	—	—
1328	Nga/26/14	Śāntinātha-mantra	—	—
1329	Nga/43/6/6	Saraswati-mantrā	—	—
1330	Nga/47/5/7	,, ,,	—	—
1331	Nga/38/14	,, ,,	—	—
1332	Nga/26/4	,, stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	15 5×9.5 8 10.25	Inc	Old	
P	D; Skt. Poetry	29 0×17.0 2.24.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13 0 3.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17 0 3.14.16	C	Good	
P.	P; Skt Prose	16.0×10 3 37 7.19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.4×18 7 5 21.17	C	Good	
P	D, H. Prose	25 0×10 0 17.15.42	C	Old	
P	D,H./Skt. Prose	29 0×17 0 3 24 17	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 3 13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	16.5×16 0 2.12.19	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	15.7×9.00 6.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	29.0×17.0 2.24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1333	Nga/44/19/8	Solaha-kārana-mantra	--	—
1334	Ta/3/42	Sūtaka vidhi	—	--
1335	Ta/4/11	Tantra mant ā Samgarah	—	—
1336	Nga/20/15	Trivarnācāra-mantra	—	—
1337	Ta/39/18	Vaśikarana-adhikārā	—	—
1338	Ta/39/20	Vaś. ādhikāra	—	—
1339	Nga/43/8	Vrata-mantra	—	—
1340	Nga/43/6/11	Visarjana ,,	—	—
1341	Nga/48/16	Vivāha-vidhi	--	—
1342	Ta/2/2	Yantra-mantra-samgraha	—	—
1343	Ta/2/3	,, ,, ,,	—	—
1344	Ta/2/1	Aṣtānga hṛdaya	Vāgbhaṭṭa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	19.5×12 5 2.7.18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Old	
P.	D, Skt Prose	11 5×15 5 161 21 16	Inc	Old	
P	D;H Skt Prose	29 0×17 0 13 24 17	C	Good	
P	D, Skt Prose	20 0×12 0 2 17 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 2 16 1	C	Old	
P	D, Skt Poetry Prose	15 5×11 6 2 10 21	C	Old	
P	D, Skt Prose	17 3×13 0 2 12 12	C	Old	
P	D, Skt Prose	13 3×10 2 21 8 14	Inc	Old	1 to 3 and 6 or 7 pages are missing
P.	D, H Prose	20.5×17 1 139.25 22	C	Old	The mantras & tantras charts are availeble in the mss.
P.	D; H Prose	16 5×21 0 52.17.23	C	Old	There are so many yantra & mantrā charts in the mss.
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	28.6×18 5 183.22.24	C	Good	

1	2	3	4	5
1345	Ta/1/2	Cikitsā-śāstra	—	—
1346	Ta/1/1	„ sāra	—	—
1347	Ta/4/2	Jwara-hara-yantra	—	—
1348	Ta/4/6	Kuṭṭaka-karana chāyā vyavahāra	Bhāskarācārya	—
1349	Ta/4/1	Madana-vinoda-nighaṇṭu	Madanapāla	—
1350	Ja/33	Nāḍi-Prakāśa	—	—
1351	Ta/2/1/1	Nidāna	Mādhavācārya	—
1352	Ta/4/9/2	Panca-daśa Vidhāna	—	—
1353	Ta/1/3	Rāma-vinoda	—	—
1354	Ta/4/9	Rūpa-mangala	—	—
1355	Ta/4/8	Śāradā-tilaka saṭīka	—	—
1356	Ta/2/1/2	Sārangadhara Saṁhitā	Sārangadhara	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose/ Poetry	27.0×11.9 120.13 49	Inc	Old	Closing pages are missing.
P	D; H Prose/ Poetry	19.5×14.7 59 14.29	C	Good	
P	D; Skt. Prose	19.3×13.0 2 14.17	C	Good	
P.	D;Skt./H Prose/ Poetry	19 3×13.0 18 19.19	C	Old	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	19.3×13 0 183.14.17	C	Good 1912 V S.	
P	D; H. Prose	19 7×13.0 16.15.11	Inc	Old	
P	D; Skt Poetry	28 6×18 5 64 22 16	C	Old	
P,	D,Skt /H Prose Poetry	13 5×11 5 25 15 15	C	Old	
P	D; H. Poetry/ Prose	26 0×16.3 158 21 14	C	Good 1906 V. S.	
P	D;Skt /H Prose	15 8×13.3 74.13.18	C	Good	
P	D; Skt./ H. Poetry	15 8×13.3 163.13.18	C	Good 1676 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	28.6×18.5 61.23.22	C	Old	

1	2	3	4	5
1357	Ta/1/4	Vaidya-bhūṣaṇa	Nayanasukha	—
1358	Ta/4/10	„ manotsava	Banśīdhara Miśra	—
1359	Ta/1/4/1	Yoga-Cintāmaṇi	Harṣakīrti	—
1360	Ta/2/4	Yūnānī-Cikitsā	—	—
1361	Ta/42/99	Ācārya-bhakti	—	—
1362	Ta/3/50	Ādinātha-stuti	Vinodīlāla	—
1363	Nga/47/4/58	„ ārtī	—	—
1364	Nga/30/2/5	„ stotrā	—	—
1365	Nga/47/4/53	Ādityanātha ārtī	—	—
1366	Ja/51/24	Ambikā-devi-stotra	—	—
1367	Nga/26/5	Aṅka-garbha-ṣadāracakra	Devanandī	—
1368	Nga/47/4/72	Ārati	Nirmala	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	24.0×16.0 11.34.20	C	Old 1794 V. S.	
P	D; Skt. Poetry	15.8×13.3 81.13.18	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	24.0×16.0 134.22.22	C	Old 1794 V. S.	
P.	D; H. Prose	20.5×17.5 98.23.22	C	Old	
P.	P; Skt./ Pkt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 3.12.31	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 1.9.26	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	32.3×20.0 1.13.35	C	Good 1959 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 4.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1369	Ta/18/3	Ārati	—	—
1370	Ta/18/10	,,	Dyānatarāya	—
1371	Ta/3/4	,,	—	—
1372	Nga/44/17	,, Saṁgraha	—	—
1373	Ta/39/2	Aṣṭaka	—	—
1374	Ta/6/9	Bhajana	—	—
1375	Nga/12/1	Bhajanāvalı	Ajita-Dāsa	—
1376	Nga/12/2	,,	,,	—
1377	Nga/12/3	,,	,,	—
1378	Nga/16/9	,,	—	—
1379	Ja/31	Bhajana-Saṁgraha	Ajita-Dāsa	—
1380	Nga/13/5	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅga	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D. H Poetry	11.0×4.0 2.13.19	C	Old	
P.	D. H Poetry	11.0×11.0 2.12.17	C	Old	
P.	D; H Poetry	22.5×15.0 2.12.32	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.0×16.0 4.13.21	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20.0×12.0 2.19.20	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.2×1[illegible].7 2.20.17	C	Old	
P.	D, H poetry	25.0×22.0 445.15.24	C	Old	
P.	D, H Poetry	21.0×26.0 25.14.26	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.4×22.0 42.22.26	C	Old	
P.	D; H. Poetry	13.0×15.0 5.16.21	C	Good	
P.	D; H, Poetry	20.5×12.7 12.16.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	24.2×18.6 5.21.18	C	Good	

1	2	3	4	5
1381	Nga/26/1/1	Bhaktāmara Stotra	Mānatunga	—
1382	Nga/28/2	,, ,,	,,	—
1383	Nga/38/1	,, ,,	,,	—
1384	Ta/3/10	,, ,,	,,	—
1385	Ta/42/63	,, ,,	,,	—
1386	Ta/4/2	,, ,,	,,	—
1387	Nga/46/12/2	,, ,,	,,	—
1388	Nga/45/2	,, ,,	,,	Hemarāja
1389	Nga/47/4/8	,, ,,	,,	—
1390	Nga/48/21/1	,, ,,	,,	—
1391	Ta/9/5	,, ,,	,,	Sivacandra
1392	Ta/14/26	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 5 21.16	C	Good	
P	D; Skt Poetry	14.6×14 1 6 13 18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15 8×9.0 7 9 22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22 5×15.0 5 12 18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19 0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	23 2×19.5 7 10 21	C	Old	
P	D; Skt Poetry	22 5×13 0 7 18.13	C	Old	
P.	D;Skt /H. Poetry	25 2×12.1 34 9.34	C	Good 1849 V S.	
P.	D; Skt Poetry	20 6×18.0 6 16 18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	16.5×12.5 10 12.12	C	Old	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	19.0×14.5 15.19.18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15.2×12.8 8.11.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1393	Nga/20/5	Bhaktāmara stotra	Mānatuṅgā	
1394	Nga/47/4/15	,, ,,	—	—
1395	Ta/18/13	,, ,,	—	—
1396	Ta/31	,, bhāṣā	Hemrāja	—
1397	Nga/41/2/5	,, Stotra	,,	—
1398	Ta/6,3	,, ,,	,,	—
1399	Ja/35/4	,, ,,	,,	—
1400	Nga/20/6	,, ,,	,,	—
1401	Nga/25/1	,, ,,	,,	—
1402	Ja/52	,, Vacanikā	Mānatuṅga	—
1403	Nga/47	,, Stotra Vacanikā	Mānatuṅga	—
1404	Nga/48/6/7	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt. Poetry	25.6×15.0 7.14.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 6 16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	11 0×11 0 9 12.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.5×16.1 6.12.25	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 12.8.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 5.19 20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11.5 8.16.15	C	Good	
P.	D; H Poetry	25 6×15.0 7 16.16	C	Good	
P	D; H. Poetry/	28.4×17.0 4.24.17	C	Good	
P	D; H. Poetry	27.5×12.5 29.11.38	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.1×16.3 47.10.27	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.7×9.2 25.7.18	Inc	Very Old	

1	2	3	4	5
1405	Ta/30/4	Bhaktāmara ṭīkā	Jinasāgara	—
1406	Nga/44/13/5	,, stotra	Mānatanga	—
1407	Ta/14/16	Bhakti saṃgraha	—	—
1408	Nga/13/7	Bhairavāṣṭaka	—	—
1409	Ta/42/78	,,	—	—
1410	Ta/19/1	Bhairava stotrā	—	—
1411	Ta/9/9	Bhūpāla caturaviṃśati stotrā	Śivacandra	—
1412	Nga/47/4/11	Bhūpāla caubīsī	-	—
1413	Ta/4/6	,, ,,	Bhūpalakavi	—
1414	Ta/42/67	,, ,,	,,	—
1415	Nga/38/5	,, stotra	,,	—
1416	Nga/26/1/6	,, caubīsī stotra	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20 1×15.6 7.13.20	C	Good	
P.	D;H /Skt. Poetry	13.5×8.5 18.6.13	C	Good	
P.	D; Skt. Pkt. Poetry	15.2×12 8 51 11.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	24.2×18.7 1.21.23	C	Good	
P.	P; Skt. Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	10 3×9.5 6 7.8	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	19 0×14.5 11.20.19	C	Old 1927 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20 6×18.0 5 17.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23 2×19.5 6.11.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 6.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 3.21.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1417	Nga/25/5	Bhūpāla stotra	—	—
1418	Nga/47/4/12	,, caubīsī bhāṣā	—	—
1419	Nga/47/4/57	Bīsa-viraha-māna-ārati	—	—
1420	Nga/44/10/8	Brahma-lakṣaṇa	—	—
1421	Ta/42/87	Caityālaya stotra	—	—
1422	Ta/42/10/7	Cakreśwarī ,,	—	—
1423	Nga/43/1	,, ,,	—	—
1424	Nga/43/3,5	Candra-prabha ,,	—	—
1425	Nga/48/6/5	,, ,,	—	—
1426	Ta/42/98	Cāritra bhakti	—	—
1427	Nga/48/8/2	Caturviṁśati stotra	—	—
1428	Nga/43/6/8	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 2 24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.17.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2 13.22	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19 1 1.33.37	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	14.9×11 2 4 8 19	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	17 0×13.0 3 9 20	C	Old	
P	D; Skt Poetry	15.7×9.2 4.7.18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19 0 1 33.37	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	9.6×6.0 6.4.8	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	17.3×13.0 2.13.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1429	Nga/43/3/2	Caturviṁśati Stotra	—	—
1430	Nga/44/10/2	,, Jina Stotra	—	—
1431	Ta/18/9	Caubīsa tīrthaṅkara pada	—	—
1432	Ta/42/69	Cintāmaṇi Stotra	—	—
1433	Ja/61	,, Pārśwanātha Stotra	Dyānatarāya	—
1434	Nga/44/10/25	,, ,, ,, ,,	—	—
1435	Nga/47/4/66	Caubīsa Jina Ārtī	Bhairondāsa	—
1436	Nga/47/4/74	,, ,, ,,	—	—
1437	Ja/23/3	,, Daṇḍaka Vinatī	Daulatarāma	—
1438	Nga/47/4/32	Darśana Jnāna Caritra Āratī	Dyānatarāya	—
1439	Ta/6/5	Darṣana-Stuti	—	—
1440	Ta/42/105	Darśanāṣṭaka	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry	17.0×13.0 3.9.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 1.11.28	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.0×11 0 11.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33 37	C	Good	
P.	D;Skt /H Poetry	22 0×13 0 2 13 11	C	Old	
P	D; Skt Poetry	18.5×13.1 4 12 22	C	Old	
P.	D, H poetry	20.6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D; H. Poetry	22 4×14.2 6.18.15	C	Old	
P.	D; H / Skt Poetry/ Prose	20 6×18.0 7 16.18	C	Old	
P.	D; H, Poetry	22.2×14.7 2 21.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3		4	5
1441	Ta/42,89	Deva-stavana		—	—
1442	Nga/38/4	Ekibhāva-stotra		Vādirāja	—
1443	Nga/26/1/4	,,	,,	,,	—
1444	Ta/42/66	,,	,,	,,	—
1445	Ta/4/5	,,	,,	,,	—
1446	Nga/44,10/10	,,	,,	,,	—
1447	Nga/47/4/10	,,	,,	,,	—
1448	Nga/44/15	,,	,,	—	—
1449	Nga/48/21/3	,,	,,	,,	—
1450	Ta/9/7	,,	,,	—	Sivacandra
1451	Nga/47/4/12	,,	,,	,,	—
1452	Nga/25/2	,,	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 5.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 3.21.17	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	P; Skt. Poetry	23.2×19.5 6.11.20	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 4.13.22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20.6×18.0 4.17.18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15.6×9.2 19.7.19	Inc	Old	It has no opening and closing.
P	D, Skt Poetry	16.5×12.5 7.12.12	C	Old	
P.	D, Skt. Prose	19.0×14.5 12.19.19	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 4.24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1453	Nga/26/6	Ganadhara Stuti	—	—
1454	Nga/30/2/4	Gautama-Swāmi Stotra	—	—
1455	Nga/48/8/1	Ghaṅtā-Karna ,,	—	—
1456	Nga/44/10/6	Gurubhakti	Bhūdharadāsa	—
1457	Ta/14/31	,,	—	—
1458	Ta/3/9	Guruvinati	Bhūdharadāsa	—
1459	Nga/45/3	Gunāvali	—	—
1460	Ta/9/4	Gunāṣṭaka	Parmānanda	—
1461	Nga/39	Jaina-pada-Saṁgraha	—	—
1462	Nga/44/10/26	Jinacaitya Namaskāra	—	—
1463	Ja/38/3	Jinadeva Stuti	—	—
1464	Ta/42/7	Jinapañjara Stotra	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	29.0×17.0 3.24.17	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 1.9 26	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	9 6×6.0 4.4.8	C	Old	
P.	D; H Poetry	18.5×13.1 2 13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.12.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12 36	C	Good	
P.	D; H Poetry	25 0×11.0 18 15 39	C	Old	
P,	D; H Poetry	19 0×14.5 5 14 17	C	Old	
P	D; H. Poetry/	11 0×17.5 183.9.23	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D, Skt. Poetry	18 5×13.1 3.13.22	C	Old	
P	D; H. Poetry	22.0×13.0 2.14.32	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1465	Ta/18/16	Jinapanjara Stotra	—	—
1466	Nga/48/18/1	,, ,,	—	—
1467	Ta/42/70	Jinarakṣā Stavana	—	—
1468	Ja/50	Jinasahasranāma	Śikharacanda	—
1469	Ta/3/16	Jinendra darśana Stotra	—	—
1470	Ta/3/38	Jina-darśana	Nawala	—
1471	Ta/3/17	,, ,,	—	—
1472	Nga/26/13	Jwālāmālinī Stotra	Candraprabha	—
1473	Nga/43/3/6	,, ,,	—	—
1474	Nga/43/6/3	,, ,,	—	—
1475	Nga/48/2	,, ,,	—	—
1476	Nga/48/6/8	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	11.0×11.0 4 12 17	C	Old	
P	D; Skt Prose/ Poetry	40 0×11.4 1 52.16	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	32 2×20.2 90 13.37	C	Good 1957 V. S.	Copied by Bhagawānadatta.
P.	D; Skt Poetry	22 5×15.0 1 12 36	C	Good	
P	D, H. Poetry	22.5×15.0 3.12.31	C	Old	
P.	D; H Poetry	22.5×15.0 2 12.36	C	Good	
P,	D;H.Skt Poetry	29.0×17 0 3.24 17	C	Good	
P	D; Skt. Prose/ Poetry	17.0×13.0 4.9.21	Inc	Old	
P	D; Skt. Prose	17.3×13.0 2.12.11	C	Old	
P	D; Skt. Prose	12.8×9.5 6.10.12	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	15.7×9.2 4.7.18	C	Old	Damaged.

1	2	3	4	5
1477	Nga/48/5	Jwālā-mālinī Stotra	—	—
1478	Ta/42/90	,, ,,	—	—
1479	Nga/26/1/3	Kalyāna-mandira Stotra	Kumudacandra	—
1480	Nga/47/4/7	,, ,, ,,	,,	—
1481	Nga/48/21/2	,, ,, ,,	,,	—
1482	Ta/4/3	,, ,, ,,	,,	—
1483	Ta/42/64	,, ,, ,,	,,	—
1484	Nga/38/2	,, ,, ,,	,,	—
1485	Ta/9/6	,, ,, ,,	,,	Pandit Śivacandra
1486	Nga/44/10/1	Kalyāṇamandir Stotra	Banārasidāsa	—
1487	Ta/18/12	,, ,,	,,	—
1488	Nga/25/3	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Prose	14 3×11 2 8.7.18	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×19 0 2.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	29 0×17.8 5 21.17	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20 6×18.0 6.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16 5×12 5 10.12.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.5 7.11.20	C	Old	
P.	D; Skt poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 8 9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	19.0×14.5 16 20.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.5×13.0 5.11.28	C	Good	
P.	D; H, Poetry	11.0×11.0 8 12.17		Old	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 3.24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1489	Nga/47/4/16	Kalyāṇa-mandira	—	—
1490	Nga/44/13/3	,, ,,	—	—
1491	Nga/43/6/7	Kṣetrapāla Stotra	—	—
1492	Ta/42/106	,, ,,	—	—
1493	Nga/48/4	,, ,,	—	—
1494	Ta/42/103	,, ,,	—	—
1495	Nga/26/1/8	Laghusahasranāma	—	—
1496	Nga/47/4/5	,, ,, ,,	—	—
1497	Ta/18/8	,, ,, ,,	—	—
1498	Nga/41/Na	,, ,, ,,	—	—
1499	Nga/13/8	Lakṣmī Stotra	—	—
1500	Ta/42/76	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; H Poetry	13.5×8 5 12 6.13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	17 ? ×13.0 5 13.13	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×19.0 2.33 37	C	Good	
P.	P; Skt. Poetry	16.4×10.0 3 7 18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	32 3×19 0 2.33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	29 0×17 8 5.21 17	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	20 6×18.0 7 16.18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	11 0×11.0 5 12 13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14 5×11 0 3 13 16	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	24 3×18.0 2 21 20	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19 0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1501	Nga/26/1	Lakṣmi-Stotra	—	—
1502	Nga/44/4	Mahāvira-Ārati	—	—
1503	Ta/30/8	Maṇḍaloddhāra Stotra	—	—
1504	Ta/3/41	Mangala Ārati	Dyānatarāya	—
1505	Nga/43/6/5	Manibhadra Stotra	—	—
1506	Ta/42,77	Maṅgalāṣṭaka	—	—
1507	Ta/39/23	Mangala-jina-darśana	Rūpacandra	—
1508	Ta/3/7	Muniśwara Vinati	Bhūdharadāsa	—
1509	Nga/26/1/7	Namaskāra	Śrīpāla	—
1510	Nga/47/4/4	,,	,,	—
1511	Ta/42/102	Nandiśwara-Bhakti	—	—
1512	Nga/47/2	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt. Poetry	29.0×17.7 1.24.16	C	Good	
P	D; H. Poetry	21 0×16.0 3 13.14	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	20 1×15.0 2 13 20	C	Good	
P.	D; H Poetry	22.5×15 0 2 12 31	C	Old	
P	D, Skt H Prose Poetry	17 0×13 0 5.13 11	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 0×1? 0 1.24 18	Inc	Old	
P,	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P	D, H Poetry	29.0×17.8 3 21 17	C	Good	
P	D; H Poetry	20 6×18 0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Pkt. Poetry/ Prose	20.2×15.8 8.10.27	C	Old	

1	2	3	4	5
1513	Ta/6/12	Naraka Vinatí	Gunasāgara	—
1514	Nga/48/14	Nārāyaṇa-lakṣmi-stotra	—	—
1515	Ta/42/74	Nava-graha-stotra	—	—
1516	Ta/42/39	,, ,,	—	—
1517	Ta/18/14	Navakāra-dhāla	—	—
1518	Nga/43/6/9	,, Stotra	—	—
1519	Ta/42/79	Navakāra-mantra-Stotra	—	—
1520	Nga/47/4/65	Nemināthа Ārati	Bhairondasa	—
1521	Nga/48/6/4	Neminātha Stotra	—	—
1522	Nga/38/11	Nijāmani	Brahma Jinadāsa	—
1523	Ta/42/100	Nirvāṇa Bhakti	—	—
1524	Ta/6/11	,, Kāṇḍa	Bhagavatīdāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. H. Poetry	22.2×14.7 4.18.15	C	Old	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	13.8×12.0 29.10 13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	11 0×11.0 4.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 3.13.13	C	Old	
P	D; Skt poetry	32 3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 6×18.0 1.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.2 3.7.18	C	Old	The mss. is totely damaged.
P.	D; H. Poetry	15 7×9.0 7.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 3.18.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1525	Nga/44/19/6	Nirvāna-Kānda	Bhagavatidāsa	—
1526	Nga/47/4/35	,, ,,	,,	—
1527	Nga/47/5/11	,, ,,	,,	—
1528	Ja/35/3	,, ,,	,,	—
1529	Nga/25/7	,, ,,	,,	—
1530	Nga/26/1/11	,, ,,	,,	—
1531	Ta/6/21	,, ,,	—	—
1532	Nga/48/26/6	,, ,,	—	—
1533	Nga/26/1/10	,, ,,	—	—
1534	Nga/33/5	,, ,,	—	—
1535	Nga/47,4 34	,, ,,	—	—
1536	Ta/47/5/10	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 5 10 27	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 6×18.0 3.16 18	C	Old	
P.	D; H Poetry	16 5×16 0 4 12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.2×11 5 3 16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	28 4×17.0 2 24.17	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	29 0×17.8 2 26 26	C	Good	
P	D, Pkt. Poetry	22 2×14.7 3.18 21	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	16 5×13 5 3 8.24	C	Good	
P.	D; Pkt Poetry	29 0×17.8 2 23.16	C	Good	
P.	D; Pkt Poetry	22 7×15.7 3 18.15	C	Good	
P	D; Pkt, Poetry	20.6×18.0 3 16.18	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	16.5×16.0 3.12.19	C	Old	

1	2	3	4	5
1537	Ta/44/20	Nirvâna Kāṇda	—	—
1538	Ta/3/35	,, ,,	Bhaiyā Bhagavatidāsa	—
1539	Nga/44/13/1	,, ,,	—	—
1540	Nga/26/1/12	Oṁkārastuti	—	—
1541	Nga/47/4/61	Pada	—	—
1542	Nga/47/5/8	,,	—	—
1543	Ta/18/15	,,	Kusalsuri	—
1544	Ta/14/38	,,	—	—
1545	Ta/30/3	,,	—	—
1546	Ta/28/2	,,	Amicanda	—
1547	Ta/27/2	,,	Jinadāsa	—
1548	Nga/44/13/9	,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P	D; H. Poetry	22 5×15 0 5.12 31	C	Old	
P	D; Skt Poetry	13 5×8 5 4.6 13	C	Good	Starting three pages are missing.
P.	D; Skt Poetry	29 0×17 8 2 23 17	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16 0 1.12 19	C	Old	
P	D; H. Poetry	11 0×11.0 4 12 17	C	Old	
P,	D; H Poetry	15 2×12 8 2.12 21	C	Old	
P	D; H. Poetry	20 1×15.6 2 13 20	C	Old	
P	D; H. Poetry	19.8×17.2 1.14.18	C	Good 1948 V. S.	
P.	D; H. Poetry	19.7×16.5 2.14.21	C	Good 1948 V. S.	Copied by Amícanda.
P.	D; H. Poetry	13.5×8.5 3.6.13	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1549	Nga/48/23/6	Pada	—	—
1550	Nga/48/4	,,	—	—
1551	Nga/44/19/7	,,	—	—
1552	Nga/37/2	,,	—	—
1553	Ta/3/84	,,	—	—
1554	Ja/65/6	,,	Jagarāma	—
1555	Nga/37/13	,,	Ramcandra	—
1556	Ja/65	,,	Jagarāma	—
1557	Ja/65/2	,,	—	—
1558	Nga/37/12	,,	Vṛndāvana	—
1559	Ja/29	,,	—	—
1560	Nga/31/1	Padasaṅgraha	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. H. Poetry	16.8×12.8 1.11.12	C	Old	
P.	D; H. Poetry	13.5×12.0 2.8 12	C	Good	
P.	D; H Poetry	19.5×12.5 3.9 23	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	17.4×11.0 5.7.17	C	Good	
P.	D; H Poetry	22 5×15.0 6.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 53 10.14	C	Good	
P	D; H. poetry	22 0×13.0 8 15.13	C	Old	
P.	D; H. Poetry	11 5×10 0 59.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.5×10 0 4 10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22 0×13.0 4.14.13	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.1×14.0 3 15.15	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; H. Poetry	14.8×14.8 82.13.15	C	Good	

1	2	3	4	5
1561	Ja/21/1	Pada saṁgraha	—	—
1562	Ja/21/2	Pada vinatí	—	—
1563	Nga/25/12	Pada-hajūrē	Dyānatarāya	—
1564	Nga/37/10	Pada holí	—	—
1565	Ja/51/14	Padmāvati aṣ to ttara śatanāma	—	—
1566	Nga/43/6/1	Padmāvati stotra	—	—
1567	Nga/48/11/3	,, ,,	—	—
1568	Ta/39/5	,, ,,	—	—
1569	Ta/42/82	,, ,,	—	—
1570	Ta/30/5	,, ,,	—	—
1571	Ja/51/17	,, ,,	—	—
1572	Nga/25/15	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.0×15.3 12 11.14	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; H. Poetry	22.8×18 2 31.16.13	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	28.4×17 0 0.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.0 4.15.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×20.1 2 13 35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16 3×13.0 10 13 12	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	16 5×13 2 8 T3.16	C	Old	
P	D; Skt Poetry	20 0×12 2 5 19 20	C	Old	
P.	D. Skt. Poetry	32 3×19.0 2.33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	20 1×15.6 2 13.20	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×20.1 1 13 35	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	28 4×17.0 22 24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1573	Nga/25/9	Padmāvati stotra	—	—
1574	Ja/51/12	,, sahastranāma	—	—
1575	Nga/48/11/1	,, ,,	—	—
1576	Nga/46/13	,, ,,	—	—
1577	Ta/42/36	,, ,,	—	—
1578	Ta/39/15	,, ,,	Sevārāma	—
1579	Nga/44/12/2	,, vinati	—	—
1580	Nga/48/1/4	,, ,,	—	—
1581	Nga/44/17	Padmanandipanca-vimśatikā	Padmanandi	—
1582	Nga/43/3/3	Pānco-namaskāra stotra	—	—
1583	Ta/16/4	,, ,,	—	—
1584	Nga/44/10/11	Parameṣṭhi stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	28.4×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32 3×20 1 7.13 35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×13.2 14.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	13.0×11.6 1.7.10	Inc	Old	Only first page is available.
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 3 33 37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20 0×12 0 14 22 17	C	Old 1827 V S.	
P.	D, Skt / H. Poetry	32 3×20 2 3 23.17	C	Old	
P.	D; H Poetry	14.0×11 7 8.10.15	C	Old	
P.	D; H. Prose	11 0×10.2 12 11.9	Inc	Good	
P.	D, Skt. Poetry	17.0×13 0 5 9 19	C	Old	
P	D, Skt Prose	1[illegible].5×9.5 13.8 17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Good	

1	2	3	4	5
1585	Ta/6/2	Paramānanda stotra	—	—
1586	Nga/44/10/15	,, ,,	—	—
1587	Ta/42/86	Pārśwanātha stotra	—	—
1888	Ta/42/74	,, ,,	—	—
1589	Nga/48/6/6	,, ,,	—	—
1590	Nga/43/3/4	,, ,,	—	—
1591	Nga/30/2/3	,, ,,	—	—
1592	Nga/41/2/8	,, ,,	Dyānatarāya	—
1593	Ta/3/53	,, stuti	Vinodilāla	—
1594	Ta/42/92	,, stotra	—	—
1595	Ta/18/5	Pārśwanāṭhāṣṭaka	—	—
1596	Ta/30/1	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	22.2×14.7 2.18 20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 3 13.22	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	32 3×19.0 1.33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	15 7×9 2 3.7 18	C	Old	The mss. is totely damaged.
P.	D, Skt. Poetry	17 0×13 0 2.9.18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	19 0×14 8 3 9 20	C	Old	
P.	D,Skt /H Poetry	14 5×11 0 3 9 17	C	Good	
P	D; H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	D; Skt Poetry/ Prose	32.3×19.0 2.33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	11.0×11 0 3.13.19	C	Old	
P.	D;H /Skt. Poetry	20.1×15.6 3.13.20	C	Old	Starting one to eleven Pages are missing.

1	2	3	4	5
1597	Nga/47 4/56	Pārśwajina-ārati	Bhairoadāsa	—
1598	Nga/48/20	Pratyaṅgirā-siddhi-mantra-stotra	—	—
1599	Ta/42/81	Ṛṣi-maṇḍala Stotra	—	—
1600	Nga/31/1/7	,, ,,	—	—
1601	Nga/47/4/17	,, ,,	—	—
1602	Nga/26/10	,, ,,	—	—
1603	Nga/13/5	,, ,,	—	—
1604	Nga/31/2/3	Sādhū-Vandanā	Banāiasīdāsa	—
1605	Ta/42/16	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	—
1606	Nga/26/1/13	,, ,, ,,	,,	—
1607	Ta/19/2	,, ,, ,,	,,	—
1608	Ta/14/25	,, ,, stavana	Āśādhara sūri	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.6 x 18.0 2 16.18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry/ Pros	17 9 x 18.5 24 7.22	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32.3 x 19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	12.3 x 16 6 7 16 14	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20 6 x 18 0 7 16 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	29 0 x 17 0 4.24 17	C	Good	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	15 4 x 12 3 26 13 15	Inc	Old	Opening first page is missing.
P	D; H Poetry	12 3 x 16.6 4 18 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3 x 19 0 4 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	29 0 x 17.8 6 23 17	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	10.3 x 9.5 54.7.9	C	Good	Sixteen pages have no folio and paging.
P.	D; Skt Poetry	15.2 x 12.8 14.11.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1609	Ta/18/7	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	—
1610	Nga/31/2/8	" " "	—	—
1611	Ta/29	" "	—	—
1612	Ta/42/68	Samantā-bhadra-stotra	—	—
1613	Ta/3/5	Sammeda-śikhara-stuti	—	—
1614	Ta/39/16	Sammedācala stotra	—	—
1615	Nga/48/13	Sandhyā	—	—
1616	Nga/47/4/58	Śantijine ārati	—	—
1617	Ja/29/1	Śanti-stuti	—	—
1618	Ta/42/73	Śāntināthāṣṭaka	—	—
1619	Ta/3/11	Śāradāṣṭaka	Banārsidāsa	—
1620	Nga/44/10/20	Śāradā stūti	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	11 0×11.0 26.10.10	Inc	Old 1842 V. S.	
P.	D; H Poetry	12 3×16.6 9.16 16	Inc	Old	Last śataka is missing.
	D; H. Prose	19.5×15 0 50 12.19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 4 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 1.5 35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 0×12.0 3 21.18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	16 0×10 2 11 6 19	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D; H Poetry	21.1×14 0 2.12 14	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; H Poetry	22.5×15 0 2 12.35	C	Good	
P.	D: Skt. Poetry	18.5×13.1 5.13.22	C	Old	

1	2	3	4	5
1621	Ta/42/18	Saraswati stuti	Malaya Kirti	—
1622	Ta/42/75	,, stotra	—	—
1623	Nga/48/9	,, ,,	—	—
1624	Ta/40	Śāstra Vinati	—	—
1625	Ta/42/96	Siddha-bhakti	—	—
1626	Ta/18/17	Sitā-Vinati	—	—
1627	Nga/41/2/7	Śripāladarśana	—	—
1628	Nga/37/1	Śripāla Vinati	Sripālarāja	—
1629	Ta/42/97	Śruta-bhakti	—	—
1630	Ja/16/1	Stotra	—	—
1631	Nga/47/4/31	Sthāpanā Ārati	—	—
1632	Ja/32	Stuti	Haridāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	14.7×11 7 6 14 12	C	Old	
P.	D; H Poetry	13 7×9.7 3 11 10	C	Old	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	11 0×11 0 13 9.8	C	Good	
P.	D, H poetry	14.5×11 0 5 9 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	9 8×15 7 5 13 11	C	Good	
P.	D; Skt / Pkt. Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	23 3×19 0 4 15.18	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.6×18 0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.5×15 0 5.15.21	C	Good 1965 V. S.	

1	2	3	4	5
1633	Ta/42/88	Suprabhāta stotra	—	
1634	Ja/51/16	Sūrya-sahasra-nāme	—	—
1635	Nga/47/4/26	Swayambhū stotra	—	—
1636	Ta/42/10	,, ,,	—	—
1637	Ta/3/30	,, ,,	—	—
1638	Ta/14/23	,, ,,	—	—
1639	Ja/29/4	Vinati	—	—
1640	Nga/25/8	,,	—	—
1641	Nga/37/11	,,	Vrndavana	—
1642	Ja/45/5	,,	Bhūdharadāsa	—
1643	Ta/3/40	,,	—	—
1644	Ta/42/29	,,	Jnánaságara	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 3 13 35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 6×18.0 3.16 18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	P; Skt Poetry	22.5×15.0 3 12 31	C	Good	
P	D; Skt Poetry	15 2×12.8 20.11.15	C	Old	
P.	D, H Poetry	21 1×14 0 16 13 13	C	Good	
P.	D, H. Poetry	28 4×17 0 3 24 17	C	Good	
P.	D; H Poetry	22 0×13 0 5 15 14	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.0×11.3 3 10 23	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12 31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1645	Nga/48/1/3	Vinati	—	—
1646	Ta/30/6	,,	Harṣakīrti	—
1647	Nga/48/23/5	,,	—	—
1648	Nga/44/19/3	,,	—	—
1649	Nga/44/12/3	,,	—	—
1650	Nga/47/4/75	,,	Bhūdharadāsa	—
1651	Nga/44/10/7	,,	—	—
1652	Ta/3/8	Vinati-tribhuvana swāmi	—	—
1653	Nga/44/10/9	Viṣāpahāra stotra	Dhananjaya Kavi	—
1654	Nga/38/3	,, ,,	,,	—
1655	Nga/26/1/5	,, ,,	,,	—
1656	Nga/48/21/4	,, ,,	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	11.7×14.0 5.10.15	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.1×15 6 2.13.20	C	Good	
P.	D; H Poetry	16 8×12.8 3 11 12	C	Old	
P.	D; H Poetry	19.5×12.5 3 10 19	C	Old	
P.	D; H Poetry	32.3×20 4 4.23 17	C	Old	
P	D; H. Poetry	20 6×18.0 5.16.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	18.5×13.1 2 13 22	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 5×15.0 2.12.31	C	Old	
P	D; Skt Poetry	18.5×13 1 5 13 22	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	15.8×9.0 6 9.22	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	29.0×17 8 4 21.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×12.5 8.12.12	C	Old	

1	2	3	4	5
1657	Ta/9/8	Viṣāpahāra stotra	Dhanañjaya Kavi	—
1658	Ta/4/4	,, ,,	,,	—
1659	Ta/42/65	,, ,,	,,	—
1660	Nga/47/4/9	,, ,,	,,	—
1661	Nga/44/10/3	,, ,,	—	—
1662	Nga/47/4/14	,, ,,	—	—
1663	Nga/44/12/4	,, ,,	—	—
1664	Nga/44/13/2	,, ,,	—	—
1665	Nga/25/4	,, ,,	—	—
1666	Ja/35/5	,, ,,	—	—
1667	Ja/16/4	,, ,,	—	—
1668	Nga/47/4/6	Vrhat-sahastra-nāma	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	19.0×14.5 13.19.20	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	23.2×19 5 6.11 20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 5.16.17	C	Old	
P.	D; H Poetry	12 5×13 1 4.12.23	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×20 2 4 23.17	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	13 5×8.5 13.6.13	C	Old	
P.	D; H Poetry	28.4×17 0 4 24 17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11.5 5 16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.3×19 0 4.15.18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 13.16.14	C	Old	

1	2	3	4	5
1669	Nga/47/8/3	Vṛhat-svayambhū	Samanta-bhadra	—
1670	Nga/43/70	,, ,, stotra	,,	—
1671	Nga/26/1/9	,, ,, ,,	,,	—
1672	Ta/42/101	Yoga bhakti	—	—
1673	Nga/30/2/7	Abhiṣēka-vidhi	—	—
1674	Nga/47/5/1	Ādinātha-pūjā	—	—
1675	Nga/41/Ta	,, ,,	—	—
1676	Nga/41/Dha	Ādityawāra-pūjā	—	—
1677	Nga/27/3	Ādityavāra-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1678	Ta/39/22	Ākṛtrima-caityālaya-Ārati	—	—
1679	Ta/3/22	,, ,, Arhya	—	—
1680	Nga/26/2/8	,, ,, pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ H. Poetry/ Prose	20.8×16.3 18 15.18	C	Old	
P.	D; Skt./ H. Poetry/ Prose	17 6×13 0 22 12.21	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17 8 13 23 17	C	Good	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	32.3×19 0 1.33.37	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	19.0×14 8 1 9.26	Inc	Old	It has no closing.
P	D, Skt. Poetry	16.5×16 0 4.12.19	C	Old	
P.	D, H Poetry	14.5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	D;Skt /H Poetry	14 5×11 0 2 13 16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	27 3×17 6 15 10 31	C	Good	
P.	D; Pkt Poetry	20.0×12 0 1 24.18	C	Old	
P	D; Skt, Poetry	22 5×15 0 1 12 32	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	30.3×17 5 2.16.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1681	Ta/42/30	Ananta-jina-pūjā	—	
1682	Ta/42/49	Anantā-pūjā-vidhi	—	—
1683	Ja/51/22	,, ,, ,,	—	—
1684	Nga/44/10/12	Ari-hanta-dakṣiṇī	—	—
1685	Ta/39/6	Aṣṭabījakṣara-pūjā	—	—
1686	Ta/14/28	Aṣṭānhikā-pūjā	—	—
1687	Ta/35/6	,, ,,	—	—
1688	Ta/42/26	,, ,,	—	—
1689	Nga/47/8/15	,, ,,	—	—
1690	Ta/3/33	,, ,,	Dyānatarāya	—
1691	Nga/47/4/24	Aṭhāī-pūjā	,,	—
1692	Nga/27/5	Bāhubalī-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry/ Prose	32.3×19.0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3×20.1 2.13.35	C	Good	
P.	D; H Poetry	18.5×13.1 4.13.32	Inc	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20 0×12.2 4.19 20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15 2×12.8 12.12.18	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt Poetry	15 5×12 6 11 10 16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19.0 3.33 37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20.8×16 3 22 15.17	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	22 5×15 0 7 12.31	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 8.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.5×30.5 6 21.20	C	Good	

1	2	3	4	5
1693	Nga/47/8/7	Bāhubali-muni-pūjā	—	—
1694	Nga/47/4/53	Bhairo-rāga	—	—
1695	Ja/38/1	Bisā-Tirthankara arghya	—	—
1696	Ta/3/25	Bisa-Virahamāne-pūjā	—	—
1697	Nga/48/12/2	,, ,, ,,	—	—
1698	Ta/14/5	,, ,, ,,	—	—
1699	Nga/48/23/1	,, ,, ,,	—	—
1700	Nga/47/4/21	,, ,, ,,	—	—
1701	Nga/41/2/2	Bisa-Vidyamāna-pūjā	—	—
1702	Nga/26/2/11	Bisa-Tirthankara-jakari	—	—
1703	Nga/47/3/80	Bisa-Virahamāna ārati	—	—
1704	Nga/48/26/5	Bisa-Tirthankara-Jayamālā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. H Poetry	20.8×16.3 4.16 21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18 0 1 16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22 0×13 1 9.12 27	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	22 5×15.0 4 12 32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	13 5×12 0 4 8 12	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	15.2×12.8 3.13.16	C	Old	
P.	D; Skt poetry	16.8×12 8 4 11 18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 5.16.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11 0 4 9 17	C	Good	
P.	D; H Poetry	30 3×17 5 2 16 16	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 1.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	16.5×13.5 2.8.24	C	Old	

1	2	3	4	5
1705	Nga/47/5/4	Candra-prabha-pūjā	—	—
1706	Nga/17/1/1	,, ,, ,,	Ajitadāsa	—
1707	Ta/42/15	Cāretra-pūjā	—	—
1708	Ta/14/11	,, ,,	Narendrasena	—
1709	Nga/47/4/30	,, ,,	,,	—
1710	Ta/39/7	Caturaviśati-yakṣiṇi-pūjā	—	—
1711	Ta/39/8	,, mātrkā pūjā	—	—
1712	Ta/39/9	Caturaṇviśati-tirthankara-pūjā	—	—
1713	Nga/33/1	,, ,, ,,	—	—
1714	Nga/33/2	,, ,, ,,	—	—
1715	Ja/34/4	,, ,, ,,	—	—
1716	Nga/47/7	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 5.12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	25.0×15 0 3.19.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 9.12.16	C	Old	
P.	P; Skt Poetry	20.6×18.0 0.16.18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	20.0×12 2 4.20.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 4.20.20	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	20 0×12.2 4.20 20	C	Good	
P.	D,H /Skt. Poetry	23.4×15.0 21.19.14	C	Good	Its two opening pages are damaged. Copied by Rāmcandra
P.	D; H. Poetry	22.5×13.4 4.16 12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.0×14.9 3.15.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.0×14.1 100.13 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1717	Ta/14/13	Caturavinśati-jina Jayamālā	—	—
1718	Nga/41/ṇa	Caubisa-tirthaṅkara-pūjā	—	—
1719	Nga/48/3	,, ,, ,,	—	—
1720	Ja/55	,, ,, ,,	—	—
1721	Ta/13	,, ,, ,,	Caudhari Rāmacanda	—
1722	Nga/46/10	Caubiśi pūjā	—	—
1723	Nga/38/8	Caturavinśati tirthaṅkara pada	—	—
1724	Ta/5/4	Cintāmani-pūjā	Śambhūnātha	—
1725	Ta/24/6	,, pārśwanātha pūjā	Jnānasāgar	—
1726	Nga/47/8/16	,, ,, ,,	—	—
1727	Ta/39/1	,, ,, ,,	—	—
1728	Ta/42/38	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;H./Pkt./ Poetry	15.2×12.8 3.11.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 5.13.16	C	Old	
P.	D; H Poetry	40.9×15.8 2.40.15	C	-	
P.	D; H Poetry	35.0×18.0 71.11.30	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.0×13.3 113.10.22	C	Good	
P.	D; H Poetry	19.0×17.8 4.13.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.7×9.0 3.9.22	C	Good	
P,	D; Skt Poetry	25.0×15.0 10.24.16	C	Good 1793 V. S.	
P	D; Skt Poetry	30.2×20.0 16.37.33	C	Old 1819 V, S.	
P	D; Skt Poetry	20.8×16.3 6.16.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 2.19.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1729	Ta/39/13	Cintāmani Jayamāla	—	—
1730	Nga/48/26/2	Darśana-pāṭha	—	—
1731	Nga/44/13/8	,, ,,	—	—
1732	Ta/35/1	,, ,,	—	—
1733	Ta/42/61	,, pūjā	—	—
1734	Ta/42/13	,, ,,	—	—
1735	Nga/47/4/28	,, ,,	Narendrasena	—
1736	Ta/3/29	Daśalākṣanī ,,	Dyānatarāya	—
1737	Nga/47/4/25	,, ,,	,,	—
1738	Nga/44/10/14	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1739	Ta/14//8	,, ,,	—	—
1740	Ta/42/59	,, ,,	Dyānatarāya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt / H./Skt. Prose	20.0×12.0 1 23.19	C	1825 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	16 5×13.5 2 8.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	13.5×8.5 4 6 13	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15.5×12 6 2 10.16	C	Old	
P	D; H. Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×00.0 2.33.37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	22 5×15 0 7.12 31	C	Good	
P.	D,Skt /H Poetry	20 6×18 0 15 16 18	C	Old	
P.	D; Skt / H. Poetry/ Prose	18.5×31 1 4 13 22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 16.12 12	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19 0 2.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1741	Ta/42/9	Daśa-lākṣaṇī-pūjā	—	—
1742	Ta/35/5	,, ,, ,,	—	—
1743	Ta/38/1	,, ,, jayamālā	—	—
1744	Ta/24/2	,, ,, Vratodyapana	—	—
1745	Ta/39/10	Digpālārcana	—	—
1746	Nga/26/2/2	Deva-Pūjā	Ājādhara Sūri	—
1747	Nga/25/14	,, ,,	—	—
1748	Nga/14/4	,, ,,	—	—
1749	Ja/45	,, ,,	—	—
1750	Nga/27/2	,, ,,	—	—
1751	Nga/26/2/13	,, ,,	—	—
1752	Nga/41/2/1	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×12 6 3.10 15	C	Old	
P.	D; Skt / Pkt. Poetry	14.5×12.5 15 8.13	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	30.2×20.0 5 37 33	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20 0×12.2 3.19 20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30 3×17 5 5.16.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	28 4×17 0 6 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×26 0 13 14 25	C	Good	
P.	D, H / Skt Poetry/ Prose	15.0×11 3 36 11 33	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	26 0×17 7 8 20 16	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	30.3×17.5 2.19.13	Inc	Good	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	14.5×0.11 17.9.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1753	Ta/3,18	Devapūjā	—	—
1754	Nga/44/2	,,	—	—
1755	Nga/47/4/18	,,	Dyānatarāya	—
1756	Nga/44/3	,,	—	—
1757	Ta/14/4	,,	—	—
1758	Ta/16,1	,,	—	—
1759	Ta/18/?	,,	—	—
1760	Nga/48/19	,,	—	—
1761	Nga/48/23/1	,,	—	—
1762	Ta/35/2	,,	—	—
1763	Nga/44/10/16	,,	—	—
1764	Nga/48/12/1	,,	—	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	22.5×15.0 5.12.36	C	Good	
P.	D, Pkt / Skt. Poetry/ Prose	20.5×16.0 9 15 17	Inc	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	20 6×18.0 12 16 18	C	Old	
P.	D; H / Skt. Poetry/ Prose	20 0×16 0 26.14 19	C	Old	
P.	D, Pkt./ Skt. Poetry	15.2×12 8 10.12.16	Inc	Old	
P.	D; Skt Poetry/ Prose	15.5×9.5 11.6.18	Inc	Old	
P.	D; Pkt / Skt Poetry	11.0×11 0 13 13.19	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	16 1×10 1 8.8.26	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	16 7×1 9 12 10 16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15 5×12 6 7.10 16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	18 5×13.1 5.13.22	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13.5×12.0 17.8.13	C	Good	

1	2	3	4	5
1765	Ta/42,2	Deva-pūjā	—	—
1766	Ta/3/19	Deva-jayamālā	—	—
1767	Ta/5/10	Deva-pratiṣṭhā Vidhi	—	—
1768	Nga/48/1/2	Dharanendra-pūjā	—	—
1769	Ta/39/3	,, ,,	—	—
1770	Ja/51/11	,, ,,	—	—
1771	Ta/3/36	Garbha Kalyāṇaka	Rūpacanda	—
1772	Ja/57	Giranāra-pūjā	—	—
1773	Nga/48/24	,, ,,	—	—
1774	Nga/47/8/11	,, ,,	—	—
1775	Ta/3/21	Gurū-jaya-mālā	—	—
1776	Nga/14/7	Guru--pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt./ Skt Poetry	32.3×19.0 3 30.37	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22.5×15 0 2 12 31	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.0×15 0 1 27.20	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	13.7×12.0 89.10 13	C	Old	
P.	P; Skt Poetry	20.0×12.2 4.19 20	C	Old	
P	D; Skt Poetry	32.3×20 1 1.13.35	C	Good	
P.	D; H Poetry	22.5×15.0 2.12 31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 8×16.4 10.15.21	C	Good	
P.	D; H Poetry	16 2×9.5 8 6 21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 6.15 17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×26 0 7.14 25	C	Good	

1	2	3	4	5
1777	Nga/41/2/4	Guru-pūjā	Vinodilāla	—
1778	Nga/47/9/42	,, ,,	—	—
1779	Ta/14/39	,, ,,	—	—
1780	Ta/42/8	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1781	Nga/44/10/19	,, ,,	—	—
1782	Ta/18/6	,, ,,	—	—
1783	Nga/26/2/5	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1784	Ta/3/27	,, ,,	Hemarāja	—
1785	Nga/48/1/5	Homa-Vidhi	—	—
1786	Ta/24/4	Jala-yātrā-Vidhi	—	—
1787	Ta/5/7	Jinayajna Vidhāna	—	—
1788	Nga/25/10	Jinavara Vinati	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt./H. Poetry	14.5×11.0 6.9.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 6×18.0 4 16.18	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt Poetry	15 2×12 8 3.14 19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	18 5×13.1 4 13 22	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	11 0×11.0 4 13 19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30.3×17 5 3.16.16	C	Good	
P,	D; H. Poetry	22 5×15 0 5 12.31	C	Good	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	14.0×11.7 12 10.12	C	Old	
P	D; Ski. Poetry/ Prose	30.2×20 0 1.37.33	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	25.0×15.0 68.21.17	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 2 24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1789	Nga/47/5/2	Jina-guṇa-sampati-pūjā	—	
1790	Ta/3/26/1	Jina-vāni-pūjā	Brahma Jinadāsa	—
1791	Nga/47/8/13	Jambū-swami-pūjā	—	—
1792	Ja/63	,, ,,	—	—
1793	Nga/44/10/22	Jaya-mālikā-pūjā	—	—
1794	Nga/47/4/29	Jnāna-pūjā	—	—
1795	Ta/14/10	,, ,,	Narendrasena	—
1796	Ta/42/14	,, ,,	—	—
1797	Nga/17/1/3	Jwālā-mālini-pūjā	—	—
1798	Nga/43/6/10	,, ,,	—	—
1799	Nga/47/8/17	,, ,,	—	—
1800	Ta/42/40	Jyeṣṭha-jinavara-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 6.12.19	C	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	22.5×15.0 6.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 8.15.17	C	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	16.7×12.8 11.8.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 7.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.0×15.0 5.20.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	17.3×13.0 7.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.3 2.15.17	Inc	Old	
P.	D; H / Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1801	Nga/48/26/4	Kalaśābhiṣeka	—	—
1802	Nga/41/Ka	Kalikuṇḍa-pūjā	—	—
1803	Nga/47/4/40	,, ,,	—	—
1804	Ta/42/22	,, ,,	—	—
1805	Nga/44/10/18	,, pārśwanātha--pūjā	—	—
1806	Ta/14/12	,, ,, ,,	—	—
1807	Nga/26/2/6,7	,, ,, ,,	—	—
1808	Ta/24/1	Kanjikā-vratodyāpana	Paṅḍita Nandarāma	—
1809	Nga/14/3	Karma-dahan-pūjā	—	—
1810	Ta/42/24	Kṣmā-vani ,,	—	—
1811	Ta/30/9	Kṣetrapāla ,,	Viśwasena	—
1812	Ta/41/28	,, ,,	Subhacandra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	16.5×13 5 5 8 24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14 5×11.0 2.13 17	C	Old	Opening pages are missing.
P	D; Skt. Poetry	20 6×18.0 3 16 18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19 0 2.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	18.5×13 1 4 13.22	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	15 2×12.8 4 12 15	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	30 3×17 5 5 16 16	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	30 2×20 0 2 37 33	C	Old	
P	D; Skt Poetry	20 8× 0 0 23 14 25	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32.3×19 0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 1×15.6 26 13 20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19.0 0 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1813	Ta/39/12	Kṣetra-pāla-pūjā	—	—
1814	Ta/30/7	,, ,,	—	—
1815	Ta/42/31	,, ,,	Viśwasena	—
1816	Nga/43/6/16	,, ,,	Vijayapāla	—
1817	Nga/41/Dha	,, ,,	—	—
1818	Ja/51/8	,, ,,	—	—
1819	Ta/42/23	Labdh-vidhāna-pūjā	—	—
1820	Nga/47/9/3	Laghu-karma-dahana-pūjā	—	—
1821	Nga/47/9/1	Laghu-pañcakalyānaka-vidhāna	—	—
1822	Ja/29/2	Mahāvira arghya	—	—
1823	Nga/78/26/3	Maṅgala	—	—
1824	Ta/42/91	Mantra-vidhi	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry	20.0×12.0 4 19 20	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20 1×15.6 3 13 20	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 6 33 37	C	Good	
P.	D;Skt /H. Poetry	17.3×13.0 3.13 13	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	14 5×11.0 15 13 16	C	Old	
P	D; Skt Poetry	32 3×20 1 3 13 35	C	Good	
P	D, Skt poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 5×15 9 7 13 19	C	Good 1928 V. S.	
P	D; H Poetry	20.5×15.9 12.13 29	C	Good	
P	D; H Poetry	21 1×14 0 1 12 13	C	Old	
P	D; H. Poetry	16 5×13.5 5 8.24	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1825	Nga/31/2/7	Mokṣa-paidi	Banarasidāsa	—
1826	Nga/29/2	Nandīśwara-pūjā	—	—
1827	Nga/28/5	,, ,,	—	—
1828	Nga/44/10/23	,, dvīpa-pūjā	—	—
1829	Nga/47/8/8	Navagraha-pūjā	—	—
1830	Nga/27/1	,, ,,	—	—
1831	Nga/36/1	,, ,,	—	—
1832	Ja/51/7	,, ,,	Jinasāgar	—
1833	Nga/46/7	,, ,,	—	—
1834	Ta/39/11	,, ,,	—	—
1835	Nga/47/4/41	Navakāra-panca-triṁśat-pūjā	—	—
1836	Ta/20/1	Nava-pada-kalaśa-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	12 3×00.0 4 16.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13 2×21.0 34 17 11	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	14 6×14 1 23 12 15	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	18.5×13 1 4.13 22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 8×16 3 28 16 21	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	26 0×16 7 20 19.16	C	Good 1913 V. S.	
P.	D,Skt /H Poetry	13 6×17 8 32 9 26	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×20 1 4 13.35	C	Good	It contains chart of nine grahas.
P.	D; Skt /H Poetry	23 2×15.0 24 16.15	C	Old	
p.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 3 19 20	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	20 6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	10 9×9 6 25.7.13	Inc	Old	Page no one to thirty seven are missing.

1	2	3	4	5
1837	Nga/44/19/4	Neminātha Jayamālā	—	—
1838	Ta/14/37	Nhavana-pūjā	—	—
1839	Ta/42/11	,, ,,	—	—
1840	Nga/47/4/37	,, kavya	—	—
1841	Nga/47/5/13	Nirvāna pūjā jayamālā	—	—
1842	Nga/44/9/1	,, ,,	—	—
1843	Nga/47/4/33	,, ,,	—	—
1844	Nga/33/4	,, ,,	—	—
1845	Ta/42/21	,, ,,	—	—
1846	Nga/44/10/27	,, ,,	Bhagavatidāsa	—
1847	Ta/14/30	,, ,,	—	—
1848	Nga/47/5/5	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.5 × 12.5 2 10.19	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15 2 × 12 8 9.12.18	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; Skt.* Poetry	32 3 × 19 0 3.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20 6 × 18 0 3.16 18	C	Old	
P.	P; Pkt. Poetry	16.5 × 16.0 3.12.19	C	Old	
P.	D; Skt / Pkt. Poetry	11.0 × 10 5 8 11.12	C	Good	Sixteeng opening pages are missing.
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	20 6 × 18 0 4 16.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	22.7 × 15.7 2.18 16	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32.3 × 19.0 1.33 37	C	Good	
P.	D;Skt./H. Poetry	18.5 × 13.1 4.13.22	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.2 × 12.8 5.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.5 × 16.0 3.12.19	C	Old	

1	2	3	4	5
1849	Ta/42/42	Nirvâna-pūjā	—	—
1850	Nga/47/8/5	Nirvâna-kṣetra-pūjā	—	—
1851	Nga/47/8/1	,, ,, ,,	—	—
1852	Ta/3/34	,, kalyānaka ,,	—	—
1853	Ta/3/37	,, ,,	Rūpacanda	—
1854	Nga/36/2	Nitya-niyama-pūjā	—	—
1855	Nga/37/5	Pada-Lāvanī	—	—
1856	Ta/39/4	Padmāvatī-pūja-vidhāna	—	—
1857	Ja/51/13	,, ,,	Cārūkīrti	—
1858	Ta/42/35	,, ,,	—	—
1859	Ta/42/37	,, ,,	—	—
1860	Ta/39/14	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.33	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.8×16 3 7.15.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 8×16 3 2 15.18	C	Old	
P.	D;H./Skt. Poetry	22.5×15.0 4 12.31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22 5×15.0 1 12 31	C	Old	
P.	D;Skt /H. Poetry	17.8×13 7 24.14 15	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 8×13 0 4 14 12	C	Old	
P,	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 2 19.20	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32.3×20 1 4.13 35	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 0×12.0 8 20.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1861	Nga/43/6/15	Padmâvatī-pūjā	—	
1862	Nga/41/4	,, ,,	—	—
1863	Ja/51/9	,, vratodyāpana	—	—
1864	Nga/41/1	Pancabālayatī-pūjā	—	—
1865	Ta/33	Panca kalyānka-pūjā Pātha	Bhagawāna Prasād	—
1866	Nga/47/4/2	Panca-kalyānaka-pāṭha	Rūpacanda	—
1867	Ta/42/1	,, ,, ,,	,,	—
1868	Nga/14/2	,, ,, Pūjā	—	—
1869	Nga/47/4,82	,, ,, ,,	—	—
1870	Nga/26/2/1	,, ,, dohā	—	—
1871	Ta/5/1	,, ,, pūjā	—	—
1872	Nga/47/8/6	Panca-kumāra-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	17.3×13.0 5.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 4.13.16	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 5 13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	16.0×9.5 6.7.25	C	Good	
P	D; H. Poetry	19.7×15 8 44 17.16	C	Good	
P	D; H Poetry	20.6×18.0 8 18 21	C	Old	
P.	D; H Poetry	32 3×19 0 3 30.37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	20 8×26 0 24 14.25	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 28.16.21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	30.3×17.5 21.16.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 17.28.21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 4.16.21	C	Old	

1	2	3	4	5
1873	Ja/57/3	Paṅca-kumāra-vidhāna	—	—
1874	Ta/18	Paṅca-maṅgala-pāṭha	—	—
1875	Nga/25/13	,, ,, ,,	Rūpacanda	—
1876	Nga/41/2	,, ,,	,,	—
1877	Ja/26/1	,, meru pūjā	—	—
1878	Ta/3,32	Panca ,, ,,	Dyānatarāya	—
1879	Nga/47/4/23	,, ,,	,,	—
1880	Nga/44/10/21	,, ,,	—	—
1881	Ta/42/25	,, ,,	Bhūdhardāsa	—
1882	Nga/47/8/14	,, ,,	—	—
1883	Ta/42/57	,, ,,	Dyānatarāya	—
1884	Ja/57/4	Paṅca-parmeṣṭi-Arghya	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry/ Prose	32 3×20.1 2.13.35	C	Good	
P.	D;Skt /H. Poetry	11.0×11.0 9.13 19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	28 4×17 0 4.24 17	C	Good	
P.	D; H, Poetry	14 5×11.0 14 8.19	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22 0×15 0 22 18.14	C	Old	
P	D;Skt./H Poetry	22.5×15.0 4 12.31	C	Good	
P	D, H poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13.1 2 13.22	C	Old	
P	D;Skt./H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20 8×16.3 13 15.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 0.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 1.13.35	C	Good	

1	2	3	4	5
1885	Ta/3,23	Panca-parmeşṭhi Jayamālā	—	—
1886	Ta/33/2	,, ,, Pāṭha	—	—
1887	Ta/5/8	,, ,, Pūjā	Dharmabhūṣaṇa	—
1888	Nga/47/9/2	,, ,, ,,	—	—
1889	Nga/33/3	,, ,, ,,	—	—
1890	Nga/14/1	,, ,, ,,	Yaśonandi	—
1891	Nga/37/7	Pārśwanātha Kavitta	—	—
1892	Nga/48/1/1	,, Pūjā	—	—
1893	Nga/47/5/9	,, ,,	—	—
1894	Ja/51/10	,, ,,	—	—
1895	Ja/51/5	,, ,,	—	—
1896	Nga/47/4/3	Prabhāti-Maṅgala	Rūpacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt. Poetry	22.5×15.0 2 12.33	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.7×15.8 4 17.16	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 15.23.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5×15.9 8.13 19	C	Good	
P	D;Skt /H Poetry	23 5×14 5 18 16 11	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20 8×26 0 39 14 25	C	Good	
P.	D; H Poetry	12.0×18 3 4 17 17	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	13 7×12 0 14 10.14	C	Old	1 to 11 pages are missing.
P.	D; H Poetry	16.5×16.0 5.12.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20 1 4.13 35	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32 3×20 1 3.13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1897	Ta/42/34	Pratiṣṭhā-tilaka	Narendra Sena	—
1898	Ta/3/52	Pūjā-māhātmya	Vinodilāla	—
1899	Nga/44/2	„ Saṁgraha	—	—
1900	Ja/19	„ „	—	—
1901	Ja/29/5	„ Vidhāna	—	—
1902	Nga/46/4	Punyāha-Vācana	—	—
1903	Ja/51/2	„ „	—	—
1904	Nga/48/19	„ „	—	—
1905	Nga/43/6/14	„ „	—	—
1906	Ta/3/1	„ „	—	—
1907	Nga/46/11/1	„ „	—	—
1908	Nga/44/5	Puṣpāñjali Pūjā	Lalitakīrti	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	32 3 × 19.0 15.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5 × 15.0 2.12 31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18 5 × 13 5 102 13 26	Inc	Old	The Mss. is not in order.
P.	D; H. Poetry	23 7 × 15.0 27.20.17	C	Good	
P	D; H. Poetry	21.1 × 14 0 119 13 13	C	Good	
P	D; Skt Poetry	36 0 × 19 0 5 12 44	C	Good	
P	D; Skt Poetry/ Prose	32 3 × 20 1 4 13 34	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	16 8 × 14 0 16 10.15	C	Old	
P.	D, Skt. Prose/ Poetry	17 3 × 13 0 5 13 13	C	Old	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	21.0 × 10.9 16 8.18	C	Good 1866 V. S.	
P	D; Skt Prose	36.4 × 19.0 1.12.39	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5 × 15.5 3.12.26	C	Good	

1	2	3	4	5
1909	Ja/34	Ratnatraya-Pūjā	Dyānatarāya	—
1910	Ta/42/62	,, ,,	,,	—
1911	Ta/42/12	,, ,,	—	—
1912	Ta/3/31	,, ,,	Dyānatarāya	—
1913	Nga/41/Kha	,, ,,	—	—
1914	Nga/47/4/27	,, ,,	Dyānatarāya	—
1915	Ta/14/9	,, ,,	Narendra Sena	—
1916	Ta/38/2	,, Jayamālā	—	—
1917	Ja/34/3	Ravivrata-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1918	Nga/47/4/1	,, Pūjā	—	—
1919	Ta/42/33	,, ,,	—	—
1920	Nga/48/10	Ṛṣi-maṇḍala Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19 0×14 9 3.15.15	C	—	
P.	D; H. Poetry	32.3×19 0 1.33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 4.12 31	C	Good	
P.	D;Skt /H. Poetry	14.5×11.0 5 13 17	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	15 2×12 8 9.1 15	C	Old	
P	D; Skt Poetry	14 5×12.5 6 8.13	Inc	Old	
P	D; Skt. Poetry	19 0×14.9 11.17.16	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 4.18.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	12 0×16 5 7.13 14	C	Old 1818 V. S.	Hemarāja seems to be the copier of this Mss.

1	2	3	4	5
1921	Nga/47/3	Ṛṣi-mandala Pūjā	—	—
1922	Ta/5/5	,, ,,	—	—
1923	Nga/13/1/2	,, ,,	—	—
1924	Nga/22	Sahasranāma ,,	Sikhara-Canda	—
1925	Ja/51/1	Sakali-Karana	—	—
1926	Ta/16/2	,, ,, Vidhi	—	—
1927	Ta/16/5	,, ,, ,,	-	—
1928	Nga/44/6	,, ,, ,,	—	—
1929	Nga/38/15	Samādhi-marana	Dyānatarāya	—
1930	Ja/17	Sāmāyika Pāṭhā	Jayacanda	—
1931	Nga/36/3	,, Vacanikā	,,	—
1932	Ta/6/20	Samavaśarna	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	20.0×16.0 25.13.20	C	Good 1956 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 18.25.20	C	Good	There are four pages blank.
P	D; H. Poetry	24.4×18.5 25.21.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.6 8.14.35	C	Good 1942 V. S.	
P	D; Skt Poetry/ Prose	32.3×20.1 2.13.34	C	Good	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	15.5×9.5 18.6.18	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D, Skt. Prose	15.5×9.5 22.9.25	C	Old 1921 V. S.	
P	D; Skt Poetry/ Prose	20.0×16.0 9.13.14	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; H Poetry	15.7×9.0 3.9.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.5×11.0 59.9.29	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.0×12.0 76.15.12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 1.13.18	Inc	Old	Closing pages are missing.

1	2	3	4	5
1933	Nga/31/2/4	Samavasarana	—	
1934	Ta/39/21	Sammedācala Pūjā	—	—
1935	Ta/42/41	Sammeda-Śikhara Pūjā	Rāmcandra	—
1936	Nga/33/6	,, ,, ,,	—	—
19›7	Ja/33/6	,, ,, ,,	—	—
1938	Ta/3/14	,, ,, ,, Vidhāna	Gangādāsa	—
1939	Nga/47/8/10	,, ,, Pūjā	—	—
1940	Nga/47/8/4	,, ,, ,,	—	—
1941	Nga/44/10/24	,, ,, ,,	—	—
1942	Nga/47/8/2	Samuccáya-Caubis-Pūjā	—	—
1943	Ja/56	Śāntināthā-Pūjā	—	—
1944	Nga/46/12/3	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	12 3×16 3 14 13.14	C	Good 1974 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20 0×12 0 2 24.18	C	Old 1819 V. S.	
P.	D; H. Poetry	32.3×19 0 3 33 37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23 9×13 3 9 18 12	C	Good	
P	D; H Poetry	19 0×14.9 24 12 17	C	Old 1920 V. S.	
P	D; Skt Poetry	22 5×15.0 8 12.36	C	Good	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 16 15 17	C	Old	
P	D; H Poetry	20 8×16 3 21 15.18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	18.5×13.1 5 13 22	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.8×16.3 4 15.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	28 8×15.0 9.22 20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×13.0 5.18.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1945	Nga/47/4/39	Śānti-pāṭhā	—	—
1946	Ta/3/24	,, ,,	—	—
1947	Nga/48/23/4	,, ,,	—	—
1948	Ta/42/4	,, ,,	—	—
1949	Nga/43/6/18	Śānti-Cakra-pūjā	—	—
1950	Nga/43/4/1	Śāntidhārā	—	—
1951	Ta/42/88	,,	—	—
1952	Nga/46/11/2	,,	—	—
1953	Ta/42/27	Saptarṣi-pūjā	—	—
1954	Ta/14/41	,, ,,	—	—
1955	Ta/41	,, ,,	—	—
1956	Nga/26/2/34	Saraswati-pūjā	Brahma Jinadāsa	—

6	7	8	9	10	11
P	D. Skt Poetry	20.6×18.0 3 16.18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	22 5×15.0 1.12.00	C	—	
P	D; Skt Poetry	16 8×12 8 3 11.12	C	Old	
P.	D; Skt, Poetry	32 3×19 0 1.33 37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	17 3×13.0 7 13 13	C	Old	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	16 3×14 0 3 11.20	Inc	Old	Last page is missing.
P	D, Skt. poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D; Skt Prose	36 4×19 0 2 12 39	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 3 32 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15 2×12.8 3 12.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	12.5×8.6 5.9 19	Inc	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	30.3×17.5 4.16.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1957	Ta/42/19	Śāstra-pūjā	Dyānatarāya	—
1958	Ta/39/19	,, ,,	Malayukīrti	—
1959	Nga/41/2/6	,, ,,	—	—
1960	Nga/47/4/36	,, ,,	—	—
1961	Ta/14/29	,, ,,	—	—
1962	Nga/14/8	,, ,,	—	—
1963	Ta/3/20	,, Jayamālā	—	—
1964	Nga/47/8/12	Satrunjayagiri-pūjā	Viśvabhūṣana	—
1965	Nga/14/6	Siddha-pūjā	—	—
1966	Nga/44/10/17	,, ,,	—	—
1967	Ta/35/3	,, ..	—	—
1968	Ta/14/6	,, ,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	20 0×12.0 2 24.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11 0 7.9.17	C	Good	
P.	D;Skt./H. Poetry	20 6×18.0 5.16.18	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 5 12 13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20 8×26 0 4 14 25	C	Good	
P	D; Skt Poetry	22 5×15 0 2.12 33	C	Good	
P,	D; Skt. Poetry	20.8×16 3 16 16.15	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	20 8×26 0 6.14.25	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	18 5×13.1 7.13.22	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 5.10.16	C	–	
P.	D; Skt. Poetry	15 2×12.8 6.12.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1969	Ta/18/4	Siddha-pūjā	—	—
1970	Nga/47/4/19	,, ,,	Khuśālacanda	—
1971	Nga/41/2/3	,, ,,	—	—
1972	Ta/3/26	,, ,,	Khuśālacanda	—
1973	Nga/48/23/3	,, ,,	—	—
1774	Nga/48/18/2	,, ,,	—	—
1975	Nga/48/12/3	,, ,,	—	—
1976	Ta/42/6	,, ,,	—	—
1977	Nga/26/2/9	,, ,,	—	—
1978	Ja/29/3	,, ,,	—	—
1979	Ja/51/6	,, ,,	—	—
1980	Ta/3/13	Siddha-kṣetra-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	11 0×11.0 4 13.19	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	20 6×18 0 6.16 18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	14.5×11.0 7.9.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22 5×15.0 7 12.32	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	16.8×12 8 6 11.12	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	16.0×10 1 5 9 21	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	13 5×12 0 6.8.12	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 1 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	30 3×17 5 3.16.16	C	Good	
P.	D; H Poetry	21.1×14.0 3.12.10	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32 3×20.1 1.13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.5 2.12.36	C	Good	

1	2	3	4	5
1981	Ja/54	Siddha-cakra-pūjā	—	—
1982	Ta/20/2	,, ,,	—	—
1983	Nga/27/4	Siddha-kṣetra-pūjā	—	—
1984	Ta/42/43	,, ,, ,,	—	—
1985	Nga/44/14	Śikhara-vilāsa-pūjā	—	—
1986	Nga/28/3	Sīla-vattīsī	—	—
1987	Nga/47/6	Siṁhasana-pratiṣṭhā	—	—
1988	Nga/41/ṭha	Śītalanātha-pūjā	—	—
1989	Ta/20/3	Snāna-pūjā-vidhi	—	—
1990	Nga/14/9	Solaha-kārana-pūjā	—	—
1991	Ta/35/4	,, ,, ,,	—	—
1992	Ta/38/3	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18 6×11.4 113.22.22	C	Good 1965 V. S.	
P.	D; H. Poetry	10.9×9 6 40.8.11	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; Skt. H	18.5×30 6 6.21.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D, H. Poetry/ Prose	15 5×9 5 9 8 26	Inc	Old 1942 V. S.	Opening tweenty pages are missing.
P.	D, App. Poetry	14 6×14.1 7 13.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.7×14 5 20 14 16	C	Old 1955 V. S.	
P.	D; H. Poetry	14.5×11 0 6 13.16	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	10.0×00.0 26.8 12	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×26.0 5.14.'5	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 4.10.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×12.5 13.11.18	Inc	Old	Closing is missing.

1	2	3	4	5
1993	Ta/14/7	Solaha-kārana-pūjā	—	—
1994	Nga/44/10/13	,, ,, ,,	—	—
1995	Nga/47/4/22	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
1996	Ta/3/28	,, ,, ,,	—	—
1997	Ta/42/7	Ṣodaśa-kāraṇa ,,	—	—
1998	Ta/39/17	Solaha-kārana ,,	—	—
1999	Ta/42/58	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
2000	Nga/29/1	,, ,, ,,	—	—
2001	Ja/44	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
2002	Nga/47/5/3	Sonāgiri-pūjā	—	—
2003	Ta/3/3	Stavana Jayamālā	—	—
2004	Ta/42/93	Swādhyāya-pāṭha	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 4.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18 5×13 1 6 13 22	C	Good	
P	D; H. Poetry	20 6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D;Skt /H. Poetry	22.5×15.0 5 12 31	C	—	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2 33 37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20 0×12 0 3 21.18	Inc	Old	
P.	D; H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	13 0×19 7 33 15 15	C	Good	
P.	D, H. Poetry	18 0×11.5 4.7.18	C	Good 1965 V. S.	
P.	D; H. Poetry	16.5×16 0 6 12.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22.0×15.0 2.12.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
2005	Nga/17/1/2	Śyāmala-yakṣa-pūjā	Ajita Dāsa	—
2006	Ta/42/32	Tattvārtha-sutrāṣṭaka-jayamālā	—	—
2007	Ja/9/7	Terahadwipa-pūjā	—	—
2008	Nga/47/8/9	Tina-loka-saṁvandhi-pūjā	—	—
2009	Ta/5/11	Tisa-caubisi ,,	—	—
2010	Ta/5/3	,, ,, ,,	Bhāvaśarmā	—
2011	Ta/5/2	Udyāpana	—	—
2012	Nga/47/5/10	Vardhamāna-pūjā	Vṛndāvana	—
2013	Ja/20	Vartamāna caubisi-pāṭhā	,,	—
2014	Ta/39	,, ,, pūjā	—	—
2015	Ta/24/5	,, jinanāma	—	—
2016	Nga/14/5	Vidyamāna-bisa-tirthankara pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D. H. Poetry	25 0×15.0 4.19.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	29 8×15 5 111 14.31	Inc	Old	Closing para is missing,
P.	D; H Poetry	20 8×16.3 7 15 18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	25.0×15 0 5 28 25	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	25 0×15 0 29 25 16	C	Good	
P.	D, Skt. poetry	25 0×15 0 5 28.20	C	Good	The chart of tirthankara is on its last page
P.	D; Skt Poetry	16.5×16 0 6 12 19	C	Old	
P	D,H /Skt. Poetry	23 3×19 0 64.18.23	C	Good 1952 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	22.6×13.8 100 12.36	C	Good 1890 V. S.	Copied by Raghunātha Sharmā.
P.	D; Skt. Poetry	30.2×20.0 16.37.33	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×26 0 3.14.25	C	Good	

1	2	3	4	5
2017	Nga/26,2/10	Vidyamāna bisa-Tirthankara-pūjā	—	—
2018	Nga/24	„ „ pūjā vidhāna	Śikharacanda	—
2019	Ta/42/5	„ „ „	—	—
2020	Ta/11/5	Vrata-Vidhāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	30.3 × 17,5 5,16.16	C	Good	
P.	D: H. Poetry	29.0 × 17.0 49 21 16	C	Good 1929 V. S	
P.	D; Skt Poetry	32.3 × 19 0 2.33 37	C	Good	
P.	D: H. Poetry	14 5 × 11.7 12 11.22	C	Good	

जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

(संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी ग्रन्थ-सूची)

परिशिष्ट

१- पुराण, चरित, कथा

९९८. अनन्त चौदश-कथा

Opening : श्री जिनवर चौबीसोंनमो, सारद प्रनमो अघनीगंमो ।
भावै गनधर प्रनमो पाय, भावै वदो श्री गुरुराय ॥

Closing : जे कोइ इह व्रत भावं करै, ते नर मुक्तरमण कर धरै ।
श्री भूषन पद प्रनमी सही, कथा ग्यानसागर मुनि कही॥५६॥

Colophon : इति अनतव्रत कथा समाप्तम् ।

९९९. अनन्तचौदश-कथा

Opening : देखें, क्र० ९९८ ।

Closing : देखे क्र० ९९८ ।

Colophon : इति श्री अनत चौदश जी कथा समाप्तम् ।

१०००. अनन्तव्रत कथा

Opening : अनत देव वदौ सदा, मनमैं कर बहु भाव ।
सुर असुर सेवत सदा, होइ मुकति परभाव ॥१॥

Closing : तब इह कथा करी चित्तलाइ, तैसी शास्त्र मैं करी बनाइ ।
विध पूरब पालैं जो कोइ, ताको मुक्ति निहचै करि होइ ॥३५॥

Colophon : इति अनंतव्रत कथा ।

१००१. अनन्तनाथ कथा

Opening : वृषभ आदि चौबीस जिन, नमूं ताहू सिरनाय ।
कू कै गुरु गौतम नमूं, तीजी सारद माय ॥

Closing : वतन लालपुर जानीयो श्रावगधर्म जु सोय ।
पढ़ैं पढ़ावैं मनधरैं ताकूं सुभगत होय ॥६६॥

Colophon : इति श्री अनंत चौदस की कथा समाप्तम् ।

१००२. अष्टान्हिका कथा

Opening : श्री जिन सारद गणधरपाय, ... - .... - ।
व्रत अष्टान्हिका कथा विचार, भाखूं आगमनें अनुसार ॥१॥

Closing : ए व्रत जे नरनारी करें, ते भवसागर से तरें ।
श्री भूषण गुरुपद आधार, ब्रह्म ज्ञानसागर कहै इह सार॥५३॥

Colophon : इति श्री अठाई व्रत कथा सम्पूर्णम् ।

१००३· अष्टान्हिका कथा

Opening . यादव वंसि नेमकुमार, भाव धरि वंदो भवतार ।
कहो अष्टान्हिका सार ॥१॥

Closing । तस दिक्षित बोले ब्रह्मचारी हरखनिधि सिखामण सारी ।
भणो सुणो नरनारी ॥१६॥

Colophon : इति नदीश्वर व्रत कथा सपूर्णम् ।

१००४· अठाईकथा

Opening : पचपरमेष्टी चरन कूं ध्यावै निस दिन ध्यान ।
सो मेरी रक्षा करो जातैं होय कल्यान ॥

Closing । श्रावग धर्म सुजान, वतन लालपुर जानियो
भैरों कही बखान, भव्य जन सुनियै चित्त दे ॥७६॥

Colophon । इति श्री भैरों जी कृत अठाई रासा समाप्तम् ।

१००५· आदित्यवार-कथा

Opening : रिसहणाह प्रणमौं जिनंद जा प्रभाव मन होय आनंद,
प्रणमौं अजित प्रणासै पाप दुख दालिद भव हरै संताप ॥

Closing : कर्म्म खिप्यौ कारण मत भई तब यह धर्मकथा मन ठई ।
मनधर भाव सुनै जो कोय सो नर स्वर्ग देवता होय ॥

Colophon : इति श्री आदित्यवार कथा जी समाप्तम् ।

१००६. आदित्यवार-कथा

Opening : देखें, १००५ ।

Closing : कमभय कारण इह मति भई तब या धर्म्म करा अरनई ।
मूर्ति धरि भाव सुणै जो कोइ सो नर स्वर्ग देवता होई ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ गुण-महिमा युक्त रविवार व्रत कथा संपूर्णम् ।

१००७. आदित्यवार-कथा

Opening : श्री सुखदायक पास जिनेस । प्रणमो भव्यपयोज दिनेस ॥

Closing : यह व्रत जो नरनारी करै, सो बहु नहि दुरगति परै ।
भाव सहित सुरनरसुख लहै, बार बार जिन जी यो कहै ॥२५

Colophon : इति श्री रविव्रत कथा समाप्ता ।

१००८. आदित्यवार-कथा

Opening : देखें, क्र० १००७ ।

Closing : देखें, क्र० १००७ ।

Colophon : इति श्री रवि कथा जी लघु समाप्तम् ।

१००९. आदित्यवार-कथा

Opening : प्रथम सुमिरि जिन चौबीस, चौदह सै बेरन जु मुनीस ।
सुमिरौ सारद भक्ति अनंत, गुरु देवेन्द्र जु कीर्ति महंत॥१॥

Closing : रविव्रत तेज प्रताप भई लछिमी फिरी आई
कृपा करि धरनेंद्र और पद्मावती माई ।

जहाँ······ ···तहाँ रिद्धि सब छौर जू पाई
मिले कुटुम परिवार भले सज्जन मन भाई।
पढ़े सुने जे प्रात उठि नरनारी जु सुबुद्धि,
तिनको धरनेंद्र पद्मावति देहि सर्वथा सिद्धि ॥

Colophon : इति श्री रविवार कथा सम्पूर्णम् ।

१०१०. आकाश-पंचमी-कथा

Opening : पडिवा प्रथम कला घट जागी, परम प्रतीत रीत रस पागी।
प्रतिपदा परम प्रीत उपजावै, वह प्रतिपदा नाम कहावै ॥

Closing : काष्टासंघ सरोज प्रकाश, श्री भूषण गुरु धर्म निवास।
तास शिष्य बोल्यै चंग, ब्रह्म ज्ञानसागर मन रंग ॥

Colophon : इति आकाश पंचमी कथा

१०११. आकाश-पंचमी-कथा

Opening : श्री जिनसासन पय अनुसरू गणधर निज वंदिन वरू ।
साध सत प्रणमूं पाय, जे हुयी कथा अनोपम थाय ॥१॥

Closing : देखे—क्र० १०१० ।

Colophon : इति श्री आकाश पंचमी व्रतकथा समाप्तम् ।

१०१२. भविष्यदत्त-कथा

Opening : स्वामी चंद्रप्रभु जिननाथ, नमोचरण धरि मस्तक हाथ।
लांछन बन्यो चद्रमा जासु काया जाल अधिक प्रकासु ॥१॥

Closing : यह कथा संपूरन भई, सकल भव्य को मंगल भई।
पढ़े सुने जो करे बखाण, सो पावे शिवपुरि पद थाण ॥
॥११६॥

Colophon : इति श्री श्रुतपंचमी कथा भवसुदत्त चरित्र संपूर्णम् । संवत् १८४८ वर्षे मिति पौस वदि ६ श्री पार्श्वचंद्र सूरि गछौ श्री गुरुजी श्री १०८ श्री चंद्रभाण जी तत् शिष्य लिख्यतु ज्ञासिरदारमल्लेन श्री मफातपुरनगरमध्ये चतुरमासकृतम् ।

१०१३. चंदकथा

Opening : सिद्धि सुबुद्धि दातार तुम गौरीनंदकुमार ।
चंद कथा आरम्भ कीयो सुमति दियो अपार ॥

Closing : उबुघरेवा अवपला जोग, तीजो और परमला भोग ।
.... आपणो राज ॥

Colophon : इति चंदकथा संपूर्णम् ।

१०१४. चतुर्दशीकथा

Opening : देखें क्र० ६६८ ।

Closing : देखें- क्र० ६६८ ।

Colophon : श्री चतुर्दशी व्रत कथा समाप्तम् ।

१०१५. चतुर्वचनोच्चारिणी कथा

Opening : विक्रमादित्योरूप परदेशिद्विजाच्चतुर्वचनानि ।
वादयति यस्तस्मात् हारयित्वा तमेव परिणमति ॥

Closing : चतुर्वचनां महोत्सवेन परिणीय स्वनगरे समानीय भोगा-
नुभवन् कुर्वन् शर्म्मणाकालं महाश्रेयो युक्तो अभूत् ।

Colophon : इति चउबोली कथा संपूर्णम् ।

१०१६. दानकथा

Opening : देव नमौं अरहंत सदा अरु सिद्ध समूहन कौ चितलाई,
सूरि अचारज कौ प्रनमौं, प्रणामौं जु उपाध्याय के नित पाई ।

साधुनमौं निरग्रन्थ मुनी गुरु, परम दयाल महा सुखदाई,
नि पंच गुरु एह मैं सुनमूं इनकै सुमरै भवताप नसाई
॥१॥

Closing : दान कथा पूरण भई, पढ़ै सुनें सब कोय।
दुःख दरिद्र नासै सबै, तुरत महासुख होय ॥७६॥

Colophon : इति श्रीदानकथा भारामल्लकृत सपूर्णम्।
देखे—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २६।

१०१७. दशलाक्षणी कथा

Opening : धर्म जु दश लांछन कहै तिनको करूं बखान।
जो जिय निहचै चित्त धरै ताको होय कल्यान ॥१॥

Closing : इह विध व्रत नर जो करै, पावै शिव पद थान।
बूढ़े दुख संसार के, भैरौं कहै बखान।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम्।

१०१८. दशलाक्षणी कथा

Opening : ऋषभनाथ प्रणमू सदा गुरु गनधर के पाय।
तीन भवन विख्यात है सब प्रानी सुखदाय ॥१॥

Closing : सत्रह सै इक्यावनवा भादव मास सुखसार।
शुक्ल तिथ त्रययोदशी सुभ रविवार विचार ॥६१॥
भूला चूका होय जो लीजौ सुकवि सुधार।
मोह दोस दीजो नही करी जु भव हितकार ॥६२॥

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम्।
देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, पृ० २८।

१०१९. दशलाक्षणी कथा

Opening : प्रथम नमन जिनवरनै करूं, सादर गणधर पद अनुसरूं।
दशलाक्षिण व्रतकथा विचार, भाषूं जिन आगम अनुसार।१॥

Closing । भट्टारक श्री भूषणधीर, सकलशास्त्र पूर्ण गम्भीर ।
तस पद प्रणमी बोलैसार, ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार ॥५५॥

Colophon । इति श्री दसलाक्षणी कथा सम्पूर्णम् ।

१०२०. दशलाक्षणी कथा

Opening । देखें– क्र० १०१६ ।

Closing : देखें—क्र० १०१६ ।

Colophon । इति श्रीदसलाक्षणी व्रत कथा संपूर्णम् ।

१०२१. दशलाक्षणीव्रत कथा

Opening । देखें —क्र० १०१६ ।

Closing : देखें —क्र० १०१६ ।

Colophon : इति दशलाक्षणी व्रत कथा ।

१०२२. दशलाक्षणीव्रत कथा

Opening : — ....
पंचामृत अभिषेक उदार ।
जिन चौबिस सतरमो भडार,
अष्ट विध पूजा करो परकार ॥१७ ।

Closing । देखें—क्र० १०१६ ।

Clolophon : इति श्री दसलाक्षीणी व्रत कथा समाप्तम् ।

१०२३. दर्शनकथा

Opening । नमों देव अरहंत पद, नमों सारदामाय ।
नमौं गुरु निरग्रन्थ जे, अघहर मंगल दाय ॥

Closing : दरसन कर पूरन भयो मनोवति को सुखदाय ।
तास कथा फल पायकैं सुभ गति लई सिवदाय ॥५७०॥

Colophon : इति श्री दरसन कथा सम्पूर्णम् ।

विशेष— २०१६ पर उल्लिखित पद के Author भारामल्ल है। लगता है कि पद इसी से संयुक्त है अतः इसका भी लेखक भारामल्ल को ही होना चाहिए है।

१०२४. धर्म-पापबुद्धि कथा

Opening : अयोध्यानगरे राजासिंहसेनो राज्य करोति ।
तन्मन्त्रीबुद्धिसेनो धर्म्मन्याय मंत्र करोति ।
राजा दुराचारासत्यपरधनदारहरणलक्षणान्याय विदधाति ।

Closing : ... ... तपो विधाय यथा स्व स्वर्गेषु जग्मु ।
सदैव धर्मबुद्धि करणीया । सर्वलोकस्यायमुपदेश. ।

Colophon : इति धर्मपापयुक्तयो. कथा सपूर्णम् ।

१०२५. धूपदशमी कथा

Opening : पच परम गुरु वदन करूं, ताकरि मम अघ सब हरू ।

Closing : श्रुतसागर ब्रह्मचार को ले पूरव अनुसार ।
भाषासार बनायके सुखत खुसियाल अपार ॥१४३॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् । संवत् १६४८ भादवा सुदी २ लिखाइत
षेमराज जी लिखितं मदनगोपाल ने कलकत्ता जैन मदिर मध्ये ।

१०२६. दुधारसव्रत-कथा

Opening : प्रथम नमौं श्रीवीरजिनद वदौं सदगुरु पद अरविंद ।
जासु प्रसाद कहु सुभकथा, गोतम गणधर भाषी यथा ॥

Closing : श्रेणक आगल गोतम स्वामि एह कथा भाषी अभिराम ।
ए दुधारस व्रतनी कथा चद मनै मैं भाषी तथा ॥४३॥

Colophon : इति दुधारस जी की कथा समाप्तम् ।

१०२७. हरिवंशपुराण

Opening : सिद्धं संपूर्ण तत्वार्थं सिद्धे कारणमुत्तमम् ।।
प्रशस्त दर्शनज्ञान चरित्रप्रतिपादनम् ।।

Closing : सकोडी कर चरणे उग्रग्रीवा अहो मुहादि ।।
हीज सुहपावे लहो त सुह पावेहि तुह्म हु जनए ।।

Colophon : इतिश्री हरीवस पुराण की भाषा चौपाई बध सपूर्णम् ।
देखें, जे० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४६ ।

१०२८. हरिवंशपुराण

Opening : देखें, क्र० १०२७ ।

Closing और अरिष्ठा पाचवी नरक उस विषे इद्रन की भूमि की मुटाई कोस ३ । और श्रेणीवद्धो की कोस ४ । और प्रकीर्णको की कोस सात ७।। २१।।

Colophon अनुपलब्ध

१०२९. हरिवंशपुराण

Opening महाधीर बहुश्रुत विरअं श्रुतकेवली जिनश्रुतका व्याख्यान करे और वा मडप के समाप चार मडप .. .. ।

Closing : ... देवते मनुष्य होय निरजन पद पावेंगी मानश्री पटरानी गोरी . ... -- ।

Colophon : अनुपलब्ध

१०३०. जम्बूचरित्र

Opening : श्री अरिहंत नमो सदा, अरी न आवै पास ।
अष्टकर्म दूरे टले आठो गुन परकास ।।

Closing : उपर रवा मुवराज ते, श्रीसीमधर देव ।
भाव भगति चित लायके सब जन करते मेव ।५२३।।

Colophon : इति जबूचारित्र जी सम्पूर्णम् । लिखित राज्य कुमारचद आरामपुर नगरे स्वगृहं संवत् १६३३ मिति वैशाख शुक्ल सप्तम्यां ७ तिथौ रविवासरे निजपठनार्थं पुन: भव्यजीव पठनार्थम् । शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

१०३१. लब्धिविधानकथा

Opening : प्रथम नमौं श्री जिनवर पाय दूजें प्रणमौं सारदमाय ।
लब्धि विधान तणी सुभ कथा भाषू जिन आराम छै
यथा ।१।।

Closing श्री भूवण गणनायक गीर ·· ··· होमी सीव ।।५६

Colophon : इति श्री लब्धि विधान कथा समाप्तम् ।

१०३२. महावीर-पुराण

Opening : इण विधि कहिनी जबु कुमार मुनि सो कहुमी निरधार ।
मागी के षिजनू इकनारी मरनू चाहिलयौ ततकार ।२१।

Closing : यातै श्री जिनराज के चरण कमल सिरनाय,
राखौ भवि उरक विषै सुरग मुक्ति पदपाय ।।६३।।

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसंग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीतानुसारेण श्रीउत्तरपुराणस्य भाषायां श्रीवर्द्धमानपुराण परिसमाप्तम् । इति श्री उत्तरपुराण समाप्तम् । शुभ सम्वत् १८६६ शाके १७३४ मासोत्तमेमासे शुक्लेपक्षे त्रयोदश्या बुधवासरे पुस्तकमिद पूर्णम् । रघुनाथ सर्मणे लेखि पट्टनपुरगायघाट मध्य निजमनि । लेखक पाठकयो मंगलमस्तु ।

१०३३. नेमिनाथ विवाह

Opening : एक समे जो समुद्र विजै छारि कामधनेम को व्याह रचो है,
गावत मगलाचार बधु कुल में सबके जो उछाह मचो है,

मैल चढावन को युवती अपने-अपने कर थाल सधो है,
नेग करें सब ब्याहन को घर मडप चित्र विचित्र खिचो
है ।१।।

Closing : नेम कुमार ने जो गली घो दिन छपन लो छदमस्त रहो है,
केवल ज्ञान भयेव प्रभु को तब आठवां भूत महानुमहो है,
सात सें वर्ष विहार कीयो उपदेश ते धर्म महानुमहो है,
निर्वाण गये मुनि पाच सै छपन लाल विनोदिने सग
गही है ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ जी काव्याहुला सपूर्णम् ।

१०३४. निःकांक्षित-गुण कथा

Opening : प्रनमूं आदि जिनेद्र को फुन गुरु गौतमराय ।
सारदमाय प्रसादतें करूं कथा मन लाय ।।१।।

Closing : निः कांक्षित गुण की कथा भैं मैं कही बखान ।
मो निहर्चे कर पाल है, पावें शिव पद थान ।।

Colophon : इति निः कांक्षितगुन कथा समाप्तम् ।७६।।

१०३५. निशल्याष्टमी कथा

Opening : देखे, क्र० १०३६ ।

Closing : कोष्टीसघ कलावरचद, श्री भूषण गुरु परमानन्द ।
तस पद पकज मधु करसार, ज्ञानसमुद्र कथा कहै
विचार ।।६६।।

Colophon : इति निशल्याष्टमी कथा ।

विशेष--- इसमें निर्दुख सप्तमी कथा भी है ।

१०३६. निर्दोषसप्तमी कथा

Opening : श्री जिनचरण कमल अनुसरु, सारद निज गुरु मनमेंधरू ।
निरदोष सप्तमीकी कथा, बोलो जिनआगम छै यथा ।१।।

Closing : ए व्रत जे नरनारी करैं, ते नर भवसागर उत्तरैं ।
अजर अमर पद अविचल लहै, ब्रह्मज्ञानसागर इम कहै।।४१।

Colophon : इति श्री निरदोष सप्तमी कथा समाप्तम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ७८ ।

१०३७. पंचमी कथा

Opening : वंदो श्री जिनराज के, चरण कमल गुणहीर ।
भव सागर तारण तरणं, शरण हरण पर पीर ।।१।।

Closing : हस्तिकांतिपुर में यह रची, श्री सुरेन्द्रभूषण रची ।
यह विधि व्रतपाले जो कोई, सो नरनारी अमर पद होई ।।८०।।

Colophon : इति पचमी कथा समाप्ता ।

१०३८. पार्श्वपुराण

Opening : मोह महातम दलन दिन तप लक्ष्मी भरतार,
ते पारस परमेस होउ सुमति दातार ।।१।।

Closing : सवत् सत्रह में समैं और नवासी लीय ।
सुदि असाढ तिथि पंचमी ग्रन्थ समापत कीय ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ पुराण भाषा सम्पूर्णम् ।
श्री पार्श्वपुराण जी बाबू महावीर प्रसाद मनोहरदास के वास्ते लेखक लाला चंदुलाल लिखा सन् १२६३ साल सलोनो के रोज पूरा हुआ ।
देखें जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६१ ।

१०३९. पार्श्वपुराण

Opening : बीज रखि फलभोगवें जो किसान जगमाहि ।
त्यों चक्री नृप सुख करैं धर्म बिसारैं नाहि ।।

Closing : सोलह कारण भावना परमपुन्य को खेत ।
भिन्न असी लहो तीर्थङ्कर पद हेत ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१०४० रत्नत्रयकथा

Opening : श्री जिन चरण कमल नमू , सारद प्रणमी अघ निगमू ,
गौतम केरा प्रणमू पाय, जेहथी बहुविधि मगल थाय ।।१।।

Closing : यांमे मणि माणिक्य भंडार पद-पद मंगल जयजयकार ।
श्री भूषणगुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञान बोलें सुविचार ।।४५।।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयकथा सम्पूर्णम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० १०३।२

१०४१. रत्नत्रयकथा

Opening : देखें, क्र० १०४० ।
Closing : देखे, क्र० १०४० ।
Colophon : इति रत्नत्रय कथा ।

१०४२. रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening : देखे, क्र० १०४० ।
Closing : देखे, क्र० १०४० ।
Colophon : इति श्री रत्नत्रयकथा संपूर्णम् ।

१०४३. रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening : देखें, क्र० १०४० ।

Closing : कुजवरनि से — — होए ।
व्रत दुनीया ले नर सोऐ ।
पुण्यां तणो सच भंडार
पर भव पाव मोक्षि उवार ॥२७॥

Colophon : नही है ।

१०४४. रविव्रतकथा

Opening : श्री सुखदायक पास जिनेश, प्रणमौं भव्य पयोज दिनेश ।
सुमरो सारद पद अरविंद, दिनकर व्रत प्रगटो सानंद ।१।

Closing : करम रेख कारण मति मंड, तब इहु धर्म कथा अहे ठड ।
मनि भरि भाव सुणै जो कोइ, सो नर स्वर्ग देवता
होइ ॥१४८॥

Colophon : इति रविव्रत कथा ।
देखें, जै० सि० भ० ग्रं० I क्र० १०४ ।

१०४५. रविव्रतकथा

Opening : देखे, क्र० १०४४ ।

Closing : यह व्रत जो नरनारी ... भानु कीर्ति मुनिवर यों
कहै ॥२४॥

Colophon इति रविव्रत कथा सपूर्णम् ।

१०४६. रविव्रतकथा

Opening . चौबीसतीर्थंकर जी कूं नमस्कार कर मैं रोटतीज कथा
व्रत कहिए है । इह जंबूद्वीप है तामैं भरत क्षेत्र है तामैं आर्य खण्ड
है, धम्पापुरी नामा नगरी बसै है ।

Closing देखे, क्र० १०४५ ।

Colophon इति रविव्रत कथा संपूर्णम् ।
विशेष—इसमे रोटरीज व्रत कथा भी सम्मिलित है ।

१०४७. रात्रिभोजन-त्याग-कथा

Opening : समोसरन सोभा सहित, जगत पूज्य जिनराज ।
नमूं त्रिविध भव उदधि कौं त्यारन विरध जिहाज ॥१॥

Closing कथामांहि चउपई - करै कवि वीनती ॥१८॥

Colophon : इति रात्रि भोजन कथा तथा नागसिरी चरित्रनी भोजन त्याग व्रतकथा समाप्तम् । मिति पौह शुक्ल पंरस १५ । सवत् १६५१ का । शुभ लिखपत अनीचद श्रावक जैरावान पानम का वासी ।

१०४८. रोहिणी-कथा

Opening : वासपूज्य जिन नत्वा कथा वक्ष्ये जिनागमात् ।
दुर्गधा च व्रतनासुद्रोहिणी पुण्यरोहिणी ॥

Closing . श्रीगौतममुखकथा श्रुत्वा श्रेनिकः सहसैग्रहमागता ।
अन्योपि कोपि रोहिणी विधान करोति नारि वा नरो वा सेवविधान प्राप्नोति ॥

Colophon : इति रोहिणी कथा ।

१०४९. रोहिणी-कथा

Opening : वासुपुज्य जिनराज भवदधि तरण जिहाज सम ।
भव्य लहे सुख साज नाम लेत पातिक हरे ॥

Closing : रोहिनि व्रत पाल जो कोई, सो नर नारि अमर पद होई ।
मन वच काम सुध जो धरै क्रमते मुक्ति वधु सुख भरै ॥

Colophon : इति रोहिनी कथा समाप्तम् ।

१०५०. रोहिणी-व्रत-कथा

Opening : वासुपूज्य जिनराज कौ वंदो मन वच काय ।
ता प्रसाद भाषा करौं सुनौ भविक चित लाइ ॥

Closing : जो यह व्रत निहचै धरै, करै रोहिणी माय।
निहचै थिर मन जो धरै, तो जीव मुक्ति होय ।।७६।।

Colophon : इति श्री रोहिणीव्रतकथा समाप्तम्।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ११०।

१०५१. रोटतीज-कथा

Opening : चौवीसो जिन को नमो श्री गुरु चरण प्रभाव ।।
रोटतीज व्रत की कथा कहो सहित चित चाव ।।

Closing : गणधर इन्द्र न करि सके तुम विनती भगवान।
द्यानत प्रीति निहारिके कीजै आपसमान ।।

Colophon ; इति सम्पूर्णम्।

१०५२. रोटतीज-कथा

Opening : — इह जबू द्वीप है तामै भरत क्षेत्र है, तामै आर्य खड है, धन्यपुरी नाम नगरी वसै है।

Closing और जो कोइ भव्य स्त्री या पुरुष रोटतीज व्रत करै भलि गति पावै ।

Colophon : इति रोटतीज व्रत कथा ।

१०५३. रोटतीज-कथा

Opening : देखे, क्र० १०५२।

Closing . देखे, क्र० १०५२।

Colophon : इति रोटतीज कथा समाप्ता।

१०५४. रोटतीज-कथा

देखे, क्र० १०५२।

Closing · देखें, क्र० १०५२।

Colophon : इति रोटतीज कथा समाप्तम् ।

१०५५. सलूनाकथा

Opening : प्रथमहि प्रथम जिनेन्द्र चरण चित लाइए,
प्रथम महाव्रत धर्म सुताहि मनाईए ।
प्रथम महामुनि लेव सुधर्म धुरधरी,
प्रथमधर्म प्रकासन प्रथम तीर्थ करी ॥

Closing : मुनि उपसर्ग निवारनी कथा सुनै जो कोय ।
करूणा उपजै चित्त मैं दिन मंगल होय ॥१८॥

Colophon : इति श्री विनोदीलालकृत श्री सलूना कथा समाप्तम् ।

१०५६. शीलकथा

Opening : पार्श्वनाथ परमातमा वंदौ जिनपद राइ ।
मोही धर्मवाश न करौ कहौ कथा मनलाइ ॥१॥

Closing : सील कथा पूरी भई पढ़ै सुनै नित सोई ।
दुख दरिद्र नासै सबै तुरत महा सुख होई ॥५६॥

Colophon : इति श्री सील कथा मल्लसेनाचार्यकृत संपूर्णम् ।

१०५७. शीलव्रतकथा

Opening : प्रथमही प्रणमौं श्री जिनदेव ... जिनराज अनूप ।१।

Closing : जो देखी सोई लिखी सुद्ध असुद्ध न जान ।
पंडित अरथ विचारिकै पढियौ सुद्ध सुजान ॥५३॥

Colophon : इति सील कथा संपूर्णम् ।

विशेष—पद भी जो २०१८ पर उल्लिखित है इसी से सम्बन्धित है । अतः इसका भी लेखक भारामल्ल ही होना चाहिए । दोनो ग्रंथों को

पढने से ऐसा लगता है कि पहले कथा वगैरह लिखने के बाद पद लिखने की परिपाटी हो।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १२८।

१०५८. शीलवतीकथा

Opening : जीवितादप्यधिकत्वेन पालितो नियमोऽपुनर्भवाय भवेत्।

Closing : ततोऽनर्थमूल त विप्र शीलवती ॰ सत्कृत्य बहुमानात्प्रसाद-कृतवान्।

Colophon : इति शीलवती कथा सपूर्णम्।

१०५९. सोलहकारणकथा

Opening : श्री जिन चौविसौ नमू, सारद प्रणमि अवनिगमू।
निज गुरु केरा प्रणमू पाय, सकल मत प्रणमी सुखथाय।१।

Closing : यामे सकल भोग सयोग, टलै आपदा रोग वियोग।
श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञानसागर कहै सार।३६।

Colophon : इति श्री सोलहकारण कथा समाप्तम्।

१०६०. सोलहकारणकथा

Opening : देखे, क्र० १०५९।
Closing : देखें, क्र० १०५९।
Colophon : इति सोलहकारण कथा सपूर्णम्।

१०६०. शोडशकारणकथा

Opening : देखें, क्र० १०५९।
Closing : देखें, क्र० १०५९।

Colophon : इति षोडशकारण कथा संपूर्णम् ।

१०६२. श्रावणद्वादशीकथा

Opening : प्रथम नमूं श्री जिनवर पाय, प्रणमूं गणधर सारद माय ।
सद् गुरु पद पकज मन धरुं, सार कथा वारसनी करूं ।।१।।

Closing . रोग सोग संतापह टलै, मनवांछित फल पूरण मिलै।
श्री भूवण सुत दाए लहै, ब्रह्मज्ञानसागर इम कहै ।।

Colophon : इति श्रवणद्वादशी कथा ।

१०६३. श्रीपालचरित्र

Opening : प्रणम्य सिद्धचक्रं च सद्गुरुं निजमानसे ।
श्रीपालचरित्र वक्ष्ये सुगम शिष्यहेतवे ।।

Closing : जीवराजेन रचितं श्रीपालचरित शुभम् ।
प्रोतसुन्दरेनाशुलिखित श्री सद्गुरुप्रसादतः ।।

Colophon : इति श्रीपालचरित्रे गद्यबंधे चतुर्थ प्रस्तावः । शुभं भूयात् ।
स० १९०५ रा० मि० आसोज शुक्ल त्रयोदशी दिवसे मंगलवारे लिपी
कृतेय ऋषिः श्री विक्रमपुर मध्ये चउम्मासीस्थिताः ।

१०६४. श्रीपालचरित्र

Opening : श्री अरिहंत अनंतगुण, धरीयें हियें मे ध्यान ।
केवल ध्यान प्रकाश कर दूर हरण अग्यान ।।१।।

Closing : कहै जिन हरख भविक नर सुण ज्यो नवपद महिमा शुणिज्यो रे ।
गुण पंचासें ढालें गुणिज्यों निज पति कठिण सुणिज्यो रे ।।

Colophon : इति श्रीपाल महाराजा चोपई समाप्तम् ।

१०६५. सुगंधदशमी-कथा

Opening : श्री जिन शारद मन मैं धरु सद गुरु नै नित वदम करु ।
साधु सत पद बदों सदा, कथा कहूं दशमीमी मुदा ॥१॥

Closing : ए व्रत जे नर नारी करै, ते भवसागर वेगै तरे।
छाडैं पाप सकल सुख भरै, ब्रह्मज्ञानसागर उच्चरै ॥

Colophon : इति सुगध दशमी कथा।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १४५ ।

१०६६. सुगंधदशमी कथा

Opening : सुगंध दशमी व्रत सुनि कथा, वर्द्धमान प्रकाशी यथा।
पूरब देश राजग्रह नाम, श्रेणिक राज करे अभिराम ॥१॥

Closing : हेमराज चीयन यो कही विश्व भूषण प्रकाशी सही।
मनवचकाय मुनै जो कोई, सो नर स्वर्ग अपर पति होई ॥३८॥

Colophon : इति सुगंधदशमी कथा समाप्ता।

१०६७. सुगंधदशमी-कथा

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।
Closing : देखे, क्र० १०६५ ।
Colophon : इति श्री सुगधदशमी कथा जी समाप्तेयं ।

१०६८. सुगंधदशमी-कथा

Opening : देखे, क्र० १०६५ ।
Closing : देखें, क्र० १०६५ ।
Colophon : इति श्री सुगध दशमी कथा समाप्तम् ।

१०६९. स्वरूपसेनकथा

Opening : कौसांबीवास्तव्यो राजाजयसेनो जयावती प्रियंस्तस्यपुत्र-द्वयमभूत् । ज्येष्ठो रूपसेनो लघुर्देवसेनः ।

Closing : सूरसेनोपितया सहससारिक सुखमनुभूय
प्राति स्वरूपेण स्वपत्न्या सहितो दीक्षाम् ॥
आर्द्यायालोचितदु:खकर्म्मा ··· ··· आससाद ॥

Colophon : इति मिश्रे स्वरूपसूरसेन कथा सपूर्णम् ।

१०७०. वीरजिणंद

Opening : वीर जिणंद समोस राजो वद मेघकुमार,
सुण देसण वइरागीउ जो इह संसार असार रि माई उन
मनि देह मुझ आज ॥१॥

Closing : तप तन सो शोलहागइ जी
पहुतो अनुत्र विमाण वीर चरण नित सेवसइ जी
ते पाममि भव पार हु स्वामी अम्ह० ॥

Colophon : इति वीर जिणंद समाप्त. ।

१०७१. विष्णुकुमारकथा

Opening : देखें– क्र० १०५५ ।

Closing : विष्णु कुमार मुनिंद्र की करनी कथा रसाल सुनो ।
भव्य जन भाव सो कही विनोदीलाल मुनि उपसर्ग निवा-
रनी कथा सुनो ।
जो कोई करुना उपजै चित मैं दिन दिन मंगल होय ।

Colophon : इति श्री विष्णु कुमार की कथा सम्पूर्ण ।
देखें, जै० मि अ० ग्र० I, क्र० १५१ ।

१०७२. अरिहंतकेवली

Opening : श्रीमद्वीरजिनं नत्वा वर्द्धमानं महोत्सवम् ॥१॥

Closing : वैरिणां वैरमुक्तश्च मित्रबांधवहेतवे ।
धर्मवृद्धिर्भवेस्तुम्य सर्वथानात्रसंशयः ॥३॥

Colophon : इति तकारादि चतुर्थप्रकरणम् ।
इति अरहंत केवली संपूर्णम् । सवत् १६१७ मिति चैत्रकृष्ण १० । बुधवासरे लिप्यीकृतं ब्राह्मण रामगोपाल वासी मोजपुर कालकलेपुर मध्ये लिखी । शुभं भूयात् ।

१०७३. आराधनासार

Opening : विमलयरगुणसमद्धं सिद्धं सुरसेण वदियं ।
सिरसा णमिऊण महावीरं वोच्छ आराधनासार

Closing : अमुणियतच्चेणइमं भणियं जं पि देवसेणेण ।
सोहं त चमुतिदा अत्थिऊ जइ पवयण विरुद्धं ॥

Colophon : इति आराधनासारसमाप्तः ।
देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० १६५ ।

१०७४. आराधना प्रतिबोध

Opening : श्री जिनवर वाणी नमेवि गुरुनिर्ग्रंथ पाय प्रणमेवि ।
कहुं आराधना सुविचार संक्षेपिसारो उद्धार ॥१॥

Closing : जे सुणें नरनारी जे जाइ भवनैपार ।
श्री दिगम्बर इति कह्यो विचार आराधना प्रतिबोधसार ॥

Colophon : इति आराधनाप्रतिबोध सपूर्णः ।

१०७५. अर्थप्रकाशिका

Opening : बहुरि ज्ञानकूं अल्पाक्षर करि प्रधान
कह्या तोहू, अल्पाक्षर तैं पूज्यपणा प्रधान है। अर दर्शन पूज्य है।

Closing : बरतो भव्यनि उर विषै स्यादवाद उज्जास।
यातैं निज परतत्व सरिव होय जु अर्थ प्रकाश ॥

Colophon : इति श्री तत्वार्थ सूत्र की अर्थप्रकाशिका नाम वचनिका समाप्त।
शुभं भवतु। कल्याणमस्तु।

१०७६. आत्मानुशासन

Opening : वीर प्रणम्य भववारिनिधिप्रपोतमुद्योतिताऽखिलपदार्थमनल्पपुण्यम्,
निर्वाणमार्गमऽनवद्यगुणप्रबंधं आत्मानुशासनमहं प्रवरं प्रवक्ष्ये ॥

Closing : श्री नाभेयोजिनोभूयाद् भूयसे श्रेय सेसवः।
जगद्ज्ञान जलेयस्यद ज्ञाति कमलाकृति ॥

Colophon : इति श्री गुणभद्राचार्य कृत आत्मानुशासन काव्य प्रबंध सपूर्णम्।
लिखित पंडित परमानंदेन ठकैत नामनगरे, संवत् १६२८
का मार्गसिरमासे कृष्णपक्षे तिथौ दशम्यां गुरुवासरे उपाध्याय
विद्ध वरिष्ठ श्री १०८ भट्टारक राजेन्द्रकीर्तिजित् पठनार्थं
परमानंद शुभंभूयात्। श्रीरस्तु।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १३२।

१०७७. बनारसी विलास

Opening : प्रथम सहस्रनाम सिन्दूर प्रकरधाम बावनी सवैया वेद निरनै
पंचासिका।
त्रेसठि सिला का मारग ना करम की प्रकृति कल्यान मंदिर
भाजुवंदन नुत्रानिका।

पैडीकर्म्म छतीसी पिब्बइ ध्यान बतीसी आध्यात्म बतीसी पचीसीग्यान रासिका।
सिव की पचीसी भवसिन्धु की चतुरदसी अध्यात्म फागति षोडस निवासिका ।।१।।

Closing , सत्रह मं एकोतरे समै वंत सितपाख।
तुलिया सो पूरन भई यह बनारसी भाष ।।

Colophon : इति बनारसी विलास संपूर्णं । शुभंभूयात् संवत् १९६० माघौसमे मासमाद्रेमासे शुक्लेपक्षे एकादश्या सोमवासरे। पुस्तकमिद रघुनाथ शर्मणे लेखि। पट्टनपुर मध्ये आलमगंज निवास। पुस्तक सख्या श्लोक अनुष्टुप तीनहजार छसै (३६००) लिखि आरे में बाबू परमेष्ठी सहाय का।

१०७८. बारह भावना

Opening : पंच परम पद वंद हूँ, मन वच सीसनिवाय।
भावै बारह भावना, निज आतम लव लाय।।

Closing . भूला चूका होय जो, भव्य जन लेहु सुधार।
मोह दोस दीजै नही, भैरों कहैं बिचार ।।
श्री जिन धरम न विसारियै ।।

Colophon इति श्री बारह भावना जी समाप्तम्।

१०७९ बारह भावना

Opening : राजा राणा क्षत्रपति हाथिन के असवार।
मरना सबको एकदिन अपनी अपनी बार ।।१।।

Closing : जांचे सुरतरु देय सुख चितन चिंता रैन।
बिन जाचे बिन चितये धर्म सकल सुख देन ।।

Colophon : इति बारह भावना सम्पूर्णम्।

१०८०. बारह भावना

Opening : आदिदेव जिनवें नमो, वदो गुरु के पय ।
बरनों बारह भावना सुनऊ चतुर चित लाय ॥१॥

Closing : जहाँ संवर तहाँ निर्जरा, जहाँ आश्रव तहाँ बध ।
इतनी कला विवेक की और बात संबध ॥१५॥

Colophon : इति ।

१०८१. बीस तीर्थंकर नामावली

अक्षरमात्र पदस्वरहीन व्यंजनसंधिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षन्तव्य को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥

Closing : नियमप्रभ जी, वीरसेन जी, महाभद्र जी, जयदेव जी, अजीत-
वीर्य जी ॥२०॥

Colophon : इति श्री बीसतीर्थंकर के नाम संपूरण ।

विशेष-- इसी में भविष्यत चौबीसी भी अन्तर्भूत है ।

१०८२. ब्रह्म विलास

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहंत बहुरि श्री सिद्ध नमिज्जे ।
आचारिज उवज्झाय तासु पदवदन किज्जै ।
साधु सकल गुणवंत संतमुद्रा लखि बंदौ ।
श्रावक प्रतिमा धरन चरन नमि पाप निकंदौ ।
सम्यक्कवंत स्वसुभावधर जीव जगत महिहो ।
जित तित नित त्रिकाल बदत भविक भाव सहित सिर नाईनित
॥१॥

Closing : बहुत बात कहियै कहायनी यहै जीव त्रिभुवन कौं धनी ।
प्रगट होइ जब केवल ग्यान सुद्ध सरूप वहै भगवान ॥

Colophon : इति श्री भैयाभगौतीदास कृत ब्रह्मविलास सम्पूर्णम् । मान्ना-

मासे उत्तमफाल्गुनमासे तिथौ ६ गुरुवारक दिन पुस्तकसमाप्तम्। लिख्यत काशीमध्ये राजमदिरसीतला घाट देवि क दरवाजा। लिख्यत गौड ब्राह्मण शिवलालक हस्त लिखत जोसीवर वर जीवण। पुस्तक लाला शकरलाल जी लिखाईत पठनार्थं उपकारार्थ श्री भगवान समर्दपणमस्तु। ग्रंथ सख्या ४८०० ।

मगल लेखकानां च पाठकानां च मगलम्।
मगल सर्वलोकानां भूमिपतिर्मंगलम् ॥
देखें--(१) जै० सि० भ० ग्र० i, क० १८६।

१०८३. ब्रह्म विलास

Opening : देखें, क० १०८२।
Closing : देखें, क० १०८२।

Colophon : इति श्री भैयाभगौती दासकृत ब्रह्मविलास संपूर्णम्। श्री संवत् १८६७। शाके १७३२ मासाना मासे उत्तम माघ मासे शुक्लपक्ष तिथौ। १५। भृगुवासरे पुस्तक समाप्त भई। लिख्यत गौड ब्राह्मण शिवलाल काशीमध्ये राजमदिर सीतलाघाट। पुस्तक लाला मनुलाल जी की पठनार्थ परोपकारार्थम्।
यादृश पुस्तक‥ ‥‥ ‥न दीयते ॥१॥
लेखिनी पुस्तिका ‥ ‥ मर्दता ॥२॥
जले रक्ष थले — पुस्तक ॥४॥
ग्रंथ संख्या ४८०० चारहजारआठ सौ
पत्र संख्या-१६८॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः।
मगलं लेखकानां च पाठकानां च मगलम्।
मंगल सर्वलोकानां भूमिपतिर्मंगलम् ॥

१०८४. चैत्यवंदना

Opening : वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेसु नंदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ।
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके, सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानाम् ॥१॥

Closing : णवकोडि — .... अकिट्टिमा वंदे ॥

Colophon : इति चैत्य वदना ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२७ ।
(३) रा० सू० IV, पृ० ३८४, ३८७, ४३२ ।

१०८५. चैत्यवंदना

Opening : सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभुवने व्यंतराणां निकाये,
नक्षत्राणां च निवासे ग्रहगणपटले ताराकाणां विमाने ।
पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणध्वस्त सान्द्रांधकारे,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥

Closing : जन्म-जन्म-कृत पापं जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवंदनात् ॥१२॥

Colophon : इति सपूर्णम् ।
देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० ११२ ।

१०८६. चातुर्मासव्याख्या

Opening : स्मारं स्मारं स्फुरद्ज्ञानधामजैन-जगतम् ।
कारं कारं क्रमांभोजे गौरवं प्रणितिं पुनः ॥१॥

Closing : अक्षयादितृतीयायाः व्याख्यानं बौध्यप्राप्तम् ।
अलेखि सुगमं कृत्वा क्षमाकल्याणपाठकैः ॥१॥

Colophon : इत्यक्षयातृतीया व्याख्यानम् । ग्रंथाग्रमनुमानतः श्लोका सप्तति।
॥७०॥

विशेष – इसमें चतुर्मास के साथ ही अष्टान्हिका व्याख्या, दीवाली-व्याख्या, सौभाग्य पंचमी व्याख्या, ज्ञानपंचमी व्याख्या, मौन-एकादशी, पौष- दशमी व्याख्या, मेरु तेरस व्याख्या, होलिका व्याख्या अक्षयतृतीयादि व्याख्या का समावेश किया गया है।

१०८७. चौदहगुण स्थान

Opening : गुण आत्मीक परिनाम गुणी जीव नाम पदार्थ ते आत्मीक परिनाम तीन जात के। शुभ, अशुभ, शुद्ध तिन ही परिनाम ३ मापक चौदह स्थानक जीवन जाननाम्।

Closing : जथा पाषाणनै सर्वथा भिन्न भया सुवर्ण निः कलंक शोभै त्यौं अपनी अनंत शक्ति करि विराजमान केवलग्यान ।।१।। केवल दर्शन ।।२।। अनत वीर्य ।।३।। क्षाइक सम्यक्त ।।४।। चैतन्य भाव ।।५।। .... परमात्मा कहीये।

Colophon : यह चौदह गुन स्थान का स्वरूप संक्षेप मात्र वर्णन जिनवानी अनुसार कथन कर पूरन किया।
देखें जै० सि० भ० ग्र०, क्र० १०४।

१०८८ चौदह गुणस्थान

Opening : निम मुक्ति के स्थान जाने कौं इह चौदह सीढी है सो प्रथम मिथ्यात गुन स्थान ही मे यह जीव अनादिकाल मे पडा आया है तहाँ कछु भी इसको अपनाभला बुरा होने का ग्यान नहीं हुआ सो मिथ्यात का पांच प्रकार का भेद है –

Closing : जन्म मर्न इत्यादिक संसार का अनेक दुखकर रहित हुआ, अजर अमर कौं प्राप्त हुआ।

Colophon : इति श्री चौदहगुणस्थान की चरचा सम्पूर्णम्। समाप्तम्। शुभमस्तु।

१०८९. चत्वारिदंडक

Opening : चत्तारिमंगलं अरिहंतमंगलं सिद्धमंगलं ।
साहुमंगलं केवलीपण्णत्तोधम्मोमंगलं ॥१॥

Closing : वंदेहिंजिम्मलयरा आचेइं अहिय पयामंता ।
सायर इवगंभीरा सिद्धसिद्धि मम दिसतु ॥८॥

Colophon : इति थोस्सामिदंडक संपूर्णम् ।

१०९०. चौबीस दण्डक

Opening : वदौं वीर सुधीर को महावीर गभीर ।
वर्द्धमान सम्मति महादेव देव अतिवीर ॥

Closing : अंतहकरण जु सुख होय. जिन धरमी अभिराम ।
भाषा कारण करण कूँ, भाषी दौलतराम ॥५७॥

Colophon : इति संपूर्णम् ।

१०९१. चौबीस दण्डक

Opening : देखें – क्र० १०९० ।

Closing : देखें—क्र० १०९० ।

Colophon : इति श्री चौबीस दंडक चौपाई संपूर्णम् ।

१०९२. चौबीस दण्डक

Opening : प्रथम दंडकनि के नाम तहाँ नारक १, भवनवासी देव १०, ज्योतिषी १, व्यंतर १, वैमानिक १, पृथ्वी १, अप १, तेज १, वायु १, ... ।

Closing : … — …तेजकाय वायुकाय विषेभी उपजे है ऐसे चौबीस दंडकनि का कथन लिख्या सो त्रिलोकसार … … आदि ग्रन्थनि ते सोधि करि लेवे ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१०९३. चौबीसठाणा

Opening : गइइंदियं च काए जोए वेए कषायणाणेय ।
संयमदसणलेस्सा भव्विया समत्तसण्णिआहारे ॥१॥

Closing : अपकाय । वायकाय । तेजकाय । पृथ्वीकाय । वनस्पती । वेइन्द्री । तेइन्द्री । चौइन्द्री । जलचर । पंक्षी । चौपदा । उरपद । देव । नारकी । मनुष्य ।

Colophon : इति श्री चौबीस ठाना की चरचा सम्पूर्णम् । मिति पौष कृष्ण बुधवार । सम्वत् १८७४ ।

दोहा— करि कटि ग्रीवा नयनदुख तनदुख बहुत सुजान ।
लिख्यौ जाति अति कठिन तै सब जानत आसान ॥
शुभंभवतु ।

१०९४. चर्चा-संग्रह

Opening : धर्म्मधुरधर आदि जिन, आदि धर्म्म करतार ।
जमूं देवअधरण तै सब विधि मंगलसार ॥१॥

Closing : एक-एकपाखंडी के उपरि एक एक अप्छरा नृत्य करें ऐसे सर्व मिलि सताईस कोड होय छै ऐसा जानना ।

Colophon : इति चर्चासंग्रह समाप्तम् । शुभं भवतु ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १६६ ।

१०६५. चर्चासमाधान

Opening : जयोवीरजिन चंद्रमा उदैअपूरव जासु ।
कलिजुग काले पाव में कीनो तिमिर विनास ।।१।।

Closing : देवराजपूजतचरण असरण सरण उदार ।
बहु सब्ब मंगलकरन प्रियकारणि कुमारि ।।१६।।

Colophon : इति चरचा समाधान ग्रंथ भूधरदास कृत समाप्तः ।। संवत् १८६३ । माघ शुक्ल ११ ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० क्र० १६६ ।

१०६६. चरचासमाधान

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।

Closing : देखें, क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री चरचा समाधाननाम ग्रंथ सम्पूर्णम् । संवत् १८४१ समये अषाढमासे शुक्लपक्षे शुभदिने इदं पुस्तक लेखनीयम् ।

१०६७. देशास्कंध

Opening : नमः सर्वज्ञया तेण कालेणं तेण समएणं समणे भगवान महावीरे ।
... ... — ... ... ।

Closing : वम्सावा सम्पादया सवियाण कप्पई निगन्थाणं
वा ... ... तध्येववायणवैत्तय ।।

Colophon : इच्चेयं सगच्छरियं थेरकप्पं अहासुत्तं अहाकप्प अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणव फासित्ता पालित्ता सोभित्ता वीरित्ता किट्टित्ता आराहित्ता आणा अणुपालित्ता आच्छगइया समणा निग्गंथा तेणेव भवग्गहेणेणं सअत्थं सउभय सवागरणं ....
इति बेमि पज्जो सवणाकप्पी सम्मत्ते दसासु असकंधस्स अट्ठम-

ध्ययण ग्रंथाग्रं श्लोक १२१६ संवत् १७३५ प्रथम ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे सौम्यवारे सप्तमीकर्मवाट्यां श्रीमत् बृहत् खरतरगच्छा तुच्छ युगप्रवरपदधर भट्टारक १०४ श्रीजिनचंद्रसूरिणादाना शिष्येण विनयवता क्षमासमुद्रेण कल्पसूत्रप्रतिलिखति स्म श्रीराज दुर्गे श्री ।

१०६८. दानबावनी

Opening : वंदो अरि जिनंद व्रत तीरथ परगारयौ ।
णमो श्रेयंस नरिंद दान तीरथ अभ्यास्यौ ॥

Closing : रतनत्रै आभरन विराजै वीरनंद गुरु गुन समुदाय ।
तिनके चरन कमल जुग सुमिरत भयो प्रभावज्ञान अधिकाय ।
तब श्री पद्मनंदनै कीने दान प्रकाश काव्य सुखदाय ।
पद्मनंद बसात दानबावनी द्यानत राग ॥

Colophon : इति श्री दानबावनी सम्पूर्णम ।

१०६९. दानबावनी

Opening : देखें, क्र० १०६८ ।
Closing देखे, क्र० १०६८ ।
Colophon : इति श्री दानबावनी सम्पूर्णम् ।

११००. दान-शील-भावना

Opening : प्रथम जीनेसर पाय नमीं यामी सुगुरु पसाय ।
दान शील तप भावना बोली सुबहु संवाद ॥१॥

Closing : दान शील तप भावना रचौ संवाद भणतां गुणतां भावसुरि ।
रीद्धि समृद्धि सुप्रमादोरे धर्म हीयेधरो ॥१॥

Colophon इति श्री दान शीलतप भावना सम्पूर्णम् ।

११०१. देवागम

Opening : देवागमभोयान चामरादिविभूतय. ।
मायाविष्वपि दृश्यते नातस्त्वमसि नो महान् ॥१॥

Closing : जयति जगति .... समुपासते ॥

Colophon : इति श्री समतभद्रपरमार्हताचार्यविरचित देवागमसूत्रं सपूर्णम् ।

दोहा : श्री देवागम ग्रंथ को पौष कृष्ण नव जान ।
... ... एक परमान ॥१॥
लिपिपूरन पुस्तक कियो शुभमुहुर्त शनिवार,
हरिदास सुत अजित को आरा देन मझार ॥२॥
सो जयवतो नित रहो जब लग सूरजचद,
यह जिन सासन त्रिजग हित पूरन सिव सुखकद ॥३॥
शुभं भूयात् । शुभम् ।
देखे, जैं० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४५४ ।

११०२. दिगम्बरआम्नाय

Opening श्री भद्रबाहु स्वामी पीछे दिगम्बर संप्रदाय मे केतेक वर्ष अगनि के पाठी रहे ।

Closing संप्रदाय में जथावत आचार का भी अभाव ही है जो कही होय सो दूर क्षेत्र मे होयगा, परन्तु मोक्षमार्ग की प्ररूपणा तो प्रवनी के महात्म तै वर्तै है ।

Colophon : इति दिगम्बर आम्नाय ।

११०३. धर्मग्रंथ

Opening : मगल लोकोत्तम नमो श्री जिन सिद्ध महंत ।
साधु केवली कथित वर शरण शरण जयवत ॥

Closing : स्याद्वाद् आगम निर्दोष अन्य सर्व ही है जु सदोष।
त्याग दोष गुण धरे विचार हेतु विषय ध्यान निर्धार ॥

Colophon : इति श्री धर्मरत्न सपूर्णम् ।

११०४. धर्मग्रन्थ

Opening : .... दोऊनिका न्यारा-न्यारा मानना ।

Closing : ... — एकेन्द्रिय तो सर्वत्र हैं ही, अर कर्मभूम -

Colophon : अनुपलब्ध ।

११०५. धर्मामृतसार

Opening : अनतर अविनासी भगवान ऋषभपुराण पुरुषोत्तम तिनिकू
प्रणाम करि महापुराण की पीठिका प्रगट करिए है ।

Closing : अर नाभिराज कमल मंडित तलाब की उपमाकू धरें उदय
होणहार भगवान रूप सूर्य तार्कि अभिलाषा करता निरंतर
निरषता संतापरमउदयरूप अतुलधंर्य को धारताभया ।

Colophon : श्री श्री श्री ।

११०६. धर्माष्टक

Opening : मैं देव निति अरिहंत चाहूं सिद्ध कौ सुमरण करौ ।
मैं सुर गुरु मुनी तीन पदमय साध पद हिरदै धरौ ॥१॥

Closing : यह भावना उत्तम सदा भगु तुम सुनो जिनराज जी,
तुम कृपानाथ अनाथ धानत दया करनी न्याव जी ।
दुष्ट कर्म विनास ज्ञान प्रकास मोकूं कीजिए,
करि सुगति गमन समाधि मरण सुभगति चर्णों की दीजिये ॥८॥

Colophon : इति धर्मचाष्टक भाषा सम्पूर्णम् ।

११०७. धर्मपरोक्षा

Opening : पणमूं अरहंत देवगुरु निरग्रंथ दयाधरम ।
भवदधितारन अवर सकल मिथ्यात मथि ॥

Closing : भनत गुनत यह भावरि अहनिसि होइ आनन्द ।
धरमसुण्यातें उपजें यामें परमाणन्द ॥७५॥

Colophon : इति श्री धर्म्मपरीक्षा भाषा मनोहरकृत सम्पूर्णम् । शुभ संवत् १८७१ । शाके १७३६ पौष शुक्ल नवमी भृगुवासरे । पुस्तकमिदं सम्पूर्णमेति । लेखकाक्षर रघुनाथ पाण्डेय पट्टनपुर मध्ये गायघाट स्थाने ।

११०८. धर्मरत्न

Opening : मंगल लोकोत्तम नमों श्री जिन सिद्ध महंत ।
साधु केवली कथितवर धरम शरण जयवंत ॥१॥

Closing : श्रुतकेवलि गुरु के अवगाढ केवलि प्रभु के परम अवगाढ़ ।
आत्मानुशासन के माहि, इति दस भेद सुकथन कराहीं ॥

Colophon : नहीं है ।

११०९. धर्मरत्न ग्रन्थ

Opening : देखें—क्र० ११०८ ।

Closing : धर्मरत्न की ज्योति फैलो चहुं दिस
जब तक सिव मारग उद्योत जयवतो वर्तो सदा ॥

Colophon : नहीं है ।

११९०. धर्मरहस्य

Opening : पचनि में कहिये परमेश्वर पचहु अक्षर नामदिये ते।
उ नमकार सबै सिश ऊपर पर्चनि ते उतपत किये ते।
लोक अलोक त्रिकाल मे नाहि कोई तीन की समदेष हिये ते।१।

Closing : धर्म पचास व दिस्तउ भंज्जत भ्रम विराग स्वज्ञान कथा है।
आपनि औरनि को हितकार पढो नरनार सुभाव तथा है।
अक्षर अर्थ की भूलि परि जहाँ सोध तहाँ उपकार जथा है।
द्यानत सज्जन आप विर्चरत होय वारधि शब्द मथा है।

Colophon : इति धर्मरहस्य कवित्त वावन सम्पूर्णम्।

११११. धर्मसार सतसई

Opening : वीर जिनेश्वर प्रणमु देव, ...
... — सुमिरत जाके पाप नमाय ।१०।।

Closing : गुन थोर — ... .. बल वीर ।।१०१।।

Clolophon : इति श्री धर्मसार भट्टारक श्री सकलकीरत उपदेशात पंडित मीरमण दास विरचिते श्री पचकल्यानक महिमा मयूरम लिखत धरमसनेहो नै। इति श्री धरमसार ग्रंथ सपूर्ण। संवत् १८३२। शाके १६९७ मीति वैसाष शुदि सोमवासरे सपूर्ण।

१११२. द्रव्यसंग्रह

Opening : जीवमजीवं दव्वं जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं।
देविंदविंदवंदं वंदे तं सव्वदा सिरसा।।

Closing : दव्वसंगहमिणं मुणिणाहा दोससंचयचुदासुदपुण्णा।
सोधयंतु तणु सुत्तधरेण णेमिचदमुणिणा भणियं जं ।।६०।।

Colophon : इति श्री नेमिचंदविरचित द्रव्यसग्रहं समाप्तम् ।
देखें, जै० ग्रं० भ० ग्र० I, क० २१३ ।

११९३. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे—क० ११९२ ।
Closing : देखे—क० ११९२ ।
Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादक. तृतीयोध्याय. इति श्री द्रव्यसंग्रह जी समाप्तम् ।

११९४. द्रव्यसंग्रह

Opening : वर प्राणपरित्यागो न वर मानखडनम् ।
प्राणक्षये क्षण दुख मानखडे दिने दिने ॥६॥
Closing : देखे—क० ११९२ ।
Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादक तृतीयोध्याय. । इति द्रव्यसंग्रह समाप्त।

११९५. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क० ११९२ ।
Closing : संवत् सत्रह सौ इकतीस । माघ सुदी दसमी शुभ दीन ॥
मगलकरण परम सुखधाम । द्रव्यसग्रह प्रति करु प्रणाम ॥
Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह कवित्तबध संपूर्णम् । सवत् १८७१ पौष शुक्ल एकादस शनिवार को लिखा ।

११९६. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क० ११९२ ।

Closing : .... विरुद्ध भाषटाली करी साचो सूत्र भाव कास्यो छइ जिणइ ॥

Colophon : इति धर्मार्थी पव्वतनु बालाबोधे द्रव्यसंग्रह सूत्र समाप्तम् ।

१११७. द्रव्यसंग्रह

Opening : तहां प्रथम या ग्रंथ की पीठिका ऐसें जो या ग्रंथ मे तीन अधिकार है तहां पहिला तो षट्द्रव्यपंचास्तिकाय की प्ररूपणा का अधिकार है तहां आदिगाथा तो मंगल अर्थ है तहां एक गाथा उक्तं च सब इंद्र के सब्या का है। .. .. ।

Closing : मंगल श्री अरहृत वर, मंगल सिधि सुसूरि ॥
उपाध्याय साधु सदा, करो पाप सब दूरि ॥१॥

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह ग्रंथ समाप्ताः ।

१११८. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० १११२ ।

Closing : देखें, क्र० १११२ ।

Colophon : इतिद्रव्यसंग्रहसूत्र समाप्तम् ।

१११९. द्वादशानुप्रेक्षा

Opening : जिणवर भासि ... — सुणऊ जीव सुलक्षणा ॥१॥

Closing : .... रयणत्तय गुण ॥

Colophon : इति द्वादशानुप्रेक्षा समाप्ता ।

११२०. ईर्यापथ सामयिक

Opening : ॐ निः संर्भोहं जिनानां सवनमनुपमं श्रीपरीतैनिमत्या, स्थिताममत्वानिविष्ठ चरनपरिणतोमः सर्वहंस्तयुगनम् ।

भाले संस्थाप्यबध्या मम दुरितहरं कीर्तिमः शक्रवंद्यम्,
निवादूरं सदान्त अयरहितममुज्ञानभानु जिनेन्द्रम् ॥

Closing : पापिष्ठेन दुरात्मना जड़धियां मायाभिनालोभिना,
रागद्वेषमलीमशेषमनसादु श्कर्म्मयं निर्मितम् ।
त्रैलोक्याधिपते जिनेंद्रभवत् श्रीपामूलेंघुना,
निंदाद्रूरंमहं अजामि सततं निवृत्तये कर्मणाम् ॥

Colophon : इति ईर्यापथ सम्पूर्णम् ।

११२१. गतिलक्षण

Opening : स्वर्गच्युतानामीहजीवलोके चत्वारिनित्यमुदयं वसंति ।
दानप्रसंगो मधुरा च वाणी देवार्च्चन सद्गुरु सेवन च ॥

Closing : बह्वाशी नैव संतुष्टो, मायालुप्तप्रपंचकः ।
मूढस्च पलालशर्चैव तिर्यग्योन्मा मतोभरः ॥

Colophon : इति गतिलक्षणं समाप्तम् ।

११२२. गोम्मटसार

Opening : वंदौं ज्ञानानंदकर नेमिचंद गुनकंद ।
माधव वंदित विमलपद पुण्य पतोनिधिनंद ॥१॥

Closing : अपर्याप्त मैं मिश्रगुणस्थान नांही तातैं कृष्ण लेश्या का मिश्र
गुणस्थान विषै देव किया तीन कति हैं इत्यादिक यथा सभव
अर्थ जानिर्धनिकरि कहिए हैं, अर्थ सोजानना ……… ।

Colophon : इति आचार्य गोम्मटसार द्वितीयनाम पंचसंग्रह ग्रन्थ की जीव-
तत्त्व प्रदीप का नाम संस्कृत टीका कै अनुसारि सम्यग्ज्ञान
चंद्रिका नामा भाषा टीका … — … ।
देखें, दि० जि० ग्र० प्र० I. क्र० २४४ ।

११२३. ध्यान के आठ अंग

Opening : विजन मैथसमबह । · — … अचुअंबव ॥

Closing : ऐसे ग्यान के आठ अंग हैं सो धर्मात्मा जीवन करि धारवे योग्य हैं ।

Colophon : इति ग्यान के अष्टअंग सम्पूर्णम् ।

११२४. हणवन्त अणुप्रेक्षा

Opening : सिद्धाणिजोय जीव वणस्सई कालू पुग्गभाव्वेव ।
सव्वमलोगागास छच्चेव अणतया भणिया ॥

Closing : इयवारियाउ मुणेवि — ... — ... ...
.... — रोहवेण सइंसुअडालेहिं ॥

Colophon : इति हणवन अणुप्रेक्षा समाप्तम् । पंडित बछराज लिखितम् ।

११२५. जिन गायत्री त्रिकाल संध्या

Opening : अथोच्यते त्रिवर्णाना शौचाचारविधिक्रमं ।
प्रातरेव समुत्थाय स्मृत्वास्तुत्वा जिनेश्वरम् ॥१॥

Closing . — संध्योपासनं ॥८॥ चेति सत्कर्मणि क्रमेण कुर्यादिं नित्यदाहिं नमो हैत भगवते ... ... अर्हं ... स्वाहा ।२॥ ॐ ह्रीं ह्रीं

११२६ जिनगुणसम्पत्ति

Opening : सस्तुवे सर्वदा देवं गोपेशं गोपति परम् ।
दर्शनादर्प्पन पश्यन् त्रैलोक्य द्विगुणायते ॥१॥

Closing : इति व्रतमहिमान विदितपुराण संकिलिख्य भो विबुधजनाः ।
कुरुत सलील व्रतमतिरम्य शिवसौख्य यदि प्राप्तुमनाः ॥७॥

Colophon : इति जिनगुणसम्पत्ति विधान समाप्तः । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु । शुभमस्तु ।

११२७. जिनमहिमा

Opening : श्री जिनवर नाम की महिमा अगम अपार ।
धरि प्रतीति जे जपत, ते सफल करत अवतार ।।

Closing : अद्भुत अतिसै तुम धरे वीतराग निज लीन ।
पूजक सहजैं उच्चह्वैं निंदक सहजैं हीन ।।७।।

Colophon : इति जिनमहिमा सपूर्णं ।

११२८. जीवराशि क्षमावाणी

Opening : ह्विरागी पद्मावती जीवराश षिमावैं ... ।
... ... जे मैं नीक विराधिया ।।

Closing : रामवयराडी जे सुनै ... ... तत्तकाल ।।३२।।

Colophon : इति जीवराशि सिक्षावाणी समाप्तम् ।

११२९. णनपचीसी

Opening : सुरनरतिर्यग्योनि मैं निरहै निगोदिभवंत ।
महामोह की नींद मैं सोए काल अनंत ।।१।।

Closing : कहे उपदेश वाणारसी चेतन अब कछु चेति ।
आप समझावैं आप कू जपैं कर्म के हेति ।२५।।

Colophon : इति श्री ज्ञान पचीसीसंपूर्णम् ।

११३०. ज्ञानार्णव-वचनिका

Opening : पिंडस्थं पदस्थं च रूपस्थ रूपवर्जितम् ।
चतुर्द्धाध्यानमाम्नातं भव्यराजीवभास्करैः ।।१।।

Closing : अक्षर पदकूं अर्थ रूप ले ध्यान मैं,
जे ध्यावैं उम मत्र रूप एकता मर्म,

ध्यान पदस्थ जु नाम कह्यो मुनीराज नै।
जे या मैं हू लीन लहै निज काज मैं ॥१॥

Colophon : इति श्री शुभचन्द्राचार्य विरचित योगप्रदीपाधिकार ज्ञानार्णव-नाम संस्कृत ग्रन्थ की देश भाषामय वचनिका विषै पदस्थध्यान का प्रकरण समाप्त भया। श्रीरस्तु।

११३१. कर्मप्रकृति ग्रथ

Opening : पणमिय सिरसा णेमि गुणरयणविहूसण महावीरं
सम्मत्तरयणणिलय पयडिसमुक्कित्तण वोच्छ ८६ ॥१॥

Closing : पाणवधादीसु रदो जिण पूयामुक्खमग्गविग्घयरो।
अज्जेइ अतराय ण लहइ ज इच्छिय जण ॥

Colophon : इति श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तदेव विरचितायां कर्म्मप्रकृतिग्रंथः समाप्तः।
देखे, जि० र० को०, पृ० ७२।

११३२. कर्म-बतीसी

Opening : पर्म निरंजन परम गुरु परम पुरुष परधान।
वन्दौ परम समाधिमय भयभंजन भगवान ॥१॥

Closing : यह परमारथ पथ गुन, अगम अनत बखान।
कहत बनारसी दास इम जथा मकत परवान ॥३२॥

Colophon इति ध्यान वतीसो सपूर्णम्।

११३३. कार्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening : तिहुवणतिलयं देव वंदित्ता तिहुअणिदपरिपुज्जम्।
वोच्छं अणुवेहाओ भविय जणाणंदजणणीओ ॥

Closing : मुनि श्रावक के भेदतैं, धरमदोय परकार ।
ताको सुनि चिन्तौ सतत, गहि पावो भवपार ॥

Colophon : इति स्वामि कार्तिकेय अनुप्रेक्षा समाप्तम् मिति चैत सुदि ७
संवत् १९३८ वार मगल ।
इति श्री

११३४. लघुतत्त्वार्थसूत्र

Opening : दृष्ट येन चराचर केवलज्ञान चक्षुषा ।
प्रणमामि महावीरे वदे कांतां प्रवक्षते ॥१॥

Closing : त्रिविधो मोक्षमार्गहेतवः ।१३। पंचविधनिर्ग्रंथाः ॥१४॥ त्रिविधा
सिद्धा. ।१५॥ द्वादशसिद्धस्यानुयोगनामानि ।१६॥ अष्टौरेसिद्ध-
गुणाः ॥१७। द्विविधा सिद्धा. ॥१८॥ वैराग्य चेति ॥१९॥

Colophon इति लघुतत्वार्थं सम्पूर्णम् ।
विशेष – इसके पहले हेत्र में ही लिखा है कि अब 'अर्हत्प्रवचन'
कहेगे । अतः इसका नाम भी यही होना चाहिए ।
देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, ग्र० २८० ।

११३५. लघुसामायिक

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभावने ।
नम श्रीवर्द्धमानाय वर्द्धमानजिनेसिने ॥१॥

Closing एवं सामायिक सम्यक् सामायिक खडित ॥
वर्तनामुक्तिमानस्य कस्य पूर्णयतेर्मनः ॥१४॥

Colophon : इति श्री लघु सामायिक सम्पूर्णम् ।

११३६. लघु सामायिक

Opening : सिद्धवस्तुवचो भक्तया सिद्धान्प्रणमतः सदा ।
सिद्धकार्यः शिव प्राप्तः सिद्धि ददतु नोव्ययम् ।।१।।

Closing : देखें, क्र० ११३५ ।

Colophon : इति लघु सामयिकम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३६६ ।

११३७. लश्या स्वरूप

Opening : आर्तरौद्रसदाक्रोधी मत्सरीधर्मवर्जितः ।
निर्दयोवैरसंयुक्त '' कृष्णलेश्याधिकोनर. ।१।

Closing : किन्हाए जाई नरयं नीलाए थावरो होई कानुहुए तिरिय गई ।
पीताए मानुसो होई, पो माए देव गइ सुक्काए पावई सामय ठाण

Colophon : इति लेश्य स्वरूपं सम्पूर्णम् ।

११३८ लीलावती प्रकीर्णक

Opening : प्रीतिं भक्तजनस्य यो जनयते विघ्न निर्विघ्नस्मृतस्तंवृ दारकवृ द वंदितपदं नत्वामतगाननम् ।
पाटीं सदणितस्य वच्मिचतुरप्रीतिपदास्फुटां संक्षिप्ताक्षरकोमला-मलपदैर्लालित्यलीलावती ।.१।।

Closing : ... ... एक का बोलबाला रहा रहन दे और सोलह रहन दे असा अंक राखैं और मिटाय डालें। अब एकका भाग सोलह मैं देइ पाये सोलह दश अंक के सोलह दाडियं पायें ।

Colophon : इति भास्कराचार्य विरचितायां भणित - - लीलावत्यां प्रकीर्णकानि समाप्ता ।

११३६. मिथ्यात्व खण्डन

Opening : प्रथम सुमरि अरहंत कौ सिद्धन कौ धरिध्यान।
सरस्वती सीस नमाइकैं, बंदौ गुरु जु ग्यान ।।

Closing : ग्रथ अनूपम रच्यौ यह है ग्रंथिनि की सारिथ।
सूरिष हाथि नदेहु भवि अधिक जतन सौं राखि ।।

Colophon : इति मिथ्यात्व खण्डन सम्पूर्णम् । शुभ संवत् १८७९ मीति चैत्र सुदि ।९। रविवासरे उपदेश ब्रह्मपद्मसागर जी लिखित अनुश्रावक आरा नगर।
श्रीरस्तु ।

विशेष— इसके बाद एक छप्पय भी दिया हुआ है।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २८५ ।

११४०. मोक्ष मार्ग

Opening : मगलमय मगलकरण वीतराग विज्ञान।
नमो ताहि जाते भए अरहतादि महान् ।।

Closing : जैसे बादरे कैं भी हस्त पदादि अग होहैं। परन्तु जैसे मनु क्षेते से न होहै। तैसे मिथ्या दृष्टिनि कैं भी व्यवहार रूप निसकितादि अंग हो है, परन्तु जैसे निश्चय की सापेक्षा लिए सम्पक्कै होइ तैसे न हो है।

Colophon : नहीं है।

११४१. मोक्षमार्ग पैडी

Opening : इक समे रुचिवंत जी गुरु अक्खैहै सुनमल्ल।
जो तुम अदर चेतना वहै तु साटी अल्ल ।।१।।

Closing : भव थिति जिनकी घटि गई तिनकौं यह उपदेश ।
कहत बनारसीदासयो मूढ़ न समुझैलेस ।।२२।।

Colophon : इति मोक्षमार्ग पैडी समाप्ता ।

११४२. मोक्षमार्ग पैडी

Opening : देखें, क्र० ११४१ ।

Closing : देखें, क्र० ११४१ ।

Colophon : इति मोक्षपैडी संपूर्णः ।

११४३. मृत्यु महोत्सव

Opening : मृत्युमार्गप्रवृत्यस्य वीतरागो ददातु मे ।
समाधिबोधिपाथेय यावन्मुक्तिपुरीपुरम् ।।

Closing : स्वर्गैश्वर्यविचित्रनिर्मलकुले सस्मर्यमानाजनैः,
भूत्वा मुक्तिविधायिनां बहुविधिं बाक्षानुरूप फलम् ।
मुक्त्वा भोगमहर्निश परकृत स्थित्वा क्षणमडले,
पात्रावेशबिबर्जनामिवमृतं संतो लभन्तिस्तत ।।

Colophon : इति मृत्युमहोत्सव सम्पूर्णम् समाप्ता ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २७० ।

११४४. मुक्तिसूक्तावली

Opening : देवलोक ताको घर आगन राजा ऋद्धि सेवैतसुपाय ।
ताके तन सौभाग्यआदि गुन केलि विलास करि नित आय ।।
सो नर उतरत भवसागर निरमल हौइ मोक्षपद पाय ।
दरब भाव विधि सहित बनारसि जो जिनबर हरजिमन लाइ
।।१।।

Closing . सोनहसैइक्यानवै रितुग्रीष्म वैशाख ।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र सितपाख ।।१०४।।

Colophon : इति मुक्तिमूक्तावली भाषा समाप्ता ।
श्रीः सवत् १६६८ वर्षेकार्त्रिकादिप्रतिपदायां शनिवासरे श्री आगरामध्ये लिखित लेखकेन केनचित् । लेखक पाठकयोः शुभंभवतु । इति श्री ।

विशेष— इस ग्रन्थ की अन्तिम पंक्ति के अनुसार सवत् १६६१ है लेकिन Colophon में १६६८ लिखा है ।

११४५. नवकार महात्म्य

Opening : ब्राह्मी ।।१।। चदनवालिका ।२। भगवती राजीमति ।३। द्रूपदी ।४। कौशल्या ।५। मृगावति ।६। ··· ·· ··· ।

Closing : अरि करि हरिसाइण डाइण भूत वेताल,
सवि पाप प्रणासै थास्यै नगलमाल ।
इण सुमरण सकट दूरि टलइ ततकाल,
जपै जिनगुण प्रभू सूरिवर सीस रसाल ।।७।।

Colophon : इति श्री नवकार माहात्म्यसिकाय समाप्तम् ।

विशेष - इसमे सोलह सतियों के नाम भी दिये गये है ।

११४६. नयचक्र

Opening : गुणाना विस्तरं वक्ष्ये ······ ···· ~ ।
नत्वावीरंजिनेश्वरम् ·· ~ — — ।

Closing : तत्र संश्लेषरहित वस्तुसबंधविषयः नयचरितामद्भूतव्यवहार. यथा देवदत्तस्य धनमिति श्लेषसहितवस्तुसंबंध ··· यथा जीवस्यशरीरमिति ।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापद्धतिः । श्री देवसेनपंडितविरचिता नयचक्रपरिसमाप्ताः ।

११४७. नयचक्र

Opening : देखें, क्र० ११४६ ।

Closing : देखें, क्र० ११४६ ।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापद्धति श्री देवसेनपंडित विरचिता । इति श्री नयचक्र समाप्तम् ३०६ श्लोक अनुष्टुप निश्चयेन । इति श्री ।

११४८ नयचक्र वचनिका

Opening : वंदो श्री जिन के वचन स्यादवाद नयमूल ।
ताहि सुनत अनुभव तहाँ है मिथ्या निरमूल ।।१।।

Closing : सत्रह सै छब्बीस कै सवत् फाल्गुन मास ।
उजली तिथि दशमी जहाँ कीनो वचन विलास ।।

Colophon : इति श्री नारायणदास हेमराज कृत नयचक्र वचनिका समाप्तम् । देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २९६ ।

११४९ नयचक्र वचनिका

Opening : देखे, क्र० ११४८ ।

Closing : देखें, क्र० ११४८ ।

Colophon : इति श्री नयचक्र पंडित नरायनदास उपदेशशिष्य हेमराज कृत सामान्य वचनिका संपूर्णम् । इति श्री नयचक्र जी की वचन का सम्पूर्णम् । मिति ज्येष्ट वदि ६ । बुधवार । सवत् १९६२ मु। । चदेरी ।

११५०. निर्वाणकाण्ड

Opening : अठ्ठावयम्मि उसहो चंपासवास्सपुज्जजिणणाहो ।
उज्जत णेमिजिणो पावासणि ब्बुदो महावीरो ॥१॥

Closing जोइपठयतियालं णिब्बुई कंकपीभावसुद्धीए ।
भुंजिनरसुरसुक्र पठइ सो लहइ णिब्बाण ॥

Colophon . इति सम्पूर्णम् । शुभ ।

११५१. निर्वाण काण्ड

Opening : वीतराग वंदो सदा, भाव सहित सिरनाय ।
कहुँ काण्ड निर्वान की, भाषा विविध बनाय ॥१॥

Closing : सवत् सत्रह सै एक ताल, आश्विन सुदी दशमी सुविशाल ।
भंया वदन करे त्रिकाल, जै निर्वानकाण्ड गुणमाल ॥२२॥

Colophon इति निर्वाणकाण्ड भाषा सम्पूर्णम् ।
श्री शुभ इति ।

११५२. पंचविंसतिका

Opening : सञ्जमलमायउ सिद्ध सिद्धगति हयगिदनदपुज्जं ।
णेमि ससिगुरबीर पणमिय तिय सुद्धिभवमहणं ।

Closing मोहाकुमुइणि चद भवदुहसायरण जाण पत्तमिण ।
धम्म विलाससुहदं भणिद जिणदासवम्हेण ॥२६॥

Colophon : इति धर्मव्यंसतिका लिख्य संम्पूर्ण करी ।

११५३. पंच परमेष्टी

Opening : इस जीव के ससार में पाँच ही परमइष्ट है । तातैं इनको पंच
परमेष्ठि कहिए । तिनका स्वरूप सामान्ययनें लिखिए । — ।

Closing : वस्त्र का त्याग ।१। दतवन का त्याग । खड़े होय अहार ले ।१। लघु भोजन एक बेर ले । एव सप्त ए अठाईस गुन साधु महाराज जी का कहुया ।

Colophon : इति श्री समुच्चय पंचपरमेष्टी की चर्चा स्वरूप सपूर्णम् ।

११५४. परमात्मप्रकाश

Opening : चिदानदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय नित्य सिद्धात्मने नम: ।

Closing : परमपयगयाण भासओदिव्वकाउ,
भणति मुनिवराण मुक्खदो दिव्व जोउ ।
विसयसुहरयाण दुल्लहो जोहु लोए ।
जयउ सिवमग्गो केवलो कोण्टिवोहो ।।३४६।।

Colophon : इति श्री योगीन्द्रदेवविरचित परमात्मप्रकाश, समाप्त ।

११५५. परमात्मप्रकाश

Opening : देखें, क्र० ११५४ ।

Closing देखें, क्र० ११५४ ।

Colophon : इति परमात्मप्रकाश: समाप्त. । ग्रन्थाग्र ४५१ श्लोक अनुष्टुप । श्री । श्रीरस्तु । लेखकपाठकयो: शुभ भूयात् ।

११५६. परीक्षामुख वचनिका

Opening : श्रीमत् वीर जिनेस रवि, तम अज्ञान नसाय ।
शिवपथ वरतायो जगति, वदो मैं तसु पाय ।।१।।

Closing : ... कोटि जीव तुल्य कौन गणना में गणिये तौउ हम इस ग्रंथ की टीका करे हैं सो जैसे नदी का जल नवीन घट विषेकिछवा-

लिये सोह शीतल होय पीने वाले को पुरुषनि के चित को प्रिय लागे तैसे तिस प्रभाचन्द्र के वचन ही अपूर्व ... ... ।

Colophon . नही है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० , क्र० ४६८ ।

११५७. प्रश्नमाला

Opening : आदि अन चौबीसलौं वदौ मन वच काय ।
भव्यन को उपदेश दें करो मगलाचार ॥१॥

Closing । इस प्रश्नमाला को अपने कठ मे पहिरे ते भव्यात्मा कल्यान के वांछित सुबुधी जुग भौमो मे सोना पावेगे । ऐसी जान इस प्रश्नमाला को धारण करहु ॥

Colophon . इति श्री हिप्टतारगनाम ग्रथमध्ये अनेक ग्रथान के अनुसार प्रश्नमाला कथन बरननो नाम सधि संपूर्णम् ।

विशेष-- इसके बाद एक दोहा भी दिया गया है ।

११५८. प्रवचनसार

Opening । सर्व्वव्याप्यैकचिद्रूपस्वरूपाय परात्मने
स्वोपलब्धिप्रसिद्धाय ज्ञानानदात्मने नमः ॥१॥

Closing । व्याख्येयं किल विश्वमात्मसहितं — एकं परं चित् ॥

Colophon : इति तत्त्वप्रदीपिका नाम प्रवचनसारवृत्ति समाप्तम् । शुभ अस्तु । संवत् १६६२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे ५ शनीवासरे काष्टामघे नदीतट " भट्टारक श्री रामसेन्यान्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्री चंद्रकीत्ति भट्टाराजकीर्त्ति तस्य शिष्य ब्रह्मधन जी स्वहस्तेनालिखितम् । शुभं भुयात् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ११२ ।

११५९. प्रवचनसार

Opening : देखें—क्र० ११५८ ।

Closing : देखें—क्र० ११५८ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

११६०. प्रवचनसार

Opening : स्वयं सिद्ध करतार करै निज करम सरम ··· ····
··· ··· एक विध अजरअमर

Closing : — मूर्तिक पदार्थ को जानै है अति चचल है अनतज्ञान की महिमा ते गिरा है अत्यन्त विकल है महामोह ··· - ।

Colophon : नही है ।

११६१. प्रायश्चित्त ग्रन्थ

Opening : जिनचन्द्रं प्रणम्याहमकलक. समन्तत ।
प्रायश्चित्त प्रवक्ष्यामि श्रावकाणा विशुद्धये ।।

Closing : प्रायश्चित्त य: करोत्येव देव जाते दोषे तत्प्रशात्यर्थमार्य
राष्ट्रस्यासौ भूमि: यस्यास्यनोपि स्वस्ताचास्यावस्थित
र्ग तनोति ।।९०।।

Colophon : इति अकलंकस्वामिनिरूपित प्रायश्चित्तग्रन्थं संपूर्णम् ।
देखें—जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३२१ ।

११६२. पाप-पुण्य माहात्म्य

Opening : बर्द्धमान जिनवर नमूं, मन वच सीस नवाय ।
फुन गुरु गौतम को नमूं, जातैं पातक जाय ।१।।

Closing : सत्रै मै इक्यानवै, पोष सुदी तिथ दूज।
सुभ नक्षत्र पूरन करी, जिन वानी कूं पूज ॥
जे नर सुर घर गावहीं, तथा सुनै मन लाय।
जिनवांनी सरधा करै अंत सिद्धगत जाय ॥६॥

Colophon : इति अष्टद्रव्य सेती जिन पूजा करी समाप्तम् ।

११६३. पुण्य माहात्म्य

Opening पूरब पुन्न कियो जिन सोय, तेरा वस्तु जु प्रापत होय।
मानुष जनम जु पावै थाय, उत्तम कुल मैं उपजो आय ॥१॥

Closing : शक्र समान तपस्या करै, कुंट शादमीसैं तप करै,
इतने गुन निरमल जिस जोय, तासौं नमस्कार मम सोय ॥८॥

Colophon : इति श्री पुण्य महात्तम समाप्तम् ।

११६४. सम्यक्त्व कौमुदी

Opening : परम पुरुष आनन्दमय चेतनरूप सुजान।
नमी सिद्ध परस्मा जग परकामक भान।

Closing : चंद सुर पानी .. तब लग जैन प्रकाश ॥८६॥

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमदी कथा सादा जोधराज गोदीका विरचिते उदितोदय भूप अर्हदास सवादिकसर्गे गमनचरनतनाम एकादश परिच्छेद । इति श्री सम्यक्त्व कौमदी सम्पूर्णम् । संवत् १८४६ वर्षे मिति ज्येष्ट सुदि ३ वार मंगल श्रीपाश्वैचंद्र सूरि गच्छे श्री १०८ श्री चंद्रभाण जी तत् शिष्य लिखत्तु ज्ञासिंदारमल्लेन श्री सफातपुर नगरमध्ये ।
देखें, जैं० सि० भ० ग्र०) क्र० ११४ ।

११६५. समयसार गाथा

Opening : वीतरागं जिनं नत्वा ज्ञानानंदैकसंपदः ।
वक्ष्ये समयसारस्य वृत्तिं तात्पर्यसंज्ञिकाम् ॥१॥

Closing : सुद्धोसुद्धादेसो णायव्वो परमभावदरिसीहिं ।
ववहारदेसिदो पुणजेहुअपरमे ठिदा भावे ॥१५॥

Colophon : इति समयसार गाथा सम्पूर्णम् ।

११६६. समयसार नाटक

Opening : करम भरम जग तिमिर हरन खग उरग लषन पगसिव मग
दरसी ।
निरखत नयन भविक जल बरखत हरषत अमित भाविक
जन दरसी ॥
मदन कदन जित परम धरम हित सुमिरत भगति भगत
सबदरसी ।
सजल जलद तन मुकुट सपत फन करम दलन जिन नमन
बनारसी ॥१॥

Closing : मर्मसार आतमदरब नाटक भाव अनंत ।
सोहै आगम नाम मैं परमारथ विरतंत ॥७२७॥

Colophon : इति श्री परमागमसमंसारनाटकनाम सिद्धान्त सपूर्णम् । श्रीरस्तु ।
कल्याणमस्तु । शुभंभवतु ।
देखें, जैं० सि० भ० ग्रे० I, क० ३४२ ।

११६७. समयसार नाटक

Opening : देखें, क० ११६६ ।
Closing : देखें, क० ११६६ ।

Colophon : इति श्री परमागम समैसार नांटक नाम सिद्धान्त समाप्तम्। सवत् १८८४ भादौ शुक्ल तेरस सोमवासरे जवाहरमल्ल स्वाध्याय हेतवे।

११६८. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ११६६ ।

Closing : देखें, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति श्री नाटक समयसार सम्पूर्णम् ।
रध्रचद्र वसु ससि अवधि भादव सित ससिवार ।
द्वितिया तिथि पोथी उभय पूरन भई सवार ॥१॥
समयसार नाटक अगम ब्रह्मग्यांत विश्राम ।
पढ़त सुनत सुपर्स उपजै भावित आसाराम ॥२॥
सवत् १८४० कातिग शुक्ल १ रवि दिने लिखित मट्ठकमरामेण पठनार्थमात्मागम: । शुभंभवतु ।

११६९. समवशरण

Opening : समोसरण मंडित नमौ परमागम जिनरूप ।
सुरमरपति वंदित चरण, महिमा अगम अनूप ॥१॥

Closing : इह विधि श्री जिनराज जगनायक सासुत मुकत ।
अहिनिसि मगलकाजे पढत सुनत सब कहुकरौ ॥३०॥

Colophon : इति श्री समोसरणभेद ।

११७०. समुद्घात

Opening : सातसमुद्घात कहै वेदना समुद्घात ॥१॥ कषाय समुद्घात ॥२॥ मारणांतिक समुद्घात ॥३॥ वैक्रिय समुद्घात ॥४॥ तैजस समुद्घात ॥५॥ आहारक समुद्घात ॥६॥ केवलि समुद्घात॥७॥

Closing : अट्ठावीस योगन एकमो अट्ठावीस धनुष सष्ठ्योत्तर अंगुल इतनी जबूद्वीपकी परिधि ।

Colophon : नही है ।

११७१. षट्दर्शन

Opening : शिवमत बोध सुवेदमत नैयायिक मत पक्ष ।
मीमांसकमत जैनमत षट् दरसन पर लक्ष ॥१॥

Closing : रायपवानी ९ पुनीनचावन १० लोचन वड्वा ११ घरघरमी १२ कवित १३ राधा १४ वृषमनचावन १५ पेपजेवाई १६ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

११७२. षट्पाहुड

Opening : काउण णमोयार जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स ।
दसणमग्गं वोच्छामि जहा कम्मं समासेण ॥

Closing : अरहंतो सुदमना ···· ··· पुणा केरिय अण ॥८८॥

Colophon इति श्री कुंदकुंदाचार्य विरचित शीलप्राभृतं समाप्तम् । संवत् १७६५ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे ति १ द्वादसी १२ मंगलवार श्रीराम ।

११७३. षट्पाहुड

Opening : देखें, क्र० ११७२ ।

Closing : एवं जिण पण्णत्त मोक्खस्स य पाहुडं सुभत्तीए ।
जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ सासयं सुक्खं ॥

Colophon : इति श्री कुन्दकुंदाचार्यविरचितं मोक्ष-पाहुड षष्ठ समाप्तम् ।

११७४. षट्लेश्याभेद

Opening : कृष्ण नील कापोतले पीत पदम सुक जान।
सुभ असुभ जु कर्म के ए षट् भेद बखान ॥

Closing : यह षट् विध लेश्या कही सुनो भविक दे कांन।
असुभ जान निर वारियें भैंरो कही बखान ॥

Colophon : इति श्री षट् लेश्या आरती।

११७५. सामायिक

Opening : देखे क्र० ११३६।

Closing : देखे, क्र० ११३६।

Colophon इति संपूर्णम्।

११७६ सामायिक

Opening : पडिक्कमामि भंते इरिया वहियाणं विराहणाए अणागुत्ते अइगमणे।

Closing : गुरुवः पातु वो नित्य ... मोक्षमार्गोपदेशका।

Colophon : इति सामायिक समाप्तम्।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३६५।

११७७. सामायिक

Opening : देखें—क्र० ११७६।

Closing : देखे—क्र० ११७६।

Colophon : इति सामायिकम्।

११७८. सामायिक

Opening : देखें, क्र० ११३६ ।

Closing : देखें—क्र० ११३६ ।

Colophon : इति लघु सामायिक सपूर्ण । आप्य १०८ दीजे ।

११७९. सामायिक

Opening : नमः श्रीवर्द्धमानाय सिद्धं तर्कविलाम्मने ।
सालोकाना त्रिलोकाना यद्विद्यादर्पणायते ॥१॥

Closing : अथय पौर्वाह्निकदेववदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण,
सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतम् ।

Colophon : इति लघुसामायिकसंपूर्णम् ।

११८०. सापाचार

Opening : वंदौ देव युगादि जिन, गुरु गणधर के पाय ।
सुमरू देवी सारदा, रिद्ध सिद्ध वरदाय ॥१॥

Closing : मगल भगवान वीरो मगल गौतमो गणी ।
मगलं कुंदकुंदाद्यो, जैनधर्मोस्तु मगलम ॥

Colophon : इति सापाचार जिनमत की संपूर्णम् ।

११८१. साततत्त्व

Opening : जीव ।१। अजीव ।२। आस्रव ।३। बंध ।४। संवर ।५।
निर्ज्जरा ।६। मोक्ष ।७। एहि साते तत्त्व है इनमें पुन्य और
पाप मिलिकै नौ पदारथ कहिए हैं ।

Closing : इस पाप का सरूप विचार कर के त्यागनां जोग है। एही नौ पंदारथ समान रूप कहा। विशेष .... निर्वर्त होय है ।१।।

Colophon : इति श्री सातसत्व नव पदार्थ की चरचा संक्षेप मात्र जनाया है सो सपूर्णम् । शुभं भवतु ।

११८२. सिद्धान्तसार

Opening : तीन जगतपति जिनकौ धर्मराज के नायक शिवसुखदायक हैं। इस पचगुरु कौं प्रणाम करि कैं आवै भवन उदधिकौं कथन सुनौं भाषु अवै ।।१।।

Closing : जे इह मध्य सुलोक विर्षे जिनराज के मदिर है अचखण्डन। श्री निर्वाण सुभूमि जहाँ न समोस्न भये करिकर्म विखण्डन। जेइ सर्वनकी अनजाणये सबकौ करि भूषित आनन। तै इय सायक देहु मुझै करि जोरि करो सबकौं नित वंदन ।२५।।

Co'ophon : इति श्री सिद्धान्तसार दीपक महाग्रंथे भट्टारक श्री सकलकीर्ति प्रणीतानुसारेण नथमलकृत भाषायां मध्यलोक वर्णनोनाम दसमोध्यायाधिकार ।।१०।।

११८३. सिंदूर-प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening : सोभित तप गजराज सीस सिंदूर पूरव विबोध।
.... — बनारसि जोरि कर ।।

Closing : सोरह सै इक्यानवै रितु ग्रीष्म वैशाख।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र सितपाख ।।३।।
नामसूक्तिमुक्तावली द्वाविंशति अधिकार।
शतसि लोक परवान सव इति ग्रंथ बिस्तार ।।४।।

Colophon : इति श्री सिंदूरप्रकरण सुक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ समाप्तम् । संवत् १८०३ वैशाख सुदी १४ वृहस्पतिवासरे लिखित यति लालचन्द पठनार्थं लाला गोवरधनदासजी ।

विशेष — दि० जि० ग्र० र०, के अनुसार इसके लेखक सोमप्रभाचार्य है तथा टीकाकार हर्षकीति है ।

११८४. सिन्दूर-प्रकरण

Opening : सिंदूरप्रकरस्तपकरि ···· ··· ···· पार्श्वप्रभो पातु वः ।

Closing : किं जातं बहुभिः करोति हरिणी ··· ·· यानिर्भया ॥

Colophon : इति सिंदूरप्रकरणम् सम्पूर्णम् । लिखितं पंडित परमानन्देन मिति चैत्र कृष्णे पंचम्या शुक्रवासरे रात्रौ श्री जिनचैत्यालये संवत्सर १९२८ का । शुभ भूयात् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५२६ ।

११८५. सिंदूर प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening : देखें क्र० ११८३ ।

Closing : देखें, क्र० ११८३ ।

Colophon : इति सिन्दूरप्रकरण सूक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ सम्पूर्णम् ।

११८६. शीलव्रत

Opening : समजुपीय चतुर ··· ··· ··· परनारिसौं ॥१॥

Closing : सीयन गुण कहणकौं ···· ··· बखानें ॥

Colophon : इति श्री सील कथा समाप्तम् ।

११८७. श्रावकाचार

Opening : राजत केवलज्ञान · — सहज सुभाय ॥१॥

Closing : .... एक सर्वज्ञ वीतराग का वचन ताते तू अंगीकार । कर और ताके अनुसार देवगुरुधर्म का सरूप अंगीकार कर श्रद्धान कर।

Colophon : इति कुदेवादि का वरनन संपूर्ण । इति श्रावकाचार ग्रंथ संपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३८३ ।

११८८. श्रावक प्रतिक्रमण

Opening : जीवप्रमादजनिताः प्रचुराप्तदोषा,
यस्मात्प्रतिक्रमणतः प्रलय प्रयांति ।
तस्मात्तदर्थममलं मुनिबोधनार्थम्,
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम् ।।

Closing : अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च ज मए भणियं ।
त खमउ ... दुक्खक्खय दिंतु ।।

Colophon : श्रावकप्रतिक्रमणं समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १७६ ।

११८६. श्रावक प्रतिष्ठाक्रमापण

Opening : देखें, क्र० ११८८ ।

Closing : देखें क्र० ११८८ ।

Colophon : इति श्रावकप्रतिक्रमापणम् ।

११६०. श्रावकव्रतसंध्या

Opening : अपवित्रः पवित्रो .... समुच्यते ।।

Closing : श्रीमत्सिद्धजिनं प्रणमामि सततं ज्ञानामृतं भूषणम् ।
वंदे श्री जिनसेवकं प्रतिदिनं संध्या त्रिकाल कुरु ।।

Colophon : इति श्री सध्या संपूर्णम् ।

११६१. श्रावकव्रतसंध्या

Opening : देखें, क्र० ११६० ।

Closing : देखें, क्र० ११६० ।

Colophon : इति जैनसंध्या सपूर्णम् ।

११६२. श्रावकव्रतविधान

Opening : बारा व्रत श्रावग तने, तिनको कहुं बखान ।
जो जिय निहचै चित्त धरै ताको होय कल्यान ।।१ ।

Closing : बरत जु बारै इम कहै, सुनौ भविक दे कान ।
मो निहचै धर पालीयो मैरो कहै बखान ।।

Colophon : इति श्रावक व्रत समाप्तम् ।

११६३. श्रीपालदर्शन

Opening : ॐ नमः सिद्ध मन धरसंत, उदघाटै जुगपाट तुरंत ।
बार बार भरम भजिमयो, पुन्यहि फलतैं दरसनभयो ।

Closing : तीर्थङ्कर वदो जिनदेव, सीसनवाय करोपद सेव ।
शुद्धभाव जाके मन भयो सम्यकदृष्टि मुकतहि गयौ ।।

Colophon : इति श्रीपालदर्शन सम्पूर्णम् ।

११६४. श्रीपालदर्शन

Opening : देखें, क्र० ११६३ ।

Closing : देखें, क्र० ११६३ ।
Colophon : इति श्रीपाल दरसन सम्पूर्णम् ।

११६५. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : जैसे जे मुनि सम्यक सहीत चारित्र के धारक थे सो कोई कर्म की जोरा परी तैं मोह की प्रबलता करि सम्यक राजपद छूटि गया हो — ।

Closing : आगे अक्षर ज्ञान कहीए है सो उह प्रजाय समास के अन्तभेद में एक भेद और मिलाइए तब अक्षर ज्ञान है सो वह अर्थाक्षर नाम ज्ञान है सो ए सर्व श्रुतिज्ञान के सक्षेप मैं भाव यह अक्षर ज्ञान है ।

Colophon नहीं है ।

११६६. तस्वसार

Opening : झाणग्गिदट्ठकम्मे णिम्मलसुविसुद्धलद्धसब्भावे ।
णमिऊण परमसिद्धे सुतच्चसारं पवोच्छामि ॥

Closing : सोऊण तच्चसारं रइयं मुणिणाहदेवसेणेण ।
जो सद्दिट्ठी भावइ सो पावइ सासयं सोक्खं ॥

Colophon : इति तस्वसार समाप्तः ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६६३ ।

११६७. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्यं द्रव्यषटकं — — सर्वै: शुद्धदृष्टि: ॥

Closing : तवयणं वयधरण - ... निवारेइ ॥

Colophon : इति दशाध्याय सूत्र उमास्वामी कृत सपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४०४ ।

११९८. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें - क्र० ११९७ ।

Closing : देखें, क्र० ११९७ ।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र सपूर्णम् ।

११९९ तत्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११९७ ।

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्त्तार ... उमास्वामीमुनीश्वरम् ।।

Colophon : इति उमास्वामिकृत तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

१२००. तत्वार्थसूत्र

Opening : देख, क्र० ११९७ ।

Closing : ... ...धर्मास्तिकायाभावात् ।।८।। क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्र-प्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनांतरसंख्या ।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमो मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय. ।

१२०१. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७ ।

Closing : देखें, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति श्री तत्वार्थ उमास्वामीकृत सूत्र जी समाप्तम् । संवत् १९२७ मीति भाद्रपद कृष्ण पक्ष ।८। चद्रवासरे लिखित नीलकंठ दासशर्माऽह । श्रीकृष्णाय नमः ।

१२०२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतार भेत्तारकर्मभूभृताम् ।
ज्ञातार विश्वतत्त्वाना वन्दे तद्गुणलब्धये ।।

Closing : देखें क्र० ११६७ ।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र समाप्त. ।

१२०३. तत्त्वार्तसूत्र

Opening : देखें क्र० ११६७ ।

Closing : देखे, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सूत्र समाप्तम् ।

१२०४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११६७ ।

Closing : देखें, क्र० १२०६ ।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र सम्पूर्णः ।

१२०५. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें क्र० ११ ७ ।

Closing : तपश्चरण करिबो, व्रत धरिबो, संयम शरणको करिबो ·······
···· ··· चतुरगति के दुख ते छूटे।

Colophon : इति समाप्ता।

१२०६. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क० ११६७।
Closing : देखें, क० ११६७।
Colophon : इति।

१२०७. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे क० ११६७।
Closing : देखें, क० १२०५।
Colophon : नहीं है।

१२०८. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क०, ११६७।
Closing : अरिहंतभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाणमहोवहं सिरसा।
Colophon : इति सम्पूर्णम्।

१२०९. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क० ११६७।
Closing : णवमे संवरनिज्जर दसमे मोक्खं वियाणेहि।
इय सत्ततच्चभणिय, दहसुत्ते मुणिदेहि ॥६॥

Colophon : इति श्री उमास्वामि विरचित तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।
सवत्सर १६३७ । मिति माघ वदी १२ वार बृहस्पति । इति ।

१२१०. तत्त्वार्थसूत्र

Opening देखे, क्र० ११६७ ।
Closing : देखे, क्र० १२०५ ।
Colophon : नहीं है ।

१२११. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११६७ ।
Closing : देखें, क्र० ११६६ ।
Colophon : इति श्री दशाध्यायसूत्र उमास्वामीकृत सम्पूर्णम् ।

१२१२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० १२०२ ।
Closing : देखे, क्र० १२०० ।
Colophon इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय. समाप्त: ।।

१२१३. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११०७ ।
Closing : देखे, क्र० १२०० ।
Colophon : इति तत्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय: समाप्त: ।

१२१४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११६७ ।

Closing : देखे, क्र० ११६७ ।

Colophon : इति सूत्रदशाध्याय समाप्तम् । श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ ८ भोमवासरे, सवत् १६५५ श्रीरस्तु ।

१२१५. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० १२०२ ।

Closing : पढमे पढम णियमा विदिए विदिय च मज्झकालम्मि ।
जपुणु खाईयमम्म जम्मि जिणा तम्मि कालम्मि ।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्यायः समाप्तः । श्री पटणा-मध्ये साहब बिलदाश तस्य पुत्र साहभगवतिदास तस्य पुत्र आलम-चन्द पठनाय सम्वत् १७७२ वर्ष कार्तिक कृष्ण नवमी तिथौ सोम दिने सम्पूर्णम् ।

१२१६. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें क्र० ११६७ ।

Closing : देखे, क्र० १२०५ ।

Colophon : इति श्री समाप्तः ।

१२१७. तत्वार्थसूत्र वचनिका

Opening : श्री वृषभादि जिनेश्वर अत नाम शुभवीर ।
मनवचकाय विशुद्ध करि वदौं परम शरीर ।

Closing : समयसार अध्यातमसार प्रवचनसार रहमि मनधार ।
पंचासतिकाया ए जीम, नाटकत्रयी कहावै पीम ।
तत्वारथ सूत्तर की टीका, सर्वारथसिद्धि नाम सुठीक
दूजीन तत्वारथ वार्तिक श्लोकरूप वार्तिक तार्त्तिक ।

Colophon : नही है ।

१२१८. त्रेपनक्रिया

Opening : अस्पष्ट ।

Closing : अस्पष्ट ।

विशेष— यह ग्रंथ एक गुटका है जो बहुत ही अस्पष्ट है । बीच के पत्र भी अपठनीय है ।

१२१९. त्रेपनक्रिया

Opening : जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।
... ... सव्वसाहूणं ।

Closing : अस्पस्ट ।

Colophon : अस्पष्ट ।

१२२०. त्रिकाल चतुर्विंशति

Opening : निर्व्वाण जी ।१। सागरजी ।२। महासाधु जी ।३। विमल प्रभु जी ।४। सुद्धाय जी ।५। श्रीधर जी ।६। श्रीदत्त जी ।७। अमलप्रभ जी ।८।

Closing : कदर्प्प जी ।२०। जयनाथ जी ।२१। श्री विमल जी ।२२। दिव्य-वाद जी ।२३। अनंतवीर्यजी ।२४।

Colophon : इति त्रिकाल चतुर्विंशति का नाम सपूर्णम् ।

१२२१. त्रिवर्णाचार

Opening त्रैलोक्ययात्रां चरितुं प्रवीणा धर्मार्थकामा प्रभवति यस्या: ।
प्रसादतो वर्तत एव लोके सारस्वति सा हरतात्मनोद्वे ।।१।।

Closing : सारस्वत्या प्रमादेन काव्य कुर्वन्ति पंडिता ।
ततस्सैषा समाराध्या भक्त्या शास्त्रे सरस्वति ।।

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविंदविनिर्गते श्रीगौतमर्षिपादपद्मारा-
धकेन श्री जिनसेनाचार्येन विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययनसारोद्धारे ग्रहिधर्मदेवपूजा निरूपणीयोनाम पचमं पर्व्वः ।

१२२२. त्रिलोकसार

Opening : त्रिभुवनसार अपार गुन गायक ·· ·· ।
·· · श्री अरहत महत ।।१।।

Closing : सुखनाम निराकुलता का है । निराकुलता वीतराग भावनितै हो है । तातै परम वीतराग भावरूप शुद्धात्म रूप जनित परम आनद की प्राप्ति करहुँ ।

Colophon : इति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४२८ ।

१२२३. वचनिका

Opening : वदो श्री वृषभादि जिनधर्मतीर्थकरतार ।
नमं जासपद इद्रमत शिवमारग रुचिधार ।।१।।

Closing : हे करुणानिधान मेरी रक्षा करहु । तव भगवान कहते भये । हे राम शोक न करि, तूचल देव हैकै एक दिन वासुदेव सहित इन्द्र की नाई पृथ्वी का राज करि । जिनेश्वर का व्रत धरि ।

Colophon : नहीं है ।

१२२४. वैराग पचीसी

Opening : रागादिक दोषन तजैं, वैरागी जो देव ।
मन वचसीसनवाय के,कीजै तिनकी सेव ।।

Closing : एक सात पचास मैं सव बर सुखकार ।
पोष सुकल तिथि धर्म , जै जै निमपतिवार ॥

Colophon : इति श्री वैराग्य पचीसी सम्पूर्ण ।

१२२५. योग

Opening : यह आतमा ससार अवस्था मे जीवात्मा कहावै है और जब यह ही अपनी अतरग बाह्य स्वरूप द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप सकल सामग्री के पावै है ।

Closing भाल आदि दश ध्यान मैं ध्येय थापि मन लाए ।
प्रत्याहार जु धारणा यह ध्यान विधिसार ॥१॥

Colophon : इति श्री शुभचन्द्र आचार्य विरचित योगम् ।

१२२६. योगीरासा

Opening : आदि पुरुष युग आदि ··· आदि जती आदि नाथौ ।
आदि जगत गुरु जोग नयामिउ । जय जय जय जगनाथो

Closing . योगीरासा सीखो रे श्रावक दोस न कोई लीजै ।
जिणदास त्रिविध करि जपई सिद्धह सुमिरण कीजई ।

Colophon : इति योगी रासा सम्पूर्णम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ० ४२ ।

१२२७. अक्षर बत्तीसी

Opening : कहे करम बस कीजै, कनक कामिनी दृष्टि न दीजै ॥

Closing । यह अक्षर बत्तीसिका रची भगवती दास ।
बाल ख्याल कीनो कछु लहौ आतम परगास ॥

Colophon । इति अक्षर बत्तीसी सम्पूर्णम् ।

१२२८. अक्षर बावनी

Opening । ॐ सु अलप परब्रह्म को धरो मदाचित ध्यान ।
जा प्रमाद निहचै मनुज होत सुकृत को थांन ।।१।।

Closing : हरष होत प्रभू दरस तें लहत अनेक अनद ।
लक्ष्मी चद्र समान जस सुविध सीस सुखचद ।।४५४।।

Colophon : इति श्री अक्षर बावणी जी समाप्तम् ।

१२२६. अन्यमत श्लोक

Opening : अहिंसा सत्यमस्तेय त्यागो मैथुनवर्ज्जनम्
पञ्चस्वेतेषु धर्म्मेषु सर्वे धर्मा प्रतिष्ठिता ।।१ ।

Closing : अनुदिने नवग्रहा देवस्य महर्षयो मार्हर्षिभि जुहैया जनकस्य
जतस्य सायणा रक्षा भवतु शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु वृद्धिभवतु
स्वस्तिर्भवतु श्रद्धाभवतु ······ ।।

Colophon नहीं है ।

१२३० अठाईरासा

Opening : वरत अठाई जे करें ते पावै भवपार प्राणी ।
जंबूद्वीप सुहावणो लष योजन विस्तार प्राणी ।।१।।

Closing : मन वच काया जे पढै ते पावैं भवपार ।
विनयकीरत सुबष भनै जाम मंगल स्वार प्राणी ।।

Colophon इति श्री अठाई रासजी समाप्तम् ।

१२३१. अढाईरासा

Opening : देखें, क्र० १२३० ।
Closing : देखें, क्र० १२३० ।
Colophon : इति अढाई पूजा रासौ सपूर्णम् । शुभ भवतु ।

१२३२. बारहमासा

Opening . विनवे उग्रसेन की लाडिली ... समुझावहु मोहि ये हे नगरी ॥१॥
Closing बारह मास पूरे भये ... प्रति उत्तर नाम विनोदि गाई ।
Colophon इति बारहमासा समाप्तम् ।

१२३३. बारहमासा

Opening देखे– क्र० १२३२ ।
Closing : देखे—क्र० १२३२ ।
Colophon : इति श्री बारहमासा जी समाप्तम् ।

१२३४. चंद्रशतक

Opening : अनुभौ अभ्यास मैं निवास शुद्ध चेतन कौ,
अनुभौ सरूप शुद्धबोध कौ प्रकाश है ।
अनुभौ अनूप रूप रहत अनत ग्यान,
अनुभौ अतीत त्याग ग्यांन सुख रास है ।
अनुभौ अपार सार आपही कौ आप जानं
आपही मैं व्यापदीसं जामं जड़ नास है ।

अनुभौ अरूप है सरूप चिदानन्द चंद,
अनुभौ अतीत आठ कर्म सौ अकास है ।।१।।

Closing : गुण ठाणौ मिथ्यात अवृत तन छुटै ग्यारगत
सासादन गुण थान नरक तजि होई तीन रत ।
मिश्र षीन सजोग तहाँ जीव मरहिं न कोई
सुनि अजोग गुन थान छुटै प्रगटै सिव सोई
सपत सेष गुण थे छुटे एक गत देव की
कह्यौ अरथ गुरु ग्रंथ मै सति वचन जिन सेवकी ।।

Colophon : इति श्री बंदशतक समाप्तम् ।

१२३५. चर्चाशतक

Opening : जैं सरवग्य अलोक लोक इक अइवत देवै ।
हसतामल ज्यो हाथ लीक ज्यौं सरव विशेवै ।
छरो हर्व गुणपरज काल त्रय वर्तमान सम ।
दर्पण जेम प्रकाशि नाश मल कर्म महातम ।
परमेष्ठी पांचो विघनहर मगलकारी लोक मैं ।
मन वच काय सिरनायभुव आणद सौं द्यौ द्योक मैं ।।१।।

Closing : चरचा मुख सो भनै सुनै प्रानी जहि कानन ।
केई सुने घरि जाहि नाहि भाषै फिरि आनन ।
तिनि को लखि उपगार सार यह सतक बनाई ।
पढत सुनन ह्वै बुद्ध सुद्ध जिनवानी गाई ।
इसमे अनेक सिद्धान्तकौ मथन कथन द्यानत कह्या ।
सब माहि जीवको नाम है जीव भाव हम सरदह्या ।।१०४।।

Colophon : इति चरचा शतक समाप्तम् ।

१२३६. चौबोस पचीसी

Opening : दरव खेत अरुकाल भाव दरव षट तत्त्व नव ।
ग्यायक दीनदयाल सो अरिहत नमों सदा ।

Closing : कवित्त बनाए सावनि सुनाए मन आए गाए गुन ग्यान ।
चरचा कूप अनूपम वानी हुसभूप चिद्रूप निसान ।
गोमटसार धार द्यानत नैं कारन जीव तत्व सरधान ।
अक्षर अरथ अमिल जो देखौ लेखो सुद्ध छिमा उर आन ॥२५॥

Colophon : इति दरव चौबोल पचीसी संपूर्णम् ।

१२३७. दसबोल पचीसी

Opening : छप्पय – एक सरूप अभेद दोय ······ ।
· ··· जिह तिह विघ भवजल तरौ ॥१॥

Closing : वृषभसेन गुणसेन ·· – यह पुद्गलमय जायहूं ॥२५॥

Colophon इति दसबोल पचीसी सपूर्णम् ।

१२३८. दसबोल पचीसी

Opening : देखें, क्र० १२३७ ।

Closing देखे, क्र० १२३७ ।

Colophon इति दसबोल पचीसी सम्पूर्णम् ।

१२३९. दशथान चौबीसी

Opening : रिषभदेव रिषभदेव छोर गभीर धीर धुनि ।
चार वीस जगदीश ईश ते ईस दुगुन गुन ।
सुरग ठांम निज नाम मातपुरतात वरन तन ।
आव काय सुभचिह्न मुकुत आसन दस वरनन ।

जसगाय पुन्न उपजाय बुद्ध पाय करो मगल अमर।
सिरनाय नमो जुग जोर कर भो जिनद भौ तापहर ॥१॥

Closing : जै जै मल्ल ब्रह्मचरिज अटल बल सकल बनाए।
एक एक जिन स्वाम नाम दस दस गुन गाए।
सुनत सुनत चित चुनत धुनत दुख सतत प्रांनी।
धानतराय उपाय गाय जिन पाय कहानी।
गद जनम जरामृत नहि मग एक उपदविगर।
सिरनाय नमो जुग जोरि कर भो जिनद भौ तापहर ॥३०॥

Colophon : इति श्री दसथान चौबीसी सपूर्णम्।

१२४०. ढालगण

Opening : देव धरम गुरु वदिके कहू ढाल गण सार।
जा अवलोके बुद्धि उर उपजे सुभ करतार ॥१॥

Closing : अब जनमै नाही या भवमाही सदके साई सबजानी।
तुमको जो ध्यावै तुमपद पावै कवी कहावै अधिकानी ॥६२॥

Colophon : इति श्री ढालगण सम्पूर्णम्। श्रीरस्तु।

१२४१. ढालगण

Opening : देखे, क्र० १२४०।
Closing : देखे, क्र० १२४०।
Colophon : इति श्री ढालगण सम्पूर्णम्।

१२४२. दोहा

Opening : अपनो पद न विचार कै अहो जगत के राइ।
भववन छाय कहा रहे सिवपुर सुधि विसराइ ॥१॥

Closing : रूपचंद सद्गुरुनिकौ, जनु बलिहारी जाइ ।
आपुन वं सिवपुर गए, भव्यनु पथ दिखाई ॥१०१॥

Colophon : इति श्री पंडित रूपचंद विरचिते दोहरा परमारथी समाप्ता ।
शुभं भवतु ।

१२४३. दोहावली

Opening : जिनक वचन बिनोदते प्रगटे शिवपुर राह ।
ते जिनेंद्र मगल करो नितप्रति नयो उछाह ॥१॥

Closing : जो सम्यक्त सहित ··· सोना और सुगन्ध ॥

Colophon : नही है ।

देखें, जै सि० भ० ग्र० I, क्र० ५०८ ।

१२४४. दोहावली

Opening : देखें, क्र० १२४३ ।

Closing : देखे, क्र० १२४३ ।

Colophon : नही है ।

विशेष— चार जगह दोहावली शीर्षक देकर दोहे लिखें गये हैं । चारो में चार-चार पत्र है जिनमे एक समान दोहे दिये गये है ।

१२४५. दोहावली

Opening : देखे, क्र० १२४३ ।

Closing : देखें, क्र० १२४३ ।

Colophon : नही है ।

१२४६. द्विपञ्चाशतिका

Opening : अतिसूछिम करि ... . लेपये छानियें ।।२२।।
Closing : बावन कवित एतौ मेरी मतिमान लए ।
हस के सुभाइ ग्याता गुण गहि लीजियो ।।४५२।।
Colophon : इति श्री बनारसीदास नामांकित द्विपंचाशतिका समाप्ता ।

१२४७ फुटकर-काव्य

Opening : अब हम देव का सरूप जिन सिद्धान्त के अनुसार वर्णन करते हैं
सो सर्व सभासद सज्जन महासयो कू श्रद्धान करण योग्य है ।१।।
Closing : देहे निर्ममता गुरौ विनयता नित्य श्रुताभ्यासता ।
चारित्रोज्वलतामहोपशमता सन्मारनिर्वेदता ... .. ।।
Colophon : अनुपलब्ध ।

१२४८. ज्ञानसूर्योदयनाटक

Opening : अनाद्यनतरूपाय पंचवर्णात्मिमूर्त्तये ।
अनतमहिमाप्राप्त सदाकार: नमोस्तु तै ।।१।।
Closing : अस्पष्ट ।
Colophon : इति श्रीवादिचद्र आचार्यकृत श्री ज्ञानसूर्योदयनाटक सपूर्णम्
श्री पाठकाना शुभ भूयात् । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु लिखित
पडित परमानदेन मिति माघ कृष्ण तिथौ तृतीयाया रविवासरे
सवत् १६२८ का लक्ष्मणपुरसमीपे पैतुरनगरे जिन चैत्यालये ।
देखे, रा० सू० III, ग्र० ८६ ।

१२४९. जैन-रासौ

Opening : अर्हंता छियाला सिद्धा अट्ठ सूर छत्तीसा ।
उज्झाया पणवीसा अट्ठाईसा हुवेई साहूण ।।

Closing : जे नर आप घात कर मरौ होइ तिरजंच चिहूं गति फिरौ।
संसारा दुख भोगवौ दिख आपु धनुरौ धाई .... ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

रा० सू० III, पृ० १४१,

१२५०. जकड़ी

Opening : अब मन मेरे वे सुनि सुनि सिख सयानी।
जिनवर चरनो वे करि करि प्रीत सज्यानी॥

Closing : धन्य धन्य सतगुर के नायक सब सुखदायक तिहुंपन में।
जिन सो समक्ष परी सब भूवर सदा सरन इस भाव वन में॥

Colophon : इति सिस्य जकड़ी सपूर्णम्।

१२५१. जोगीरासो

Opening : आदि पुरुष जो आदिज गोत्तमु, आदि जति आदिनाथो।
आदि जगत गुरु जोग पयासिउ जय जय जय जगनाथो॥

Closing : योगीय रसौ सिखहु रे श्रावग दोसुण को लीजै।
जो जीनदास हंत्रि विधि हिए सिखह सुमिरणु कीजै॥४२॥

Colophon : इति जोगीरासु समाप्ता।

रा० सू० III, पृ० १६५।

१२५२ कवित्त

श्री जिनराज गरीबनेवाज सुधारन काज सबै सुखदाई।
दीनदयाल बड़े प्रतिपाल दया गुनमाल सदा सिरनाई॥
दुरगति टारन पाप निवारन हौ भवतारन की भवताई।
बारबार पुकार करौ जन की बिनती सुनिए जिनराई॥

Colophon : इति श्री नंददासेन कृता मानमजरी नाममाला सपूर्णम् । शुभम् अस्त । पाठकस्य शुभ भूयात् । संवत् १८०६ । शाके १६७१ ।। पौष वदि अष्टमी गुरुवासरे पुरैनिआ नगरे फतेहपुर ग्रामे श्री खेदु पाण्डेय पुस्तकमिदं लेखि ।

१२५८. नवरत्न-कवित्त

Opening ; धन्वतरि छिपनकअमरघटकर्प्पवेताल ।
वररुचि-सकु-वराहमिहरकालिदासनवलाल ।।।१।।

Closing . कुलवंत पुरुष कुलविधि तजै वधु न मानै वन्धु हित ।
सन्यास धरिधन सग्रहै ए जग में मूरख विदित ।।

Co'ophon इति नवरत्न कवित्त समाप्त ।

१२५९. नेमिचन्द्रिका

Opening . अस्पष्ट ।

Closing . अस्पष्ट ।

विशेष-- यह ग्रथ एक गुटका है, जो बहुत ही अस्पष्ट है । बीच के कुछ पत्र पढे जा सकते हैं ।

१२६०. नेमिचद्रिका

Opening : आदिचरण हिरदै धरौ, अजित चरणचित लाइ ।
सभव सुरत लगाइकै अभिनदन मनु लाइ ।।१।।

Closing : तौ होई ब्याह को साज काज बहुविधि सो कीन्हो ।
देस देस प्रति नृपति सबनि को ˙˙ ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२६१. नेमिचंद्रिका

Opening : देखें, क्र० १२६० ।

Closing : नेम चंद्रिका ज पढ़ै जाको पुन्य प्रकाश ।
आसकरन लघु वीनवै जिनबानी को दास ॥२१९॥

Colophon : इति नेमचद्रिका सपूरन ।

१२६२. नेमिनाथ बारहमासा

Opening : देखे, क्र० १२३२ ।

Closing : देखे, क्र० १२३२ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ राजुलमती का बारहमासा प्रतीकुनर सपूर्णम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ०

१२६३. नेमिनाथ विवाह

Opening : एक समै जो समुद्र विजै द्वारका मह नेम को ब्याह रचो है ।
गावत मगलचार वधू कुल में सपके जो उछाह मचो है ।
तेल चढावन को युवति अपने अपने कर थाल मच्यो है ।
नेग करे सब ब्याहन को घर मंडप चित्र विचित्र खिको है ।

Closing : नेम कुमार ने जोग लियो दिन छप्पन लो छद्मस्त रहो है ।
केवलज्ञान भयो प्रभु को सब आठविभु तम दान मही है ।
सात सै बर्ष बिहार कियो उपदेशते धर्म महा मही है ।
निर्वान गये गुनि पाँच सै छप्पन लाल विनोदिक ने सग गही है ।

Colophon : इति श्री नेमिनाथ का ब्याहुला समाप्तम् ।

देखे रा सू० III, पृ० ८४ ।

१२६४. नेमिनाथ विवाह

Opening : देखे, क्र० १२६३ ।

Closing : देखें, क्र० १२६३ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ का ब्याहुला सम्पुर्णम् ।

१२६५. नेमिनाथ विवाह

Opening : देखें, क्र० १२६३।

Closing : देखें, क्र० १२६३।

Colophon : इति श्री नेमनाथ का व्याहुला समाप्त।

१२६६. पखवारा

Opening : पडिवा पथम कला घटि जागी परम प्रतीत रोग रस पागी।
प्रति प्रतिपदा प्रीत उपजावै वहै प्रतिपदा नाम कहावै ।।१।।

Closing : पूर्न्यो पूरण ब्रह्म विलासी पूरण गुण पूरन परगासी।
पूरण प्रभुता पूरण वासी कहै जती तुलसी वमवासी ।।

Colophon : इति पखवाराजी समाप्तम्।

१२६७. परमार्थजकड़ी

Opening : अरहंत चरन चित ल्यावो, फुनि सिद्ध सिव कर ध्यावो।
वंदो जिन मुद्राधारी निर्ग्रंथ जती अविकारी ।।१।।

Closing : म अघाय यों हीरमै निस दिन ए कछि नहूँ ना चुके।
नहि रहै बरज्यो बरजदेख्यो बार बार तहां धुके।
श्री जिन सिद्धान्त सरोज सुंदर ताहि मध्य लगाईए।
रामकृष्ण जकड़ी याको कीए एही सुख पाईए ।।८।।

Colophon : इति श्री रामकृन जगरी संपूर्णम्।

देखें, रा० सू III, पृ० १३७।

१२६८. पिंगल

Opening : मुरलीधर श्रीधर सुकवि मानि महामन मोद।
कवि विनोद को यह कियो उत्तम छंद विनोद ।।१।।

Closing : रूपक घनाक्षरी मे गुर लघु नियमन वतिस वरन वर रचिये चरन चारि ।
कीजै विसरामतित आठ आठ अक्षर पै अन एक लघु तौ नियम करि करि धारि ।
या विधि सरस भाग गुण गुरु सेसनाग कीनो कविराजनि के काज बुद्धि कै विचारी ।।
भाषा सिंधु तरिवेको आघे छंद करिवेको पिंगल बनायो पढियै मे सुद्ध कै सुरि ।।

Colophon : इति श्री कवि विनोद मुरलीधर श्रीधर कृतौ वर्नवृत्त परिच्छेदो-नाम षोडसमो विनोद ।

दोहा— श्रीरणा पत्था पत्थ रस रस वसु ससिवामक ।
सुभ भद्रा मित पक्ष दिण अगारक मतिवक ।।१।।

अपर च — तिथिर्तनिदुभ पुनर्वसुवेला लाभ विराजु ।
राम सहाय लिखितमिद पिंगलग्रंथ सुमाजु ।।२।।
इति श्री पिंगल समाप्तम् । शुभम् अस्तु ।

१२६६. राजुल-पचीसी

Opennig . प्रथम सुमरौ अरिहंत देव ···· सौं विनती करी ।।

Closing : यह लाल विनोदी गावै सुनत सब जन गहवरे
राजुलपति श्री नेमि जिन सब संघ कौ मंगल करे ।२६।।

Colophon : इति श्री राजुल पचीसी जी समाप्तम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ० ८५, १३१, १४६ ।

१२७०. राजुल-पचीसी

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing : देखे, क्र० १२६६ ।

Colophon : इति राजुल पचीसी संपूरन ।

१२७१. राजुल-पचीसी

Opening : सुनु भविजन हो प्रथम ही प्रथम जिनेन्द्र चरन चित ल्याइए ।
सुनु भविजन हो सारद गुरु हि मनाइ जादो राय गाईए ॥१॥

Closing : गावै विनोदीलाल हरषित भविक जनन सुनावई ।
और गावै नर नारी मोउ अमर पद पावई ॥२५॥

Colophon : इति राजुल पचीसी संपूर्णम् ।

१२७२. राजुलपचीसी

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing : देखे, क्र० १२६६ ।

Colophon : इति श्री राजुल पचीसी समाप्तम् ।

१२७३. राजुलपचीसी

Opening : वंदी वे प्रथमही ··· राजमनि जस गाई मो जीवै ॥

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१२७४. रिस्ता

Opening : कीने श्रीनायक तीनी हिए व्यापत है ।
तिहारे दर्शन ········· पाप नासत है ॥

Closing : गहे जिननाथ को — जागे है ॥

Colophon इति रेखता समाप्तः ।

१२७५. रिस्ता

Opening : मुझे है चाव दर्शन का निहारोगे तो क्या होगा ।
गही अब तो सरन तेरी उवारोगे तो क्या होगा ॥

Closing : हरो दुख मो समा अबही, लगा जू संग सारा है ।
प्रभु यह अरज चित्त धरियें नवल वेरा तुम्हारा है ।

Colophon : इति रेषता । इति श्री पूजा जी की पोथी जी समाप्तम् । संवत् १८५३ शाके सत्रे से अठारै आश्विन सुदी ६ वार बुद्ध कौ लिपकरी नजबगढ मध्ये पूज्य रिषि श्रीश्री पूज्य रिषि महाराज जी पेमारिष जी शिष्य हसराज जी तत् शिष्य रामसुख लिखापितम् ।

१२७६. रिस्ता

Opening : मेरा मन महावीर सो लगा ।
खडे हाथ जोर के आए, दरस टुक दीजिए हमको ।
सरन है आज जिनवर का ॥१॥

Closing : एक बुरा कुगुर उपदेश सुणै मति माना ।
तेरी अलप उमर खिरि जाय नरक उठ जाना ॥

Colophon : इति समाप्तम् ।

१२७७. रूपचन्दशतक

Opening : अपनो पद न विचारहु, अहो जगत के राय ।
भव बन छाया कहा रहे, सिवपुर सुधि विसराय ॥१॥

Closing : रूपचंद सद् गुरुनिकी जनु बलिहारी जाई ।
आपुन बैं सिवपुरी गए, भव्यन पथ दिखाई ॥१०७॥

Colophon : इति श्री पाण्डे रूपचद शतक समाप्तम् ।

१२७८. सतसइया

Opening : श्री गुरनाथ प्रसादतैं होय मनोरथ सिद्ध ॥
— — ज्यो तरू वेलि दल फूल फलन की वृद्धि ॥

Closing : आई अवधि विवेक की देखी कोन अनथाय ॥
काग कनक कै पीतरैं हस अनादर भाय ॥

Colophon : इतिश्री वृ दावन जी कृत सतसइया चैत्र शुक्ल १५ संवत् १९५३ गुरुवार आठ बजे रात्रि को आरामपुर में बाबू अजित दास के पुत्र हरीदास ने लिखकर पूर्ण किया ।

विशेष--- डा० नेमिचन्द्र शास्त्री कृत तीथङ्कर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा नामक पुस्तक मे वृन्दावन की प्रवचनसार, तीस चौबीसी पाठ, चौबीसी पाठ, छन्दशतक, अर्हत्पाशाकेवली वृन्दावनविलास आदी ग्रथो का उल्लेख है लेकिन सतसइया का कोई उल्लेख नही है ।

१२७९. समकिताधिकार

Opening : श्री ॐकार हियइ धरी लहि सरसति सुपसाय ।
समकित गुण फल वर्णउ इह पर भवि सुखदाय ॥१॥

Closing : विजय दशमी श्री मठापुर वर मघ सुकल सुखदाई जी ।
वाचक मानव दइ सुखदायक सुणता लील वधाई जी ॥

Colophon : इति समकिताधिकार श्री अरहदास सबन्ध. । सवत् १७०२ वर्षे भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे दशम्या दिन गुरुवार लिखित श्री काला कुन्है ग्रामे । शुभ भवतु न: सदा श्री । श्री ।

१२८०. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : श्री जिनवर के पूजोपद सरस्वति सीस नवाय ।
गनधर मुनि के चरन नमि भाषा कहो वनाय ॥६॥

Closing : ब्यालीस मुनी अनागार। मुक्त गये जग के आधार ।।
पाहि कूट को हरस न करे। कोड उपवास तनो फलभरे ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२८१. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : देखे, क० १२८२।

Closing : समोसरण में जायकें वंदे वीर जिनेन्द्र ।
अहो नाथ तुम दरसन तें कटें करम के फंद ।।८४

Colophon : नही है।

१२८२. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : श्री मसेवित चरण कमल जुग सब सुख लाइक ।
श्री मिवलोक विलोक ज्ञानमय होत सुनाईक ।
अनमित सुख उद्योत कर्म्म वैरी घनघाइक ।
ज्ञान भान परगास पद सब सुखदाइक ।
ऐसे महत अरिहृत जिनन्द निसि दिन भावसो ।
पाउ प्रमाण अविचल सदन वीतराग गुन चावसो ।।१।।

Closing : बीस हजार वरष बीतत मानसीक तह् असन करत ।
दस दुनि पखवारे गए परिमल सहि ... ... ।।

Colophon : Missing.

१२८३. शिखरमाहात्म्य

Opening : पंचगुरु को नमो दोकर सीसनवाय ।
श्री जिन भाषित भारती तांको लागो पाय ।।१।।

Closing : रेवा सहर मनोग वसें श्रावग भव्य सब ।
आदित्य ऐश्वर्ययोग तृतीय पहर पूरण भयो ।।३७।।

Colophon : इति श्री सम्मेद शिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति तच्छिष्य लालचंद विरचिते सुवरवरकूटवर्णनो नाम एकविंशतिम. सर्गः समाप्तः । सम्पूर्णमिति ।

दोहे — सम्वत् अष्टादश शतक वानवे अधिक सुजान ।
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी बुधे पूरण भये गुणखान ।। ।।
रघुनाथ दूज के लिखे भव्यन के धर्म काम ।
वाचै सुनै सद्‌दहै पावै सर्व सुखधाम ।।

१२८४. शिखरमाहात्म्य

Opening : अजितनाथ सिद्धवर कूट । अस्सी कोडि एक अरब चौवन लाख मुनि सिद्ध भये बत्तीस कोटि उपास का फल इस कूट के दर्शन का फल है ।

Closing : पार्श्वनाथ सुवर्णभद्रकूट । सम्मेदशिखर सुवर्ण कूट ते पार्श्वनाथ जिनेंद्रादि मुनि एक करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध भये इस कूट के दर्शन ते सोरा करोड उपास का फल है ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२८५. सोलहकारणरासा

Opening : वीर जिनेस्वर नमसकरी ··· ·· ··· जहाँ हेमप्रभ घन यसा ।।१।।

Closing : सकलकिरत ए रासा कीयौ ए सोलह कारण ।
पढ़ै गुणै जे संभलै तिण शिव सुहकारण ।।७।।

Colophon : इति सोलहकारण रासा जी समाप्तम् ।

१२८६. श्रुतपंचमीरासा

Opening : वरत अठाई जे करै ते पावै भवपार प्राणी ।
जबूद्वीप सुहामणो लष योजन विस्तार प्राणी ॥१॥

Closing : नरनारी जे रास सुणै, मन वच रुचि गावहि ।
सुख संपति आणंद लहै, वछित फल पावहि ॥१०१॥

Colophon : इति श्रुतपचमी रासा ।

विशेष—इसके साथ अठाई रासा भी है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५१६ ।

१२८७. श्रीपालदर्शन

Opening : ॐ नमः सिद्धे मनधर सत उदघाटे जुग पाट तुरन्त ।
उघटवार भरम भजि गयो पुण्य फलै दरसन तुम भयो ॥१॥

Closing : बिनुथुलै सोहै प्रतिबिंब भवि जन प्रीति बाढै अनद ।
अजघना — .... ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखें, रा० सू० III, पृ० १४३ ।

१२८८. सुभाषितावली

Opening : सारात्सार प्रवक्ष्यामि कथित ग्रथकोटिभि ।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥१॥

Closing : मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।
आत्मवत् सर्वभूतेषु पडित तद्विदो विदुः ॥

Colophon : नहीं है ।

१२८९. बाहुबलि

Opening : दोऊ सूर महासुभट भरतबाहुबल वीर ।
अति साज चले रण लरिबेकौं अतिधीर ।।

Closing : सत्रे सै चलहोत्तरै भादौ सुदि सुमवार ।
सुकल पक्ष तेरस भनी गावै मंगल च्यार ।

Colophon : इति श्री भरत बाहुबलि भाषा समाप्तम् ।

१२९०. विवेक-जकड़ी

Opening : चेतन तेरो बानौं चेतन दानौं चेतन तेरी जाति वेवेही
हातै मति खोई जाति विगोई रह्यो प्रमादनि भांति वेवेहो ।।

Closing : कुंदकुंद आचारज गुरुवयणहि मूरख चिनन सभालै ।
आपन औगुण सहज सुनिर्मल जो जिनदास सुपालै ।।

Clolophon : इति विवेक जकरी ।

१२९१. व्यवहारपचीसी

Opening : सम्यग् पदधारी तीनलोक अधिकारी क्रोध लोभ परिहारि ऐसौ
महाराज है ।
सबकौ समान गिना राग दोष भाव विना नाही पास तिना सक्र-
सौ को सिरताज है ।
ताही को बषाण्यौ धर्म्म सोई सांच सोई पर्म और को कह्यो
अधर्म झूठ को समाज है ।
सिवपुर बाट के बटाउनि को संबल है सुख को दिवैयो महाकाज
मांहि नाज है ।।१।।

Closing : चाहत धन सतान .... आनताहि वहे है ।।२६।।

Colophon : इति श्री व्यवहार पचीसी समाप्तम् ।

१२६२. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening : इत्थ यथा तव विभूतिरभूजिनेंद्र धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभादिनकृत: प्रहतान्धकार तादृक्कुतोग्रहणस्य विकाशनोपि ।। ।।

Closing : श्री भक्तामरजी की महिमा बहुत भारी है भारी जानना यामे जेति सिद्धि अरु मत्र है सो सपूर्ण सिद्धि मंत्र उपकार के वास्ते एक एक काव्य के एक-एक मत्र का थोड़ा-थोड़ा फल विध सुधा लिखा ऐसा जानना ।

Colophon : इति श्री भक्तामरनामा श्री आदिनाथ स्वामी का स्तोत्र श्री मानतुंगाचार्य विरचित समाप्त: ।

१२६३. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening : भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणामुद्योतक दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक प्रणम्य जिनपादयुग युगादा वालवन भवजले पतिता जनानाम् ।

Closing : ऋद्धि मंत्र जपिवा यत्र पूजनात् अष्टोत्तरशत् जाप नित्य कीजै दिन ४६ सर्व वस होवें जिसको नामचिंतै सो वस होवै व्रत कीजै ।।४८।।

Colophon : कुछ नही है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५५५ ।

१२६४. चौबीस-तीर्थंकर-मंत्र

Opening : ॐ ह्रौं श्री चक्रेश्वरी अप्रतिचक्रे फुट चिचकाउरूभेईमवा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing । अमोघ लक्ष्मी मिले ताज संग्राम व्यापार सर्वत्र जय होय
तथा वार ७ नित्य स्मरण करना सर्वकार्य सिद्धि होय ।।

Colophon ; इति मंत्र सम्पूर्णम् ।

१२६५. गायत्रीमंत्र

Opening । ॐ भूर्भवः स्व तत् सवितुर्वरेण्य भर्गोदेवस्य धीमही धीयोयोनः प्रचोदयात् ।

Closing । भूतप्राणायाम प्रवर्तकेन तीर्थङ्करदेवेन वृषभसेनादिगौतमांते गणेशमहर्षिणा गायत्रीछंदमा गायत्रीसमाख्यनाऽनेन दिव्यमत्रेण त आदि ब्रह्माण तुष्टु दुरितिसंक्षेपेण ननु निरूपितः

Colophon : इति गायत्रीव्याख्या सम्पूर्णम् ।

१२६६. घंटाकर्णमंत्र

Opening । ॐ घंटाकर्णो महावीर. सर्वव्याधिविनाशका. ।
विस्फोटकभय प्राप्तिः रक्ष रक्ष महाबल। ।।१।।

Closing । नकाले मरणं तस्य न च सर्प्पेण डस्यते ।
अग्नि चौरभयं नास्ति ॐ ह्रीं श्री घंटाकर्णो नमोऽस्तुते ।।४।।

Colophon : इति घटाकर्ण मंत्र ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० 1, क्र० ५६५ ।

१२६७. घंकाकर्णमंत्र

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing । देखे क्र० १२६६ ।

Colophon . इति घटाकर्ण मंत्र ।

१२६८. होमविधि

Opening : श्री शांतिनाथममरासुरमर्त्यनाथ
भास्वति किरीटमणिदीधिति पादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशांतिकरणं प्रणवं प्रणम्य
होमोत्सवाय कुसुमाजलिमुत्क्षिपामि ॥

Closing : शांतिनाथ नमस्कृत्य सर्वविघ्नोपशांतये ।
सर्वभव्योपशांत्यर्थं होमायमुच्यते ॥

Colophon : इति होमविधान सम्पूर्णम् ।

१२६९. जैनगायत्री

Opening : आनादिनिधन मंत्र पचत्रिंशत् तदक्षरम् ।
पचाक्षरमिति ब्रूयात् चतुर्दशमथापि च ॥३॥

Closing : अनादिनिधनो मंत्रो गायित्रीमंत्रसंयुता ।
नित्य च जाप्यते योऽस्य महामंगलदायकम् ॥१०॥

Colophon : इति श्री जैनगायित्री सम्पूर्णम् ।

१३००. जैनसंकल्प

Opening : ॐ यजमानाचार्यप्रभृतिभव्यजनानां स धर्मश्रावणाया-
रोग्येश्वार्याभिः वृद्धिरस्तु ··· — ··· ।

Closing : ··· ··· देवोहं अमुकमंत्रस्य सत्यष्टोत्तर ~ ··· अमुक
लाभाय जपं करिष्ये ।

Colophon : नहीं है ।

१३०१. जिनेन्द्र-स्तोत्र

Opening : ततो गधकुटीमध्ये जिनेन्द्राय हररःमयीम् ।
पूजयामास गधार्द्यैरभिषेकपुर सरम् ।।

Closing : लक्ष्मीवानभिषेकपूर्वकमसो श्रीवज्रजघो विभुः
द्वात्रिंशमुकुटप्रबधमहितक्ष्माभृत् सह ··· ।

Colophon : इति स्तोत्र समाप्तम् ।

१३०२. कामदा-यत्र

Opening : दिवाली के रात को लिखना भोजपत्र पर अस्टगन्ध मो
भुजा मे वाध राखै ।

Closing : अगर मिश्री घी इन सबकी धूप देय ।

Colophon : लिखतं मुन्नीलाल दिल्ली वाले ।

१३०३. क्रियाकाण्डमंत्र

Opening : ॐ भूर्भुवः स्व अर्ह असि आउसा सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रिधारिकेभ्यो
नम. । बार १०८ नित्य जपिये ।

Closing : मध्यम तर्जनीऽनामिका अगरीनिर्जीवन स्वाम ।
अगुष्ठासो जपमाल रूचि गुणे एक बहुतास ।।

Colophon : नही है ।

विशेष— यह ग्रंथ इतना पुराना एव सडा हुआ है कि पढ़ा नही जा सकता ।

१३०४. महालक्ष्मी

Opening : मत्र— ॐ ऐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मी सर्वसिद्धि कुरू कुरू
स्वाहा ।।

Closing : दिन २१ तक जप करना, धूप खेवना गुगुल, अगर, तगर, नाग-रमोथा, छरूछड़ीला, कचूर, गिरीदाख, बदाम छोहारा, मिश्री घी, का होम करना लक्ष ॥१२५०००। सर्वसिद्धि होय शत्रुभय मिटे लक्ष्मी मिले ।

Colophon : कुछ नही है ।

१३०५. मंत्र

Opening : ॐ नमो वृषभनाथ मृत्युंजयाय सर्वजीवशरणाय परममंत्राय पुरुषाय चतुर्वेदायतताय ...

···· मम सर्व कुरु-कुरु स्वाहा ॥१॥

Closing : ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय हंसमहाहंसः परमहंसः कोहंमः अर्हंहंस पक्षिमहाविपक्षि ह्लू फट् स्वाहा ।

Colophon : इति मंत्र सम्पूर्णम् ।

१३०६. मंत्र

Opening : ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीपार्श्वनाथाय धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल महाग्निस्थभय-२ ॐ क्रों प्रो प्री प्र. ठ ठ स्वाहा ।

Closing : अभिषेक मुद्धि तिहका नाना तलै न्हावै-उपवास १०० एक भक्त करै जु पाली पाणी देय वै का हाथ को अहार लेणूं नहीं ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१३०७. मंत्रसंग्रह

Opening : ॐ ह्रों ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ह्लः अमिआउसाय नमः अपराजित मन्त्रोय विघ्न नासय नासय कुरू कुरू स्वाहा ।

Closing : ॐ छो छो छों छः अस्मिन्पात्रे अवतर अवतर स्वाहाः ।
विधि ॥ पेड़ा ३ ॥ बार १०८ ॥ मंत्रसो पठको आनाहो-बोनेता ....।

Colophon : नहीं है ।

१३०८. मंत्रयंत्र

Opening : ॐ क्रो क्रौं क्रौ क्रो क्रो मही अमुकी नामान्याः पतत्याः सर्वत्र-जयसौभाग्य प्रियवल्लभत्व पतिपूजादिसौख्य ... . — ।

Closing : .... नीबू को चूहा के बिलमें गाडिये उपर जूती तीन नाम लेके मारिये दिन तीन ताईं जूती मारिये नाम लेता जाईये ।

Colophon इति मत्र यत्र समाप्तम् ।

१३०९. नमोकारमंत्र

Opening : कहा सुर तरु कहा चित्रावलि कामधेनु कहा रसकुप कहा पारस के पान ते ।
कहा रसपायें औ रसायन कमाये कहा कौन काज होते तेरो लक्ष्मी कै आऐ ते ॥

Closing कान्हबल धाईवेको कान्ह के कमाईवे को कान्हबल लगावे को काहु के उधार के ।
कहत विनोदीलाल जपतहो तिहुकाल मेरे है अतुलबल मंत्र नवकार को ॥

Colophon : इति णमोकार मत्र माहात्म्य समाप्तम् ।

१३१०. पद्मावतीदडक

Opening : ॐ नमो भगवते त्रिभुवन संकरी ।
सर्वाभरणभूषिते पद्मासने पद्मनयने ॥१॥

Closing : जृंभे ह्रीं मोहनीय हिलि हिलि ... ... मां रक्ष पद्मे ॥८॥

Colophon : इति पद्मावती वडक सपूर्णम् ।

१३११. पद्मावतीकल्प

Opening : कमठोपसर्गदलन त्रिभुवननाथं प्रणम्य पार्श्वजिनम् ।
वक्ष्येऽभीष्टफलप्रदभैरवपद्मावतीकल्पम् ॥१॥

Closing : अपराजिनेर्क वा अमुकी मोहय-मोहय स्तंभिनी ... ...
मम वश्य कुरु-२ स्वाहा ।

Colophon : नहीं है ।

१३१२ पद्मावतीकल्प

Opening ॐ अस्य श्री पद्मावती मंत्रस्य सुरासुरविद्याधर-नागेन्द्र-महाऋषि-
पतिर्वृद्धगायत्री छंद श्री पद्मावती देवता कमलबीज वाग्भव
शक्तिप्रणवकीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थ जपे विनियोगः ।

Closing : जृंभे ह्रीं मोहनीय हिलि हिलि रमणे मर्द मर्द प्रमर्द दुष्टे
निकांधकारे दह दह दहने हैन ... ह्रां ह्रीं
ह्रीं ह्रूं प्रसन्ने-प्रहसित वदने रक्ष मां देवि पद्मे ।

Colophon : इति श्री पद्मावतीपटल पद्मावतीकल्प समाप्तम् ।

१३१३. पद्मावतीकवच

Opening : देखे, क्र० १३१२ ।

Closing : इद कवचं ज्ञात्वा पद्मा(व)या स्तौति यो नरः ।
कल्पकोटि शतेनापि न भवेत्सिद्धिदायिनी ॥१८॥

Colophon : इति पद्मावती कवचम् ।

१३१४. पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री पद्मुखी पद्मावतीकवचस्तोत्रस्य श्रीरामचन्द्रऋषिकृत अनुष्टुपछन्दः पद्मुखीपद्मावती देवता ॐ अं मुनिसुव्रति इति बीज ॐ चिन्तामणिपार्श्वनाथ इति शक्ति ॐ धरणेन्द्र इति कीलक श्री रामचन्द्र तव प्रमादसिद्धयर्थे सकललोकोपकारार्थे पद्मुखीपद्मावती स्तोत्र जपे विनियोगः।

Closing : नववार पठेन्नित्य राजभोग समाचरेत् दसवार पठेन्नित्य त्रैलोक्य ज्ञानदर्शनम्।
एकादश पठेन्नित्य सर्वसिद्धिर्भवेन्नरः कवचस्मरणेनैव महावल-
-संवितम्।

Colophon इति पद्मुखीपद्मावतीकवच सम्पूर्णम्।

१३१५. पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री मन्त्रराजस्य परमदेवता पद्मावतीच-णांनुजेभ्यो नमः।

Closing . ॐ ह्रीं श्री पद्मावत्यै महाभैरवी नमः।

Colophon : इति पद्मावतीकवच संपूर्णम्।

१३१६ पद्मावतीकवच

Opening : देखें - क्र० १३१४।

Closing साक्षात् शिव पद का दाता ये इष्ट मन्त्र है, नित्य जपने से सर्व मंगल होय है।

Colophon : नहीं है।

१३१७. पद्मावतीकवच

Opening : देखें, क्र० १३१४।

Closing : देखें, क्र० १३१४।

Colophon : इति श्रीराचचन्द्रऋषिकृत पचमुखीपद्मावती कवच समाप्तेम्।

१३१८. पद्मावतीमंत्र

Opening : ॐ णमो जिणाण ह्री ह्री ह्रौ ह्रूं ह्रौ ह्रः।

Closing : अथवा मुगा के जाप दे लाल वस्त्र पहेर लीजे।

Colophon : इति श्री पद्मावतीदेवी मत्र सपूर्णम्।

१३१९. पद्मावतीमत्र

Opening : ॐ आं क्रों ह्रीं श्री पद्मावती देवी ह्रूं क्ली ह्री नमः। जाप्य ३००००० कीजे।

Closing : अत्रमाहनतुजनाभवृषम ... कालछया नित्यश ॥

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र सम्पूर्णम्।

१३२०. पद्मावतीपटल

Opening : ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथधरणेद्रमहिलाय ... त्रैलोक्य सहारिणा चामुंडा।

Closing : हा ह्री प्ली प्लू हा हा ... पद्मावती धरणी धरणींद्र आज्ञापयति स्वाहा।

Colophon : इति पद्मावती पटल संपूर्णम्।

१३२१. पन्द्रहयंत्र-विधि

Opening : आढसैरे की चाल है भणों की घोड़े की चाल पहली सुं नवकों

द्वै में भरियै एक अंकसुं माड कै नव अक सु माड के नव

अक लिखियै नव को द्वे में इसकी विशेष विधि कहियै दस वार

लिखै तो लोक सर्वमोहित हुवै बीस वेर लिखै तो आर्वण हुवै

तीस बार लिखै तौ पृथ्वी मै जय पावै ।

Closing : दग्धामाषतोल चैव शर्कराघृतसयुतैम् ।

कृष्णपक्षे तु चाष्टम्या वलि दत्वा मक्षिरर्क ? ॥४३॥

१३२२. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : श्रीमद्देवेन्द्रवंदामलमुकुटमणिज्योतिषा चक्र ।

········· पार्श्वनाथोत्र नित्यम् ।।

Closing : इत्य मंत्राक्षरोत्थं वचनमनुपम पार्श्वनाथस्य नित्यम् ।

··· - स्तौति तस्येष्टसिद्धि ॥

Colophon . इति पार्श्वनाथ स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३२३. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : ॐ नमो चन्डोग्र पार्श्वनाथ-तीर्थंकराय धरणेन्द्रपद्मावती सहि-

ताय ।

Closing ·· · घोरोपसर्गविनाशनाय ह्रूं फट् स्वाहा ।

Colophon : इति चडोग्रपाश्र्वनाथस्तोत्र सपूर्णम् ।

१३२४. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : पार्श्वं वः पातुवो नित्य जिनः परमशंकरः ।
नाथः परमशक्तिश्च शरण सर्वं ·— ॥

Closing : त्रिसध्य यः पठेन्नित्यं नित्यमाप्नोति सश्रियः ।
श्रीपार्श्वपरमात्मे ससेवध्व भोबुधासुकृत् ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र समाप्तम् ।

१३२५. प्रातगायत्री

Opening . पार्वत्युवाच देवेधिदेव देवाधिश्वदेवश परमेश्वर. पुरातनः वदुरत्रपरयाप्रोस्याविप्राणो मयि वदन मद्भक्ताना हिताथाय वराण परमेश्वर सन्यासध्यानयुक्त च सूर्याध्यादि सुमाधन ।

Closing । इति महावाक्य ॐ गायत्री चैकपदी द्विपदी चतुस्पद्यपदसिनहि पद्यस· नमस्तेतुरीयाय पदाय तुसीय पददर्शिताय नमो नमः एव चतुर्थाश्रमेन गृहस्थाना प्रसगेन प्रदर्शित ॥

Colophon : अथ प्रातगायत्री विषये सपूर्ण समाप्त. । सवत् १८२५ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे ६ शनिवासरे पुस्तक लिख्यते हरयस मिश्र । कासि जी मे लिखी ।

१३२६. सकलीकरणविधान

Opening : स्नातानुस्नानशुद्धोधृतशितसुद्धोऽन्तरीयोत्तरीय,
सकल्पाचम्य प्राणामिति तममृत परिसेचन तर्पण च ।
आचम्या तस्य शुद्धि पुनरपि सतत शान्तमत्र षडागम्,
दिवस ज.पाद्यि.र परमजपयुक्त रतांश्रदिक्स्वयभु· ॥

Closing : ॐ णमो अरिहंताणं णमोसिद्धाण णमो आयरियाण ।
णमोउवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूग ।
इति पचपद जपेत् ।

Colophon . जिनवरदासस्य पठननिमित्ते लिखित टीकारामेन आरानगर मध्ये शुभम्भूयात् लेखक-पाठकयो आयुरारोग्यमस्तु ।

१३२७. सामयिकविधि

Opening : विधिपूर्वक पडिलेहुए उपगरण प्रमार्जित स्थानकइ स्थापनाचार्य थापितई ।

Closing : ज्ञानपचमी तपग्रहण कुजमालाविधिः ॥२७॥ पासहपडिकमणा वावण विधि ॥२८॥ इत्यादि ।

Colophon · नही है ।

१३२८. शान्तिनाथ-मंत्र

Opening ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्त्तये, ॐ नमो शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्व्वपापप्रणाशाय ।

Closing : सपूर्ण जप सख्या अडतालीस लक्ष प्रमाण निष्टा मना जपै पश्चाद् सपूर्ण सिद्धि स्वयमेव पावै ।

Colophon : नही है ।

१३२९. सरस्वती-मंत्र

Opening : ॐ अर्हन्मुखकमलनिवासिनी पापार्हमक्षयंकरी ... ... मम विद्यासिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा ।

Closing : ॐ ह्रीं श्री क्लीं महालक्ष्मी नम धारकस्य भाण्डागार ऋद्धि वृद्धिअक्षयपूर्ण पूरय पूरय प्रताप विजयी कुरु कुरु स्वाहा ।

जाप सवालक्ष १२५००० दशास होम पचामृत को करें तो प्रभाव वृद्धि होय ।

Colophon : इति विजयप्रतापमंत्र सम्पूर्णम् ।

१३३०. सरस्वतीमंत्र

Opening : ॐ ह्री श्री वाग्वादनी सरस्वती सारदा बुद्धिवर्द्धनी देवी कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : इति । मत्र अष्टोतर शत नित्य जपेत् विद्या प्रकास होइ ।

Colophon नही है ।

विशेष— इसमे मात्र एक ही मत्र है ।

१३३१. सरस्वतीमत्र

Opening : ॐ ह्री श्री क्ली ब्लौं वद वद वाग्वादिनी भगवति सरस्वति परमब्रह्म मुखीद्भूते श्रुतांगिदेवि द्वादशांगेयो नम । मम विद्या-प्रसाद कुरु तुभ्य नम. ।।१।।

Closing : ॐह्री अर्हं णमोपादाणुसारिण ।।८।।
ॐ ह्री अर्हं णमो संभिन्न सोदराणम् ।।९।।

Colophon : नही है ।

१३३२. सरस्वतीस्तोत्र

Opening : ॐ ऐ ह्री श्रीं मन्त्ररूपे विबुधगननुतेदेवदेवेन्द्रवद्यो ।
.... — मनसि सदा सारदे तिष्ठदेवी ।।१।।

Closing : ॐ ह्री क्ली क्रूं श्रीं ह्री रों नम: लक्ष जापते सिद्धि होय ।

Colophon : इति सारदा स्तुति ।

१३३३. सोलहकारण मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धये नमः।
Closing : ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः।
Colophon : सपूर्णम्।

१३३४. सूतक-विधि

Opening : इम सूतक देव जिनद कहै, उत्पति विनास द्विभेद लहै।
जनमें दस वासर को गनिए, मरिहै तब बारह को भनिए ।।१।।

Closing : ग्रथ सम्कृत तैं यहै भाषा कीनीसार।
जो मन समय उपजै देखो मूलाचार ।।२४।।

Colophon : इति श्री मृतक विधि समुच्चय सूतक विधि सपूर्णम्।

१३३५. तंत्रमंत्रसंग्रह

Opening : ॐ ह्रि ह्री ह्ं ह्ः ह्रं ह्रं ह्रौं ह्रः असिआउसा सम्यग्यदर्श-नज्ञानचारित्रेभ्यो ह्री · ···· नमः आचार्य श्रीरविसेनकस्य रक्षा दृष्टिदोषनाश कुरु-कुरु स्वाहा।

Closing : ॐ ह्रीं एकमुखी रुद्राक्षस्य शिवभांडागारे स्थिताय मम ईप्सितं पूरय पूरय श्री आकर्षय दुष्टारिष्ट निवारय निवारय ॐ ह्रीं नमः पीतपुष्पैर्जाप १०००० पश्चाद् नैवेद्य दसास होम एकमुमुखी रुक्षास ··· ─ ।

१३३६. त्रिवर्णाचार मंत्र

Opening : ॐ ह्रां ह्रि ह्री ह्ः ह्ः ह्रे ह्रं ह्रं ह्रो ह्ः असिआउसा सम्यग्दर्शनज्ञानिचारित्रेभ्यो ह्री नमः।

Closing : लिखे उत्तराभिमुखी पद्मासन बीत पुष्पते पूजे।
७२००० प्रयोग लक्ष्मी के वास्ते।

Colophon : इति कुबेर मंत्र।

१३३७. वशीकरण-अधिकार

Opening : अथात संप्रवक्ष्यामि ' प्रशस्यते ॥

Closing : राज्ञां कुले विवादे च अपेक्षास्स्यत्र नशयः।
मानोन्नतिर्भवेत्तस्य यत्रराजप्रसादत.॥

Colophon : इति।

१३३८. वश्याधिकार

Opening : अतः पर देवि तत्र ब्रवीमि दौर्भाग्यह्वणि च कामिनीनम्।
यत्राणि सौभाग्यविवर्द्धनानि संमोहनानि प्रियकामुकानाम् ॥

Closing : सुभगारूपपन्ना पति प्रियवरा भवेत्।
ललिताख्य महामंत्रं स्त्रीणा सौभाग्यकारकम् ॥

Colophon : इति।

१३३९. व्रत-मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं असिआउसा दसपूर्व्वीण सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

Closing : पत्र नैव करीय दारवटपे दोषो वसंतस्य किम्,
बिंदु नैव पतन्ति चातक मुखे मेघस्य किं दूषणम्।
नालोकाय दिपस्मते यदि दिवा सूर्य्यस्य किं दूषणम्।
यत्पत्र विधुना ललाटलिखते तन्मार्यतंकक्षयः ॥१॥

Colophon : श्रीरस्तुमिदं शुभं भवतु।

१३४०. विसर्जन-मंत्र

Opening : सुधाक्षतप्रसवसकुलरत्नदीपैः मानिक्यरत्नमयकांचनभाजनस्थैः।
श्री ज्वालिनीचरणतामरसद्वयाग्रे सन्मगलात्तिकमहं त्ववतारयामि ॥१॥

Closing : जयजय जगदंबे ज्वालिनिसृष्टबिंबे गजगमनविलंबे नागयुगेध्रनितबे।
हृतधनुजगदंबे भालखण्डेन्दुबिंबे नतजनुविकरबे याहिभक्तावलबे ॥

Colophon : इति विसर्जन संपूर्णम्।

१३४१. विवाह-विधि

Opening : या मदन गच्छेत् मंडपे तोरणान्विते।
कन्याया जननी वेगादागत्य पूजयेद्वरम् ॥१॥

Closing : कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे।
चपायां वसुपूज्यसज्जिनपते सम्मेद ·· ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

१३४२. यंत्रमंत्रसंग्रह

Opening : गद्यो हिमनमिपुरे मदीयनेत्रो निवान कुरुदिव्यनेत्रं गह्वस्व वन्हि च पूजा।

Closing : चोदश अदीतवार के दिन मंद भांडार्ने मेल जैतो मदपाणी भवति।

Colophon : इति सम्पूर्णम्।

१३४३. यत्रमंत्रसंग्रह

Opening : ॐ मं म खं खं पि पि रं र क्ष्रां क्ष्रा ह्री ह्रीं अमुकस्यो स्याग्य-२, मारय-मारय चूग्य-चूग्य बुद्धि भृ हीं कुरु-२ स्वाहा।"

Closing : पद्मपुत्री विसहरी एक सहस्र ... बार सात पढनैं तमाचो मारी जैं सर्प विष उतरैं।

Colophon : नहीं है।

१३४४. अष्टांगहृदय

Opening : इति ह्यस्माद्गुरात्रेयादयो महर्षय:
जातमात्र विशाध्यो ल्वास्वालसैंधसपिषा।
प्रसूतिप्लोशितं चानुबला तैलेन सेचयेत्
अश्मनोर्वादन चास्य कर्णमूले समाचरेत्॥

Closing : चिकित्सित हित पथ्य प्रायश्चित्तं भिषग्जितम्।
भेषज शमनं शस्तं पर्यायै स्मृतमौषधम्॥

Colophon : इति चिकित्सिते द्वाविंशोऽध्याय.। इति वाग्भट्टविरचितायां अष्टांगहृदयसंहितायां चिकित्सास्थान चतुर्थं समाप्तम्।

देखें, रा० सू० III, पृ० २४६।
जि० र० को०, पृ० १६।

१३४५. चिकित्साशास्त्र

Opening : जंबा होनी पुरार्कइ लीजइ। दूधसू पीजइ सर्वरोग जाइ॥१॥

Closing : बिन्दु आठ कइ द्रोण प्रमाण, दुई द्रौंणे इक सूर्य की मान।
दोई सूर्य की द्रोणी इक लाखो, बिन्दु द्रोणी इक खारी दाखो॥

Colophon : नहीं है।

विशेष— इसकी लिपि भिन्न २ लोगो द्वारा लिखी गई है जिससे यह संग्रह ग्रंथ मालूम पड़ता है।

१३४६. चिकित्सासार

Opening : च्यारिटाकनि लोफर ल्याइ । तीनि पाव जल मैं औटाइ ॥
अरध रहे जल से छिनवाइ । खाड टांक चालीस मिलाइ ॥
ताको नरम बिमाम बनाइ । घोट इडसो सीसे पाइ ॥
दसरती ली लोफर नित । हर सिर पीर कास ज्वरपित ॥

Closing : सांस की दवा—धतूरा पंचांग कूट के चिलम में पीवें हुक्के की तरह सें सास जाय हुचकी जाय, पेट दरद जाय ।

Colophon : नही है ।

१३४७. ज्वरहर-यंत्र

Opening : ज्वरेत्यादिना केवलं ज्वरकृतदाहमेव नोपशामयति किस्वपरा ।१।

Closing : इदं ज्वरहरं यंत्र मया प्रोक्तं तवानघे ।
उपकाराय लोकानां साधूनां च हिताय वै ।
गोप्यं त्वया सदा भद्रे साधुभ्या नैव गोपयेत् ॥२२४॥

Colophon : इति ।

१३४८. कुट्टककरण छाया व्यवहार

Opening : भाज्यो ···· दुष्टमुछिष्टमेव ॥१॥

Closing : शुद्धिजौजातो गुणएवराशिस्त्वेनांगीकृतः ॥१४॥
पंचगुणी ॥७० ॥ हर ॥६३॥ हृतशेष ॥१४॥ दशगुणे ॥१४०॥ हर ॥६३॥ हृतशेष ॥१४॥ एव बहुत्वे गुणनामैक्य भाज्यं अआणामैक्यमग्रं प्रकल्प्यसाध्यम् ॥

Colophon : इति भास्कराचार्य विरचितोलीलावायां कुट्काध्याय. समाप्ता ॥

१३४६. मदनविनोद निघंटु

Opening : बीजं श्रुतीनां सुघनं मुनीनां बीजं जडाना महदादिकानाम् ।
आग्नेयमस्त्र भवपातकाना किंचिन्महश्यामलमाश्रयामि ॥१॥

Closing : .... यो राजा मुखतिलक: कट्ठारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मिते च ग्रंथेन्मदनविनोदनाम्नि सपूर्णो · ---- प० गुणगणमिश्रकोऽय ॥

Colophon . इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघटौ मिश्रपवर्गस्त्रयोदश ॥१३॥ इति मदनविनोदे निघटौ समाप्तम् ।
सवत् १६१२ का० सु० लिखापित श्री मानसिंघ जी ··· ---
पठनार्थं लिख्योस्यो लालखाजादन ॥

१३५०. नाड़ीप्रकाश

Opening : नाडी तीन प्रकार के है । इगला चद्रमा है मो बाया है । पिंगला सूर्य है मो दाहिना है । दोनो चले सो सुख मन है । कृष्ण पक्ष सूर्य का है । शुक्ल पक्ष चद्रमा का है ।

Closing : दो नव भृकुटी श्वेत श्रवन पाँच तारका जान ।
तीन नाक जीह्वा एके का सभेद पहचान ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३५१. निदान

Opening : प्रणम्य जगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारकम् ।
स्वर्गापवर्गयोद्वारे त्रैलोक्ये शरणं शिवम् ॥१॥

Closing : ग्रहण्यां समधातु. समग्निश्च समदोषमलक्रिय:
प्रसन्नात्मेंद्रिय मना: स्वस्थामित्यभिधीयते ॥

Colophon : इति निदान ग्रं समाप्त । शुभमस्तु । संवत् २७५६ ।

विशेष— यह ग्रंथ माधव निदान मालूम होता है, जिसके लेखक माधवाचार्य हैं।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० ११८ ।

१३५२. पंचदशविधान

Opening : अथात: संत्रवक्षामि सुन्दरीयत्रमुत्तमम् ।
तदकं तु प्रवक्षामि श्रृणु यत्नेन साम्प्रतम् ।।१।।

Closing : इनगीपुगन करके मो राजा-प्रजा सर्वसकारी सिद्ध होय ।

Colophon : नहीं है ।

१३५३. रामविनोद

Opening : सिद्धि बुद्धि दायक मकल गवरि पुत्र गणेश ।
विघ्न विनाशन सुखकरन हरखाधारि प्रणमेश ।।

Closing : द्रोनि मनक को चार ' — राम विनोदी विनोद सौ ।।

Colophon : इति श्री रामविनोद भाषा समाप्तम् । सवत् १९०६ मासोतमे मासे वैशाषमासे शुक्लपक्षे द्वितीयाया वार भौमवारे का लिखि के सपूर्ण भई मितन्त गोती सघई लाला छेदीलाल तस्य पुत्र उजागर लाल तस्य पुत्र जेठे रतनलाल लघुपुत्र बदलीदास ने पोथी लिखी पठनार्थ अपने हित हेतवे बस अग्रवाल का है ।
यादृश पुस्तक — — दीयते ।।१।।
जलं रक्षेत् ... ... पुस्तकम् ।।२।।

१३५४. रूपमंगल

Opening : जमालगोटा अर मिरच बराबरी आदी का रस मैं गोली करै मिरच प्रमाण संध्या प्रात: खाय ।

Closing : नित्यज्वरवालानें दीजै पाडी का मूत्रसू ने जराया याने दीजै त्रिब-
कार मसूं चोथावालाने दीजै इति सर्वज्वर जाय ।

Colophon : इति मगलरूप सपूर्णम् । शुभ भूयात ।

१३५५. शारदा-तिलक सटीक

Opening : श्री तीर्थेश जिनाधीश केवलज्ञानभास्करम् ।
प्रणम्याभ्युदये ध्यात्वा वक्ष्ये मूत्रपरीक्षणम् ॥१॥

Closing : पानट २ सुपेदकथट २ अफीमटं १ इकत्र कर गोली करनी मासे
१ प्रमाण तदलोदकेन समाप अतिसार जाति ।

Clolophon : इति श्री सारदातिलक ग्रथ समाप्तम् । लिखितमिद नित्या-
नन्देन नारनौल मध्ये लिखायतं पंडितजी श्री चेतनदास जी-
कस्मिन्सम्वत्सरे सवत् १६७६ का० वर्षे कार्तिक शुक्ल २ गुरुवा-
सरे अलिखदिदं पुस्तकं यथा स्यात् तथा । श्रीरस्तु

१३५६. सारंगधर संहिता

Opening : श्रिय सदयाद्भवतां पुरारियंदगतेज प्रसरे भवानी ।
विराजते निर्मलचन्द्रिकाया महौषधीव ज्वलिता हिमाद्रौ ॥१॥

Closing . विविधगदार्ति दरिद्रया विनाशन याहग्निमरि चकार वियोगरत्नैः ।
विलसतु शारगधरस्य सहिता सा कविहृदयेषु सरोजनिर्मलेषु ॥

Colophon : इति श्री दामोदरसूनुना शारङ्गधरेण विरचितायां संहितायां
चिकित्सास्थाने नेत्रप्रसादनकर्मविधिरध्याय. समाप्तोयमुत्तर खड।

१३५७. वैद्यभूषण

Opening : सिव सुत पद प्रणमित सदा रिद्ध सिद्ध नित देइ ।
कुमति विनासन सुमति कर मदन सुदन करेइ ॥

Closing : वैद्य ग्रंथ प्रमाण सब ढूढ़ लिया तस लोक ।
छह से सही सब जरा का आधार ।।

Colophon : इति श्री केशवदासपुत्रेण नयनसुखेन विरचिते वैद्यमहोत्सवे स्त्री पुरुष रोग चिकित्सा सप्तम समुद्देश समाप्ता । सवत् १७६६ वर्षे मिती आषाढ़ सुदि १५ मगलवार लिखित पूज्य स्थिविर जी ऋषि श्री गणेश जी तत्शिष्यणी लिखित आर्याषुग्यालो शुभ भवति ।

१३५८. वैद्यमनोत्सव

Opening : प्रणम्य नित्य शिवसूनुमृद्धिद सिद्धि ददातिवितथानि धिय ।
कुबुद्धिनाश सुमति करोति मुद तथा मगलमेव कुर्यात् ।।१।।

Closing : चतुर्भिराटकै द्रोण कलसोप्यल्वणोमत: ।
उन्मनश्च घटोराशि. द्रोणपर्यायवाचक. ।।६।।

Colophon : इति परिभाषा । इति श्री वैद्यमनोत्सव मन्मिश्रविरचित वैद्य-मनोत्सव सपूर्णम् । सवत् १६७६ मिति पौष कृष्ण सप्तम्या गुरुवासरे नारनौलमध्ये कायस्थपुरे लिखितमिद पुस्तक नित्यानद ब्राह्मणेन लिखायत पडित श्री चेतनदास जी । श्रीरस्तु ।

१३५९. योगचिंतामणि

Opening : यत्र विश्रासमायांति तेजांसि च तमांसि च ।
महीयस्तदय वंदे चितानदमयमहम् ।।

Closing : यथा योगप्रदीपोस्ति पूर्वं योगशतं यथा ।
तथैवायं विजयता योगचिन्तामणिश्चिरम् ।।

Colophon : इति श्रीमन्नागपूरीयतपोगणनायक श्रीहर्षकीर्तिसूरि सकलिते वैद्यकसारो श्रीयोगचिंतामणौ सार संग्रहे मिश्रिकाध्याया सप्तमा

समाप्ता। इति श्री योगचिंतामणि शास्त्र समाप्ता।
सूत्रार्थं मिलिनेन प्रथमान ६५०० सवत् रामगणोदधितु प्रमिते
सवत् १७६४ वर्षे मार्गशीर्षमासे कृष्णपक्षे तिथौ एकादश्या
सोमवारे लिखितम्। पूज्य श्री ऋशि स्थिवीर जी श्रीगणेश
जी पूज्य आर्या जी श्री राजो जी लिखितम्।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५९९।

१३६०. यूनानी चिकित्सा

Opennig विघन विघ्न) विनासन देवकूं, प्रथम करुं परनाम ॥१॥

Closing हरतान३ अरद ८ दिरम,सुर्ग ८ दिरम, कहरुवाई ८ दिरम माजू २० दिरम, अगार ४ दिरम, कुट ३ दिरम, फटकडी ४ दिरम, अकाकिया २॥ दिरम, गुलनार ३ दिरम कूट छान कै बीच गिरके कं गलावै २ हप्ते बीच धूप के रखै बाद कर्म करै।

Colophon नहीं है।

१३६१. आचार्य-भक्ति

Opening सिद्धगुणस्तुतिनिरता उद्धूतरूषाग्निजालबहुलविशेषान्।
गुप्तिभिरभिसपूर्णान् मुक्तियुत सत्यवचनलक्षितभावान्॥

Closing : इच्छामि भंते आयरियभक्तिकाउस्सग्गोकउ तस्सालोचेउ सम्मणाण सम्मदंसणसम्मचरित्त जुताण, पंचविहाचाण्ण आयरियाग आयागादिसुदणाणो वदेसियाणं उवझायाणं तिरयणगुण पालणरयाण सव्वसाहूणं णिच्चकालं अच्चेमि, पुज्जमि वंदामि।
सुगइगमण समाहिम णं जिणगुणसम्पनि होउ मज्झ॥

Colophon : इति आचार्य भक्ति:।

देखे, जि० र० को०, पृ० २५।
जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०१।

१३६२. आदिनाथ स्तुति

Opening : जाके चरनारविंद पूजत सुरिंद इन्द्र देवन के वृंदचंद सोभाअतिभारी है।
कहत विनोदीलाल मन वच तिहू काल ऐसे नाभिनंदन को बंदना हमारी है ॥१॥

Closing : तुम तो जिनंददेव जगते ....
.... त्रिभुवननाथ गति मेरि या बनाई है ॥

Colophon : इति श्री आदिनाथ स्तुति समाप्तम्।

१३६३ आदिनाथ आरती

Opening : आदिनाथ तुम जगताधार, भवसागर उतारन पार।
मैं तुम चरन कमल को दास, आदिनाथ मेरी पूरो आस ॥१॥

Closing : तुम अनंत गुन है प्रभु कैसे पाऊ पार।
भारी कर मातौ धरी भैगे कहै बखान ॥७॥

Colophon : इति श्री आदिजिन आरती समाप्तम्।

१३६४. आदिनाथस्तोत्र

Opening आदिनाथ जगन्नाथं पार्श्वं वंदे गुणाकरम् ॥१॥

Closing : तद्गृहे कोटिकल्याणश्रीर्विलसति लालया।
क्षुद्रोपद्रवभूतादि नश्यते व्याधिवेदना ॥७॥

Colophon : इति श्री आदिनाथ स्तोत्र संपूर्णम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४३ ।

१३६५. आदित्यनाथ-आरती

Opening : आदि जिनेश्वर महि परमेश्वर त्रिभुवनपति जिन आदिभयो ।
नाभिराम मरुदेवी नदन नगर अयोध्या जनम लीयो ।।

Closing : जो जिनवर ध्यावें भावना भावें मन वच काया भाव धरे ।
पाप निकदन भवय भजन मुक्तिवरागणा सो वरए ।।२२।।

Colophon इति श्री आदिनाथ जी की आरती समाप्तम् ।

१३६६. अम्बिकादेवीस्तोत्र

Opening ॐ ह्रीं जय जय परमेश्वरी अंबिके अभ्रंगतेमहासिंहयानस्थिते ·
सर्वलक्षणलक्षिताङ्गे जिनेन्द्रस्य भाते कल्ले निस्कले
निर्मले नि प्रपचे ।

Closing : अंबिकातालवरूपा मादृशा भवतीत्यण:
श्रीधर्मकल्पलतिके प्रसिद्धवरदेविके ।।४।।

Colophon : इति अंबिकादेवी स्तोत्र सम्पूर्णम् शुभमस्तु पौषमासे शुक्लपक्षे
तिथौ ४ श्री संवत् १६५ ।

१३६७. अंकगर्भषडारचक्र

Opening : सिद्धप्रियै प्रतिदिन प्रतिभासमानै:,
जन्मप्रबंधमथनै:प्रतिभासमानै ।
श्रीनाभिराजतनुभूपदवीक्षणेन,
प्रापेजनैं तनुपदवीक्षणेन ।।

Closing : तुष्टि देशनया जनस्य मनसे ········ सतामीशिता: ॥

Colophon : इति श्रीदेवनंद्याचार्य कृत चौवीस महाराज ······ काव्य महा-स्तोत्र सपूर्णम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० १।
जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२ ।

१३६८. आरती

Opening : जै जै जै श्री आदिजिनेश्वर जुगला धरम निवारण जू ।
नाभिराय मरुदेवी नन्दन ससार सागर तारण जू । जै जै० ॥१॥

Closing : जे पढ़ै पढ़ावै मन सुद्ध ध्यावै इह आरत सू सफल भया ॥५२॥

Colophon : इति श्री निर्म्मल कृत आरती समाप्तम् ॥

१३६९. आरती

Opening : अष्टदरबकरमइ एकठा जीमनः आरती ममाहो ।
जिन जी के चरण चढाइ श्री जिन पूजो जा भाव सौं ॥१॥

Closing : इयणर देवे णिय सुयसत्तिय जिणचउवीस विसा भत्तिया
ए जिणवर जो अणुदिणुत्तापइ सो ससारिनपछइ आवइ ॥१॥

Colophon : इति आरती सपूर्णम् ।

१३७०. आरती

Opening : आरती श्री जिनराज तुम्हारी
करम दलन संतन हितकारी ॥ आर० ॥
सुर नर असुर करत तुम सेवा
तुम हो सब देवनि के देवा ॥ ॥१॥ आर० ॥

Closing : छवी इग्यारह प्रतिमाधारी
श्रावक बदित आणदकारी । इ० ।
सातमी आरती श्री जिनवाणी
द्यानत स्वर्ग सुगति सुखदाणी ॥४॥ इ० ॥

Colophon . इति आरती सपूर्णम् ।

१३७१. आरती

Opening । आरती श्री जिनवीर की सुनि पीय श्रेणिकराई ।
जनम जनम सुख पाइये दुरित सकल मिटि आई ॥१॥

Closing जिन आरती कीजै · ···· गति मांहिन निकलक ॥

Colophon : इति आरती समाप्तम् ।

१३७२. आरती संग्रह

Opening : आरती कीजै स्वामी नेम जिनद की ।
सब सुखदायक आनद कद की ॥ टेक ॥

Closing : जय-जय आरती शान तुम्हारी ।
तोरे चरन कमल की मैं जाव बलिहारी ॥

Colophon ; इति आरती श्री शान्तिनाथ की सम्पूर्णम् ।

१३७३. अष्टक

Opening : पद्मतीर्थनिम्नगादि दिव्यमोदजीवनैः
कुंकुमादि गंधसार चंदनादिमिश्रितैः ।
कामधेनुकल्पवृक्षचिंत्यरत्नयंत्रकम्
स्वर्गमो· सं··न् ··र्ण ··ारण ··े ॥१॥

Closing : इत्थं श्रीजिनराजमार्गविदित ·· ·· वामर प्रत्यहम् ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३७४. भजन

Opening : सुर तरनी परिदोहि सउरे लाधउ नरभवसा ।
आलइ जनम महारजो काई करजोरे मनमाहि विचारि कि ॥१॥

Closing : आरम छाडो आतम रे, पीय मजम रस पूरि ।
सिद्ध बधू सउजिम रमउ इम दौलह रे श्री जिउर्द दवसूर वि ॥
॥ चेतो रे चित प्राणी ।१४॥

Colophon : इति सज्ञाय समाप्ता ।
बडे न हुजउ गुन बिना, बिरद बडाई पाई
कहत धतूरे सू कनक, गहनौ गढ्यो न जाई ॥१॥
कनक कनक तै सौगुनो, मादकता अधिकाई
इति पाइयै बोराइ जगु उहि खाइ बोराई ॥२॥

१३७५. भजनावली

Opening : अवश्यावश्यानी त्रिजगजननी शान्तिरूपे,
तुही आधारा रासुजस तव जगमे अनूपे
नहि पारावारा गुन सुजस अरू च स्वरूपे ।
तुही कर्त्ता धर्त्ता नृपहि पहर काहि भूरे ॥१॥

Closing : पनकारनि सुखहारनि दुखदुर्गति ग्रहवरने वरना ॥
जसु की माय अजितहू कि तुहि काहि उपजन वरना ॥७३३॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१३७६. भजनावली

Opening : ध्यान मे जिनके सभी आराम होना चाहिए ॥
हवस सब अब की दफा सब काम होना चाहिए ॥१॥

Closing : मनमानता वरदान की दातार तु ही है ।
तजिरी सदैव कसीस अजित को नूर ये ही है ॥

Colophon : नहीं है ।

१३७७. भजनावली

Opening : जै जै जै जिन चद वद दुख दहने वारा,
भीम भयकर हार सार सुख सपति सारा ।
दीनानाथ अनाथ नाथ सब जिय हितकारी,
असरन सरन सहाय होत जन सुनत पुकारी ॥१॥

Closing : भुजवारि उदार भडार अपार ।
मनी सुखनार समस्त भरो वो ।
दरसे परसे पद पंक जई ।
सुखधाम सुदाम ललाम सहो वो ॥

Colophon : नही है ।

१३७८. भजनावली

Opening : करो जी मेहर जिनराज ।

Closing : अज्ञानवंत अनंत चेतन शुद्ध अप्पा जोवही ।
असरान परी क्या कहूं जी ··· ॥

Colophon : नही है ।

१३७९. भजन

Opening : छल सुज सम हि भाव ही कीरत को नहि अत ।
भागी भारी भीर हरी जहाँ जहाँ सुमिरन्त ॥

Closing : जिनराजदेव कीजिये मुझ दीन पै करूना ।
भवि वृंद कों अब दीजिये यह शील का शरना ।

Colophon इति श्री शीलमहातम जी भाषा वृन्दावन कृत सम्पूर्ण ।

विशेष— इसमें भजन के अलावा 'सील महातम' वृदावन कृत भी सकलित है

१३८०. भक्तामरस्तोत्र

Opening भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्योतक दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालंबन भवजले पतितां जनानाम् ॥१॥

Closing : स्तोत्रस्रज तव जिनेन्द्रगुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रम् ।
त मानतुग मवमा समुपैतिलक्ष्मी ॥४८॥

Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०.

१३८१ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : देखे, क्र० १३८० ।

Colophon : इति भक्तामर सम्पूर्णम् ।

१३८२. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : देखे, क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्रीमानतुंगाचार्य विरचितं भक्तामरस्तवन समाप्तम् ।

१३८३. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।
Closing : देखे क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्य विरचित भक्तामरस्तोत्रसमाप्तम् ।

१३८४. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।
Closing : देखे, क्र० १३८० ।
Colophon : इति भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३८५. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।
Closing : देखे, क्र० १३८० ।
Colophon : इति भक्तामरस्तोत्रम् ।

१३८६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखे, क्र० १३८० ।
Colophon : इति भक्तामरस्तोत्रम् संपूर्णम् ।

१३८७. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।
Closing : देखें—क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामर संस्कृत जी समाप्तम् ।

१३८८. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : भक्तामर टीका सदा पढ़ै सुनै जो कोई ।
हेमराज मित्र सुख लहै तस मनवांछित होई ॥१॥

Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य टीका पंडित श्री रंगविमल लिपि-
कृता सम्पूर्णम् । भादो सुदि ७ शनिवासरे । संवत् १८४६ ।

१३८९. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : देखें, क्र० १३८० ।

Colophon इति श्री भक्तामर संस्कृत जी समाप्तम् ।

१३९०. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : देखें, क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्य विरचिते भक्तामर स्तोत्रसंपूर्णम् ।

१३९१. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : अस्मिन् लोके य पुरुष. तां मालां कंठगतां अजस्रं निरंतरं धत्ते
धारयति त पुरुषं मानतुंगं इव सा लक्ष्मी: समुपैति या लक्ष्मी:
मानतुंगेन प्राप्ता सा लभते ।

Cloophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य पंडित शिवचन्द्ररचित बालावबोध
टीका समाप्ता ।
मिति फाल्गुन-शुक्लादारभ्य चैत्रकृष्ण द्वितीयायां पंडित शिव-
चंद्रेण कृता इयं संपूर्णम् ।

१३९२. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें, क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तवनं समाप्तम् ।

१३९३. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्र संस्कृत श्रीमानतुंगाचार्य कृत सम्पूर्णम् ।

१३९४. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे. क्र० १३९५ ।
Closing : देखे, क्र० १३९५ ।
Colophon : इति श्री भाषा भक्तामर जी समाप्तम् ।

१३९५. भक्तामरस्तोत्र

Opening : आदि पुरुष आदीस जिन, आदि सुविधि करतार
धरमधुरधर परम गुरु नमो आदि अवतार ॥१॥
Closing : भाषा भक्तामर कियो हेमराज हित हेत
जे नर पढ़ैं सुभाव सौं ते पावैं शिव खेत ॥४६॥
Colophon : इति श्री भक्तामर स्तोत्रभाषा बंध संपूर्णम् ।

१३९६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३९५ ।

Closing : देखे, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्र सपूर्णम् ।

१३९७. भक्तामरस्तोत्र

Opening देखे, क्र० १३६५ ।
Closing : देखे, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति भाषा भक्तामर जी सम्पूर्णम् ।

१३९८. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५ ।
Closing : देखे, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति श्री भक्तामर की भाषा समाप्ता ।

१३९९. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५ ।
Closing : देखे, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति भक्तामर स्तोत्र भाषा समाप्तम् ।

१४००. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५ ।
Closing : देखे, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्रभाषा समाप्तम् । मिति वैशाख बदि १४ सवत् १६३६, वार आदित्यवार । शुभम् श्री ।

१४०१. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३६५ ।

Closing : देखे, क्र० १३६५ ।

Colophon : इति श्री भाषा भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४०२. भक्तामर वचनिका

Opening : देव जिनेश्वर वंदिकरि वाणी गुर उर लाय ।।
स्तोतर भक्तामरतणी कहूँ वचनिका भाय ।।
मानतुंग वरसूररनें रच्यो भक्ति उर धारि ।।
श्री जिनेन्द्र अनुभावतैं बंधन धरै उतारि ।।

Closing : संवत्सर शत अष्टदश सत्तरि विक्रमराय ।।
कातिक वदि बुद्ध द्वादसी पूरण भई सुभाय ।।

Colophon : इति श्री मानतुंग आचार्यकृत भक्तामर नाम देशभाषामय वच-
निका समाप्त ।।

१४०३. भक्तामर वचनिका

Opening : देखे क्र० १४०२ ।

Closing : देखे, क्र० १४०२ ।

Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्यकृत भक्तामरनाम देशभाषामय वचनिका
समाप्तम् ।

१४०४. भक्तामरस्तोत्र

विशेष—यह पूर्णत जीर्ण-शीर्ण है ।

१४०५. भक्तामर-टीका

Opening : जो देवनमृमुगुटि सुभरत्नकांति तीर्तोविकास करि ते जिनपाद दीप्ति ।
जो पाप रूप तम घोर समूल छेदी नेदी बुडी भव जली जनहो जुगादि ।।१।।

Closing : म ड्रा मनात भरला मुनि शक्र मुति तो स्तोत्र पाठवदल गुरु पुन्यकीर्ति ।
मीओलहा चिमर्मिले जिनसागराचा करी क्षमा नदितो बुध पडितान्ना ।।५०।।

Colophon : इति श्री देवेन्द्रकीर्ति प्रियशिष्य जिनसागर कृत भक्तामर स्तोत्र महाराष्ट्रभाषा सपूर्णम् ।

१४०६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : धरामू निकल ता मदिर जाणो ।
जदि रसता माहि उच्चार करणो ।।

Closing : देखे, क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्री मानतुग नामा आचार्य विरचित आदिनाथ देवाधिदेव भक्तामरस्तोत्र सपूर्णम् ।

१४०७. भक्तिसंग्रह

Opening : सिद्धान् उद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान् भावोपलब्धि. ।।

Closing : सुगइ गमण समाहिमरण जिणगुणसपत्ति होऊ मज्झ ।

Colophon : इति सप्तभक्तय: समाप्ताः ।

विशेष — इसमे सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्रभक्ति, आचार्यभक्ति, निर्वाणभक्ति, योगभक्ति, नदीश्वर भक्तिया संकलित है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४० ।

१४०८. भैरवाष्टक

Opening : अतितीक्ष्णमहाकाय कल्पांतपवनोपम् ।
भैरवाय नमस्तुभ्य मानभद्रतमोहर ॥

Closing ; अपुत्रो लभते पुत्र बद्धो मुंचति वधनात् ।
राज्यचोरभय नैव भैरवाष्टककीर्त्तनात् ॥११॥

Colophon : इति श्री भैरवाष्टकस्तोत्र संपूर्णम् ।

देखे — जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ६३५ ।

१४०९ भैरवाष्टक

Opening : देखे, क्र० १४०८ ।

Closing : चाहै तो १ लाख जाप करै दिन ३ उपवास के पारने चूर, मावा, हलवा, लाल वस्त्र, लाल माला, कनेर का फूल करणा तेज प्रताप आपि करे ।

Colophon : इति भैरवाष्टकम् ।

१४१०. भैरवस्तोत्र

Opening : य य य यक्षरूप दशदिसचारित भूमिक पायमानम्,
स स स संहारमूर्तिशिरमुकुटजटाशेखर चंद्रबिम्बम् ।
द द द दीर्घकाय विकृतनखमुख उर्ध्वरोम करालम्,
प प प पापनाश प्रणमतशततं भैरव क्षेत्रपालम् ॥

Closing : भैरवाष्टकमिदं पुण्य छ. मास पठते नरः ।
स याति परमस्थानं यत्र देवो महेश्वरः ॥६॥

Colophon : इति क्षेत्रपाल स्तोत्र संपूर्णम् ।

१४११. भूपाल-चतुर्विशति-स्तोत्र

Opening : श्रीलीलायतन महीकुलगृह ········ जिनाघ्रिद्वयम् ॥

Closing : हे देव अद्य मया गम्यते ···· पुन पुन बार बार दर्शन भूयात् ।

Colophon ; इति श्री पडित शिवचद्रनिम्मापित भूपालचतुर्विशतिकाया: बालावबोध टीका सपूर्णम् । मिति फाल्गुन शुक्लादारभ्य चैत्र कृष्ण द्वितीयाया पडित शिवचद्रेण कृता इय पचस्तोत्र टीका सम्पूर्णम् समाप्तम् । श्री । मिति चैत्रकृष्ण सप्तम्यां सोमवासरे सवत्सर १९२७ का सम्पूर्णम् लिखित पडित परमानंदन पठनार्थम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र I, क्र० ६४२ ।

१४१२. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : दृष्टस्त्व जिनराज ········ भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

Colophon : इति श्री भूपालचौबीसी समाप्तम् ।

१४१३ भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : देखे, क्र० १४१२ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१४१४. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : देखें, क्र० १४१२ ।

Colophon : इति भूपाल चतुर्विंशतिका ।

१४१५. भूपालस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४११ ।
Closing : उपसम इव मूर्तिललित — — — चरिष्टमोयस्यधि-
न्वंति वाच: ।।२७।।
Colophon : इति श्री भूपालस्तोत्र समाप्त: ।

१४१६. भूपाल-चौबीसी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४११ ।
Closing : देखें, क्र० १४१२ ।
Colophon : इति श्री भूपालचौबीसी सम्पूर्णम् ।

१४१७. भूपालस्तोत्र

Opening : परमातम सम्यक वरन परमभावना सार ।
श्रीभूपाल नरेस कवि करत सुपर हितकार ।।१।।
Closing : यह विधि श्री जिन विमल करि भूपाल थुति नरिंद ।
जग जीवन जीवन लच्यौ हीर अबाध अनिंद ।।२७।।
Colophon : इति भूपाल चौबीसी सम्पूर्णम्

१४१८. भूपाल-चौबीसी-भाषा

Opening : देखें, क्र० १४१७ ।
Closing : देखें, क्र० १४१७ ।

Colophon : इति भूपाल चौवीसी भाषा जी समाप्तम् ।

१४१९. बीस विरहमान-आरती

Opening : आरती कीजै बीस जिनंद की, विदेह क्षेत्र थानक सुखकंद की ।
श्रीमंदर जुगमंदर स्वामी, बाहु सुबाहु प्रभु शिवगामी । आरती॥

Closing : अजितवीर्य प्रभु है सिरनामी, भैरों सरन चरन तुम स्वामी ।।आरती

Colophon : इति श्री बीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१४२०. ब्रह्मलक्षण

Opening : ब्रह्मचर्यं भवेमूल सर्वेषां ब्रह्मचारिणाम् ।
ब्रह्मचर्यस्य भोगेन व्रत सर्वनिरर्थकम् ॥

Closing : दृष्टिपूत ... — ... नवम ब्रह्मलक्षणम् ॥

Colophon : नहीं है ।

१४२१. चैत्यालय-स्तोत्र

Opening : दृष्टं जिनेंद्रभवनं भवतापहारी ... प्रकरराजविराजमानम् ।१।।

Closing : दृष्टमपाय मणिकाचनचित्रतुंग सकलचन्द्रमुनिंद्रवंद्यम् ।।१०।।

Colophon : इति चैत्यालय स्तोत्रम् ।

१४२२. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : श्रीचक्रेचक्रभीमे ललितवरभुजे लीलया दोलयन्ति,
चक्रं विद्युत्प्रकाशं ज्वलितसतमुखं खगेंद्राद्यरूढे ।
तत्वैरुद्भूतभावे सकलगुणनिधे त्वं महामंत्रमूर्ते
क्रोधोदित्यप्रतापे त्रिभुवनमहिमायाति मां देविचक्रे ॥१॥

Closing : यं स्तोत्र मत्रक्प पठि=निजमतो भक्तियुर्क्व श्रुणोति,
त्रैलाक्य तस्य वस्य भवति बुद्धजने वाक्पटुत्वं च दिव्यम् ।
सौभाग्यं स्त्रीषु मध्ये खगपतिगमने गौरितत्वप्रसादात्,
डाकिन्यो गुह्यगावाद् इह दधति भय चक्रदेव्यास्तवेन ।।८।।

Colophon : इति चक्रेश्वरी स्तोत्रम् ।

देखे, रा० सू० IV, ३८४, ३८७ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२१ ।

१४८३. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४२२ ।

Closing : देखें, क्र० १४२२ ।

Colophon : ईति चक्रेश्वरी स्त्रोत्रं सम्पूर्णम् ।

१४८४. चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

Opening : प्रभुभव्यराजीवराजीदिनेशं शुभ शकरं सुन्दरं श्रीनिवेशम् ।
सुरेर्दानवैर्मानवै: स्तितसेव जिन नौमि चंद्रप्रभ देवदेवम् ।।

Closing : चन्द्रप्रभ नौमि यदंगकान्ति जोत्स्नेति मत्वा द्रवेतेदुकांतान्
चकोरयुथंप्पवति ? स्फुटति कुट्टोपि पक्षे किलकैरवनानि ।।

Colophon : इति श्री चद्रप्रभुस्वामी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

१४८५. चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णत: जीर्ण-शीर्ण है ।

१४२६; चारित्र-भक्ति

Opening : येनेंद्रान् भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारांगदान्,
भास्वन्मौलिमणिप्रभाप्रविसरोत्तु गोत्तमांगान्नतान् ।
स्वेषां पादपयोरुहेषु मुनयश्चक्रुः प्रकामं सदा,
वंदे पंचतयंतमद्यनिगदन्न चारमभ्यर्चितम् ।।१।।

Closing : इच्छामि भंते चरित्तभत्तिकाउस्सग्गो काउ तस्सा लोचेउ ···
·· ·· — · — जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।।

Colophon : इति आचोना चरित्र भक्ति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५१ ।

१४२७. चतुर्विंशति-स्तोत्र

Opening : आदौ नेमिजिनं नौमि संभवं सुविधिं तथा ।
धर्मनाथं महादेवं शांतिं शांतिकरं सदा ।।१।।

Closing : सकलगुणनिधानं यंत्रमेतं विशुद्धं,
हृदयकमलकोषे धीमता ध्येयरूपम् ।
जगति विदिततत्वौ यः स्मरेत् शुद्धचित्तौ,
भवति सुखनिधानं मोक्षलक्ष्मीनिवासम् ।।

Colophon : इति चतुर्विंशति-स्तोत्रम् ।

१४२८. चतुर्विंशति स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४२७ ।

Closing : देखें, क्र० १४२७ ।

Colophon : इति चतुर्विंशतिस्तोत्रम् ।

१४२९. चतुर्विंशतिस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४२७ ।

Closing : देखें, क्र० १४२७ ।

Colophon : इति चतुर्विंशतिः स्तोत्रम् ।

१४३०. चतुर्विंशति-जिन-स्तोत्र

Opening : आदिनाथ जगन्नाथं अरनाथं तथानमि ।
अजित जितमोहारि पार्श्वं वद गुणागरम् ॥१॥

Closing : भवभिसुखमनेक तस्य यो मानवश्च
विमलमतिर्मनिद्य स्तोत्रमेतद्विलद्रः ।
पठति परमभक्त्या प्रातरूत्थाय शश्वत,
मुनिरभिकृतभक्तिर्मेघराजो बभाण· ॥८॥

Colophon इति श्री चतुर्विंशति जिनान स्तोत्र समाप्तम् ।

१४३१. चौबीस-तीर्थंकर-पद

Opening : अब मोहि तारौ दीनदयाल सब ही मत देखे ।
मैं जित तित तुमही नाम रसाल ॥१॥ अब ॥

Closing : पाठक श्री सिद्धिवर घन सदगुरु विलास,
पाठक तिहि विध मो श्री जिनराज मल्हाए । ५। इहि० ॥

Colophon : इति श्री चौबीस तीर्थंकराणां पदानि सपूर्णम् ।

१४३२. चिन्तामणिस्तोत्र

Opening : किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चन्द्ररोचिर्मयम्,

किं लावण्यमय महार्मणिमय कारूण्यकेलिमयम् ।
विश्वानंदमय महोदयमय शोभामय चिन्मयम्,
शुक्लाध्यानमय वपुर्जिनपते भूयाद्भवालवनम् ।।१।।

Closing : इति जिनपति पार्श्वपार्श्वाख्य यक्षम् ।
प्रदलित दुरीतोघ-प्रीणीत प्राणसघ्यम् ।
त्रिभुवनजिनवाध्य दानचिन्तामणीस,
शिवपदतरुबीज व्याधिबीजं ददातुम् ।।१२।।

Colophon : इति चिंतामणि स्तोत्रम् ।

१४३३. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : नरेन्द्र फणेन्द्र सुरेन्द्र अधीश सतेन्द्रं सुपूज्य नमो नायसीस मुनिन्द्र गणेन्द्रं नमो जोरिहाथ नमो देवि चितामणि पार्श्व-नाथम् ।।

Closing : गणधर इन्द्र न करि सके तुम विनती भगवान ।।
द्यानत प्रीति निहारके कीजे आप समान ।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१४३४. चिंतामणिपार्श्वनाथ–स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४३२ ।

Closing : मदनमदहर. श्री बीरसेनस्य शिष्यै:
सुभगवचनपूरै राजसेनप्रणुतै. ।
जपति पठति नित्य पार्श्वनाथाष्टक य ,
स भवति शिवभूम्यां मुक्तिसीमंतिनीशः ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथाष्टकं समाप्तम् ।

१४३५. चौबीस-जिन-आरती

Opening : रिषभ आदि चौबीस जिन लछन लेहु विचार।
जो कछु सुने सु कहत हूँ, भव्य जन लेहु सुधार।

Closing : लक्षन जिनवर के कहे भव्यजन लेहु सुधार।
भूला चूका फिर धरो भैरो कहै विचार ॥

Clolophon : इति श्री चौबीस जिन लक्षन आरती।

१४३६. चौबीस-जिन-आरती

Opening : अतिपरमपवित्र जनितसुचित्र वरविचित्रमगलकरणम्।
प्रणमामि जिनेन्द्र प्रणतशतेन्द्र भवसमुद्रतारणतरणम् ॥१॥

Closing : परमजिनेश्वरा भुविपरमेश्वरा कालत्रयकल्याणकरा।
मघप्रनवत चरणभजत विस्तरन्तु मगलमधिरा ॥

Colophon : इति चौबीस जिन चिह्न आरती समाप्तम्।

१४३७. चौबीस-दंडक-विनती

Opening : वंदो वीर सुधीर को महावीर गभीर।
वर्द्धमान सनमत नमो, महादेव अतिधीर ॥१॥

Closing : अताकरन जो सुद्ध होय जिन धरमी अभिराम।
भाषा कारन करन को, भाषो दौलतराम ॥५६॥

Colophon : इति श्री चौबीस दडक विनती संपूर्णम्।

१४३८. दर्शन-ज्ञान-चारित्र-आरती

Opening : सम्यक दरसन ग्यांन व्रत, इन बिन मुकत ना होय।
अंधपंग अरु आलसी जुदे जलै दवलोय ॥

Closing : इय अग्घु विधारवि भवभय हारवि,
करि विचित्त सुयसस्स मणु ।
भवि भवियण घण्णउ सुह संपण्णउ
लहइ सग्गु मोक्खविसयलु ।।

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा क्षिमावाणी समाप्तम् ।

१४३९. दर्शन-स्तुति

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।

Closing : देखे, क्र० ११६३ ।
शुद्ध भाव ताके मन भयो सम्यक दृष्टी मुकति हि गयो ।।

Colophon : इति दर्शन स्तुतिसमाप्तम्

१४४०. दर्शनाष्टक

Opening : अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य, देव त्वदीय चरणाम्बुजवीक्षणेन ।।
अद्यस्त्रिलोकतिलक प्रतिभासतो मे, संसारवारिधिरियं चुलक प्रमाणम् ।।

Closing : अद्याष्टक पठेद्यस्तु गुर्णानिदितमाधवः ।
तस्य सर्वार्थसंसिद्धि जिने० ।।११।।

Colophon : इति दर्शनाष्टकम् ।

१४४१. देवस्तवन

Opening : श्रीमद्देवपतिप्रसन्नमुकुट-प्रद्योतरत्नप्रभा,
या सा पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावतीभारती ।
संसारागमदोषविस्तरणतः सेवासमीपस्थित ।।१।।

Closing : इन्द्रमपि भगवति वृत पुष्पालंकारलकनम् ।
स्तोत्र कठं करोति यस्य दिव्यश्रीम्त समाश्रयति ।।३६।।

Colophon : इति देवस्तवनम् ।

देखे, जैं० सि० भ० ग्र० I, क० ६५७ ।

१४४२. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : एकीभाव गत इव मया य. स्वय कर्मबन्धो,
घोर दु खं भवभवगतोदुर्निवार. करोति ।
तस्याप्यस्य त्वयि जिनरवे भक्तिरून्मुक्तचेतु,
जैतु शक्यो भवति न तया कोपरस्तापहेतु ।।

Closing : वादिराजमनुशाब्दिकलोके, वादिराजमनु निकम्हि ।
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनुभव्यसहाय ।।२६।।

Colophon : इति श्री वादिराज विरचिते श्री एकीभावस्तोत्रसमाप्त ।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, क० ६५८ ।

१४४३. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क० १४४२ ।

Closing : देखें क० १४४२ ।

Colophon : इति श्री एकीभावस्तोत्र सपूर्णम् ।

१४४४. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४४२ ।

Closing : देखे, क० १४४२ ।

Colophon : इति एकीभावस्तोत्रम् ।

१४४५. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।
Closing : देखे, क्र० १४४२ ।
Colophon इति श्री वादिराजमुनि विरचिते एकीभावस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

१४४६. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।
Closing : देखे, क्र० १४४२ ।
Colophon : इति एकीभावस्तोत्रं समाप्तम् ।

१४४७. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।
Closing : देखें, क्र० १४४२ ।
Colophon : इति श्री एकीभावं स्तोत्र समाप्तम् ।

१४४८. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।
Closing : धूपैसुगंध कृष्णागरुचंदनोघो ।
कृत सुगंध कृतसारमनोहरानी ।। तीर्थंकरा ।।
Colophon : अनुपलब्ध ।
विशेष— एकीभाव के पहले भूपाल चतुर्विंशति करीब १०-११ पत्र में है ।

१४४९. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।

Closing : देखे, क० १४४२ ।

Colophon : इति वादिराजमुनिकृतं एकीभावस्तोत्र समाप्तम् ।

१४५०. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४४२ ।

Closing : विद्वास. अक्षरमात्रापदस्वरहीनं सोध्यता अल्पज्ञानेन बालोपकाराय केवल मया रचिता न तु ज्ञानगर्वेण ।

Colophon : इति एकीभाव टीका सपूर्णम् ।

१४५१. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : वादिराज मुनिराज को वढतो मुहित उद्‌गार ।
स्वरूप रूप अनुभौ कथा, कहत सुपर हितकार ॥

Closing : वादिराज मुनिराज अनुशाब्दिक तार्किक लोक ।
काव्यकार महकार जग जीवन हीर सुधोक ॥

Colophon : इति श्री एकीभाव भाषा जी समाप्तम् ।

१४५२. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४५१ ।

Closing : देखे, क० १४५१ ।

Colophon इति श्री एकीभाव सपूर्णम् । श्री ।

१४५३. गणधर-स्तुति

Opening : इति प्रमाणभूतेय वक्तृ श्रोतृ परंपरा ... महाधियम् ।

Closing : स्वश्रुवद्भिरोधेन मुनिवृंदारकैं रसदा ।
प्रसादितो गणेद्रोभूद्रूक्तिग्राह्या हि योगिन ।।

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१४५४. गौतमस्वामी-स्तोत्र

Opening : ॐ नमस्त्रिजगन्नेतु वीरस्याग्रजसूनवे ।
समग्रलब्धिमाणिक्य रौहणार्यंद्रभूतये ।।१।।

Closing : इति श्री गौतमस्तोत्रं तेस्मरतोन्वहम् ।
श्री जिनप्रभसूरिस्त्वं भवसवार्थसिद्धये ।।८।।

Colophon : इति श्री गौतमस्वामिस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४५५. घंटाकर्ण-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing : देखें, क्र० १२६६ ।

Colophon : इति घटाकर्ण स्तोत्रम् ।

सदर्भ के लिए भी देखें, क्र० १२६६ ।

१४५६. गुरुभक्ति

Opening : वंदौ दिगबर गुरु चरन जग तरन तारन जानौं ।

जे भरम भारी रोग को है राजवैद्य समान ।।
जिनके अनुग्रह बिन कहुं नही कटै करम जजीर ।
ते साधु मेरे उर वसो मेरी हरो पातक पीर ।।

Closing : करजोरी भूधर विनवै कब मीलेवै मुनीराज ।
आस मन की तव पुरै मेरे सरे-सगले काज ।।
ससार विषम विदेह मैं विना कारन वीर ।
ते साधु मेरे मन वसो मेरी हरो पातक पीर ।।८।।

Colophon : इति गुरु भगती संपूरन ।

१४५७. गुरुभक्ति

Opening : ते गुरु मेरे उर वसैं ते भव जलधि जिहाजु ।
आप तिरैं पर तारहिं, अैसे श्री ऋषिराज । ते गुरु ।।

Closing : देखे, क्र० १४५६ ।

Cloophon : इति गुरुस्तुति सपूर्णम् ।

१४५८. गुरुविनती

Opening : देखें, क्र० १४५७ ।

Closing : वे गुर चरन जहां धरैं जग मैं तीरथ होय ।
सो रज मम माथे लगे भूधर मांगै एह ।।१४।।

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।

१४५९. गुणावलि

Opening । श्री अरिहत अणत गुण, सेवइ सुरनर इद ।
पाय कमल जसु प्रणमतां, लहीयै परमाणद ।।१।।

Closing । श्रीखेम साखैं सोभता वा शांति हरष मुणिद,
तसु सीस कहै जिन हर्ष मुनि गुरु नामैं हो दिन-२ आणद ।।

Colophon इति श्री गुणावली चौपई सम्पूर्णम् ।

१४६०. गुणाष्टक

Opening : गुणाधीश योगी मुनि ··· सकल जन के काम शरते ।।

Closing : सुनो गामें धाते ·················· आदि परमा ।।

Colophon : इति परमानन्द कृत गुणाष्टक सम्पूर्णम् ।

विशेष— गुणाष्टक के बाद कुछ फुटकर श्लोक मकलित हैं ।

१४६१. जैनपदसंग्रह

Opening । णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण ।
णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण ।।
एसो पच णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाण च सव्वेसिं पढम हवइ मगलम् ।।

Closing : ये रे सावलिया तेरा नाम जप छुट जात भव भांवरिया ।
— – जो भवसागर से तरिया । येरे ।।

Colophon : नही है ।

१४६२. जिनचैत्य-नमस्कार

Opening । सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभुवने व्यंतराणा निकाये,

नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ।
पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे,
श्रीमतत्तीर्थ कराणा प्रतिदिवसमह तत्र चैत्यानि वदे ॥१॥

Closing : इन्द्रं श्री जैन चैत्य स्तवमिदमनिश ·· ··· प्रणमता चित्त-
मानदकारी ॥

Colophon : इति श्री जिनचैत्यनमस्कार समाप्त. ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३२ ।

१४६३. जिनदेव स्तुति

Opening : जिनराजदेव कीजिये मुक्त दीन पै करूना ।
भविवृ द को अब दीजिये यह शील का शरना ॥ टेक ॥
सुचिशील के धारा मे जो स्नान करे है ।
मल कर्म को सो धोय के सिवनार वरे है ॥ टेक ॥
व्रतराज सो वेताल व्याल काल हरे है,
उपसर्ग वर्ग घोर कोट कष्ट टरे है ॥ जिनराज ॥१॥

Closing : जस सील का कहने मे थका सहस वदन है ॥
इस सील से भव पाय भगाकर मदन है ।
यह सील ही भविवृंद को कल्यान प्रदन है
दस पैड ही इस पैड से निर्वान सदन है ॥१४॥ टेक ॥

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१४६४. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्री अर्हं
सिद्धेभ्यो नमो नम । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्य्येभ्यो नमो

नम.। ॐ ह्री श्री अर्ह उपाध्यायेभ्यो नमो नमः। ॐ ह्री श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नम ॥१॥

Closing : श्री रुद्रपल्लीय वरेण्य गच्छे देवप्रभाचार्यपदाब्जहस.।
वादीन्द्रचूडामणिरेव जैन जीयादसौ श्रीकमल प्रभाख्य ॥

Colophon : इति जिनपजर स्तोत्र समाप्तम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६७६।

१४६५. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४६४।

Closing : वात सठ्रुच्छ प ... मनोव छिनपूर्णाय ॥२४॥

Colophon : इति जिनपजरस्तोत्र सम्पूर्णम्। पडित अजयचन्द्र।

१४६६. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४६४।

Closing : अस्पष्ट।

Colophon : इति वज्रपिंजरस्तोत्र समाप्तम्।

१४६७ जिनरक्षा-स्तवन

Opening : श्रीजिन भक्तितो नत्वा त्रैलोक्याह्लाददायकम्।
जैनरक्षामह वक्ष्ये देहिना देहरक्षकम् ॥१॥

Closing : राकाया ? तु विधातव्यामुद्यापनमहोत्सवम्।
पूजाविधि समायुक्त कर्त्तव्य सज्जनैर्जनै. ॥२१॥

Colophon : इति जिनरक्षा स्तवनम्।

१४६८. जिनसहस्त्रनाम

Opening : पच परम गुरु को नमों उरधरि परम सु प्रीति ।
तीरथराज जिनंद जी चौवीसों धरि चित ।

Closing : सिखिरचंद कृत पाठ यह, वन्यौ अनुपम रास ।
जो पढसी मन लायके, पासी सौख्य सुवास ।।

Colophon : इति श्री जिनसहस्त्रनाम पूजा पाठ भाषा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु ।
मकरमासे शुक्लपक्षे तिथौ-२ चद्रवासरे ··· ···· ।
सूवा औधदेश मुल्क हिन्दुस्तान मे प्रसिद्ध जिला है नवावगंज बाराबकी नाम है ।
टिकइत नगर मुथाना डाकखाना जानो तासु डिग पूरब सरैयां-भलो ग्राम है ।
वास स्थान लेखक सु भगवान दीन नाम अन्नजल के स्ववस आयो यहि ठाम है ।
भोज नृप देश जिले शाहाबाद आरा नग्र राय जी वुलाकचद-मदिर मुकाम है ।।१।।
श्री सहस्त्रनाम पाठ जी को चढ़ाया श्री चद्रप्रभु स्वामी जी के मदिल मे व्रत उद्यापन का मुसम्मात ······· कुँअर भार्य्या बाबू रामा प्रसाद अग्रवाल श्रावक दिगम्बर आम्नाय धारक आरामपुर नग्रनिवासी मिति भादौ सुदी ८ सवत् १९५६ ।

१४६९. जिनेन्द्रदर्शन स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४० ।

Closing : जन्मजन्मकृत पाप जन्मकोटिसमर्जितम् ।
जन्ममृत्युजरान्तक हन्यते जिनदर्शनात् ।।१४।।

Colophon : इति जिनदर्शन सस्कृत सम्पूर्णम् ।

१४७०. जिनदर्शन

Opening : प्रभु पतितपावन मैं अपावन चरन आयो शरण जी,
यों विरद आप निहार स्वामी मेट जामन मरण जी ।

Closing : या श्रद्धा मोही उर भई, कीजे तुम पद सेव ।
नवल नवल गुण गाय के जै जै जै जिनदेव ।।

Colophon : इति श्री नवलकृत जिनस्तुति भाषा सम्पूर्णम् ।

विशेष— प्रारम्भिक स्तुति कविवर बुधजन कृत है ।

१४७१. जिनदर्शन

Opening : देखे, क० १४७० ।

Closing : जांचो नहीं सुरवास - दीजीए शिवनाथ जी ।।

Colophon : इति श्री भाषा जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

१४७२. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : ॐ नमो भगवते चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशाकशंखगोक्षीरहारधवल ।
गोत्राय घातिकर्मनिर्मलोच्छेदनाय जाति जरामरणविनाश-
नाय ।

Closing : आ क्रौं क्षं ध्रू क्षौं श्र ज्वालामालिनी ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति श्री चंदप्रभतीर्थ कर की ज्वालामालिनि शासनदेवी सकल
दु खहरन मगलकर विजयकर स्तोत्र संपूर्णम् ।

विशेष— इसके आगे एक मंत्र भी दिया गया है ।

देखे, जै सि० भ० ग्र० I, क्र० ६७६ ।
रा० सू III, पृ० २३६ ।

१४७३. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७२ ।

Closing : भृंगारसागेलवरदर्प्पणे चामराणी श्रकचंदनादिनवरत्नविभूषितागे दैत्यास्तितापरिजने करकजयुग्मे ।।६।।

Colophon ; अनुपलब्ध ।

१४७४. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२ ।

Closing : दहदह पच पच छिद छिद भिद भिद ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रूं फुट स्वाहा । अनेन मन्त्रेण होम कुर्यात् सहस्र १२००० अनेन मन्त्रेण गजेन्द्र नरेन्द्र सर्वशत्रु वशीकरणं पूर्वमन्त्र स्मरणोति

Colophon : इति श्री ज्वालामालिनी स्तोत्रमन्त्रविधि कल्प सम्पूर्णम् ।

१४७५. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२ ।

Closing : चन्द्रहास्य खड्गेन छेदय छेदय, भेदय भेदय डरु डरु छरु छरु स्फुट ब्रं द्रां आं क्रों क्षीं क्षूं क्षौं ज्वालामालिनि ज्ञाप-यते स्वाहा ।

Colophon : इति ज्वालामालिनी स्तोत्र संपूर्णम् ।

१४७६. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

विशेष— पूर्ण व जीर्ण-शीर्ण ।

१४७७. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७२ ।

Closing : … … तस्याभरणं पीतवर्णं खड्गत्रिशुलपासशरासमायुधं उत्तमासनेन स्थापित तस्याग्रे जाप्य रक्तपीतउज्वलफलानि मध्यरात्रे ˜ ˜ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१४७८ ज्वालामालिनी

Opening : स्नेहाच्छरण प्रयाति भगवन् पादद्वयं ते प्रजा,
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचय संसारघोरार्णव ।
छायानुरागं रति ॥१॥

Closing : छेदय छेदय भेदय भेदय डरू डरू छरू छरू
हूरू हूरू स्फुट स्फुट घे घे
… ज्वालामालिन्यां ज्ञापयते स्तोत्र ।

Colophon : इति ज्वालामालिनी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

विशेष— इसमे शान्त्याष्टक भी गर्भित है ।

१४७९. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदितमंडिघ्रपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥

Closing जननयनकुमुदचंद्र प्रभासुरा; स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया अचिरात्मोक्ष प्रपद्यन्ते ॥

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर संस्कृत समाप्तम् ।

देखें जै० सि० भ० ग्र० I, ६८२ ।

१४८०. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।
Closing : देखे, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर जो सस्कृत समाप्तम् ।

१४८१. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखे क्र० १४७६ ।
Closing : देखे, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र जी सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१४८२. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८३. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७६ ।
Closing : देखे, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८४. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।

Col phon : इति श्री कुमुदचद्राचार्य्यविरचित श्री कल्याणमदिरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४८५. कल्याणमंदिर-स्तोत्र (सटीक)

Opening : देखे, क्र० १४७६ ।

Closing : अस्मिन् श्लोके स्तोत्रकर्ता कुमुदचद्राचार्यस्य नामोऽपि प्रकटो जात ।

Colophon . इति कुमुदचंद्राचार्यकृत कल्याणमदिरस्य अर्थावबोध टीका पडित शिवचद्र निर्म्मापिता अलमगमत् ।

१४८६. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : परमजोति परमातमा परमज्ञान परवीन ।
वदौ परमानन्द मैं सो घट-घट अतरलीन ।।

Closing : यह कल्याणमदिर कियौ, कुमुदचद्र की बुद्धि ।
भाषा कियो बनारसी, कारण समकित शुद्ध ।।

Colophon · इति कल्याणमदिर पूरन ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६६१ ।

१४८७. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : श्री नवकार जपो मन रंगै श्री जिनशासन सार री माई ।
सर्व मंगल मैं पहिलो मंगल जपतां जय जयकार री माई ।।१।।

Closing : देखे, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमदिर भाषा सपूर्णम् ।

१४८८. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४८६ ।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याण मंदिर स्तोत्र भाषा संपूर्णम् ।

१४८९. कल्याणमंदिर

Opening : देखें, क्र० १४८६ ।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री भाषा कल्याणमन्दिर जी समाप्तम् ।

१४९०. कल्याणमदिर

Opening : देखें, क्र० १४८६ ।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याण मदिर की भाषा सपूर्नम् ।

१४९१. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : श्रीमत्सर्वंज्ञदेवंनिजमुकुटतटाभ्यतरे संदधानम्,
चंचच्चामीकराभं खचितमणिशतै. भूषणैर्भूषितांगम् ।
स्फुर्जत्काम्याभिलासप्रदममलतरं वेत्रयष्टिदधानम्.
स्तोष्ये श्री क्षेत्रपाल जिननिलयगतं विघ्नविध्वसदक्षम् ।।

Closing : ॐ आ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्न-
सपरिवारसहितमो क्षेत्रपाल येहि तिष्ट तिष्ठ ठः ठः मम संन्नि-
हिनी भव भव वषट् स्वाहा, इति ठः ठ स्वस्थान गच्छतु स्वाहा।

Colophon : संपूर्णम् ।

१४९२. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४९१ ।

Closing : इम स्तव यो मतिमानधीते श्रीक्षेत्रपालस्य गरिष्टमूर्त्ते,
भक्त्यातिकाल सतत पवित्रं भवत्यसौ सारदचन्द्रकीर्तिः ।।

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

१४९३ क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखे क्र० १४०८ ।

Closing : भैरवाष्टकमिद – – · भैरवाष्टककीर्तिनात् ।।

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४९४. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं नमो भगवति पद्मावती हा ह्रा कात्यायनी हू हू योगिनी
नवकुलनागबधिनी अवतर-२ आगच्छ-२ – · · · ।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् बद्धो मुञ्चति बंधनात् ।
त्रिसंध्य पठते यस्तु सर्वसिद्धिमवाप्नुयाद् ।।१६।।

Colophon : इति श्री क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

१४९५. लघुसहस्रनाम

Opening : स्वयंभुवे नम. तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि ।
स्वात्मनैव तथोद्भूत वृत्तयेऽचिन्त्यवृत्तये ।।१।।

Closing : नामाष्टकसहस्राणां ये पठंति पुनः पुनः ।
ते निर्वाणपद यान्ति निश्चयेननात्रसंसय ॥

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम जी सम्पूर्णम् ।

१४९६. लघुसहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १४६५ ।

Closing : देखें, क्र० १४६५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१४९७. लघुसहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १४६८ ।

Closing : देखें, क्र० १४६५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम स्तोत्रं सपूर्णम् ।
संवत् १८४२ वर्षे शा० १७०७ प्रवर्त्तमाने श्रावण वदि ३० गुरौ ।

१४९८. लघुसहस्रनाम

Opening : नमः त्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञायमात्मने ।
वक्ष्ये तस्यैव नामानि मोक्षसौख्याभिलाषया ।।१।।

Closing : देखें क्र० १५६५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७० ।

१४९९. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : लक्ष्मीमहस्तुल्य सती सती सती ।
प्रवृद्धकालो विरतो रतो रतो ।

जरारुजा जन्महृता हृता हृता ।
पार्श्वं फणे रामगिरो गिरौ गिरौ ॥१॥

Closing : तर्के व्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौसले,
विख्यातो भुवि पद्मनंदिसुधियस्तत्वस्य कोशं निधिः ।
गंभीरं यमकाष्टकं भणति यः संभूयसा लभ्यते ।
श्री पद्मप्रभुदेवनिर्मितमिद स्तोत्र जगन्मङ्गलम् ॥

Colophon : इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० , क० ७३७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४०-१४१ ।
जि० र० को०, पृ० ३३४ ।

१५००. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : देखें, क० १४९९ ।
Closing : देखें, क० १४९९ ।
Colophon : इति लक्ष्मीस्तोत्रम् ।

१५०१. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : देखें, क० १४९९ ।
Closing : देखें, क० १४९९ ।
Colophon : इति श्री लक्ष्वीपार्श्वनाथस्तवनम् ।

१५०२. महावीर आरती

Opening : आरती करी जिनवीर की, सुन पिया सेनिकराय ।
जन्म-जन्म सुख पाईए, दुरित सकल मिटि जाय ॥१॥

Closing : जिन आरती कीजै सुख लहीजे छीजै कर्म कलक ।
सीवपूर पाई जै सो नर पूजि जै भक्ति सहित निकलक ॥

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

१५०३. मंडलोद्धार-स्तोत्र

Opening : संपूर्व्व सूरिभिराम्नातं क्षेत्रपालसपर्यका. ।
तथाह मडन बक्ष्ये सर्वविघ्नोपशातये ॥१॥

Closing : यथापूर्व्वं मया श्रुत्वा तथा एवं मया कृतम् ।
क्षेत्रपालविधि दिव्यां विघ्नदु.खप्रणाशकम् ।

Colophon : इति मडलोद्धार स्तोत्रम् ।

१५०४. मंगल आरती

Opening : मगल आरती कीजे भोर विघन हरन सुभ करन किशोर । टेक ।
अरहत सिद्ध सूर उवझाय साधु नाम जपिये सुखदाय ॥१॥

Closing : कहे कहाँ लो तुम सब जानो, द्यानत की अभिलाष प्रमानो ।
करो आरती वर्द्धमान की, पावापुर निर्वाण स्थान की ॥करो ॥

Colophon : इति आरती महावीर जी की सम्पूर्णम् ।

१५०५. मणिभद्र-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४०८ ।

Closing : जाप एक लाख पचीस हजार करें १२५००० दिन तीन में जब
उपवास के सरने चूरमो बनाये या लाल वस्त्र जाप माला कनेर
फूल .... ।

Colophon : नहीं है ।

१५०६. मंगलाष्टक

Opening : श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुट · ····कुर्वन्तु ते मंगलम् ।।१।।

Closing : इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं ·· ···· कुर्वन्तु मंगलम् ।।१०।।

Colophon : इति मंगलाष्टक संपूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७०५ ।

१५०७. मंगलजिन-दर्शन

Opening : जै जै जिनदेव के देवा, सुरनर सकल करैं तुम सेवा ।
अद्‌भुत है प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलपमति मेरी ।।

Closing : निस्तार के तुम मूल स्वामी बड़े भागन पाइए ।
रूपचंद चिंता कहा जिन चरण सरणनि आइए ।।

Colophon : इति रूपचंद कृत जिनगुण विनती सम्पूर्णम् ।

१५०८. मुनीश्वर विनती

Opening : वंदौ दिगम्बर गुरु चरण जग तरण तारण जान,
जे भरम भारा रोग को हैं राजवैद्य महान ।
जिनके अनुग्रह बिन कवि नहि करे कर्म जजीर,
ते साधु मेरे उर वसे मेरी हरो पातक पीर ।।१।।

Closing : कर जोड़ भूधर वीनमैं वे मिलैं कब मुनि राय ।
इह आस मन की कब फलै मेरे सरे सगले काज ।
संसार विषम विदेस मे जे बिना कारं वीर ।। ते साधु० ।।८।।

Colophon : इति साधु विनती सम्पूर्णम् ।

१५०६. नमस्कार

Opening : देखें, क्र० ११६३ ।

Closing : देखें, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपाल का नमस्कार समाप्तम् ।

१५१०. नमस्कार

Opening : देखे, क्र० १२८७ ।

Closing : देखे, क्र० १५०६ ।

Colophon इति श्रीपालजी कृत नमस्कार समाप्तम् ।

१५११. नंदीश्वर-भक्ति

Opening : त्रिदशपतिमुकुटतटगतमणि ···· विरहित-निलयान् ॥१॥

Closing ; अभ्यच्य स्वपन् जाग्रन् तिष्टन्नपि पथि चलन् ··· ··· स्तोत्रं सुकृती ॥११॥

Colophon : इति संपूर्ण ।

देखें—जैं० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७०८ ।

१५१२. नंदीश्वर-भक्ति

Opening : देखे, क्र० १५११ ।

Closing : ··· ···· दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइ गमणं समाहि-मरण जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

Colophon : इनि नंदीश्वरभक्ति समाप्ता । इति सप्तभक्तय: समाप्ता ।

१५१३. नरक-विनती

Opening : आदि जिनंद जु हारीयै मन धरि अधिक उल्हासो जी ।
मन वच काया शुद्ध सुकीजै निज अरदासो प्रभु नरकतना
दुःख दोहिल ॥१॥

Closing : प्रभु पतितपावन करण भावन श्री गुणसागर भाइयै ।
इह लोक सुख परलोक शिवपद स्वामि सुमिरण पाइयै ॥

Colophon : इति श्री नरक विनति स्तवन सम्पूर्णम् ।

१५१४. नारायणलक्ष्मी-स्तोत्र

Opening : ॐ अस्य श्री नारायणहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भार्गवऋषि. अनुष्टुप् छद·
श्रीमन्नारायणो देवता श्रीमन्नारायण प्रसादसिद्धयर्थे जपे
विनियोग: ।

Closing : श्रीध्यायेत्वा प्रहसितमुखो कोटिबालार्कभासम्,
विद्युद्वर्णा वरवरधरा भूषणाढ्या सुशोभाम् ।
बीजापुर सरसिजयुगं बिभ्रती स्वर्णपात्रम्,
भर्त्रायुक्तां मुहुरभयदा महामय्यच्युतश्री: ॥१०५॥

Colophon : इति श्री अथर्वणा रहस्ये उत्तरभागे श्री महालक्ष्मीहृदय सपूर्णम् ।

१५१५. नवग्रह-स्तोत्र

Opening : जगद्गुरु नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ।
ग्रहशांति प्रवक्षामि लोकानां सुखहेतवे ॥

Closing : भद्रबाहु. महास्वैव पचमश्रुतकेवली ।
तेन विद्यानवादार्च ग्रहशांतिरूदीरित: ॥२१

Colophon : इति नवग्रह स्तोत्रम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० २०६ ।

१५१६. नवग्रह-स्तोत्र

Opening : अर्कचन्द्रकुजसौम्य — — — जिनपूजनात् ।।१।।

Closing : भद्रबाहुरूवाचेद पचमश्रुतकेवली ।
विद्याप्रवादन. पूर्वाद्ग्रहशांति: विधि श्रुता ।।११।।

Colophon . इति नवग्रह शांति स्तोत्रम् ।

१५१७ नवकारढाल

Opening · पहिलो लोक अलोक ए ढाल छै समरो श्री नवकार
मार पूरव तणो नव निध सिद्ध आवै सदा ए ।
महिमा मोयी जास सकट सवि टलै मिलय मनोरथ सपदा ए ।।

Closing : दिन-२ अधिकी संपदा ए मनवछित सुखथाय । नमु न० ।
दया कुशल वाचक बढै धर्ममदिर गुण गाय ।।२३। नमु न० ।।

Colophon : इति श्री नवकार चउढालीयो सम्पूर्णम् ।

१५१८. नवकार-स्तोत्र

Opening : हस्तावल वोर्हतां पापाद्वा मत्रराजरस्य जगत ।
सजीवन मत्रराट् ··· · ।।१।।

Closing : अन्यच्च ··· सुकृति ।।१२।।

Colophon ; इति पत्र नमस्कार स्तोत्रम् ।

१५१९. नवकारमंत्र-स्तोत्र

Opening : ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सार नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकर वज्र पजराभि स्मराम्यहम् ।।१।।

Closing : यश्चैनां कुरूते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा ।
तस्य न स्याद्भव व्याधिरधिश्चापि कदाचन ॥८॥

Colophon : इति नवकार मन्त्र स्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७ ६ ।

१५२०. नेमिनाथ आरती

Opening : आरती कीजै स्वामी नेम जिनंद की ।
सब सुखदायक आनंद कंद की ॥ आरती० ॥१॥

Closing : भैरो सरन चरन तुम आयौ ।
भव भव मैं प्रभु होइ साहायो ॥ आरती ॥६॥

Colophon : इति भैरोजी कृत आरती ।

१५२१. नेमिनाथ-स्तोत्र

विशेष — यह पूर्णतया जीर्ण है ।

१५२२. निजामणि

Opening : सकल जिनेश्वर देव हूमन पाये करिने सेव ।
निजामणि कहु सार जिन क्षपक तरे ससार ॥१॥

Closing : श्री सकलकीर्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्ति गुणगाउ ।
ब्रह्म जिनदास भणे सार ए निजामणी भवतार ॥५४॥

Clolophon : इति श्री ब्रह्मचारी जिनदास बिरचिते क्षपक निजामणि सपूर्णम् ।

१५२३. निर्वाण-भक्ति

Opening : विबुधपतिखगपनरपति धनदोरगभूत यक्षपतिमहितम् ।
अतुलसुखविमलनिरूपमशिवमचलमनामय प्राप्तम् ।

Closing : देखे, क० १५१२।

Colophon : इति निर्वाणभक्तिः।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, क० ७१७।
जि० र० को०, पृ० २१४।

१५२४. निर्वाणकाण्ड

Opening : वीतराग वंदो सदा, भाव सहित सिरनाई।
कहूँ कांड निर्वाण की भाषा विविध बनाई।

Closing : संवत् सत्रहसै इक तास आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
भैया वंदन करै त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल॥

Colophon : इति निर्वाणकाण्ड समाप्ता।

देखे, जैं० सि० भ० ग्र० I, क० ७१५।

१५२५. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क० १५२४।

Closing : देखे, क० १५२४।

Colophon : इति निर्वाणकांड भाषा संपूर्णम्।

१५२६. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क० १५२४।

Closing : देखे, क० १५२४।

Colophon : इति श्री भाषा निर्वाणकाण्ड सम्पूर्णम्।

१५२७. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२८ ।

Closing : देखे, क्र० १५२८ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकाड भाषा सम्पूर्णम् ।

१५२८. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२८ ।

Closing : देखे, क्र० १५२८ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा समाप्तम् ।

१५२६. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२८ ।

Closing : देखे, क्र० १५२८ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड समाप्तम ।

१५३०. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे क्र० १५२८

Closing : तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजै तहाँ ।
मन वच काय भाव सिरनाई वदन करौं भविक सिरनाई ।।

Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा सपूर्णम् ।

१५३१. निर्वाणकाण्ड

Opening : अट्ठावयम्मि उसहो चपाएवासुपुज्ज जिण-णाहो ।
उज्जते णेमिजिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो । १।।

Closing : जो पढइ तियालं णिव्वुइ कडपि भाव सुद्धीए ।
भु जदि णरसुरसुक्ख पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥

Colophon : इति निर्वाणकाड समाप्तम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१४ ।

१५३२. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे क्र० १५३१ ।
Closing : देखे, क्र० १५३१ ।
Colophon : इति श्री णिव्वाणकाड की गाथा सपूर्णम् ।

१५३३. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।
Closing : देखे, क्र० १५३१ ।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाड समाप्तम् ।

१५३४ निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।
Closing : देखे, क्र० १५३१ ।
Colophon : इति निर्वाणकाड संपूर्णम् ।

१५३५. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।
Closing : देखें, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति निर्वाणकांड सम्पूर्णम् ।

१५३६. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५३१ ।
Closing : देखे क्र० १५३१ ।
Colophon : इति निर्व्वाणकाड प्राकृत सपूर्णम् ।

२५३७. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५३१ ।
Closing : देखें क्र० १५३१ ।
Colophon : इति निर्वाणकाण्ड गाथा समाप्ता ।

१५३८. निर्वाणकाण्ड

Opening : श्री अर्हंत अनत गुन सिद्ध सूर उवझाय ।
सर्वसाधु के चरण जुग वदो मन वचकाय ।।१।।
Closing : देखें, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति श्री निर्वाणकांड भाषा समाप्तम् ।

१५३९. निर्वाणकाण्ड

Opening : रावण के सुत आदिकुमार,
मुक्त गये रेवा तट सार ।
कोडि पाच अरु लाख पचास,
ते वदौ ... ।।
Closing : देखे, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति निर्व्वाणकाड सम्पूर्ण: ।

१५४०. ॐकार स्तुति

Opening : ॐकारं विस्फुरच्चन्द्रकलाबिंदुमहोज्वलम् ।
नामाग्राक्षरनिस्पन्न पंचाना परमेष्ठिनाम् ॥
धर्म्मार्थकाममोक्षाणा दातार विश्वपूजितम् ।
हृत्कजकर्णिकासीन ध्यायेत् ध्यानी शिवाप्तये ॥

Closing : सर्वावस्थासु सर्वत्र महामत्र शिवार्थिभिः .... ।
- ... - - महत्वरत्नकोटिभिः ॥

Colophon : नही है ।

१५४१. पद

Opening : मोर यानी हिरदं नाय श्री जिनराज की ।
जा वानी तें सब सुख उपजै, सोई हमै सुहाय ॥ श्रीजि० ॥

Closing : सेवक जान दया कर स्वामी, फिर न फिरौ भव फेरी ॥प्रभु०

Colophon : इति पद ।

१५४२. पद

Opening अब चल सग हमारे, तोहे बहुत जतन कर राखो रे काया ॥ टेक
निस दिन पल पल रहे है एकठे अब क्यू नेह निवारे रेकाया॥१॥

Closing : जिनवर नाम सार भज अतम काया भरम ससारे ।
सुगुर वचन परतीत धरत शुभ आनंद भए हैं हमारे रीकाया
॥ अब चल ॥

Colophon : इति पद चेतावनी सम्पूरणम् ।

१५४३. पद

Opening : आज गई श्री समवसरण मा जिनवचनामृत पीवा रे।
आवा श्री परमेसर वदन कमल छवि हरषे निरखेवा रे
॥आवा ॥१॥

Closing : परम दयाल कृपाल कृपानिधि इतनी अरज सुणीजे
परम भगति जिनराज तुहारी अपणो कर जाणीजे ।३॥ कु० ।

Colophon . इति श्री जिन कुशलसूरि जी गीतम् ।

१५४४. पद

Opening : मिन जाओ ··· गुरु के वचन मोनी कान में ।

Closing : सात विसन आगे आवागमन निवारो ॥ वृ० ॥

Colophon । सम्पूर्णम् ।

१५४५. पद

Opening : विना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल बेकरारी है ॥ विना ॥
चौरासिलाष मे भटको बहुत सी दहधारी है ।
मुसीवत जो पडी मुझपै प्रभु को खुद निहारी है॥ विना ॥ ॥१॥

Closing देव त्वदीय ·· · ·· तव दिव्यघोषम् ॥४॥

Colophon : इति काव्य सपूर्णम् ।

१५४६. पद

Opening : देखो मतलब का ससारा, देखो मतलब का ससारा ॥ टेक ॥

Closing । भांग चदमा चद या प्रकार जीव लहै सुख अपार याको निहार
स्याद्वाद की उचरनी
परनति सब जीवन की तीन भांत बरनी ॥ परनति० ॥४॥

Colophon : इति पद सम्पूर्णम् । मिति भादव वदी ३ वार सनिश्चरवार सम्वत् १६४८ का। लिख्यत अमीचंद श्रावक पालमग्राम मध्ये ।

१५४७ पद

Opening : तुम भजो निरजन नाव मुक्ति पद पाई ।
ये अचल अखंडित जोति सदा सुखदाई ।। टेक ।।

Closing : अर जैनधर्म हितकार सदा मैं चाहूँ ।
अर लख चौरासी माहि फेरि नही आऊँ ।।
कोई जिनवै यू निणदास भावनी गाई ।। तुम भजो ।।

Colophon : इति पद मरहटी समाप्तम् । शुभ भूयात् मिति भादव सुदी ११ वार सोमवार संवत् १६४८ लिख्यत अमीचद श्रावक पालमग्राम का वासी ।

१५४८. पद

Opening : दिन वारन बोल दुनिया मीनष जमारोपाय जी ।।

Closing : पतरी मारग जावतार साम मिल गया चोर,
पतरी वाण भया ...... ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१५४९. पद

Opening : नेमि सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो ।
संतु खग दिवारि सील को न किया जोर जुगती मो तारी लगीहो।

Closing : ··· नेम सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो ।
Colophon : पद सपूर्णम् । संवत् १९१६ मिति चैत्र वदी १५ । बाबू हरलाल जी अग्रवाल गांगिलगोत्रस्य पुत्र बाबू वधनलाल जी तस्य पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायन जी भार्या मधुवन वीर्या पुस्तक लिखापित आरे मध्ये संपूर्णम् ।

१५५०. पद

Opening : मुझे है चाव दर्शन का ······ उबारोगे तो क्या होगा ।।
Closing : अधम उद्धार पूरन के ·· · नीकारोगे तो क्या होगा ।।
Colophon : इति पूर्णम् ।

१५५१. पद

Opening : शरण पिया जैसो होमी रघुवीर ।।
Closing : ·· मेरो बार क्यो विलम्ब करो रे ।।
Colophon : नही है ।

१५५२. पद

Opening : तारण वाला न कोई ए जी का ।
आप तरे आप ही ए नोरे देखो चित मे जोई ।
लाख बात की बात है चेत न जाने सिवसुख होइ ।।ए जी का ।।१।।
Closing : वादि न क्यो न विचारी चेतन अबहु होहु खरे ।
जब सुध आवे चेतन प्यारे की तब सब काज सरे ।। ए चेतन ।।
Colophon : नही है ।

१५५३. पद

Opening : किये आराधना तेरी हिये आनंद व्यापत है ।
तिहारे दर्शन देखे सकल ही पाप नाशत है ।।१।।

Closing : दुर्ल्लभ है नर अवतार नहि बार बार श्रावक — ···
— ··· सब साधुन ने भाई ॥१२॥

Cloophon : इति द्वादशानुप्रेक्षा समाप्तम् ।

विशेष— पद के साथ ही द्वादशानुप्रेक्षा भी संकलित है ।

१५५४. पद

Opening : जाके वंदन पइयत है री मुक्ति महासुख खानि ॥ माधुरी ॥

Closing : सबही चाहे भोग सजोग, तैं मिल तैं तजि लीनौ जोग ।
सील वरत चित्त मैं दृढ़ राखि, जग भाषौ तेरी उत्तम साखि ।

Colophon : इति ।

१५५५. पद

Opening : कर जोडी माथ नाए नमो॒ बेरी बेरी ।
हे वीर पीर हरिये सिताबी से अब मेरी ॥ टेक ॥

Closing : प्रभु जी तुम तीन ज्ञानधारी,
सच्चे हौंगे ब्रह्मचारी,
तजी तुम राजुल सी नारी,
भऐ हो गिर के तपधारी,
धर्मचदनी रामचंद गावैं जिन शरण लिया,
हम को छाँडि चले सखी री साजना ॥५॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१५५६. पद

Opening : प्रात भयो सुमिरि सुमिरि देव पुण्यकाल जानरे
चूकत जे औसर ते पीछैं पछितात रे ॥ प्रा० ॥

Closing : माधुरी जिनवानि चलो री सुनिहू,
विपुलाचल परि बाजे वाजैत घुमक परी मेरे कान ।
वर्द्धमान तीर्थङ्कर आयेरी, वदे निज गुर जानि ॥

Colophon : नही है ।

१५५७. पद

Opening : सिद्धचक्र की सेवा कीजे, नवपद महीमा धारी है।
अरीहत सिद्ध श्री उवझाया सकल साधु गुन भारी हैं ॥

Closing : अरज सुना बेहरमान वदो नितमेव रे
चेतन को तार लेव मत वीसारो टेव रे ॥ प्र० ॥

Colophon : इति पद सम्पूर्णम् ।

१५५८. पद

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतनं दुखहरण तुम्हारावाना है ।
मत मेरी वार अवार करो मोही देहु विमल कल्याना है ॥ टेक ॥

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हित जन दीन अनाथ पुकारी है,
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोही विथा विस्तारी है,
ज्यो आप अवर भवि जीवन की तत्काल विथा निरवारी है,
त्यो वृदावन कर जोर कहैं प्रभु आज हमारी ही बारी है ॥टेक॥

Colophon : इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१५५९. पद

Opening : मोह नीद मेरी उर भ है, भोत दीना ां जाया । जीन ॥१॥

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : नही है ।

१५६०. पदसंग्रह

Opening : किये आराधना तेरी, हिये आनंद वियापत है।
तिहारे दरस के देखे सकल ही पाप नासत हैं।।१।।

Closing : केवल मैं सुकल मैं अचल सो मैं अचल मैं हूं।
जिनद वकस रिधि सिधि मैं मिलि अटल रहूँ।

Colophon : इति पदसम्पूर्णम्। मितिमाघ वदी १।

१५६१. पदसंग्रह

Opening : भजन तो बनता नही, ध्यान तो लगता नही मन तो सैलानी ।।
खाने को तो अच्छा चाहिये, और ठंढा पानी
चावने को पान बीडा और पीकदानी
ऊँचे नीचे महल चाहिये लाबु आसमानी ।।

Closing : तीन खंड के नाथ धनी तुम हरि ल्याये जो परनारी।
यह कैसे छूटे लगा कलक कुल मे भारी ।।

Colophon : अनुपलब्ध।

१५६२ पद-विनती

Opening : सुमरण ही मैं तारे प्रभु तो ।। सु० ।।

Closing : जिनराज छवि मनमोह लियौ
महाराज सबी मन मोह लियौ ।। टेक ।।

Colophon अनुपलब्ध।

१५६३. पद-हजूरी

Opening : घरी धन आज की आई सरे सब काज मो मन के ··· ।।

Closirg : माधुरी जिनवानि चलो री सुनिहू,
विपुलाचल परि बाजें वाजंत भुनक परी मेरे काम।
वर्द्धमान तीर्थङ्कर आयेरी, बदे निज गुर जानि ।।

Colophon : नहीं है ।

१५५७. पद

Opening : सिद्धचक्र की सेवा कीजे, नवपद महीमा धारी है।
अरीहत सिद्ध श्री उवझाया सकल साधु गुन भारी है ।।

Closing : अरज सुना बेहरमान वदो नितमेव रे
सेवन को तार लेव मत वीसारो टेव रे ।। प्र० ।।

Colophon : इति पद सम्पूर्णम् ।

१५५८. पद

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतनं दुखहरण तुम्हारावाना है ।
मत मेरी वार अवार करो मोही देहु विमल कल्याना है ।। टेक ।।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हित जन दीन अनाथ पुकारी है,
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोही विथा विस्तारी है,
ज्यों आप अवर भवि जोवन की तत्काल विथा निरवारी है,
त्यो वृदावन कर जोर कहै प्रभु आज हमारी ही बारी है ।।टेक·

Colophon : इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१५५९. पद

Opening : मोह नीद मेरी उर भ है, भोत दीना मैं जाया । जीन ।।१।।

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : नहीं है ।

१५६०. पदसंग्रह

Opening : किये आराधना तेरी, हिये आनंद वियापत है।
तिहारे दरस के देखे सकल ही पाप नासत हैं ।।१।।

Closing : केवल मैं सुकल मैं अचल सो मैं अचल मैं हूं।
जिनद वकस रिधि सिधि मैं मिलि अटल रहूँ।

Colophon : इति पदसम्पूर्णम् । मितिमाघ वदी १ ।

१५६१. पदसंग्रह

Opening : भजन तो बनता नही, ध्यान तो लगता नही मन तो सैलानी ।।
खाने को तो अच्छा चाहिये, और ठढा पानी
चावने को पान वीडा और पीकदानी
ऊँचे नीचे महल चाहिये ताबु आसमानी ।।

Closing : तीन खड के नाथ धनी तुम हरि ल्याये जो परनारी।
यह कैसे छूटे लगा कलक कुल मे भारी ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१५६२ पद-विनती

Opening : सुमरण ही मैं तारे प्रभु तो ।। सु० ।।

Closing : जिनराज छवि मनमोह लियो
महाराज सबो मन मोह लियो ।। टेक ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१५६३. पद-हजूरी

Opening : घरी धन आज की आई सरे सब काज मी मन के ... ।।

Closing : तीन लोक को रावन अधिपति लक्ष्मन हाथ मरो।
द्यानत की अर्ज बीनती जामन मरन हरो ॥

Colophon : पद संपूर्णम्।

१५६४. पद होली

Opening : सम्मेद शिखर सुखदाई री मोको सम्मेद शिखर सुखदाई ॥ टेक ॥
बीसतीर्थंकर बीस कूट मे कर्म काटि सिद्ध पाई।
तिनके चरण कमल नित बंदौ मन वच तन लवलाई,
पाप सब जाई पलाई ॥ १ ॥

Closing : चेत चेतन चेचेन तुम्हे बार बार समझाई।
वहत शिखर मन वच तन सेती भज ले श्री जिनराई।
याहि ते शिव सुख पाई।
ऐ चेतन तुम्हे चेत न आई ॥ ६ ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम्।

१५६५ पद्मावती अष्टोत्तर शतनाम

Opening : नमोनेकातदुर्व्वार्मार्गप्टनदृशभानुवे।
जिनाय सकलाभीष्ट स्यायनिःकामधेनवे।

Closing : दिव्य स्तोत्रमिद महासुखकर आरोग्यसंपत्करम्,
भूतप्रेतपिशाचराक्षसभय विध्वसनिर्णाशनम्।
आनरसते ? वांछित सुनिलय सर्वेपि मृत्युंजयः,
दिव्य व्याप्तकर कवि च जनक स्तोत्र जगन्मगलम्।

Colophon . इति पद्मावती अष्टोतरशतनामावली सपूर्णम्।

१५६६ पद्मावती स्तोत्र

Opening : श्रीमद्गीर्वाणचक्र स्फुटमुकुटतटीदिव्यमाणिक्यमाला,
ज्योतिर्ज्वालाकराला स्फुरति मुकुटिकाघृष्टपादरविंदे।

व्याघ्रोल्का सहस्रज्वलदनलशिखा-लोलपाशांकुशासम्,
आ क्रों ह्रीं मन्त्ररूपे क्षयितकलमरे रक्ष मा देवि पद्मे ॥१॥

Closing : आह्वानं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजा अर्च्चा न जानामि मम क्षमस्व परमेश्वरी ॥३३॥

Colophon : इति श्री पद्मावती स्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२२ ।
जि० र० को०, पृ० २३८ ।
Catg. of Skt. & Pkt Ms., P. 665.

१५६७. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।

Closing : ... न मग्मग्णाइ व्रजति नितरा ... दुभिक्षदावानलम् ॥

Colophon : इति श्री पद्मावती स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५६८. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।

Closing : आयुर्वृद्धिकरी जयामयकरी सर्वार्थसिद्धिप्रदाः,
सद्य प्रत्ययकारिणी भगवती पद्मावती ता स्तुवे ॥३६॥

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्रं समाप्तम् ।

१५६९. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।

Closing : पठितं भणितं गुणितं जयविजयरम-निबन्धन परमं,
सर्वव्याधिहरस्तोत्रं त्रिजगत पद्मावतीस्तोत्रम् ॥३३।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्रम् ।
सन्दर्भ के लिए देखें, क्र० १५६६ ।

१५७०. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : चचच्चाम्न्शशाकपूर्णवदना ... सयोज्य हस्तद्वयम् ।।१।।

Closing : लक्ष्मीवृद्धिकरा जगत्सुखकरा ... पद्मावती पातु व. ।।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सपूर्णम् ।

१५७१. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : ॐ जयतीभद्रमाताङ्गी सर्वपापप्रणाशनी ।
सर्वदु खक्षयकारी महापद्मे नमोनम ।।१।।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्र धनार्थं लभते धनम् ।
विद्यार्थी लभते विद्या सुखार्थी लभते सुखम् ।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५७२ पद्मावती -स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५६६ ।

Closing : भव्या: कुर्वन्ति मां पूजा सद्भक्त्याभीष्टसिद्धये ।
एवं पूजाविधिर्लोके जीयादाऽऽचंद्रतारकम् ।।

Colophon : इति इष्टप्रार्थना पुष्पाजलि इति पद्मावतीपूजा समाप्तम् ।

१५७३. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : जिनशासनी हंसासनी पद्मासनी माता ।
भुजचारते फलचारदे पद्मावती माता ॥

Closing : जिनधर्म्म से डिगने का कहीं आपरे कारन
तौ लीजियौ उबार मुझे भक्ति उदारन ।
न कर्म के संजोग सो जिस जोनि मे जावों ।
तहां दीजियो सम्यक जो शिवधाम को पावां ॥

Colophon : इति पद्मावती-स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२१ ।

१५७४ पद्मावती सहस्रनाम

Opening : प्रणम्य परमा भक्तया देव्या पादाबुजद्वयम् ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये तद्भक्तिसिद्धये ॥१॥

Closing : भो ? देवि ! भो मात …मक्षयम्यति प्रीतिफलाप्नोति॥१३५॥

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सहस्रनामस्तवन सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२१ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६२ ।

१५७५. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १५७४ ।

Closing : भो देवी भीमा … न क्षम्यति प्रीतिपलायने किम् ।

Colophon : इति श्री पद्मावती सहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

१५७६. पद्मावती सहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १५७४।

Closing : देखें, क्र० १५७४।

Colophon : नही है।

१५७७. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : श्रीमत्पार्श्वेशमानम्य पद्मावत्यामहाश्रिया।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये भक्त्या मनोमुदा ॥१॥

Closing : भक्त्या पठन्विद स्तोत्र हितोपकृतमुत्तमम्,
आचन्द्रतार्क जीयात्मद्भव्यसुखहेतवे ॥३४॥

Colophon : इति पद्मावती सहस्रनाम समाप्त:।

१५७८. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १५७४।

Closing : जयना पूजिता पूज्या पद्मावतीनमन्विता।
ते जना: सुखमाप्नोति यावत्मेरुजिनालय ॥१४॥

Colophon : इति पद्मावती उद्यापन पचाग पूजा समाप्तम्।
लिखित पडित सेवाराम, सवत् १८२७ कुवार कृष्णपक्षे नौमि शुक्रदिने लक्ष्मणपुरनगरे कौशलदेशे।

१५७९. पद्मावती-विनती

Opening : देखे, क्र० १५७३।

Closing : देखें, क्र० १५७३।

Colophon : इति श्री पद्मावती जी की वीनती सपूर्णम् ।

१५८०. पद्मावती-विनती

Opening : देखे, क्र० १५७३ ।
Closing : देखे, क्र० १५७३ ।
Colophon : इति पद्मावती जी की विनती सम्पूर्णम् ।

१५८१. पद्मनंदिपंचविंशितिका

Opening : हृदय भुवि ... ... सुमव्ययम् ॥
Closing : ताते धर्मकू धारणकर पुण्य का संचय करो ।
Colophon : नही है ।

१५८२. पंचनमस्कार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७८ ।
Closing : देखे, क्र० १५१८ ।
Colophon : इति पंचनमस्कार-स्तोत्रम् ।

१५८३. पंचनमस्कार

Opening : ॐ नमः सिद्धेभ्यः । अथ कतिपय पंचपरमेष्ठिना सप्रादाया- ... ... लिख्यते पंचनामादि पदानां पंचपरमेष्ठ ... ... ।
Closing : अस्पष्ट ।
Colophon : नहीं है ।

१५८४. परमेष्ठीस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५१६ ।
Closing : देखे, क्र० १५१६ ।
Colophon : इति श्री परमेष्टीस्तोत्रम् ।

१५८५. परमानन्द-स्तोत्र

Opening : परमानन्दसंयुक्त निर्विकार निरामयम् ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थितम् ।
Closing : काष्टमध्ये यथा वह्नि शक्तिरूपेण तिष्ठति ।
अयमात्मा शरीरेषु यो जानाति स पडित: ।
Colophon : इति श्री परमाणद स्तोत्र समाप्त ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४४ ।
Catg, of Skt & Pkt Ms. P 665

१५८६. परमानद-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५८५ ।
Closing : देखे, क्र० १५८५ ।
Colophon : इति श्री परमानंद स्तोत्र समाप्तम् ।

१५८७. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३२२ ।
Closing : देखे, क्र० १३२२ ।
Colophon : इति पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

१५८८. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : अजरअमरपार बारदुर्वारखार गलितबहुलस्वेद सर्वतत्त्वानुवेदम् ।
कमठमदविदार भूरीसिद्धान्तधार विगतवृजनयूथ नौमि य
पार्श्वनाथम् ॥१॥

Closing : तीरथपति पारसनाथतिलो भणता यसवासरवासभला
मनमित्र सुकोमल होइ मिलो अमची प्रभुपारस आसफलो ॥१४॥

Colophon : इति पार्श्वनाथ चितामणि स्तोत्रम् ।

१५८९. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णत. जीर्ण-शीर्ण है ।

१५९०. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : श्यामो वर्णविराजतेतिविमले श्यामोपिसर्पोस्मृत.,
श्यामो मेघ निघंरोपि च घटाश्याम चराश्चिखिलम् ।
वर्षामूसलधार-वीरमखिल कायोत्सर्गे नता,
धरणेद्रो पद्मावती युगस्वरं श्री पार्श्वनाथ नम ॥१॥

Closing : इद स्तोत्र पठेन्नित्य त्रिसध्य च विशेषतः,
ग्रहे भवति कल्याण पार्श्वतीर्थं स्तवेन च ॥८॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

१५९१. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३२२ ।

Closing : देखें, क्र० १३२२ ।

Colophon । इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५६२. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : नरेन्द्रं फणीन्द्र सुरेन्द्र अधीस सतेन्द्रं सुपूज्य नमो नायशीशम् ।
मुनीद्रं गणेन्द्रं नमो जोरि हाथं नमो देवचिन्तामणि पार्श्व-नाथम् ।।

Closing । गणधर इद्र न कर सकै तुम विनती भगवान ।
द्यानत प्रीत निहारिकै कीजै आप समान ।।१०।।

Colophon · इति पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५६३. पार्श्वनाथ-स्तुति

Opening : जाकी देह मरकतमनि सो उद्योत अति आनन पे कोटि काम-देव छवि हटकी ।
अबुज के पत्र सो विशाल दृग लाज भरे सीस पे सरपफन सोभा है मुकुट की ।।

Closing । तुम तो करुना निधि नायक हो मेरी पीर हरो दुखददन की,
कर जोरि के लालविनोदी कहे बलि जाऊँ मे वामा के नदन की ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ जी की स्तुति समाप्तम् ।

१५६४. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening । ॐ ह्री मात श्री पद्मावते नमः, ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ।

Closing । जो निय कंठे धारइ कम्पमिमं कप्परुख सारित्थं ।
अविकप्प सोकामिय कप्पण कप्पट्टमो सुहई ।।२३।।

Colophon : इति पार्श्वनाथ मंत्र सहित स्तोत्रम् ।

१५६५. पार्श्वनाथाष्टक

Opening : क्षीरजलनिधिनीरनिर्मलमिश्रदिमकरवासयम्,
धारात्रय भृंगारभरिकरीजन्ममरणविनासनम् ।
पूज्यभवजीवसौख्यदायक दुरितकल्मषषडनम्,
श्रीपार्श्वनाथ सुदेवजिनवर मूलनायक वदनम् ।

Closing : नीरचन्दन ` `` मूलनायकवंदनम् ।

Colophon : इति पार्श्वनाथाष्टकम् समाप्तम् ।

१५६६. पार्श्वनाथाष्टक

Opening : क्षीर पयोनिधि को जल उज्वल निर्मल सीतल सू भरिझारी ।
पाप मिटै जिन मत्रहु के सुधि जिनाग्र पदाबुजधारकरी ॥
अति सु दर देउ लगाव मनोहर श्रीमूलनायक पार्श्वभरम् ।
शत इंद्र समर्चित पादयुग सुभवांबुधि तारन पापहरम् ॥

Closing : दशावतारो भुवनैकमल्लो गोपांगना सेवित पादपद्मम् ।
श्रीपार्श्वनाथो पुरुषोत्तमो य ददातु सर्वं समीहितानि ॥१६॥

Colophon : इत्याष्टक जयमाला समाप्त ।

१५६७. पार्श्वजिन आरती

Opening : स्वामी पार्श्वकुमार हूं करुं वीनती आगीए ।
तुम त्रिभुवन पतिश्रार मैं तुम सरन चरन गहिए ॥१॥

Closing : श्री जिनधर्म प्रभाव मनवंछित फल पावई ए ।
भैरो पर होय सहाय अपनी उंड ? निवाहगयैं ए ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वजिन आरती।

१५९८. प्रत्यंगिरा सिद्धि-मंत्र-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं या कल्पयतिनो अवद्य .... ब्रह्मणा अपिनिर्णय ..... ।

Closing : यस्य देवे च मत्रे च गुरौ च त्रिषु निर्मला,
न व्यवछिद्यंते भक्तिस्तस्य सिद्धिरदूरत: ।।

Colophon : इति श्री रुद्रजामले पार्वती स्वरसवादे छराजोगमूलपाणि तत्र विनिर्गते प्रत्यगिरा सिद्धमत्रस्तोत्र संपूर्णम् ।

१५९९. ऋषिमडल-स्तोत्र

Opening : आद्य ताक्षरसलक्ष्यमक्षर व्याप्य यत् स्थितम् ।
अग्निज्वालासमनाद बिन्दुरेखासमन्वितम् ।।१।।

Closing : इति स्तोत्र महास्तोत्र स्तुतीनामुत्तमं परम्,
पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभते पदम यय्म् ।।६३।।

Colophon : इति ऋषिमडल स्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७८६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८७ ।
Cagt, of Skt & Pkt Ms P. 629

१६००. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५९९ ।

Closing : देखे, क्र० १५९९ ।

Colophon : इति ऋषिमडलस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६०१. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opennig : देखें, क्र० १५६६ ।
Closing : देखें, क्र० १५६६ ।
Colophon : इति श्री ऋषिमडलस्तोत्र समाप्तम् ।

१६०२. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : देखें क्र० १५६६ ।
Closing : दृष्टेशाम्र्हतेबिंबे भवेत्सप्तमके ध्रुवः ।
पदमाप्नोति विश्रस्त परमानंदसपदा ।।
Colophon : इति रिषीमडल स्तोत्र सपूर्णम् ।
विशेष— इसके साथ एक मंत्र भी लिखा है ।

१६०३. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : आद्य पद शिरोरक्षेत्पर रक्षतु मस्तकम् ।
तृतीय रक्षेन्नेत्रे चतुर्थ रक्षेच्च नासिकाम् ।।६।।
Closing : यावच्चद्रार्थ्यमा च ···· ·· सद्विमानाकुलागा ।।
Colophon : अनुपलब्ध ।

१६०४. साधु वंदना

Opening : श्री जिन भाषित भारती सुमिरि आनि मुखराग ।
कहों मूलगुन साधु के परमिति विंशति आठ ।।
Closing : अट्ठाईस मूलगुन जो पाले निरदोष ।
सो मुनि कहत बनारसि पावै अविचल मोक्ष ।।
Colophon : इति साधु वंदना समाप्ता ।

१६०५. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing : वागटी जिनसेनेन जिननामानि सार्थकम्,
अष्टाधिकसहस्राणि सर्वाभीष्टकराणि च ।।११।।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिवाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र समाप्तम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३८ ।

१६०६. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing : देखे, क्र० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् । सवत् १६८६ का मिति कुवार सुदी लिपीकृत बुजीरामेण आरा मध्ये । श्रीरस्तु ।

१६०७. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing : देखें, क्र० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् ।

१६०८. सहस्रनाम-स्तवन

Opening : प्रभो भवागभोगेषु ······· शरण्य करुणार्णवम् ।

Closing : एतेषामेकमप्यर्हन्नाम्नामुच्चा ···· जिनायात: ।।

Colophon : इत्याशाधरसूरिकृतं जिनसहस्रनामस्तवन समाप्तम् ।

१६०६. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : श्रीमान् स्वयभूर्वृषभ शम्भव. शंभुरात्मभू. ।
स्वयप्रभ प्रभुर्भोक्तिविश्वभूरिपुनर्भव ॥१॥

Closing : देखे, क० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यप्रणीत जिनसहस्रनामस्तवन सम्पूर्णम् । सवत् १८०२ वर्ष मीति आसाढ़ सुदी ४ मथेनभाउ परताप गढ मध्ये लिखतम् ।

१६१०. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : परम देव परनाम करि, गुरुको करो प्रणाम ।
वृद्धि बल वरनौ ब्रह्म के सहस अठोतरनाम ॥

Closing : सगुन विभूति वैभवी सेसुखी ससवुद्ध ।
सकल विश्वकर्मा ········· विश्वलोचन शुद्ध ॥

Colophon : इति श्री दुरतिदलन नाम नवम सतक सपूर्णम् ।

१६११ सहस्रनाम

Opening : तुम स्वयभू अनादि सिद्ध अजन्मा सो तिहारे ताई नमस्कार होहु । स्वम आपकू आप करि आप विषै उपजाय प्रगट भये हो । उपजी है आत्मवृत्ति जिनकै अर अचित्य है वृत्ति जिनकी ।

Closing : भगवान स्वयभू समस्त नहाँि के स्वामी जगतपति विहार करें ही तिनकू इन्द्र के मुख ते ए प्रार्थना के वचन नीसरे ते पुनरुक्त समान होते भये । २६ ।

Colophon : इति श्री भाषा सहस्रनाम सपूर्णम् ।

१६१२. समन्तभद्र-स्तोत्र

Opening : नताखंडलमौलीना यत्पादनखमंडलम् ।
खंडेन्दुशेखरीभूत नमस्तस्मै स्वयंभुवे ॥

Closing : अर्हं सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधूनिह ।
पचनमस्कारो भवभवे मम सुह धंतु ॥ ॥

Colophon : इति समंतभद्रस्तोत्र सपूर्णम् ।

१६१३. सम्मेदशिखर-स्तुति

Opening : मैं आयो सरणते तेरे ।

Closing : मो करणी पै नजर न कीजे छीमा करो प्रभु मेरे ।
दीनवन्धु तुम पतित उधारण सेवक चरण गह्यो रे ।।मैं आयो० ॥

Colophon : इति सम्मेदशिखर की पद सपूर्णम् ।

१६१४ सम्मेदाचल-स्तोत्र

Opening : सम्मेदशैल ·· भनिलभरण नौमि ॥१॥

Closing : तीर्थानामुत्तमं तीर्थं निर्वाणपदमग्रिमम् ।
स्थानानामुत्तम स्थान सम्मेताद्रे सम नहि ॥२३॥

Colophon : इति सम्मेदाचलमहात्मस्तोत्र समाप्तम् । श्रीरस्तु सवत् १८२८ वर्षे आषाढ़ द्वितीय वदि अष्टम्या आदित्यवारे लिखत लक्ष्मणपुर-मध्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये । शुभं भवतु ।

१६१५. सन्ध्या

Opening : वामे वहुत कुशान् · प्रणव गायत्र्यां रात्रा कुर्यात् ।

Closing : ... — ततः प्रणिपत्य विसर्जयेत् ।

Colophon : इति संध्या समाप्ता ।

१६१६. शांतिजिन-आरती

Opening : आरती कीजै स्वामी शात जिनंद की ।
सब सुखदायक आनद कंद की ॥
विश्वसैन राजा जी के नंदन ।
दरसन करत मिटै भवफंदन ॥

Closing : भैरौं जे नर आरती गावै ।
मन वछित फल सोई पावै ॥ आरती० ॥

Colophon : इति श्री शांति जिन आरती समाप्तम् ।

१६१७. शांति-स्तुति

Opening : जय जिनवर गुन रतन निधाना, परमपूज ससैं तम भाना ।
मोह महागिर वज्र सुयेवा, सुर नर असुर करै तुम सेवा ॥

Closing : हे जिनवर मे आयो ये ही होहु सकल कल्यान अल्हेही ।
मै निज आतर्माक गुन पावो सिघालै मे सिध सु जावे ॥

Colophon : इति शांति जी पूर्ण भई ।

१६१८. शांतिनाथाष्टक

Opening : सकलगुणनिधान सर्वसत्वे समान मदनमदविनाशं मुक्तिकान्त निवास
सरुजकमलमित्र सर्वविघ्नपवित्र. अनुपमसुख लक्ष्मी बर्द्धता
शांतिनाथः ॥१॥

Closing : शान्त्याष्टक सुरनरेण सेव्यमानम्,
भव्येषु ये परिपठन्ति समस्तनीयम् ।
ते स्वर्गसौख्यमनुभूय मनुष्यलोके,
धर्मार्थकाम-ममसा-च्हीयात्तिमान: ।।

Colophon : इति शान्तिनाथाष्टकम् ।

१६१६. शारदाष्टक

Opening : ॐकार धुनि सुनि सुनि अरथ गनधर विचारैं ।
रचि आगम उपदिसैं भविक अब सर्म निवारैं ।।
सो सत्यारथ सारदा तासु भगति उर आनि ।
छद भुजग प्रयातमैं अष्ट कहौं बखानि ।।१।।

Closing : जे हित हेतु बनारसी देहि धर्म उपदेश ।
ते सब पावहि परम सुख तजि ससार कलेस ।।८।।

Colophon : इति श्री शारदाष्टक समाप्त ।

१६२०. शारदा-स्तुति

Opening : देवी श्रीश्रुतदेवते भगवति त्वत्पादपंकेरूहा   मधुजयामीथुना ।।

Closing : अरिहन्त भासिय   णमहोविह सिरसा ।।

Colophon : इति सारदा-स्तुति अष्टक-जयमाल समाप्तम् ।

१६२१. सरस्वती स्तुति

Opening : जन्ममृत्युजराक्षयकारण   समयसारमहं परिपूजये ।।१।।

Closing : मनयकीर्तितामति मस्तुति पठति य मात मनिमाघर ।
विजयकीर्तिगुरो कृतमादरात्सुमतिकल्पलता कलमश्नुत ।।६।।

Colophon : इति सरस्वतिस्तुति ।

१६२२. सरस्वती-स्तोत्र

Opening : नमस्ते सारदा देवी जिनास्यांबुजवासिनीम् ।
त्वामहं प्रार्थये नाथे विद्यादानं प्रदेहि मे ॥१॥

Closing : सरस्वती मया दृष्टे देवी कमललोचना ।
हंस स्कंध समारुढा वीणापुस्तकधारणी ॥१२॥

Clolophon : इति सरस्वति-स्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७६८ ।

१६२३. सरस्वती-स्तोत्र

Opening : जयत्यशेषामरमौलिलालित सरस्वतित्वत्पदपंकजद्वयम् ।
हृदिस्थित यज्जनजाड्यनाशन रजो विमुक्त श्रयनीत्यपूर्वताम् ॥

Closing : कुंठास्तेपि वृहस्पतिप्रभृतयो यस्मिन् भवति ध्रुवम्,
तस्मिन् देवि तव स्तुतिव्यतिकरे मदादराके वयम् ।
तद्वाक-चापले मे तदा श्रुतवतामस्माकमेव त्वया,
क्षन्तव्य मुखरत्वकारणमसौ येनाति भक्तिग्रहः ॥३१॥

Colophon : इति श्री सपूर्णम् ।

१६२४. शास्त्र-वनती

Opening : वंदों तु शास्त्र जिनेस भाषित महासुर्ग निधान ।
जा सुनत सब अज्ञान भाजत होत ज्ञान महान ॥

Closing : ते शास्त्र जी मेरे मन वसो, मेरी हरौ भौ भव भीर ॥६॥

Colophon : इति शास्त्र की विनती सपूर्णम् ।

१६२५. सिद्धि-भक्ति

Opening : सिद्धानुद्धूतकर्म्मप्रकृति-समुदयान् साधितात्मस्वभावान्
वंदे सिद्धिप्रसिद्धै तदनुपमगुणप्रगटाकृतितुष्ट. ।
सिद्धि: स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणो छादिदोषापहाराद्योग्यो-
पादान् युक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धि ॥१॥

Closing : ‥‥ सुगइगमणं समाहिमरण जिनगुणसम्पति होउ मज्झ ॥

Colophon : इति सिद्धभक्ति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७७० ।
जि० र० को०, पृ० ८३८ ।

१६२६. सीता-विनती

Opening : प्राणी डारे अरहृत का गुणगाय अरे प्राणी,
जब लग सांस शरीर मे जी ॥१॥

Closing : रामचद्र मुकति पधास्याती सीता सुरपति थाय जी
जो नरनारी ए गुण गावै तौ देव ब्रह्म पदपाय जी ।

Colophon : इति सीता जी की विनती सम्पूर्णम् ।

१६२७. श्रीपाल-विनती

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।

Clos gn : देखे, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपालविनती सपूर्णम् ।

१६२८. श्रीपाल-विनती

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।

Closing : देखें, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपाल राजा की विनती सम्पूर्ण ।

१६२६. श्रुतभक्ति

Opening : स्तोष्ये सज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ।
लोकालोकविलोकन लोलितसल्लोकचनानि सदा ।।१।।

Closing : सुगइ गमणं समाहिमरण जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झ ।।

Colophon : इति श्रुतज्ञान भक्ति ।

देखे, जै० नि० भ० प्र० I, क्र० ७७३ ।

१६३०. स्तोत्र

Opening : प्रभुत्वराजी ··· ··· चन्द्रप्रभ देवदेवम् ।।

Closing : सर्वपापविनिर्मुक्त सुभगोलोकविश्रुतः ।
वाछित फलमाप्नोति लोकेस्मिन्नात्र संशयः ।।

Colophon : इति श्री शारदायास्तोत्रम् ।

१६३१. स्थापना आरती

Opening : सुखयसयलमहिट जिणजिणवर सुरणरफणपति सेविय ।
तिम चारित्रसयलधम्मदपर सासय पदवरसेविय ।।१।।

Closing : इह भविय णमावहो जिवसुइयावहो चारित्रजयमालवरा,
इह भवि उहहरहो परभवमुलहो नासय कम्मठट नियरा
।।२५।।

Colophon : इति श्री तेरह प्रकार आरती समाप्तम् ।

१६३२. स्तुति

Opening : हरु प्रभात सुए नित उठत है, दर्शन प्रभु चरनन चित चहत है।
वारवकि भई छार रहेष के चाव दर्शन प्रचिभूत में धरे ।।१।।

Closing : यह भजन भये संपूर्ण सीता के बनवास की।
हरि कही धरी प्रीत प्रभुचरन ए चित लाई के ।।

Colophon : इति श्रावण शुक्ल सं० १९६५ शनिवार हरीदास ने आरा मे लिखे है।

१६३३. सुप्रभात-स्तोत्र

Opening : श्री नाभिनंदन जिनोजितसभवेसं देवोभिनदन जिनो सुमतिः जिनेन्द्रः ।
पद्मप्रभो प्रणतदेव-सुपार्श्वनाथ चद्रप्रभोस्तु सतत मम सुप्रभातम्
।।१।।

Closing : श्रीपार्श्वनाथपरमार्थविदाम्वरेण .... कैवल्य वस्तुविशदं जिन सुप्रभातम् ।।४।।

Colophon : इति सुप्रभातस्तोत्रम् ।

१६३४. सूर्यसहस्रनाम

Opening : तुहिण किरण विप पोसयत्यसुमाली,
जयति कमललक्ष्मी भाषयत्यसुमाली ।
रजतविरद भीतिमोदयन् कोकवृंदम्,
मुखरनरनागे सर्वदा वंदनीये ।।

Closing : तेजोनिधिवृहतेहा वृहत्कीर्त्तिवृहस्पति ।
अहिमान् श्रीमान् श्री सूर्यदेवं नमोस्तुते ।।

Colophon : इति श्री सूर्यसहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५२ ।
जि० र० को, पृ० ४५२ ।

१६३५. स्वयंभू-स्तोत्र

Opening : येन स्वयबोधमयेन लोका आस्वासिता केचन वित्तकार्ये ।
प्रबोधिता केचन मोक्षमार्गे तमादिनाथ प्रणमामि नित्यम् ॥१॥

Closing : यो धर्म्मं दशधा करोति पुरुष स्त्रीवाकृतपरस्कृतम्,
सर्वज्ञ ध्वनिसभव त्रिकरण व्यापारशुध्यानिशम् ।
भव्यानां जयमालया विमलया पुष्पांजलिंदापयन्,
नित्य सश्रियमातनोमि शकल: स्वर्गापवर्गस्थिते: ॥

Colophon : इति श्री स्वयभू समाप्तम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० , क० ७८३ ।

१६३६. स्वम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क० १६३५ ।

Closing : देखे, क० १६३५ ।

Colophon : इति स्वयभू समाप्त: ।

१६३७. स्वयंभू-स्तोत्र

Opening : देखे, क० १६३५ ।

Closing : देखें, क० १६३५ ।

Colophon : इति स्वयभू संस्कृत सम्पूर्णम् ।

१६३८. स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : मानस्तम्भासरांसि ... पीठिकाग्रे स्वयम्भू ।।
Closing : ये संस्तुता विविधभक्तिः ... विमलां कमला जिनेन्द्रा ।।
Colophon : अनुपलब्ध ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० । क्र० ७८४ ।

१६३९. विनती

Opening : करुना ले जिनराज हमारी करुना ले महाराज । टेक ।।
Closing : इति जिनमाला अमल रमाला जो भव्य जन कंठ धरइ ।
... ... सुर शिव सुन्दर वरइ ।।
Colophon : इति पूजन समाप्ता: ।
विशेष — ग्रन्थ मे पूजा भी संकलित है ।

१६४०. विनती

Opening : हो दीन बन्धु श्रीपति करुनानिधान जी ।
यह मेरी विथा क्यो न हरो बार क्या लगी ।।१।।
Closing : करुना निधानवान को अब क्यो न निहारे ।
दानी अनंतदान के दाता हो सम्हारो ।।
वृषचंदनंदवृ द को उपसर्ग निवारो ।
संसार विषमसार से अवपार उतारो ।।
Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।

१६४१. विनती

Opening : देखे, क्र० १६४० ।

Closing : देखें, क्र० १६४० ।

Colophon : इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१६४२. विनती

Opening : त्रिभुवनपति स्वामी जी करूनानिधानामी जी,
सुनो अंतरजामी मेरी विनती जी ।।१।।

Closing : दुष्टन देहु निकास साधन को रख लीजै ।
विनवै भूदरदास ए प्रभु ढील न कीजै ।।१२।।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१६४३. विनती

Opening : तारि तारि जिनराज मनवच तन विनती करो ।
मैं जग बहु दु.ख पाय मुख ते किम वरनन करों ।।१।।

Closing : ज्यो जानै त्यों तारि विरद आपनो जान कै ।
हम कितना हि निहार टेक पकर तारो सही ।।१०।।

Colophon : इति विनती सोरठा सम्पूर्णम् ।

१६४४. विनती

Opening : भवविघन विनासनो दुर्गय नरासनो अवसानै सरण तु ही ।
जिन सासन जा्यो इन्द्रज मा्यो पहिलै पूज तुमरि करी ।।

Closing : सदा जिनविंब धरै निज भाल सदा जिन सेवकतरिमंहात्मा ।
मज्ञानसागर विवर्द्धनचन्द्रमूर्ति जीया्जिनेद्रवरक प्रविराजमान ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६४५. विनती

Opening : श्रीपतिजिनवर करुणायतनं दु.खहरण तुम्हारा बाना है ।
मत मेरी बार अबार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है ।।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हि ·· - प्रभु आज हमारी बारी है ।
।। टेक ।।

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।

१६४६. विनती

Opening : चलो रे मनवा मागीतुंगी दर्शनकरस्या प्रभु जी का ।
सिद्धक्षेत्र की करो वदना दुख टलि जावै दुरगति का ।।
विषम घाट पहाड़ विच परवत ऊँचा मांगीतुंगी का ।
इन पर मुनिवर मुक्ति गया हैं कोड निन्यानव गिनती का
।। चलो रे ।।

Closing : उगणीसै की साल जेठ सुदि करी जातरा पचसका ।
हरषकीर्त्ति कहै सुद्ध भाव सो मेरो चरण जिनेश्वर का । चलो ।
।।१३।।

Colophon : इति मागीतुगी की विनती संपूर्णम् ।

१६४७. विनती

Opening : तुम तरणतारण भवनिवारण भविक मन आनन्दनम् ।
श्री नाभिनंदन जगत वंदन आदिनाथ निरंजनम् ।।

Closing : मैं अधीन परवस परं विके तुम्हारे हाथ ।
इतनो करिको जानियै लाख बात की बात ।।

Colophon : इति श्री विनती सपूणम् ।

१६४८. विनती

Opening : देखें, क० १६४२ ।

Closing : भव भव सुख पावै जी, प्रभु हो हूँ सहाइ जी ।
पार उतारी वो जी ।।

Colodhon : विनती सम्पूर्णम् ।

१६४९. विनती

Opening : हो दीनबन्धु श्रीपती करुना निधान जी
यह मेरी बीथा क्यो न हरो ·········· ।। टेक ।।

Closing : करुनानिधीनवान को — अब पार उतारो ।। टेक ।।

Colophon : इति विनती संपूर्णम् ।

१६५०. विनती

Opening : देखे, क० १६४२ ।

Closing : देखे, क० १६४२ ।

Colophon : इति भूदरदास कृत विनती समाप्तम् ।

१६५१. विनती

Opening : देखें, क० १६४० ।

Closing : तेरे दास निहारै नीरमै कीजिए जी नर नारी गावै जी ।
भव-भव सुख पावै जी, प्रभु होउ सहाई पार उतारीए जी ।

Colophon ; इति विनती संपूर्णम् ।

१६५२. विनती त्रिभुवन स्वामी

Opening : देखें, क्र० १६४२ ।

Closing : नर नारी गावें जी, भव भव सुखपावे जी ।
प्रभु होहु सहाई जी, पार उतारिए जी ॥ १६ ॥

Colophon : इति विनती सपूर्णम् ।

१६५३. विषापहार-.स्तोत्र

Opening : स्वात्मस्थित सर्वगत. समस्त व्यापारवेदीविनिवृत्तसंग: ।
प्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्य पायादपायात्पुरुष पुराण: ।।

Closing : वितरति विहितार्था - सुखानियशो धनजय च ॥

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

देखे, जै सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८५ ।

१६५४. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति श्री धनजयविरचिते श्री विषापहारस्तोत्र समाप्त ।

१६५५· विपापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति विपापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५६· विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : निःशेषत्रिदशेंद्रशेखरशिखा रत्नप्रदीपावली,
सांद्रीभूतमृगेन्द्रविष्टरतटी माणिक्य दीपावली ।
श्रवेय श्री क्वचनिस्पृहत्वमिदमिखानि यशो धनजय च ।।४०

Colophon : इति श्री धनजयकृत विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

१६५७ विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : — येन तेन प्रकारेण बिहिता पुनः त्वयि विषये
नुति विषया नमस्कारपूर्वकस्तुति युक्ता. च भक्तिः विद्यते ।४०।।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्रस्य बालावबोध टीका सपूर्णम् ।

१६५८. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखे, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति श्री धनंजयसूरि विरचितं विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५९· विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३

Colophon : इति विषापहारः ।

१६६०. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।
Closing : देखे, क्र० १६५३ ।
Colophon : इति विषापहार स्तवन समाप्तम् ।

१६६१. विषापहार-स्तोत्र

Opening : विश्वनाथ विमल गुन विरहमान वंदो गुनबीस ।
ब्रह्मा विस्नु गनपति सुन्दरी वरु दानी देहुं मोहि वागेमुरी ॥
Closing : भय मंजन रजन जगत विषापहार अभिराम ।
मसै तजि सुमिरो सदा सासी जिनेश्वर नाम ॥
Colophon : इति विषापहार सपूर्णम् ।

१६६२. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।
Closing : देखें, क्र० १६६१ ।
Colophon : इति श्री विषापहार भाषा समाप्तम् ।

१६६३. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।
Closing : देखें क्र० १६६१ ।
Colophon : इति श्री विषापहार स्तुति संपूर्णम् ।

१६६४. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।

Closing : देखें, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्र भाषा सम्पूर्णम् ।

१६६५. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।

Closing : देखें, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति विषापहार स्तोत्र भाषा संपूर्णम् ।

१६६६. विषापहार-स्तोत्र

Opening : आतमलीन अनत गुन, स्वामी परमानंद ।।
सुर नर पूजित तासु पद बदो ऋषभजिनंद ।।

Closing : भयभंजन गजन दुरित विषापहार सुभाव ।
वैरिन मे सुमिरौ सदा श्री जिनवर के नाम ।।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६७. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६६ ।

Closing : देखें, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६८. वृहत्सहस्रनाम

Opening : स्वयम्भुवे नमः ········· ··· बिलवृतये ॥

Closing : इतिप्रबुद्धतत्वस्य स्वयंभर्तुर्जिगीयतः ।
पुनरूक्ततरावाच प्रादुरासन जितक्रमो ।।

Colophon : इति श्री वृहत् सहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१६६९. वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३८ ।

Closing : - अनादि के कर्म कलंक पंक धाई चिद्विलायकौ
अपुनर्भव की लक्ष्मी देह इह प्रार्थना हमारी सफल करो ।

Colophon : इति श्री स्वामी समंत भद्र पर्माहृताचार्य विरचित वृहत् स्वयभू सम्पूर्णम् ।

१६७०. वृहत्स्वयंभू-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६३८ ।

Closing : देखें, क्र० १६६९ ।

Colophon : इति श्री स्वामी समंतभद्र पर्माहृताचार्य विरचित वृहत्स्वयभूस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६७१. वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३८ ।

Closing : ये संसुनाविविधभक्तिसमंतभद्रै रिद्रा दिभिर्विनतमौलि मणिप्रभाभि। ।
उद्योतितांघ्रियुगल सकलप्रबोधास्तैनोदशतु विमलं कमला-
जिनेन्द्राः ।।

Colophon : इति स्वयम्भू वडा समंतभद्र कृत समाप्ताः ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८४ ।

१६७२. योग-भक्ति

Opening : थोसामि गणधरराणं अणयेगाणं गुणेहिं तच्चेहिं ।
अंजलि मउ लिय हथो अभिवंदतो सविभवेण ॥१॥

Closing : इछामि भंते जोगभत्ति काउ सग्गो ... ... सम्पत्ति होउ मज्झ ।

Colophon : इति योग-भक्ति ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८०० ।

१६७३. अभिषेक विधि

Opening : श्रीमन् मंदिरसुन्दरे शुचिजलैर्धौते च दर्भाक्षतै,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितत्त्वत्पादपुष्पस्रजा ।
इन्द्रोह निजभूषनार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्राकंकणसेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥

Closing : वरुनदेवमाह्वानयामहे स्वाहा ॥५॥ पवन .. .. ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६७४. आदिनाथ-पूजा

Opening : परमपूज्यवृषभेस स्वयंभूदेवजू,
पिता नाभि मरुदेवि करैं सुर सेवजू ।
कनक वरन तन तुंग धनुष पन सत तनो,
कृपा सिंधु ईत आइ तिष्ठ मम दुख हनो ।

Closing : इत्थं श्री जिनराजकर्ममहिमास्तोत्र पठेद्यः पुमान्,
प्रातः प्रातरुदात्तभावसहित सम्यक्तशुध्याश्रितः ।
योगींद्रैश्चिरकाल तस्ससतपसा यत्प्राप्यते तत्सुखम्,

तत्प्राप्नोति पर पदं समतिमानानंदमुद्रांकित: ।।

Colophon। इति चमत्कार आदिनाथ स्वामी पूजा सम्पूर्णम् ।

१६७५. आदिनाथ-पूजा

Opening । सुषमदुषमतिथि मेटि कर्म प्रभु थापहि, नृप पद तजि वैराग्य भये प्रभु आपही ।
ऐसो आदि जिनेश आदि तीर्थ करा, आह्वाहन विधि करु त्रिविध नमके ध-। ।।

Closing : यह निज सार अपार जो भविजन कठधरिई ।
तेनिजर मरणावलि नासि भवावलि रामचद्र सिव तियपाई ।।

Colophon: इति श्री आदिनाथ जी की पूजा समाप्तम् ।

१६७६. आदित्यवार-पूजा

Opening । इक्ष्वाकुवमकुन मडणअश्वसेनो तद्दयल्नम, प्रनिवताजिनवामदेवी ।
तस्मा जिन विमलभूति सुरेन्द्रवंद्य त्रैलोक्यनाथ जिनपार्श्वपद नमामि ।।१।।

Closing । इति रवि व्रत पूजा सुरपद पूजा जे करते नव वर्ष सही ।
मनवचक्रमधावहि सो सुरपद पावही पार्श्वनाथ फल देतसही ।।

Colophon । इति रविव्रत पूजा समाप्तम् ।

१६७७. आदित्यवार-उद्यापन

Opening : श्री पार्श्वनाथ प्रणमामि नित्य, सुरसुरैः पूजितपीठवंद्यम् ।
रविव्रतोद्यापनक प्रवक्ष्ये भव्याय नून महतादरेण ।।१।।

Closing : रविव्रतमहापूजाश्लोकपिंडीकृताधुना ।
पंचाशमाविने मया विप्रं लेषकं चिस्तरप्पंका: ।।

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषणविरचिते । आदित्यवार-व्रत उद्यापन विधि पूजा समाप्ता ।

१६७८. अकृत्रिम-चैत्यायल आरती

Opening : सकल सुहकारण दुग वारणं ·· ···· सुरसुन्दरम् ।

Closing : इह णंदीसर भावऊ- पूज्य सुहावऊ - ··· चंद्रकीर्त्ति सुहावऊ ।।

Colophon : इति अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल समाप्तम् ।

१६७९. अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ्य

Opening : वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ।
यावन्ति चैत्याययतनानिलोके, सर्वानि वंदे जिनपुंगवानाम् ।
अवनितलगतानां कृत्तिमाकृत्तिमानां,वनभवनगताना दिव्यवैमानिकानण
इहमनुजकृताना देवाराजार्चिताना जिनवरमिलयानां भावतोहं
स्मरामि ।।१।।

Closing : द्यौ कुन्देन्दु ··· ·· — प्रयछतुन: ।।५।।

Colophon : इति अकृत्तिमचैत्यालय जयमाल सम्पूर्णम् ।।

१६८०. अकृत्रिम-चैत्यालय-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६७९ ।

Closing : भव णालय चालीसा वंतरदेवाणहुंति वत्तीसा ।
कप्पामरचउवीसा चंदो सूरो णरो तिरिओ ।।

Colophon : इति अकृत्रिम चैत्यालये जिनबिंबेभ्यो नमः ।

१६८१. अनन्तजिन-पूजा

Opening : क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्न ······ विघ्नविनाशनम् ।।
Closing : भगतन की प्रतिपाल करै सर्वजीवन कौं काज सरैया ।
नरनारी पूजित क्षेत्रपाल सदा मनवांछित आस भरैया ।।
Colophon : इति कवित ।

१६८२. अनन्तपूजा-विधि

Opening : एकादशी कै दिन पूजन कर व्रत थापन करै
तैथा आचमन करै तथा द्वादशी के दिन ऐसे ही करै ।
Closing : जीव समासा ।१४।। अजीव ।।१४।। गुणस्थान ।।१४।। मार्ग ।१४।
भूत ।।१४।। रज्जू ।।१४।। पूर्व ।।१४।। प्रकीर्णक ।।१४।।
मल ।।१४।। ग्रंथ ।।१४।। कुलकर ।।१४।। नदी ।।१४।।
प्रकृत ।।१४।। रत्न ।।१४।। चतुर्थदश पदार्थ चितन ब्यौरा ।
Colophon : इति अनतपूजन विधि ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८०४ ।

१६८३. अनंत पूजा विधि

Opening : भाद्रपद शुद्ध त्रयोदशी से रात्रि अनंतव्रतद्धेइजे, मायास्नान
करावे, शुभ्रवस्त्रनेसावे ·· ·· अष्टदलकमलकरावे ।
Closing : ॐ ह्री श्री यसमस्मैददत्तानतफल ···· नित्य वेयाचे मत्र ।
Colophon : इति अनतपूजनविधि सम्पूर्णम् ।
विशेष— ५१।२३ में यज्ञोपवीत मत्र हैं, जो इसीका अग है ।

१६८४. अरिहंत-दक्षिणी

Opening : गगा सिन्धु के निर्मल नीरा स्वर्णभृगार परविहीरा ।
जन्म मृत्यु जराकृत दूर ···· ·· ।।

Closing : अस्पष्ठ—(जीर्ण)

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६८५. अष्टवीजाक्षर-पूजा

Opening : पूर्वपत्रे ऐं दक्षिणपत्रे श्रीं पश्चिमपत्रे ह्रीं उत्तरपत्रे क्लीं
ईशानपत्रे क्षौ अग्नियपत्रे ह्रौं नैऋत्यपत्रे क्षौं पवनपत्रे
ज्रौं कुबेरपत्रे यं इत्यादि अष्टवीजाक्षरस्थापनम् ।

Closing : विद्यादेव्या इमा ·· ··· कामान् कुरुध्व परान् ।।१०।।

Colophon : इति पूर्णार्घं वृहन् द्रव्येन अर्घ ददात् ।
इति षोडशविद्यादेवता पूजनविधानम् ।

१६८६. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : मवौषडाहूय ··· ··· प्रतिमा समस्ताः ।।

Closing : यावति जिनचैत्यानि विद्यते भुवनत्रये ।
तावति सततं भक्त्या त्रि. परीत्य न माम्यहम् ।।१८।।

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा समाप्ता ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६० ।
जि० र० को०, पृ० २० ।

१६८७. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६८६ ।

Closing : देखें, क्र० १६८६ ।

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा संपूर्णम् ।

१६८८. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : आहूय संवौषडिति प्रणीत्वा ताम्यां प्रतिष्ठाप्य सुनिष्ठितार्थान् ।
वषट् पदेनैव च सन्निधाय नंदीश्वरद्वीपजिनान्समर्च्चे ॥१॥

Closing : आरतिय जोवइ कम्मइ धोवइ सग्गावबग्गह लहु लहइ ।
जं जंमण भावइ त सुह पावइ दीणु विकासुण भासुइ ॥१८॥

Colophon : इति अष्टान्हिकाया पूजा समाप्ता ।

देखे दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६१ ।

१६८९. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : मध्ये मडपमालिख्येद्वरतरे — · तदच्चर्ा ततः ॥१॥

Closing : आयुर्दैर्घ्यकरीवपूर्व ·· भवता देषाईतामर्हता ॥

Colophon : इति श्री नदिश्वर पक्तिबंध पूजा समाप्ता ।

१६९०. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : तीर्थोदकै भणिसुवर्णघटोऽपिनीतैः,
पीठे पवित्रवपुषै प्रविकल्पितीर्थे ।
लक्ष्मीसुता गहनवीजविदर्भगर्भे,
संस्थापयामि भुवनाधिपति जिनेन्द्रम् ॥

Closing : नदीश्वर जिन धाम प्रतिमा महिमा को कहै ।
द्यानत लीन्हो नाम येहीभक्ति शिव सुख करै ॥१०॥

Colophon : इति नंदीश्वर द्वीप अष्टान्हिका जी की पूजा जयमाला भाषा सस्कृत सहित सम्पूर्णम् ।

१६९१. अढाईपूजा

Opening : सरब पख में बड़ो अठाई परब है,

नंदीश्वर सुर जाहि लेयबहु दरब हैं ।
हमैं सकति सो नांहि इहा कर थापना ।
पूजैं जिण ग्रह प्रतिमा है हित आपना ।।

Closing : नंदीश्वरजिनधाम प्रतिमा महिमा को कहै ।
द्यानत लीनो नाम यही भगत सब सुख कतै ।।१६।।

Colophon : इति श्री अढाई पूजा जी समाप्तम् ।

१६६२· बाहुबलि-पूजा

Opening : बाहुमान जो षट्बली चक्करेन की,
लखी अनित ससार सबे विच्छेद की ।
धरो दिगंबर भेष शान्तमुद्रा वरी,
धानअभात जेहान ठय थिर लक्ष्मीवरी ।।

Closing : पूजन पंचकुमार तणी जे नरकरै,
हरमत हरवलचक्रसक्रपद ते धरे ।
सुरगादिक सुखभोग तिरथपद पायही,
धर्म अर्थलहिकाम मोक्ष सुरपायही ।।

Colophon . इति श्री पंचकुमार की पूजन सम्पन्नम् ।

विशेष— इसमें बाहुबलि पूजन और पंचकुमार पूजन दोनो हैं ।

१६६३. बाहुबलि-मुनि-पूजा

Opennig : देखें, क्र० १६६२ ।

Closing : जे नर पढ़े बिसाल मनोरत सुद्धसो ।
ते पावैं थिर वास छूटैं ससार सो ।।
ऐसो जान महान जैन जिन धर्म कौ ।
देय अक्षै भंडार ध्याऊं अलख ध्यान कौ ।।२४।।

Colophon : इति श्री बाहुबल मुनी की पूजा सम्पूर्णम् ।

१६६४. भैरो-राग

Opening : भली कीनी भौर भयैं ।
आए हो भवन हमारैं, भली कीनी ये ।।

Closing · आस करैं उरगदास, नाथ चरण तुम्हारे ।। भली० ।।

Colophon : इति भैरो ।

१६६५. बीस-तीर्थंकर-अर्घ्य

Opening : श्री मदिर आदि जिनद बीसों सुखकारी ।
सुविदेह माँहि अभिनद पूजत नरनारी ।।
थिति समवसरन के माँहि त्रिभुवन जन तारक ।
हम पूज अर्घ चढाय आनन्द के कारक ।।

Closing : इह वर्तमान सुखकर दक्षिण देस महा,
तह श्री गुर सुगुन भडार राजन हे सुमहा ।
वसुदेव जथो चितल्याय हे त्रिभुवन स्वामी,
हम पूजन पद सिरनाय कीजे सिवगामी ।।१।।

Colophon : इति ।

१६६६· बीस·विरहमान·पूजा

Opening : पूर्वापर विदेहेषु विद्यमानजिनेश्वरा ।
स्थापयामि अहमत्र सुद्ध सम्यक्त्वहेतवे ।।१।।

Closing : श्रीमदिरा दिप देवमजितवीर्यमुत्तमम् ।
भूयात् भव्यसतां सौख्य स्वर्गमुक्तिसुखप्रदम् ।।

Colophon ; इति श्री बीसविरहमान पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

१६६७. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६६६ ।

Closing : देखे, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति श्री बीरहमान पूजा समाप्तम् ।

१६६८. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे क्र० १६६६ ।

Closing : ये बीस तीर्थंकरन की सेव तुम्हारी कीजिये ।
कर जोरि सेवक विनवै मुक्ति श्रीफल लीजिए ।।

Colophon : इति श्री बीस विरहमान पूजा समाप्ता ।

१६६९. बीस विरहमान-पूजा

Opening : देखें क्र० १६६६ ।

Closing : देखे, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति श्री बीस विरहमान पूजा सपूर्णम् ।

१७००. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६६६ ।

Closing : भुमर्त्तो पूजा वंदना करें धन्य नर सोय ।
मारदा हिरदै जो धरैं सो भी धरमी होय ।।६।।

Colophon : इति श्रीबीसविरहमान पूजा जी समाप्तम ।

१७०१. बीस-विद्यमान-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६९६ ।

Closing : देखें, क्र० १६९६ ।

Colophon : इति श्री बीसविरहमान पूजा समाप्तम् ।

१७०२. बीस-तीर्थंकर-जकड़ी

Opening : श्री मंदरजिण वंदस्या जग सारहो, पुंडरीकजिणराय ।
जबूदीप विदेह मै जगसार हो मेरि पूरबदिसिभाय ।।

Closing : सातमा जिन समयगामी मोरिव जेसु दिगबरा ।
भावना भावै हरष सेती होइ मुक्ति स्वयवरा ।।

Colophon : इति बीस बिरहमान की जखडी सम्पूर्णम् ।

१७०३. बीस-विरहमान-आरती

Opening : प्रथम श्रीमदर स्वामी जुगमधर त्रिभुवण धारिए ।।१।।

Closing : इम बीस जिनवर सघ सुखकर सेव तुम्हारी कीजियै ।
करि जोर सेवक वीनवै प्रभु मणवंछित फल दीजियै ।।

Colophon : इति बीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१७०४. बीसतीर्थंकर-जयमाला

Opening : देखे, क्र० १७०३ ।

Closing : प्रभुजी आनद सदेस ध्यावो शिव सुख पाइये ।
एवीस जिने सुर संग जिनकी सेव नित प्रति कीजियें ।।१।।
करि जोर शंती करे विनती मुक्तिफल पाइरे ।।

Colophon : इति बीस तीर्थङ्कर की जयमाल सपूर्णम् ।

१७०५. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening : सुभ अतिसय चउतीस प्रतिहारज अधिकाही ।
अनतचतुष्टययुक्त दोष अष्टादस नाही ॥
अह्लानन विधि कहूँ नाय सिघ सुघ करि मनही ।
लोक मोह तम हरत दीप अद्भुत ससि जिनहीं ॥

Closing : वसुद्रव्य लै सुधभावतै जजूँ तिहारे पाय ।
देह देव शिव मुझ अबै अहो चंदद्युतिराय ॥१४॥

Clolophon : इति श्री चद्रप्रभु जी की पूजा सम्पूर्णम् ।

१७०६. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening : वरचरित चार गुन अकलधार भवपार बसे हैं ॥
हे त्रिजगतार सहज ही उदार शिवनार रसे हैं ॥

Closing : चद जिनन्द जजन्त तन्त सुख सेवति होई ।
चद जिनन्द जजन्त निराकुल वद न कोई ॥
चद जिनन्द जजन्त चहन्त सबै मिलि जावै ।
चद जिनन्द जजन्त अजित नित हर्ष वढावै ॥

Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभोजिनदेव की पूजा सम्पूर्ण ।

१७०७. चारित्रपूजा

Opening : देवश्रुतगुरुनत्वा कृत्वा शुद्धिमिहात्मनः ।
सम्यक्-चारित्र-रत्नस्य वक्ष्ये संक्षेपतोर्चनम् ॥

Closing : अंधउ आलसउ पंगुल वि जिणवर भासियय ।
तिण तई विणु मुत्ति ण भणइ जणिपु ।।

Colophon : इति चारित्रपूजा ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६३ ।

१७०८. चारित्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १७०७ ।

Closing : विरम-विरम संगान्मुंच मुंच प्रपंचम ।
विसृजमोिहसृजत्र विद्धि विद्धि स्वतत्वम् ।
कलय कलय वृत्तं पश्य पश्य स्वरूपम्,
कुरु कुरु पुरुषार्थं निवृतानंदहेतुः ।।१४।।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते चारित्रपूजा समाप्ता ।

१७०९. चारित्रपूजा

Opening : देखे, क्र० १७०७ ।

Closing : देखें, क्र० १७०७ ।

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते । रत्नत्रयपूजा जी समाप्तम् ।

१७१०. चतुर्विंशति-यक्षिणी-पूजा

Opening : चतुर्विंशतियक्षेशान् पूज्यामि सदादरान् ।
आह्वानयामि तिष्ठेत्र जिनयज्ञे स्थिरा भवेत् ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिकुलदेव्याय जिनसासने सर्व्वविघ्नोपशांत्यर्थं जिनयज्ञविधाने पूर्णार्घं दद्यात् ।

Colophon इति चतुर्विंशतियक्षिणी पूजा ।

१७११. चतुर्विंशति मातृका पूजा

Opening : आद्यं तीर्थंकृतां सर्वां सर्वविघ्नप्रशातये,
प्रणम्य शिरसा जैन स्थापना प्रवदाम्यहम् ।।१।।

Closing : दिव्यं नीरैश्चदनैरक्षतैस्तै ·· ···· कृतोय सुमोघै. ।।

Colophon : इति चतुर्विंशतिजिनमातृका पूजनविधानम् ।

१७१२. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : सुभिरमत्रभवेभवतः पदाबुजनताजनताजनताम्पति ।
इति नतोस्मि भवत्यहमन्वह ·· ·· दिने ।।

Closing : ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय धरनेन्द्रपद्मावती महितअतुलबलवीर्यपराक्रमाय दुष्टोपसर्गविनाशनाय इदं जल गंधं पुष्प अक्षत नैवेद्यं दीपं धूपं फलं अर्घ महाअर्घं निर्वपामि ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७१३. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : वृषभ आदि अंतवीर चतुर्विंशति जिना,
ध्यान खड्ग गही हने कर्म वसु दुर्जना ।
वसुगुण जुत तसुधराव ये नव छारिकैं,
अह्वानन विधि करूं गुणोघ उचारिकैं ।।१।।

Closing : जो को इह व्रत भावो करो, ते नर मुकत पथह वरो ।
श्री भूषन पद प्रनमी सही कथा ग्यानसागर मुनी कही ।।

Colophon : इति श्री अनतव्रत कथा समाप्तो। रामचन्द्रेण लिपि कृत आरामध्ये लाला बिजन लाल जी लिखापितम्। लेखकपाठकयो शुभ भवतु।

विशेष — इसमें कई पूजाएँ संग्रहीत है।

१७१४. चतुर्विंशतितीर्थंकर-पूजा

Opening : रीषभ अजित संभव ... - पूज्य पूजत सुरराय ॥

Closign : भुक्ति-मुक्ति दातार चौवीसों जिनराजवर।
तिन पद मन वच धार जो पूजे सो शिव लहै ॥

Colophon : इत्माशीर्वाद: इति श्री समुच्चय चतुर्विंशति पूजा सपूर्णम् सं० १६५० ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८१६।

१७१५. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७१४।

Closing : देखें, क्र० १७१४।

Colophon : इति श्री समुच्चय चतुर्विंशति पूजा समाप्तम्।

१७१६. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देशकालादिभावज्ञो निर्म्ममः शुद्धिमान्वर।
सान्द्रायादिगुणोपेत: पूजक: सोत्रशस्यते ॥

Closing : यावच्चंद्रदिवाकर ... ... कल्याणकोटिप्रदम् ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कराणां संस्कृत पूजा सम्पूर्णम्।

देखे, जि० र० को०, पृ० ११६।

१७१७. चतुर्विंशतिजिन जयमाला

Opening : वंदितानमर ··· — ···· पूरा इव ॥१॥
Closing : अनणुगुणनिवद्धा ···· ···· लक्ष्मीवधूनाम् ॥
Colophon : इति श्री चतुर्विंशति जिन जयमाला समाप्ता । संवत् १६३२ वर्षे
चैत्र शुदि ११ शनौ ।

१७१८. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७१३ ।
Closing : ए नाम जिनेश्वर दुरितक्षयंकरि जो भविजनकं वि धरई ।
हुये दिव्य अमरेश्वर पुहिमे नरेश्वर रामचद्र शिवतिय वरई ॥२५॥
Colophon : इति श्री चौबीसतीर्थङ्कर पूजा समाप्तम् ।

१७१९. चौबीस-तीर्थंकर–पूजा

Opening : श्री वृषभादि विरांतिमा चौबीसह जिनराय ।
आह्वानन ठांडे करू, तिन बेर गुणगाय ॥१॥
Closing : जे जिव कुट्टक पट्ट तजि सुभभावन तैं जिन पूज्य रच्चावैं ।
ते जिव ह्वै धरणे द्र खगेन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र तणो पद पावैं ॥
Colophon : समाप्त: ।

१७२०. चौबीस-तीर्थंकर–पूजा

Opening : सिद्ध बुद्धि दायक ··· · पदकंज ॥
Closing : वृषभ आदि चौबीस जिनेश्वर ध्यावही ॥
३.५ करैं गुणगाय सुर बजावही ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा सम्पूर्णम् ॥

१७२१. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखें, क० १७२० ।

Closing : देखें, क० १७२० ।

Colophon : इति श्री चउवीस तीर्थङ्कर जी की पूजा संपूर्णम् । चौधरी रामचंद्र जी कृत । संवत् १८३१ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ पचम्या । शुभम् ।

१७२२. चौबीसी-पूजा

Opening : देखें, क० १७१८ ।

Closing : देखें, क० १७१८ ।

Colophon : इति श्री समुच्चय पूजा सम्पूर्णम् ।
इह पुजन जी की पोथी श्री व्रतजी के उद्यापन मे बाबू परमेसरी सहाय जी की भार्या वनसी कूँअर ने चढाया गागील गोत्र मीति फाल्गुन वदी १२ सन् २२८३ साल?

१७२३. चतुर्विंशति तीर्थंकर पद

Opening : आदिदेव रिषभ जीनराज ······· त्याची सेव ॥

Closing : चौबीसवा श्रीमहावीर – गौतम शीर ॥

Colophon : इति चतुर्विंशति पद सपूर्णम् ।

१७२४. चिन्तामणि-पूजा

Opening : जगद्गुरु जगद्देव जगदानददायकम् ।
जगद्वंद्य जगन्नाथ श्री पार्श्वं सस्तुवे जिनम् ॥

Closing : दीर्घायु सुभपुत्रवनिता आरोग्यसत्संपदम्,
प्राज्यक्षमा पतिसज्यभोगसुरताः सद्गेहभूषादयः ।
भूयासुर्भवतां गजाश्वानगर ग्रामप्रभुत्वादयः,
श्री चिंतामणिपार्श्वनाथवररतो मांगल्यमोक्षोद्यता ॥

Colophon : इति इति श्री चिंतामणि पूजाव्रत समाप्तम् । लिखितं संभूनाथ अयोध्यामध्ये सहादति ग्वा० सूवाके लसगरमध्ये सं० १७६३ मगसिर सुदि १३, शनिवार ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८२७ ।
जि० र० को०, पृ० १२३ ।

१७२५. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७२४ ।

Closing : देखे, क्र० १७२४ ।

Colophon : इति श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ वृहत्पूजा विधान विधि समाप्ता । सवत् १८१६ माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ पचम्या बुधवासरे लिखितं ज्ञानसागर पठनार्थ फकीरचंदजी । पोथी लीखी सहजादपुर मध्ये लिषीतोय शुभं भूयात् । श्रीरस्तु ।

१७२६. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७२४ ।

Closing : कल्याणोदयपुष्पवल्लि ··· श्रीपार्श्वचिंतामणि ॥

Colophon : इति श्री चिंतामणि पार्श्वनाथपूजा सम्पूर्णम् ।

१७२७. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, १७२४ ।

Closing : इति जिनपतिदिव्यः स्तोत्रलक्षांतरेण ··· ··· सर्व्वदान्वेषनीयम् ।।

Colophon : इति श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजनविधाने पीठिका स्तवन समाप्तम् ।

१७२८. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : शान्त विदूद्धरेफं ··· ·· संजायते पूजयेद्यः ।।१।।

Closing : इह वर जयमाला पास-जिन-गुण-विशाला — वछिय बहुपयारम् ।।१२।।

Colophon : इति चितामणि पार्श्वनाथपूजा ।

१७२९. चिन्तामणि-जयमाल

Opening : तिहुयण चूडामणे भविय कमल दिनेस ······ जिणेसरहम् ।

Closing अस्याग्रे पुण्याहवाचना वाचनीय पुनर्शान्तिजिन मसिनिर्मलवक्र-मित्यादिपठनीयम् ।

Colophon : इति वृहद् चितामणि पार्श्वनाथ पूजा समाप्ता। संवत् १८२५, पुषमासे शुक्लपक्षे तिथि त्रयोदश्यां शुक्रदिने लिखित पडित सेवाराम कौशलदेशे तिलोकपुरनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये । श्रीपार्श्वनाथ के भडार की पोथी परसो लिखी निज पठनार्थ वा भव्य जीवस्य वाचनार्थ वंधिता जिनशासन शुभ भूयात् लेखकपाठकयो ।

अनित्यं जीवितं लोके अनित्यं धनयौवनम् ।
अनित्य पुत्रदाराश्च धर्मकीर्त्तिद्वयस्थिरः ।।

१७३०. दर्शनपाठ

Opening : दर्शनं देवदेवस्य दर्शन पापनाशनम्,
दर्शन स्वर्गसोपान दर्शनं मोक्ष साधनम् ।।

Closing : जन्म-जन्मकृत पाप, जन्म कोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरांतकां, हन्यते जिन दर्शनात् ।।१२।।

Colophon : इति श्री दर्शनं सम्पूर्णम् ।

१७३१. दर्शनपाठ

Opening : देखे, क्र० ७१३० ।

Closing : देखे, क्र० १७३० ।

Colophon · इति दर्शनस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१७३२. दर्शनपाठ

Opening : देखें, क्र० १७३० ।

Closing : देखें, क्र० १७३० ।

Colophon : इति जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

१७३३. दर्शनपूजा

Openign : चहु गति फन विषहर नमन, दुख पावक जलधार ।
शिव सुख सदा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ।।१।।

Closing : सम्यक् दरसन रतन गहीजे •— इहा फेरि न आवना ।।२३।।

Colophon : इति दरसन पूजा ।

१७३४. दर्शनपूजा

Opening : परस्याभिमुखीश्रद्धा सुद्धचैतन्यरूपत ।
दर्शनं व्यवहारेण निश्चयेनात्मन· पुन ।।

Closing : अतुलसुखनिधान सर्वकल्याणबीजम्,
जननजलधिपोतं भव्यसत्वैकपात्रम् ।
दुरिततरुकुठारं पुण्यतीर्थं प्रधानम् ।
पिवतु जितुविपक्षं दर्शनाख्य सुधांशु ।।

Colophon : दर्शनपूजा ।

१७३५. दर्शनपूजा

Opening : देखे. क० १७३४ ।

Closing : देखे, क० १७३४ ।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१७३६. दसलाक्षणी-पूजा

Opening : उत्तमक्षान्तिमाद्यन्त ब्रह्मचर्यसुलक्षणम् ।
स्थापयेत्दशधाधर्ममृतम जिनभाषितम् ।।

Closing : करै कर्म की निर्जरा भव पीजरा विनास ।
अजर अमर पद को लहै द्यानत सुख की रास ।।

Colophon : इति श्री दसलाक्षनी जी की भाषा जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७३७. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखे, क० १७३६ ।

Closing : देखे, क० १७३६ ।

Celophon : इति श्री दसलाक्षणी पूजा जी समाप्तम् ।

१७३८. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखे, क० १७३६ ।

Closing : पाप तिमिरहर धर्मदिवाकर पढे गणे जे धर्म धनी ।
ब्रह्म जिणदास भासे दशधर्मप्रकाशे मन वांछित फल वुधि धनी ॥

Colodhon : इति दशलाक्षणिक लघु अग पूजा समाप्तम् ।

१७३९. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क० १७३६ ।

Closing : यो धर्म दशधा करोति पुरुष. स्त्रीवाकृतोपस्कृतम्,
सर्वज्ञ ध्वनिसभव त्रिकरण व्यापार-शुद्ध्यानिशम् ।
भव्याना जयमालया विमलया पुष्पांजलि दापयन्,
नित्य सश्रियमातनोति सकल स्वर्गापवर्गास्थिते ॥

Colophon ; इति श्रीदशलाक्षणी पूजा समाप्ता ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० १६५ ।
जि० र० को०, पृ० १६८ ।

१७४०. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : उतमक्षमा मारदव अरजव भाव है, सत्य सौच संयमतप त्याग उपाव है ।
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दस सार हैं, चहुंगति दुखतें काढ मुकति करतार हैं । ॥१॥

Closing : देखें, क० १७३६ ।

Colophon : इति दशलाक्षणी पूजा ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ८३२ ।

१७४१. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क० १७३६ ।

Closing : कोहाणलु चुक्कउ होऊ गुरुक्कउ जाइ रिसिदहि सिट्ठइं ।
जगताइ सुहकरु धम्ममहातरु देइ फलाइ सुमिट्ठइ ॥

Colophon : इति दसलाक्षणी पूजा ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ८३३ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६५ ।

१७४२. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७३६ ।

Clsoing : देखे, क्र० १७४१ ।

Colophon : इति दसलाक्षण पूजा संपूर्णम् ।

१७४३. दशलाक्षणी जयमाला

Opening : पयकमलजिणदहि तिहुवणचदह पणवमि नावे गणहरह ।
पुण सरसइ वाणी धम्मपहाणी धम्मकहमि जह मुणिवरह ॥

Closing : मूलसघपट्टधरो धम्मचन्दगुरो मातिदामुब्रह्म भणद णिम ।
जिणदाम हणदण दहलक्षणगुणु मूरदाम तुम करहु थिम ॥

Colophon : इति दसलाक्षणीक गुण जैमाल समाप्त: ।

१७४४. दशलाक्षणी व्रतोद्यापन

Opening : विमलगुणसमृद्धं ज्ञानविज्ञानशुद्धं,
अभयवनन्मुद्रं चिन्मयूख- प्रचण्डम् ।
दस दम विधिसारं संजजे श्रीविपारं,
प्रथम जिन विदक्ष्यं शुद्धताढ्यं जिनेसम् ॥

Closing : श्री कैलासनिवासदेववृषमं ········ जिन देव सा निधिकरि कल्यानकारी सदा ।।८।।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी व्रतोद्यापन समाप्ता । श्रीरस्तु कल्याण-मस्तु । शुभं अस्तु ।

विशेष— इसके नीचे पूजा सामग्री का विवरण दिया हुआ है ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६ ।

जि० र० को, पृ० १६८ ।

रा० सू ।।, पृ० ६० ।

रा० सू० ।।।, पृ० ५४ ।

रा० सू० IV, ६६५ ।

जै० ग्र० प्र० स० ।, पृ० ८७ ।

१७४५. दिग्पालार्चन

Opening : दिग्गीसास ··· ··· ··· प्रत्येकमादरात् ।।१।।

Closing : ॐ दसदिशा दिग्पालाय पूर्णार्घं ।

Colophon : इति दिग्पालार्चन विधाण समाप्तम् ।

१७४६. देवपूजा

Opening : ॐ जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।
········· ·· णमो लोए सव्वसाहूण ।

Closing : इय जाणिय णामहि दुरिय विरामहि पणहविणामिय सुरावलिहिं ।
जे अणिहुऊ णाइहि समयकुवा हि पणविवि अरहंतावलिहिं ।

Colophon : इति देवपूजाष्टकम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र० पृ० १६७ ।

१७४७. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : ... ... ।

यतीन्द्रसामान्यतपोधनाणां भगवान जितेन्द्र ॥

Colophon : इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७४८. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : कीजै सकल नमन चित मनमें सरधा धरो ।

द्यानत सरधावान अजर अमर सुख भोगवै ।

Colophon : इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३७ ।

१७४९. देवपूजा

Opening : जय ।३। जयवंत प्रवर्त्तो ।।३।। नमोस्तु ।३। नमस्कार होऊ ।३। णमो अरहंताण । अर्हंतनि के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो सिद्धाण । सिद्धन के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो आयरिआण। आचार्यणि के अर्थि नमस्कार होऊ । ... ।

Closing : मेरे अंगै प्रभात समय मध्यान्ह समय संध्या समये विषे पूजा करए। सकल कर्म का क्षय निमित्त भावपूजा वंदना स्तुत अर्हंत भक्ति प्रनमा नि पंचमहागुर भनि व ग्ये कायोत्सर्ग करें वीये उके पाप है तिनकूं त्यागिए ।

Colophon : इति ... पूजा ... स्तुता सम्पूर्णम् ।

१७५०. देवपूजा

Opening : भोगन्धमगतमधुव्रतझंकृतेन,
सौवर्णमानमिव गघमनिद्यमादौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वर दवंद्यम्,
पादारविंदमभिवद्यजिनोत्तमानाम् ।।

Closing : ये पूजेजिनशास्त्रयमिना भक्त्या सदा कुर्वते,
त्रिसंध्याणविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयतो नरा. ।
पुण्याढ्यामुनिराजकिर्तिमहिता भूतास्तवो भूपगा-,
स्तेभव्या गकलविबोधरुचिर सिद्धि लभते परा ।।

Colophon . इति श्री देवपूजा सपूर्णम् ।

१७५१. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing अपराजित मत्रोज्य सर्वविघ्न-विनाशनः ।
मगलेषु च सर्वेषु प्रथम मगल मत ।।

Colophon : कुछ नही है ।

१७५२ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७८६ ।

Closing : देखे, क्र० १७५० ।

Colophon : इति श्री देवतापूजा सम्पूर्णम् ।

१७५३ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७८६ ।

Closing : गुरोभक्ति गुरोभक्ति गुरोभक्ति सदास्तु मे ।
चारित्रमेव संसारवारण मोक्षकारणम् ॥२५॥

Colophon : नही है ।

१७५४. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : ॐ ह्री नंर्म्मलयमतिज्ञानप्राप्तेभ्यो अर्घम् ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

विशेष— इसमे चन्द्रप्रभु पूजा मतिज्ञान पूजा के अधूरे पत्र भी है ।

१७५५. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : मिथ्यात नयन निवारण (न) चद समान हो ।
अज्ञान तिमिर कारण भान हो ।
काम कषायन मिटावन मेघ मुनीस हो ।
द्यानत सम्यक् रतन त्रैगन ईश हो ॥१४॥

Colophon : इति बियालीस बोल आरती समाप्तम् ।

१७५६. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : अणादि काल के जे कुवादि तिन के मिथ्यात कू दूरि करने वाले
चउबीस तीर्थंकर हैं तिनहिं पूज हू ।

Colophon : इति श्री चतुर्विशति तीर्थंकर जयमाल । ॐ ह्री श्री ऋषभादि वर्द्धमाने नमः ।

१५७. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७५८. देवपूजा

Opening : ॐ ह्रीं क्ष्वीं स्नानस्थानभू, शुध्यतु स्वाहा इति स्नानस्थानं शुचि-जलेन सिंचेत् ।

Closing : श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य विशुद्धहस्त ईर्यापथस्य परिशुद्धविधिं विधाय ।

स वज्रपंजरगताकृतसिद्धभक्तिः ... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७५९. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति देवपूजा समाप्तम् ।

१७६०. देवपूजा

Opening : सर्वारिष्टप्रणासाय सर्वमिष्टार्थदायिने ।
सर्वलब्धिविधानाय श्री गौतमस्वामिने ॥

Closing : देखे, क्र० १७५० ।

Colophon : इति श्री देवपूजा समाप्तम् ।

१७६१. देवपूजा

Opening : देखें, क० १७४६ ।
Closing : देखे, क० १७४६ ।
Colophon : इति श्री जयमाल सपूर्णम् ।

१७६२. देवपूजा

Opening : देखे, क० १६४६ ।
Closing : देखे, क० १३४६ ।
Colophon : इति श्री जयमाल सपूर्णम् ।

१७६३. देवपूजा

Opening : देखें, क० १७८६ ।
Closing : देखे, क० १७४६ ।
Colophon : इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६४. देवपूजा

Opening : देखे, क० १७४६ ।
Closing : देखे, क० १३५० ।
Colophon : इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६५. देवपूजा

Opening : देखें, क० १७४६ ।

Closing : जे तवसूरा सजमधीरा सिद्धवधू अणुरईया ।
रयणत्तय रंजिय कम्मह गंजिय ते रिसिवर मइ झाईया ॥

Colophon : इति देवपूजा ।

देखें जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८४१ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६ ।

१७६६. देवजयमाला

Opening : वत्ताणुठ्ठाणे ··· ··· परमपउ ॥

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति चतुर्विंशति तीर्थङ्कर जयमाल सपूर्णम् ।

१७६७. देवप्रतिष्ठा विधि

Opening : प्रतिमाबीजमत्र प्रसिद्ध नदुमिसुरामकृतहरिने रूप ········ ।

Closing : ··· ··· सुरमंत्रजिनप्रभा ।

Colophon : इति सुरमंत्र समाप्तः ।

१७६८. धरणेन्द्रपूजा

Opening : पातालवासं वरनीलवर्णं फणासहस्रान्वितनागराजम् ।
तमाह्वये सत्कमठासन च संस्थापये भूमिधर सुभक्त्या ॥

विशुष -- ग्रथ इतना पुराना है कि सभी पत्र आपस मे सटे हुए है । अलग करने पर फट जाते है, जिससे Closing और Colophon का पता नही चलता ।

१७६९. धरणेन्द्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७० ।

Closing : भक्तिर्जिनश्वरे यस्य .. तस्यैतत्सकल भवेत् ॥३५॥

Colophon : इति नागेन्द्र स्तोत्रम् ।

१७७०. धरणेन्द्रपूजा

Opening : धरणयक्षविलक्षणमहसे क्षितिपरोन्नतकच्छप्रवाहनैः ।
त्रिदशवंदितपार्श्वजिनक्रम प्रणितमौलिमणीसदल श्रियै, ॥१॥

Closing : श्रीपार्श्वनाथपदपकजसेव्यमान पद्मावती मजतिवाङ्मनवामभागम् :
घोपरोपसर्गहनन निजमाणदक्षं तं देवशुद्धिमतिग प्रभजामि नित्यम् ।

Colophon : इति पुष्पांजली धरणेन्द्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१७७१. गर्भ कल्याणक

Opening : पणविवि पच परमगुरु गुरु जिनशासन,
सकल सिद्ध दातार सुविघन विनाशन ।
सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनं ॥
मगल करि चौसघह पाप प्रनासन ।

Closing : भासियो सुफल सुणि चित्त दपति परम आनंदित भये,
छह मास परि नवमास बीते रयण दिन सुखसों गये ।
गर्भवितार महत महिमा सुनत सब सुख पाईये,
भणि रूपचद सुदेव जिनवर जगत मगल गाईये ॥८॥

Colophon : इति श्री गर्भकल्याणक भाषा समाप्तम् ।

१७७२. गिरनारपूजा

Opening : श्री गिरनार सिषर परवत पर दक्षिणा दिस में सोहै
नेमनाथ जिन मुक्तधाम सब जन मोहै
कोड बहत्तर सात सतक मुनि शिव पद पायो
ता थल पूजन काज भव्य सब अति हरषायो
तिस तीरथ राज सुक्षेत्र को आह्वान विधि ठानि कर
पूजा त्रिजोग मन वच तन सुश्रावक जन गुण जानकर ॥

Closing : तिहुं जग भीतर श्री जिन मदिर बनें अकीर्तम महासुखदाय,
नर सुर खग कर वदनीक जे तिनकी भवि जन पाठ कराय ।
धन धन्यादिक संपति तिनकै पुत्र पौत्र सुसोहत भलाय
चक्री सुरखग इन्द्र होय कै करमना स सिवपुर सुखथाय ।

Colophon : इति श्री तीन लोक सबधी पूजा संपूर्णम् ।

विशेष --इसमें सेठसुदर्शन पूजा तथा तीन लोक सबधी पूजा भी सक-लित है ।

१७७३. गिरनारपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७२ ।

Closing : जैसवाल वर नित नैन सुख श्रावग ग्यानी ।
रामरतन सुपुत्र भयो धर्मामृत पानी ।।

Colophon : इति श्री गिरनार जी की पूजा संपूर्णम् । मीति फाल्गुन सुदी ३ । मदवासरे । लीखित जूनागढ़ श्री मंदिर जी काथेया आनद जी ।

१७७४. गिरनारपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७२ ।

Closing : जे नर वंदत भाव धर सिद्धक्षेत्र गिरनार ।
पुत्र पौत्र सपति लहि पूरन पुण्य भडार ।।

Colophon : इति श्री गिरनार जी की पूजा सम्पूर्णम् । मिति आषाढ सुदी ७ चित्रा नक्षत्र पहला पहर रात्रि विर्षे ५३३ ।। मुनि के साथ श्री नेमनाथ जी उर्जयत टोक से जा जूनागढ़ गिरनार परबत पर है, सोरठ देश गुजरात में मुक्त पधारे । नेमपुराण से देखना ।

विशेष --इसमें नीचे चार-पाँच सोरठे भी लिखे गये हैं ।

१७७५. गुरुजयमाला

Opening : भवियभवतारण ··· — · पचमहाव्वयह ॥१॥

Closing : ॐ ह्री पुलाकवकुसकुमीलनिर्ग्रं थस्नातकेभ्यो नम ।

Colophon : इति गुरुजयमाल संपूर्णम् ।

१७७६. गुरुपूजा

Opening : सपूजयामि पूजस्य पादपद्म युग गुरौ ।
तप प्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महात्मने ॥

Closing : तेजस्तिग्मजमस्तिचदमचमत्कारैकमवारिकम्
किर्तिसारदशुभ्रमानधवला निरसेषदिग्व्यापिनी ।
आयुर्दीर्घतर निगामधवपु लीलाघमणीकृत.,
श्रीद. श्रीनिकरं करोतु भवतामाचार्यभवित मताम् ॥१०॥

Colophon : इति श्री गुरुपूजा सपूर्णम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७२ ।

१७७७. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।

Closing : पावै अमरपद होइ चक्री कामदेव समानिया,
इन्द्र चन्द्र धरनेन्द्र चक्री मन प्रवीन जु आनिया ॥
जै सकल पद सीव सौख्यदाता इनहि छिन न भुलाइये,
कहत लालविनोदी मन वच मनहि बछित पाईया ॥

Colophon : इति श्री जिनगुन जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७७८. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।

Closing : देखे, क्र० १७६५ ।
Colophon : इति गुरुपूजा समाप्ता ।

१७७६. गुरुपूजा

Opening : देखे क्र० १७७६ ।
Closing : देखे, क्र० १७६५ ।
Colophon : सपूर्णम् ।

१७८०. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।
Closing : देखे, क्र० १७६५ ।
Colophon : इति गुरुपूजा ।

१७८१. गुरुपूजा

Opening : दिव्यमडलके रम्य चतुपुनोपसोभीते ।
स्थापयामि गुरो पादौ स्व स्व स्थान सिद्धये ।।१।।
Closing : निसगविरागाय ··· ··· प्रणमाम्यहम् ।।
Colophon : गुरुपूजा सपूर्णम् ।

१७८२. गुरुपूजा

Opening : काव्यं सकलगुण - ··· सूरो स्थापयाम्यत्रपीठे ।।१।।
Closing : भाव सुद्ध पूजा करौ सेवौ गुरुचित्त लाय ।
तीम काल आरति करौ रिद्धि सिद्धि सुखथाय ।।१७।।
Colophon : इति दादा श्री जिनसकलसूरि जी की पूजा सम्पूर्णत् ।

१७८३. गुरुपूजा

Opening : सिद्धान्तसूत्रसंकीर्णश्रुतस्कंधवने यने ।
आचार्यंता प्रपन्नस्य पादावभ्यर्चयेन्मुने ॥

Closing : मुनिवर स्वामीनमू मिरनामी दोए करजोडी विनय करू ।
दीक्षा अति निर्मली दोमुझउज्वली, ब्रह्मजिणदास भणि कृपाकरि।

Colophon : इति गुरुपूजा-समाप्त सम्पूर्णम् ।

१७८४. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७८३ ।

Closing : कहो कहाँ लो भेद मैं बुध थोरी गुनभूर ।
हेमराज सेवक हिये भक्ति भरो भरपूर ॥११॥

Colophon : इति श्री गुरुमहाराज की भाषा आरती सम्पूर्नम् ।

१७८५. होमविधि

Opening : तद्यथा ॐ ह्री क्ष्वीं भू स्वाहा । पुष्पाञ्जली ।
ॐ ह्री अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा ॥ क्षेत्रपाल विधि ॥

Closing : इति होमविधि ज्ञात्वा तत्रस्था जिन प्रतिमा सिद्धायतन यत्रानि पूर्वनिर्मापितजिनग्रहाभ्यतरे सस्थाप्य पुन पुन नमस्कार कृत्वा नित्यव्रत गृहीत्वा देवान् विसर्जयेत् ।

Colophon : इति होम सपूर्णम् ।

१७८६. जलयात्रा विधि

Opening : प्रथमतडागे गत्वा जलसमीपे ... ... पाछै पूजा कीजइ ॥१॥

Closing : पश्चात स्त्रीनि कौ षोडसाभर्ण दीजै पाछै घट दीजै पाडे छपैया पढत ईसान बेदी मध्य कलश थापी जइ तिसकी विधि आगै विशेष है ।

Colophon : इति जलयात्रा विधि सपूर्णम् । सवोत्तर जलइ सविधि पूर्व लाइयै । श्रीरस्तु । शुभमस्तु ।

१७८७. जिनयज्ञविधान

Opening : णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाण णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूण ... ... ।

Closing : ॐ ह्रीं मुद्धदृष्ट्ये नमः । ॐ ह्रीं सुधावलोकिने नमः ।

Colophon अपूर्णम् ।

१७८८. जिनवर विनती

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतन दुखहरन तुमारा ... — ... ।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हितजन दीन अनाथ पुकारी है ।
उदयागत कर्म बिपाक हलाहल मोहि बिथा विस्तारी है ।।

Colophon : विनती सम्पूर्णम् ।

१७८९. जिनगुण-सम्पत्तिपूजा

Opening : वंदे श्रीवृषभ देव वृषाकं वृषदायकम् ।
षट्धर्मप्रणेतार कर्मभूभृतवज्रकम् ।।

Closing : ये हस्तिनागे पुरिकौरवशो यश्चक्रिणायस्य स्तुतिं चकार ।
दानेश्वरस्त्र जिनपुंगवाय पुन स्तुव श्रेयगणाजितानाम् ।।

Colophon : इति जिन गुण-सपति-पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० १३५।
रा० सू० III, पृ० २०५ ३०८।

१७६०. जिनवाणी-पूजा

Opening : प्रकटति परमार्थे सूत्रसिद्धान्तसारे,
जिनपतिसमयेऽस्मिन सारदासदधानम् ।
जगति समयसार: कीर्तितः श्रीमुनिंद्रैः,
स वसतु मम चित्ते सश्रुतज्ञानरूप: ।
जगति समयसार ते पर ज्योतिरूपं,
सुवृतमति विद्यते ज्ञानरूप स्वरूपम् । १।।

Closing : अग्यानतिमिरहर ज्ञानदिवाकर पढ़ै गुनै जो ग्यानधनी ।
ब्रह्म जिनदास भासै विवुध प्रकासै मनवांछित फल वुध धनी ।।

Clolophon : इति श्री शास्त्रजिनवाणी जी की पूजा जयमाल भाषा सस्कृत सम्पूर्णम् ।

१७६१. जंबूस्वामी-पूजा

Opening : चौबीसो जिनपाय पच परमगुरु वंदिके ।
पूज रचो सुखदाय विघ्न हरो मगल करो ।।

Closing : ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् श्रीमज्जबूस्वामिन् सकलगुण-विराजमान् जल चदन अक्षत पुष्प नैवेद्य दीप धूप फल अर्घ महार्घ निर्वपामिति स्वाहा ।

Colophon : इति श्री इति श्री जबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६२. जम्बूस्वामी-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७६१ ।

Closing : देखे, क्र० १७६१ ।

Colophon : इति श्री जंबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६३. जयमालिकापूजा

Opening : उच्चलिया सुरसल्लिया पुणभत्तिय कुसुमजलि
अमरिदह सुरिदह णिहय दुरिय ज्वाला
पढ़मविय सुरायण भुवणसामिणा भोमहि पत्ता,
— — — ॥

Closing : तिण्यरह सुहसुयरहं पय पंकयाणि खत्तिए ।
निरूमतिए विहिज्वातीए चउवीसह सुपविसिए ॥

Colophon : इति जयमालिका पूजा समाप्ता ।

१७६४. ज्ञानपूजा

Opening : प्रणम्य श्रीजिनाधीशमधीश सर्वसंपदाम् ।
सम्यग् ज्ञानमहारत्नपूजां वक्ष्ये विधानतः ॥१॥

Closing : दुरिततिमिरहंस मोक्षलक्ष्मीसरोजम्,
व्यसनघनसमीर विश्वतत्त्वप्रदीपम् ।
मदनभुजगमत्रं चित्तमात्तगसिंहम्,
विषयसफरजाल ज्ञानमाराधयत्वम् ॥

Colophon : इति श्री ज्ञानपूजा जी समाप्तम् ।

१७६५. ज्ञानपूजा

Opening : देखें, क्र० १७६४ ।

Closing : देखे, क्र० १७६४ ।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्रीनरेन्द्रसेन विरचिता सम्यग्ज्ञान पूजा समाप्ता ।

१७६६. ज्ञानपूजा

Opening : देखें, क्र० १७६४।
Closing : देखें, क्र० १७६४।
Colophon : इति ज्ञानपूजा ।

१७६७. ज्वालामालिनी-पूजा

Opennig : जय ! ज्वाला जगज्योति होति आनन्द विधाई ।
जय ! ज्वाला हर त्रिधा विघन मोद मगल दाई ॥
जय ज्वाला वर अमित शक्ति श्रुति सारद गावे ।
जय ज्वाला पद सुर मुनिन्द्र मति चिन्तित पावे ॥
Closing : पूजन मखया छन्द की ...... — ।
Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभु जिनदेव वा श्यामल यक्ष तथा ज्वालामालिनी
महादेवी जी की पूजन स्तुति समाप्तम् ।

१७६८. ज्वालामालिनीपूजा

Opening : श्रीमतो प्रभेशजिनपकजसेवकिन्या,
श्यामाख्या यक्षिसुवद्योपादपद्मयुग्मम् ।
चक्राधिपादिमनुजं खलबध्यमाना,
माह्या नानादिविधिनात्रसमर्थयेऽहम् ॥
Closing : वरमहिषवाहिनि ... शतचुडग ॥जय०।४५ ।
Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

१७६९. ज्वालामालिनी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७६८।

Closing : रार्केंदुबिम्बरूचिशोभितदीव्यगात्रे राजीवपत्रनिभपादसुरांग ·····॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८००. ज्येष्ठजिनवर-पूजा

Opening : नाभिरायकुलमंडन ··· ··· ·· क्षीर समुद्र भणी ॥१॥

Closing : यावति जिन चैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये,
तावति सतत भक्त्या त्रिपरीत्य नमाम्यहम् ॥३०॥

Colophon : इति ज्येष्ठ जिनवर पूजा ।

१८०१. कलशाभिषेक

Opening : सौगंध्यसगतमधुव्रतझकृतेन ········ जिनोत्तमानाम् ॥१॥

Closing : मुक्ति श्री वनिताकरोदकमिद पुन्यकरोत्पादकम् ।
जिन गधोदक वदे ह्यष्टकर्म निवारणम् ॥

Colophon : इति लघु जिन कलशाभिषेक संपूर्णम् ।

१८०२. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : चद्रावदातै सरलैसुगंधैरनिधपार्श्वैरसालिपुंजै ॥ दुष्टो० ॥

Closing : वरखगिन्दु ·· उवसग्गुतिह ।

Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा समाप्तम् ।

१८०३. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : ह्रूंकार ब्रह्मरुद्रं सुरपरिकलितं ··· ···· विनाशं प्रयुक्तम् ॥

Closing : देखें, क्र० १८०२ ।

Colophon : इति श्री कलिकुंड पूजा जी समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६१ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७५ ।

जि० र० को०, पृ० ७४ ।

१८०४. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८०३ ।

Closing : देखें, क्र० १८०२ ।

Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा ।

१८०५. कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८०३ ।

Closing : सर्पत्सर्पेशदर्पो - राजहसोवनाह ॥१३॥

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा जयमाल समाप्त ।

१८०६. कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : ह्रूं कारं ब्रह्मरुद्र ••• विघ्नविनाशनम् ।

Closing : नत्र विघ्नविनाशन भयहर सर्व भयाविनाशम् ।

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पूजा समाप्ता । श्री रस्तु ।

१८०७. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८०६ ।

Closing देखें, क्र० १८०६ ।

Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८०८. कंजिका-व्रतोद्यापन

Openign : चिद्रूपं चिदानन्द अपरं निर्जर परम् ।
शान्त कर्म्मातिग पूतं पुराणं पुरुषोत्तमम् ।।

Closing : अतुलगुणसमग्रं स्वर्गमोक्षापवर्गम्,
त्रिभुवनपरिरिद्धि: प्राप्तसर्वं प्रसिद्धि: ।
नमति सुजसकीर्ति कोमलाकीर्त्य-कीर्ति:,
रतनविबुधसांतं पातु व मुक्तिकांतं ।।७७।।

Colophon : इति कंजिकाव्रतोद्यापन समाप्ता श्रीरस्तु । शुभ अस्तु ।

विशेष— इसके आगे पूजा सामग्री विवरणिका भी है ।

१८०९. कर्मदहनपूजा

Opening : लोक सिखर तनछाडि अमूरत ह्वै रहे,
चेतन ग्यान सुभाव गेयते भिन महे ।
लोकालोक सो काल तीन सबविधिधारी ,
जानि सो सिद्ध देव जजो हुथुति वनी ।।

Closing : पुत्र प्राप्त करि [illegible]सुतरी रोगाग्निधाराधरी,
पापातापहरि प्र[illegible]ध सुचरी वश्रीन्द्रभूसोदनी ।
आनन्दाद्भुत धन्य धाम नगरी मायामय मा री,
चक्रर्मिमाभवतो शिवस्य भवतु श्रेयस्करी शंकरी ।।

Colophon : इति श्री कर्मदहनपूजा समाप्तम् ।

१८१०. क्षमावणी पूजा

Opening : देवश्रुतगुरुन्नत्वा स्नापयित्वा महोत्सवे ।
ततश्चाष्टविधापूजा कुर्याद्व्रतविधायकः ॥

Closign : यश्चैतन्यमचित्यमद्भुतगुणा श्रद्धानमंतः स्फुरन्,
ज्ञान पचसमस्ततत्वविषय स्वात्मावबोधद्युति ।
तच्चारित्रमनतरगत व्यापारपारगता,
वदे तन्नितयं त्रिधापतिणत यन्निश्चयान्निश्चितम् ॥१२॥

Colophon : इति क्षमावणी अर्घ सम्पूर्णम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०' पृ० १७७ ।

१८११. क्षेत्रपाल पूजा

Opening : युगादिदेव प्रयजे स्वहव्यैः इक्ष्वाकुवशोधरधर्मवेदी ।
चामीकराभाद्युतिकोटिभानु. प्रहाकृता घातकनुर्यभागम् ॥१॥

Closing : श्रीमच्छ्रीकाष्टासंघे यतिपति तिलके ··· ·· क्षेत्रपाना शिवाय
॥२७॥

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृता षणवति क्षेत्रपाल पूजा सपूर्णम् । कार्तिक-
मासे शुक्लपक्षे तिथौ पौर्णमास्या भृगुवासरे । श्रीसवत्-१६५३

१८१२. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्नत्रक्षेत्राधिरक्षणे ।
बलि ददामि दिश्यग्ने वेद्या विघ्नविनाशने ॥१॥

Closing : आठ्ठो छद गानुं मैं तो रज्यो क्षेत्र को ।
मुनिसुव्रतचद्र गावो छद भैरूलाल को ॥
जैन को उद्योत भैरू समकित धारी ॥१२॥

Colophon : अनुपलब्ध है।

१८१३. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८१२।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् ·· ···· सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ।।

Colophon : इति क्षेत्रपाल पूजनविधानम् ।

१८१४ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : वदेहं सन्मति देव सन्मति मतिदायकम् ।
क्षेत्रपाना विधि वक्ष्ये भव्यानां विघ्नहानये ।।१।।

Closing : सर्वविघ्नहरायक्षा दक्षालक्षगुणान्विता: ।
एते पिंडीकृता यक्षा: कारभ्रमिता मया ।।२६।।

Colophon : इति क्षेत्रपालानां नामांकित स्तोत्र सपूर्णम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० ६८।

१८१५. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें क्र० १८१४।

Closing : घातिधारात्रय ···· ··· · क्षेत्रपानां शिवाय ।।२७।।

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृता षणवति क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१६. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८१२।

Closing : अवसाने राखहु पाप नासहु पहिली पूजा तुम्हरी कही ।
करि पूजा जिनंद ही, कमलानद ही विजैपाल बहु सिरनवै ।।

Celophon : इति श्री क्षेत्रपाल पूजा संपूर्णम् ।

१८१७. क्षेत्रपाल पूजा

Opening : देखे, क्र० १८१२ ।

Closing : इति प्रवृद्धातत्वस्य स्वय • प्रादुरासनजितक्रमी ।

Colophon : इति श्री वृहत् सहस्रनाम समाप्तम् ।

विशेष — इसमे क्षेत्रपालपूजा और वृहत्सहस्रनाम दोनो है। बीच के बहुत से पत्र नही है।

१८१८ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : प्रणम्य श्री जिनेशानां वर्द्धमान जिनेश्वरम् ।
पूजा श्रीक्षेत्रपालाना वक्ष्ये विघ्नविहानये ।।१।।

Closing : लक्ष्मीप्राप्तकरी कलत्रसुखकरी चौरादि शत्रुहरि,
शाकिन्यादिहरी प्रशर्मसुचरी राज्यादिनिवर्द्धनी ।
विद्यानदघनौघनामनगरी विघ्नौघनिर्णाशनी,
पूजा श्री जिनक्षेत्रस्य भवतु सपत्करी चित्करी ।।

Colodhon : इति श्री क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१९. लब्धिविधान-पूजा

Opening : श्रीवर्द्धमानजिनचद्र ··· ·· सततं शुभक्त्या ।।१।।

Closing : जिणगुणरयणयरू हियै देवायरू केवलणाणलहैवि चिरू ।
हुय सिद्ध निरजणु भवभयभंजणु अगिणिय रिसिपुंगमुजिचिरू ।८।

Colophon : इति लब्धविधान पूजा ।

१८२०. लघुकर्मदहन-पूजा

Opening : तीर्थ कर जिनको नमत सुर नर संत ।
जे वदौ वरतौ सवा येसे सिद्ध महृत ।।

Closing : मै मत हीन विवेक नही अर प्रसाद में लीन ।
थिरता लघ जग जानककर लघु मत स्व नवीन ।।

Colophon ; इति लघु कर्मदहन विधान संपूर्णम् । मिति अघन सुदी २ सवद् उनैसै अठाईस दसकत परमानद के मुकाम जवलपुर। ठीकाना हनुमान तलाव श्री मंदर वडे दिवाले के पक्षवाडे मुनालाल ।

विशेष — इसके बाद कुछ भजन भी हैं ।

१८२१. लघुपचकल्याणक विधान

Opening : वदो श्री अरहत पद मन वच तन चितधार ।
मगलमय जग में प्रगट पार उतारनहार ।।

Closing : तुम दयाल जगतपति सिवदरमी भगवान ।
सिव सेवा फल दीजिये तारापति नित जान ।
सबत् येक पदार्थ समगत मिलाय कर ठीक ।
पूरन पाठ भयो सो तब भद्र कृष्न नवमीस ।।

Colophon : इति लघु पंचकल्याणक विधान सम्पूर्णम् ।

१८२२. महावीर अर्घ्य

Opening : विन विन गुनकर करी सदा बढ़त जान जिनचन्द ।
बर्द्धमान कही हुरी अर्घ्यो मैं पूजों सुखकंद ।।

Closing : ॐ ह्रीं अतिवीरनामेभ्यो अर्घम् ।

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१८२३. मंगल

Opening : पणविवि पच ·· ··· · जगत मगल गावई ॥१॥

Closing : वदन उदर अवगाह कलस गति जानिए ···· · जगत मगल गाईए ॥

Colophon : इति तृतीय मगल सम्पूर्ण ।

१८२४. मंत्रविधि

Opening : ते चतुर्दशी पुष्पार्कं होवै त्यारितादिनं उपवास कृत्वा जाप्य १२००० त्रिमध्य अर्द्धरात्रौ । वा ८८००० ।

Closing : अनेन मत्रेण होम कुर्यात् महस्र १२०००। शत्रुनाश भवति । अनेन मत्रेण गजेन्द्रनरेन्द्र सर्वशत्रुवशीकरण पूर्वम स्मरणीयम् ।

Colophon : इति विधि सम्पूर्णम् ।

१८२५. मोक्षपैडी

Opening : इक्क समैं रुचिवत नौ गुरुवरकं सुनु मल्ल ।
जों उफ अदर चेतना वहै उसाडी अल्ल ॥

Closing : भव थिति जिन्ह की छूटि गई तिन्ह कौ यह उपदेश ।
कहत बनारसीदास यौं मूढ़ न समुझें लेस ॥

Clolophon : इति मोक्षपैड़ी समाप्तम् ।

१८२६. नंदीश्वर-पूजा

Opening : नंदीश्वर पूरव दिसा तेरह श्री जिन गेह ।
आह्वानन तिनका करू मन वच तन धरि नेह ॥१॥

Closing : मध्यलोक जिन भवन अकित्तम ताके पाठपढे मनलाई ।
जाके पुण्य तनी अति महिमा वरनन को करि सकै बनाई ॥
ताके पुत्र पौत्र अरु सपति बाढ़ै अधिक सरस सुखदाई ।
इह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पदलहि शिवपुर जाई ॥

Colophon : इति नंदीश्वर पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ८७६ ।

१८२७. नंदीश्वर-पूजा

Opening : मध्येमडपमालिखेद्वनरे नदीश्वर मण्डलम् ।
वर्णे पञ्चभिरानत गुणगुरु शक्र मतां सम्मत ।
तन्मध्ये चतुराननं जिनवरं बिम्बस्य सातास्पद ।
दिव्यैऽष्टभिरिष्ट-सौख्य-जनकै कुर्यात्तदर्च्चा ततः ॥ १॥

Closing : आयु ... देवार्हतामर्हणा ॥११॥

Colophon : इति श्री नदीश्वरपूजा समाप्त ॥

१८२८. नंदीश्वरद्वीप-पूजा

Opening : कर्पूरपूरपरिपूरितभूरिनीरः धाराभिराभिराभितः शीतहारिणीभिः
नदीश्वरेष्टदिवमानि जिनाधिपानां आनदतः प्रतिकृतिः
परिपूजयामि ॥

Closing : इयथुणि वि जिणेसरु महिपरमेसरु .... सुक्ख सो पावई ।

Colophon : इति श्री नदीश्वर द्वीप पूजा जयमाल समाप्तः । लेखकपाठक-
वाचमश्रोतृणा समस्तु शुभं भवतु ।

१८२९. नवग्रहपूजा

Opening : अर्कश्चंद्रकुजसौम्यगुरुशुक्रशनिश्चरः ।
राहुकेतुग्रहारिष्टनासन जिनपूजनात् ॥१॥

Closing : कन वछित दाईक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरै ।
ग्रह दुख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौवीसी पूजन करै ॥

Colophon : इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८८१ ।

१८३०. नवग्रह-पूजा

Opening : देखे क्र० १८२९ ।

Closing : देखे, क्र० १८२९ ।

Colophon इति श्री केतुअरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मंगलमस्तु । श्री वीतराग जी सदा सहाय । इति नवग्रहारिष्टनिवारक चतुर्विशति जिनपूजा सम्पूर्णम् । नवग्रहशान्ति हेतु चर्तुविशति जिनेन्द्र पूजन मन शुद्ध सागर जी कृत श्री । शुभ सम्वत् १९१३ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे सोमवारे ।

१८३१. नवग्रह-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८२९ ।

Closing : देखें. क्र० १८२९ ।

Colophon : इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।

१८३२. नवग्रह-पूजा

Opening : श्रीनाभिसूनो पदपद्मयुग्म नरवासुखाणि ? प्रथमं तु तेव,
समग्रमग्राकिशिरः किरीट संघच्छविश्रस्तमनीयतं वै ।।१।।

Closing : आदित्यादिग्रहामर्वे नक्षत्रासुरासया ।
कुर्वन्तु मगल तस्य पूजा कर्तृणस्य वा ।।

Colophon : इति नवग्रहपूजा जिनसागरकृत सम्पूर्णम् ।

१८३३. नवग्रह-पूजा

Opening : प्रणम्याद्यं ततीर्थेश धर्म तीर्थप्रवर्त्तकम ।
भव्यविघ्नोपशास्यर्थं ग्रहार्चावर्ण्यते मया ।।१।।

Closing देखें, क्र० १८२६ ।

Colophon : इति श्री केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सपूर्णम् । इति नवग्रह पूजा जी सम्पूर्णम् । शुभं अस्तु मगलम् अस्तु ।

१८३४. नवग्रह-पूजा

Opening : ग्रहाम शध्वये युष्मानयातः सर्परिक्षदा ।
अत्रोपवसतां तावो जये प्रत्येकमादरात् ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं नवग्रहेभ्य दक्षिणा प्रदानम् ।

Colophon : इति नवग्रह पूजाविधानम् ।

१८३५. नवकार-पंच त्रिशत्पूजा

Opening : श्रीमज्जिनेद्रवरसाधनसारभूत पूज्म नरामरसुखेचरनायकैश्च ।
ध्येय मुनीद्रगणनायकवीतरागैं सस्थापयामि नवकारसुमंत्रराजम् ।

Closing : जय परमणि रजण दुरिय विहडण ··· वरदिंतु सुहा ।।

Colophon : इति श्री नवकार पैंतीसी पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८३६. नवपद-कलश-पूजा

Opening : — जोयन श्री जे अरे पहिलो तीरथराय ।
सोल जोजन ऊंचो सही ध्यानधरू चित लाय ।।

Closing : वाणी वाचक जस तणी कोई न थई अधूरी रे ।।२२।।

Colophon : इति इति नवपद कलश पूजा समाप्तम् ।

१८३७. नेमिनाथ जयमाला

Opening : नेमिजी तुम्हारी हठ मानी ।।

Closing : जो एतना करी ··· ··· पावै ।

Colophon : इति नेमिजयमाल समाप्तम् ।

१८३८. न्हवण-पूजा

Opening : सौगंधसंगतमधुव्रतझङ्कृतेन संवर्णमानमित्र गंधनिंद्यमाद्यौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृ दवद्य पादारविंदमभिवंद्य जिनोत-
मानाम् ।।१।।

Closing : ··· ··· जन्मजरामरण ··· ··· ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८३९. न्हवण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८३८ ।

Closing : अरहा सिद्धा आइरिया उवज्झाया साहु परमेट्ठी ।
एदे पंच णमोयारा भवे भवे मम सुह दितु ॥१॥

Colophon : इति न्हवणपूजा ।

१८४०. न्हवणकाव्य

Opening : दूरावनम्रसुरनाथकिरीट कोटि संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसराघ्रि ॥ ॥
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपिप्रकृष्टै भक्त्या जलै जिनपते बहुधाभिसिंचेत् ॥१॥

Closing : य पाडुक ··· ··· ···ल त्वदीय बिंबम् ।।

Colophon : इति बिंब स्थापण मंत्र ।

१८४१. निर्वाण-पूजा जयमाला

Opening : कमलणवेप्पिणु हियै धरेप्पिणु वाणसरेगुणगणहरहं ।
णिव्वाणई ठाणइ तित्थसमाणइ पयडमि भत्ति जिनेसरह ॥१॥

Closing इय तित्थकर तित्थइ पुण्णवित्तइ पठइ वियाणइ विमलयरे ।
तह पावपणासइ दुरिय विणासइ मंगल सयल पहु तिधरे ॥१७॥

Colophon : इति निर्व्वाण पूजा की प्राकृत आरती संपूर्णम् ।

१८४२. निर्वाण-पूजा

Opening : अपवित्रपवित्रो वा सर्व्वावस्थांगतोपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं सः बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥५॥

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति णिव्वाण पूजा समाप्तम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२ ।

१८४३. निर्वाण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय – — — ... सव्वसाहूण ॥१॥

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निव्वाण पूजा जी समाप्तम् ।

१८४४. निर्वाण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय । णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।

... ... णमो लोए सव्वसाहूण ॥१॥

Closing : कहे कहांली तुम सब जानो, द्यानत की अभिलाष प्रमानो ।

करो आरता वर्द्धमान की पावापुर निर्वाण थान की ॥७॥

Colophon : इति आरती सपूर्णम् ।

१८४५. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निव्वाण पूजा ।

१८४६. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : संवत् सत्रह सै इकताल, आसिन सुदि दसमी सुविशाल ।

भैया वदन करै त्रिकाल, जय निर्वान काण्ड गुनमाल ॥

Colophon : इति निर्वान काण्ड सम्पूर्णम् ।

१८४७. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाण पूजा समाप्ता ।

१८४८. निर्वाण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४४ ।

Colophon : इति निर्वाण पूजा सम्पूर्णम् ।

१८४९ निर्वाण-पूजा

Opening : वदौ श्री भगवान को भावभगत सिरनाय ।
पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।।१।।

Closing : श्री तीर्थङ्कर चतुर बीस भगवान है ।
गर्भ जन्म तपज्ञान भए निरवान है ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८५०. निर्वाण-क्षेत्र-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४६ ।

Closing : संवत् अष्टादस सही सत्तर एक महांन ।
भादौ कृष्ण जु सत्तमी पूरण भयौ सुजान ।।२४।।

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१८५१. निर्वाण क्षेत्र-पूजा

Opening : परम पूज चौवीस जहाँ जहाँ शिवथानक भयो ।
सिद्धभूम दशदीश मन वच तन पूजा करो ॥१॥

Closing : ए थल जावै पाप मिटावै गावै धावै भक्ति बढ़ावै ।
जो पुजे सो शिव लहै ॥

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्रकी पूजा सपूर्णम् ।

१८५२. निर्वाणकल्याणक-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४३ ।

Closing : देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकल्याणक जी की पूजा भाषा सस्कृत जयमाल सहित सम्पूर्णम् ।

१८५३. निर्वाण-कल्याणक

Opening : केवल दृष्टि चराचर देख्यौ जारिसो,
भविजन प्रति उपदेश्यो जिनवर तारिसो ।
भव भयभीत महाजन सरन जे आईया,
रतनय सुम लछन शिव पथ भाईया ॥१॥

Closing : रचि अगरचदन प्रमुख परिमल द्रव्य जिनजयकारियो ।
पद पतन अग्निकुमार मुकुटानल सुविधि संस्कारियो ।
निर्वानि कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पाईये ।
भणि रूपचद सुदेव जिनवर जगत मगल गाईये ॥६॥

Colophon : इति निर्वाण कल्याणक भाषा सम्पूर्णम् ।

१८५४. नित्यनियम-पूजा

Opening : सौगन्धसगतमधुव्रत ···· ···· ·· ।
पादारविंदमभिवंद्यजिनोत्तमानाम् ॥१॥

Closing : सुखदेवो दुखमेटिवो एहि तुमारीबानी,
मो अधीर की बीनती सुन लीजै भगवान ।
दरसन कीजं देव को आदि मध्य अवसान,
सुरगन के सुखभोयके पावै पदनिरवान ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८५५. पदलावनी

Opening : शिखर गिर के ऊपर तिर्थङ्कर विराजे ।
आध्रि रात में याने देव दुंदुभिबाजे ॥

Closing : समेद शिखर पर्वत केऊपर बीसतीर्थङ्कर मुक्ति गए ।
ककर ककर सिद्ध विराजे असंख्यात मुनि मुक्ति गए ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८५६. पद्मावती-पूजाविधान

Opening : देखें, क्र० १८५७ ।

Closing : पाथोभिर्दिव्यगंधैः ··· ·· पूजयामीष्टसिद्धैः ॥१३॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८५७. पद्मावती-पूजा

Opening : श्रीपार्श्वनाथ-जिननायकरत्नचूड़ा-,
पाशांकुशोरगफलांकितदो चतुष्का: ।
पद्मावती त्रिनयना त्रिफणावतंस-,
पद्मावती जयतु शासनपुण्यलक्ष्मी ॥

Closing : या देवी रिपुचोरवन्हिजमहा सकष्ट संहारिणी,
या रात्रिचरभूतखेचरमहाबेतालनिर्णाशिनी,
रकानां धनदायिनी सुखकरा इष्ठार्थ संपादिनी,
सा मां पातु जिनेश्वरी भगवती पद्मावती देवता ॥

Colophon : इति पद्मावीपूजा चारूकीर्तिकृत सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२ ।

१८५८. पद्मावती-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८५७ ।

Closing : श्रीमत्पद्मगराजाग्रे वाराधारां करोम्यहं,
सर्वशोकस्य शांत्यर्थं भृंगारनालनिर्गता ॥१०॥

Colophon नहीं है ।

विशेष— इसमे पार्श्वनाथपूजा तथा धरणेन्द्रपूजा भी संकलित है ।

१८५९. पद्मावती-पूजा

Opening : श्रीमच्चतुर्द्विदशशोभितदीर्घवाहिनी वज्रादिकायुधधरामहमा-
ह्वयामि ॥
संस्थापयामि सुजनैरभिपूज्यमानां पद्मावतीक्षितिहेतुतां फणिराज-
कांता ॥

Closing : नाहंकारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलम्,
नैरात्म्य प्रतिपद्य नश्यति जनाः कारुण्य बुद्ध्या मया।
राज्ञ श्री हिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदिग्धात्मना,
बौद्धोधान् सकलान् विजित्य सुगत पादेन विस्फालितः ।।१६।।

Colophon : इति अकलंकाष्टकम् ।

१८६०. पद्मावती-पूजा

Opening : नम. श्रीपार्श्वनाथाय ··· ··· चतुर्विंशति मंगलम् ।।
Closing : श्रीपार्श्वनाथपदपंकज-सेव्यमानं ˮ प्रभजामि नित्यम् ।।
Colophon . अनुपलब्ध ।

१८६१· पद्मावती-पूजा

Openi~g । जय कुसुमकुंकुमारूणशरीर ···· पद्मावती ।।
Closing : गम्भीर मधुर मनोहरतर सद्घोषरत्नाकरम्,
वक्र पूर्णकरं सुधाहितकर भक्तांबुज भास्करम् ।
नानावर्णसुरत्नभूषितकर संसारसौख्याकरम् ।
श्रीपद्मावती देविमूर्त्तिसुभदं कुर्वन्तु वो मंगलम् ।

Colophon : इति श्री पद्मावती देवी पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३२ ।

१८६२. पद्मावती-पूजा

Opening । देखें, १८६१ ।
Closing । देखें, क्र० १८६१ ।
Colodhon : इति श्री पद्मावती पूजा समाप्तम् ।

१८६३. पद्मावती-व्रतोद्यापन

Opening : नम श्री पार्श्वनाथाय मोक्षलक्ष्मी तिवासिने ।
वक्षे पद्मावती पूजा चतुर्विंशतिअंगया ।।१।।

Closing . ये पूजयती मनकायवाणा तेषां जनाना सुखदायकानि ।
पद्मावतीनामपर पवित्रं सद्य पवं दान ददाति पूजा ।।६।।

Colophon : इति प्रथमनिरूपम पुष्पाजलिम् ।

१८६४. पंचवालयती पूजा

Opening : श्री जिनपच अनगजित वासु-पूज्यमल्लनेम ।
पारसनाथ सुवीर अति पूजो चितधर प्रेम ।।१।।

Closing । ब्रह्मचर्य सो नेह धर रचियो पूजन पाठ ।
पाचौं वाल जतीनको कीजै नित प्रति पाठ ।।२७।।

Colophon : इति श्री पञ्चवालजती पूजा सम्पूर्णम् । शुभम्

१८६५ पंचकल्याणक-पूजापाठ

Opening : श्री चौवीस जिनेस पद बदो मन वच काय ।
जाके घ्यावत भव्य जन भववारिधि तरिजाय ।।१।।

Closing : सात जुगुल नव यक लिखि संवत् श्रावण मास ।
कृष्णपक्ष दसमी दिवस शुक्रवार परमास ।।१३।।

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति जिन पंचकल्यानक पूजापाठ समाप्तं

१८६६. पंचकल्याणकपाठ

Openign । पणविविपञ्चपरमगुरुजिनशासन --- — · पापप्रणा-
सनम् ।।१।।

Closing : पावए अष्टौ सिद्ध ... चउसंघहि गए ।।२५।।

Colophon : इति श्री पंच कल्याणक जी समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८८६ ।

१८६७. पंचकल्याणकपाठ

Opening : देखें, क्र० १८६६ ।

Closing : फुनि हरै पातक टरै विघन जे होय मंगल नित नए ।
भनि रूपचंद त्रिलोकपति जिनदेव चउ संघहिंगए ।।२६।।

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक संपूर्णम् ।

१८६८. पंचकल्याणकपूजा

Opening : सिद्ध कल्याणबीज कलिमलहरण पंचकल्याणयुक्तम्,
स्फूर्यद्देवेन्द्रवर्यै मुकुटमणिगणैर्दीप्तपादारविन्दम् ।
भक्त्या नत्वा जिनेन्द्रसकलसुखकर कर्मवल्लीकुठारम्,
कुर्वेऽह पूजनं वैः प्रबलभवभय शान्तये श्री जिनानाम् ।।१।।

Closing : इति शान्तिधारा श्रयं –
ये कल्याणकभूषिताः सुरनुता सत्यं च बोधान्विताः ।
भव्यै सद्विधिनाविधानसमये संपूजिताः संस्तुता ।।
त्रैलोक्येशमहोदरोष्येव सुख समारकं चाप्नुतम्,
मोक्षं चापि दिशतु वै जिनवराः सर्वात्मिना सर्वदा ।।६।।

Colophon : इति श्री पंचकल्याणकपूजा समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८४ ।
Cagt, of Skt. & Pkt. Ms. P. 662.

१८६९. पंचकल्याणक-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८६८।

Closing : अनेकतर्कमकर्षहर्षातितवृद्योत्तमा।
स्वर्द्धिनी च वयस्फूर्तिजीवात् श्री प्रतिवर्द्धनम् ॥

Colophon : इति श्री पचकल्याणक पूजा जी सम्पूर्णम्। लाला सकरलाल रतनचद के माथे को पुस्तक।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२।

१८७०. पंचकल्याणक-दोहा

Opening : कल्याणक नायकनमूं, कलपकुरूह कुलकंद।
कलमष दुर कल्याणकर, बुधकुलकमलदिनद ॥१॥

Closing : तीन तीन वसु चद ये सवत्सर के अक।
जेप्ट शुक्ल दशमी दिवस पूरन पढठो निमक।

Colophon ; इति पचकल्याणक के सागीत कवित सम्पूर्णम्।

१८७१ पंचकल्याणक-पूजा

Opening : परमब्रह्मेभ्यस्तेभ्यो नमो निर्वाणसिद्धये।
येषा नामान्यनतानि कातिभिरपि मस्तुवे ॥१॥

Closing : देह दीप्तप्रकारी सुनाग्नसुकरी चक्रेन्द्रसपत्करी जन्मादिसुतरी।
गुणाकरकरी स्वमोक्षधाम्नीकरी .... . . रोगाद्यनासकरी ॥

Colophon · इति श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पूजा पचकल्याणक समाप्तम्।

१८७२· पंचकल्याणक-पूजा

Opening : पंच परमगुरु वंदि करि पंचकुमार मनाय।
मदन व्याधि मेरी हरो जगत करो सुखदाय ॥

Closing : पूजन पंचकुमार ·· — मोक्ष सुरपायहो ॥१७॥

Colophon : इति श्री पंचकुमार जिनेन्द्रपूजा संपूर्णम् ।

१८७३. पंचकुमार-विधान

Opening : ॐ परम ब्रह्मणे नमो नमः । स्वस्ति स्वस्ति, जीव जीव, नद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व आनुसाधि आनुसाधि — ···· ।

Closing : ॐ ह्रीं क्रों षष्टिमहस्र संख्येभ्यो स्वाहा । नाग-सतर्पनार्थं ईशान्या दिसि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

Colophon : इति पचकुमार विधान सम्पुर्णम् ।

१८७४. पंच-मग लपाठ

Opening : शिलागतमादिदेवयघ्नस्नापयन् सुरवरा. सुरशैलमूर्ध्नि । कल्याणमी सुरदमक्षततोयपुंजै मभावयामि पुर एव तदीय बिंबम् ।।

Closing : मै मति हीन भगति वसभावन ··· ··· । — ·· — जिन देव वौ संघहि जयौ ॥१५॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक गीतम् ।

१८७५. पंच-मंगलपाठ

Opening : देखें, क्र० १८६६ ।

Closing : देखें, क्र० १८६७ ।

Colophon : इति श्री रूपचंद कृत पंच मंगल समाप्तम् ।

१८७६· पंचमंगलपाठ

Opening : देखे, क० १८६६ ।

Closing : देखे, क० १८६६ ।

Colophon : इति पचमगल सम्पूर्णम् ।

१८७७· पंचमेरु-पूजा

Opening : देखे, क० १८७८ ।

Closing : ॐ नंदीश्वरद्वीपवावनजिनालयस्थ जिनेभ्यो नम ।

Colophon : नही है ।

१८७८. पंचमेरु-पूजा

Opening : सवौषडाहूयनिवेश्य ताभ्या मानिध्यमानीयषडुपदन,
श्रीपचमेरुस्थ जिनालयाना यजाम्यशीति. प्रतिमासमस्ता ॥१॥

Closing : पचमेरु की आरती पढै सुनै जो कोय ।
द्यानत फल जानै प्रभु तुरत महा सुख होय ॥

Colophon : इति श्री पचमेरु जी की आरती भाषा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ८६१ ।

१८७९. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखे, क० १८७८ ।

Closing : देखे, क० १८७८ ।

Colophon : इति पंचमेरु की आरती समाप्तम् ।

१८८०. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८७८ ।

गन्धपुष्पअक्षतदीपधूपै. नैवेद्य दुर्वाफलवह्निरर्घै. ।

श्री पंचमेरोस्तु जिनालयानां यजाम्यशीति प्रतिमां समस्तम् ।

Colophon : इति श्री पंचमेरु पूजाष्टक समाप्त ।

१८८१. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखें, १८७८ ।

Closing : भूधर प्रति जेहा कर्म न एहा, भक्ति विषै दिठ भव्य जनौ ।

कर पूजा सारी अष्टप्रकारी, पंचमेरु जयमाल भणौ ॥१॥

Colophon ; इति पंचमेरु पूजा ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८५ ।

१८८२. पंचमेरु-पूजा

Opening : जिनान् संस्थापयाम्याह्वानादि विधानतः ।

सुदर्शनाख्यमेरुस्थान् पुष्पांजलि विशुद्धये ॥

Closign : सुदर्शनादिमेरूणां पूजाकारिसुभावहा ।

रत्न-रत्नाकरेणासौ पुष्पांजलि विशुद्धये ॥

Colophon : इति श्री पुष्पांजलि पूजा समाप्तम् ।

१८८३. पंचमेरु-पूजा

Opening : तीर्थंकर के न्हौन जलतें भए तीरथ सर्वदा,

तातैं प्रवच्छन देत सुरगन पंचमेरुन की सदा ।

दो जलधि ढाई दीप में सब गनत मूल विराजही
पूजो असी जिनधाम प्रतिमा होहिं सुख दुख भाजही ।।१।।

Closing : देख, क्र० १८७८ ।।

Colophon : इति पचमेरु पूजा

१८८४ पचपरमेष्ठी अर्घ्य

Opening श्रीमन्त्रिलोके तिलकायमान मानुष्ननोमध्यमरोजभानु ।
देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवद्यो वदे जिनेन्द्रोविश्रुत विधाता ।।

Closing ॐ ह्रीं समोशरणादिश्वराय अष्टाविंमतिगुण विराजमानाय
श्री मोक्षलक्ष्मीनिवासाय श्री सवसाधुपरमेष्टिणो मम सुप्रसन्नवर-
दा भवतु ।।

Colophon इति पचपरमेष्ठी अर्घ सम्पूर्णम् ।

१८८५ पच परमेष्ठी जयमाला

Opening : मणयण इद • अट्ठावर मगल ।

Closing अरहा सिद्धा आयरिया उवझाया स हुपचपमेट्ठी ।
एदे पच नमोयारो भवे भवे मम सुह दितु ।।७।।

Colophon इति श्री पचप मेष्ठी जयमाल सम्पूर्णम् ।

१८८६ पच परमेष्टी पाठ

Opening . प्रथम पचपद को नमो गुरुपद सीस नवाय ।
तुच्छ बुद्धि रचना रचौ सारद सरन मनाय ।।१।।

Closing : जै जै श्री आचार्य नमस्ते गुन छतीस वपुधार्य्य नमस्ते ।
तिन पदनमिचरि ध्यान नमस्ते, होतआतमाज्ञान नमस्ते ।।३।।

जै जै श्री उपझाय नमस्ते, गुन पचीस सुखदाय नमस्ते,
वदय जे धरि भक्ति नमस्ते, ... ॥४॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८८७. पंच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीमतं त्रिजगद्देवं त्रैलोक्यानंददायकम् ।
चन्द्राक चन्द्रभं वंदे स्वस्थप्रारब्धसिद्धये ॥

Closing : धर्माधर्मप्रकाशनैकनिपुणस्त्रैलोक्यविम्माधरो,
मोहे भेसमृगेश्वरे गतरिपुर्दे वाधिदेवो जिन ।
समारार्णवतारकोहतमन्नो धर्मादिभूषो मुनिः,
श्रीदेवेन्द्रसुकीर्त्तिपादनमितः कुर्यात्सदा वः सुखम् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री धर्म्मभूषण विरचितं परमेष्ठिपूजा समाप्ता । शुभमस्तु ।

१८८८. पंच-परमेष्ठी पूजा

Opening : श्रीधर श्रीकर श्रीपते भव्यन श्री दातार ।
श्री सरवज्ञ नमो सदा पार उतारन हार ॥

Closing : सवत एक सहस्र नव सतक सो सताईस ।
भादो कृस्न त्रयोदसी बुद्धवार सो गनीस ॥

Colophon : इति पंच परमेष्ठी विधान सम्पूर्णम् ।

१८८९. पंचपरमेष्ठी-पूजा

Opening : ॐ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय साधुभ्यो नम,
ॐ अथ अरहंतदेव के ४६ गुण ।

ॐ ह्रीं षट चत्वारिंशत गुण सहिताहत्परमेष्ठिभ्यो नम ।

Closing : ॐ ह्रीं वीर्य्यान्तराय कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नम ।

Colophon : नहीं है ।

१८६० पच परमेष्ठी पूजा

Opening कल्याणकीर्तिकमलाकर सच्चचित्उज्वलमह प्रकटीकृताथम् ।
उर्च्चैर्निधाय हृदिवीर जिन विशुद्ध शिष्टेष्टपच परमेष्ठीमह
प्रवक्ष्ये ॥

Closing स्फुरत प्रतापतपनप्रकटीकृताशा।
श्री धमभूषणपदांबुजचुम्नावनि ।
कत्तव्यमित्यदयत सुयसोभिनदिसूरे
सदतरूदपीकरणैकहेतु ॥८॥

Colophon : इति यशोनदिविरचिता पचपरमेष्ठी पूजा सम्पूर्णम् ।
देख दि० जि ग्र० र० पृ० १८७ ।

१८६१ पार्श्वनाथ कवित्त

Opening प्रभु पारसनाथ अनाथ के नाथ कि आप जपौ जगवन्दन की ।
तिहुँलोक के नायक लायक हौ सुखदायक आनि निकदन की ॥

Closing जग सौ भै भीत तरे पयसो परम प्रीति ।
तासो जाकी रात नाको वदना हमारी है ।

Colophon नहीं ।

१८६२ पार्श्वनाथ पूजा

Opening : न्मंडल चारुचतुर्विंशति कोष्टकम् ।
महारम्य पचवर्ण रत्नप्रकरसभृतम् ॥२॥

Closing : श्रीमज्जिनेन्द्रपादाग्रे समस्तलोकशांतये ।
भृंगारनालनिर्यांति शांतिधारा करोम्यहम् ।

Colophon : नहीं है ।

१८६३. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : प्रानत देवलोक ते आये वामादेवी उर जगदाधार ।
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि अंक हरित तन सुख दातार ।।
जरत नाग जुग बोधि दियो तिहि सुरपद परम उदार ।
ऐसे पारस को तजि आरस थापि सुधारस हेत विचार ।।

Closing : पारसनाथ अनाथन के हित दारिद गिरि को वज्र समान ।
सुखसागर वर धन को शमि सम सब कषाय को मेघ महान ।।
तिन को पूजैं जो भवि प्रानी पाठ पढ़ैं अति आनद आन ।
सो पावैं मन वंछित सुख सब और लहैं अनुक्रम निरवान ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ पूजा समाप्तम् ।

१८६४. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : ह्री देवं पार्श्वनाथ धरणिपतिनुत देवदेवेन्द्रवंद्यम्,
ह्रीकारं बीजमंत्र जगदकलिमंत्र सर्वोपद्रवहारी ।
ॐ ह्रा ह्रीं हूंकारनार अघहरनमहाभक्तिरूप जनानाम्,
व्यालीढ पादपीठ शठकमठमति माह्वय पार्श्वनाथम् ।

Closing : कल्याणोदयपुण्यवल्लभदय संसार संतापभृत्,
तुंगौतुंगभुजंगमंगलफणाः माणिक्यमालायते ।
पायात्स्यज्जनभृंगभृंगसहितो नागेन्द्र पद्मावती,
सेव्यसेवक वांछितार्थफलदं श्रीपार्श्वकल्पद्रुमः ।।

Colophon : इति पार्श्वनाथ पूजा ।

१८९५. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : सुद्ध तीर्थ पवित्र निर्मल पुण्य हिमकर शीतले ।
मिलि सुगध जगत पावन जन्म दाघ विनासने ।।
परम श्री जिनपाद पकज विगत कल्मषदूषणम् ।
श्री पार्श्वनाथमह यजेवर फणि लाक्षन भूषणम् ।

Closing : जलादिगधाक्षतचारुपुष्पैं, नैवेद्यसद्दीपकधूपफलार्घदानै ।
श्री लक्ष्मिसेनादिसुरासुरेश, श्री पार्श्वनाथं परिपूजयामि ।।

Colophon : इति पार्श्वनाथ पूजा सपूर्णम् ।

१८९६. प्रभाती मंगल

Opening : जै जै जिन देवन के देवा, सुरनर सकल करैं तुम सेवा ।
अद्भुत है प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलप मत मेरी ।।

Closing : निस्तार के तुम मूल स्वामी, बडे भागनि पाइयै ।
जन रूपचद चिता कहा जव सरण चरण न आइयै ।।

Colophon : इति श्री मगलजीत समाप्तम् ।

१८९७. प्रतिष्ठा-तिलक

Opening : अथ बिंबजिनेन्द्रस्य कर्त्तव्यं लक्षणान्वितम् ।
ऋज्वायत सुसंस्थान तरुणाग दिगम्बरम् ।।१।।

Closing : ये केचिज्जिन ········ नरेन्द्रार्च्चिताम् ।।१०।।

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचितं प्रतिष्ठातिलक समाप्तम् ।

१८९८. पूजामाहात्म्य

Opening : नीर के चढाये वीर भवदधि पारहूजे चदन चढ़ाये दाह दुरित मिटाईये ।
पुष्प के चढ़ाये पूजनीक हूजे जगत मे अक्षत चढाऐ ते अभय पद पाईये ।

Closing : पाप न कर पावै जाके जिय दया आवै धर्म को बढावे दया कही आचरन को ।
ताते भव्य दया कीजे सिद्धलोक सुख लीजै कहत विनोदीलाल जी तह्नु मरन को ।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८९९. पूजासंग्रह

यह पूरा ग्रथ अस्पष्ट है । इसे पढ़ा नही जा सकता ।

१९००. पूजासंग्रह

Opening : प्रणमि सकल सिद्धनिकू प्रणमि सकल जिनराय ।
प्रणमि सकल सिद्धान्त कूँ नमि गणधर के पाय ।।

Closing : मनवछित दायक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरे ।
ग्रह दुःख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौवीसी पूज करै ।

Colophon : इति केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् । इति श्री नवग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिनपूजा संपूर्णम् ।

१९०१ पूजा-विधान

Opening । चितवत वदन अमल चद्रोपम ताज चिंता चित होय अकामी ।
त्रिभुवन चद्र पाप तम चदन नमत चरन चद्रादिक नामी ॥
तिहु जग छाई चद्रिका कारत चिह्न चाद चितत शिवगामी ।
वदो चतुर चकोर चद्रमा चद्रवरन चद्रप्रभु स्वामी ॥

Closing राखो सभार उर काम मे नहि विसरो पल रकधन ।
परमाद चार टारन निमित करो पाम जिन गुण कथन ॥

Colophon नही है ।

विशेष मम नई पूजाएँ सकलित है ।

१९०२ पुण्याहवाचन

Opening श्री शांतिनाथममरासुरमतिनाथ
भास्वत्किरीटमणिदीधितिपादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशान्तिकरण प्रणव प्रणम्य
होमोत्सवाय कुसुमाजलिमुत्क्षिपामि ॥

Closing श्री शान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोऽस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव पुष्टि
समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु अभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्र
धन तथास्तु ।

Colophon । इति पुण्याहवाचन सपूर्णम् ।

देख जै० सि० भ० ग्र० I क्र० ९१९ ।

१९०३ पुण्याहवाचन

Opening श्रीनिर्जरेशाधिपचक्रिपूर्व श्रीपादपकेरुहयुग्ममीशम् ।
श्रीवर्द्धमान प्रणिपत्य भक्त्या सकल्यरीतिकथयामि सिद्ध ॥१॥

Closing , देखें, क्र० १६०२ ।

Colophon : इति पुण्याहवाचन सपूर्णम् ।

१६०४ पुण्याहवाचन

Opening देखे क्र० १६०२ ।

Closing देखें क्र० १६०२ ।

Clolophon इति श्री पुण्याह वाचन सपूर्णम् ।

१६०५ पुण्याहवाचन

Opening : देख क्र० १६०२ ।

Closing : चतुर्वर्णसघप्रसीदन्तु प्रीयन्ता शांतिभवन्तु कीर्तिर्भवतु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनधान्य तथास्तु ।

Colophon : इति पुण्याहवाचन लघु सम्पूर्णम् ।

१६०६ पुण्याहवाचन

Opening : देखे क्र० १६०२ ।

Closing : देखे, क्र० १६०२ ।

Colophon : इति पुण्याहवाचन सम्पूर्णम् । सवत १८६६ साके १७३२ प्रम इनाम मछरेतीथ श्राव (ण) मासे शुक्लपक्ष षष्टम्या तद्दिने लिखित कारजा नगर द० देवमनराय स्वकरेण स्व-पठनार्थ ज्ञानावर्णिकर्मक्षयार्थम् । श्री सरस्वत्यै नम ।

१६०७ पुण्याहवाचन

Opening ॐ पुण्याह ३ प्रीयता ३ भगवतोर्हता सर्वज्ञा। सर्वदर्शिन सकल-वीर्या. सुसकलसुखकरास्त्रिलोकेशास्त्रिलोकेश्वरपूजिना ... ।

Closing : स्वस्तिभद्र चास्तु ३ न स्वी क्ष्वी हुस स्वस्ति स्वस्ति
स्वस्ति भवतु मे स्वाहा।

Colophon : इति पुण्याहवाचन ।

१६०८. पुष्पाजलि पूजा

Opening . वीरदेव को प्रनमि करि अर्चा करौ त्रिकाल ।
पुष्पाजलिव्रत कथा को सुनौ भविक अघटाल । १।।

Closing : घाति कर्म निरमूलन करौ निर्वानपद तब अनुसरैं ।
जे विधि व्रत प्रभाव तित लहयौ ललितकीर्ति कवि इस विधि
कहै ।।

Colophon : पुष्पाजलिव्रत कथा समाप्तम् ।

१६०६ रत्नत्रयपूजा

Opening चिदगतिफणविष हरन मन दुख पावक जलधार ।
शिवसुख सुधा सरोवरी सम्यक त्रयी निहार ।

Closing : पर सरूप प्रकाश निज वचन कह्यो न जाय ।
तीन भेद व्योहार सब द्यानत को सुखदाय ।।

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा सम्पूर्णम् ।

१६१०. रत्नत्रयपूजा

Opening · पचभद जाके प्रगट ज्ञेय प्रकाशन भान ।
मोह तपन हर चद्रमा सोई सम्यक् ज्ञान ।।

Closing देखें, क्र० १६०६ ।

Colophon . इति रत्नत्रय पूजा ।

विशेष— इसी से ध्यानपूजा, समुच्चय आरती भी अन्तर्भूत है।

१६११. रत्नत्रयपूजा

Opening : देखें, क० १६१२ ।

Closing : मोहाद्रिमकटतटीविकटप्रवासं सपादिने सकलसत्वहितंकराय ।
रत्नत्रयाय शुभहेतिसमप्रभाय पुष्पाञ्जलि प्रविमलं हि अवतारयामि ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६१२. रत्नत्रय-पूजा

Opening : श्रीमतंसन्मत नत्वा श्रीमन् सुगुरुनपि ।
श्रीमदागमत श्रीमान् वक्ष्ये रत्नत्रयार्चनम् ।।१।।

Closing : देखें, क० १६०६ ।

Colophon : इति रत्नत्रय जी की भाषा आरता सम्पूर्णम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६२३ ।

१६१३. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखे, क० १६१२ ।

Closing : इति दर्शनस्तुति .. मुक्ति ।।६।।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा समाप्तम् ।

१६१४. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखें, क० १६१२ ।

Closing : सम्यक दरशन ज्ञाण व्रत शिवमग तीनों मई ।
पार उतारण जान द्यानत पूजो व्रत सहित ।।१०।।

Colophon : इति समुच्चय पूजा जी समाप्तम् ।

१६१५. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखे,, क्र० १६१२ ।

Closing : अतुलसुखनिधानं ··· ··· ··· दर्शनाख्य सुधांबु ।।३।।

Colophon : इति पण्डिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१६१६. रत्नत्रय-जयमाला

Opening : जय जय सद्दर्शन भवभय निरसन मोह महातरु वारण ।
उपसम कमल दिवाकर सकल गुणाकर परम मुक्ति सुखकारण ।।

Closing : मदरागकषायरज. समन भवदुर्मदनदानवदमनम् ।
परमं शिवसौख्यनिवासकर चरण प्रणमामि विशुद्धितरम् ।।

Colophon : नहीं है ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६३२ ।

१६१७. रविव्रत उद्यापन

Opening : पार्श्वनाथमहं वंदे सर्वविघ्ननिवारकम् ।
कमठोपसर्गहरन जागीकल्पतरु परम् ।।

Closing : रविव्रतमहापूजा श्लोकपिण्डीकृताधुना ।
पचात्माविने विप्र लेखक चित्ततत्पका. ।।

Colophon . इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते आदित्यवार व्रत उद्यापन विधि पूजा समाप्तम् ।

१६१८. रविव्रत-पूजा

Opening : इक्ष्वाकुवंशकुलमंडनअश्वसेनो तद्वल्लभः प्रतिवताजिनवामदेवि ।

तस्या जिन विमलमूर्त्तिसुरेंद्रवंद्यं त्रैलोक्यनाथजिनपार्श्वपरं नमामि ॥

Closing : इति रविव्रत पूजा सुरपति पद दूजा जे करंत नव व्रत सही । मन वचकाय ध्यावहो सो सुरपद पावही पार्श्वनाथ फल देत सही ॥१२॥

Colophon : इति रविव्रत पूजा सम्पूर्णम् ।

१६१६. रविव्रत-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६१८ ।

Closing : इक्ष्वाकीवरवंशभूषननृपो श्रीअश्वसेनोनुज,
वामानंदनदन्द्रचन्द्रधरनी ससेव्यमान सदा ।
प्रत्याहार्यं विभूषित वसुबुधि कल्याणकारी सदा,
ते तुभ्य त्रिदधातु वाछित फल श्री पार्श्वकल्पद्रुम ॥१२॥

Colophon : इति रविव्रत पूजा ।

१६२०. ऋषिमंडल-पूजा

Openign : प्रणम्य श्री जिनाधीशं — वक्षे पूजादिमल्पशः ॥

Closing : श्रीमच्चारुचरित्र ··· ···· नदीगुणादिमुनिः ॥

Colophon : इति ऋषिमंडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभिः श्लोकै ग्रंथाग्रंथ । ३८० । संवत् १८१८ कार्तिक शुक्ले १४ बुद्धे लि० पंडित श्री हेमराजेन हुकुमचंद गहोई श्रावकस्य पठनार्थम् ।

१६२१. ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६२० ।

Closing : देखे, क्र० १९२० ।

Colophon : इति ऋषिमंडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभिः श्लोक ग्रन्था-ग्र० । सवत् १९५६, वैशाख कृष्ण ८ मगलवारे लि० ।

१९२२ ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखे क्र० १९२० ।

Closing : देखे, क्र० १९२० ।

Colophon : इति ऋषिमंडलपूजा विधि समाप्तम् ।

१९२३. ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखे, क्र० १९२० ।

Closing : देखें, क्र० १९२० ।

Colophon : इति श्री ऋषिमंडलपूजा समाप्तम् ।

१९२४. सहस्रनाम-पूजा

Opening : परमगुरु कोनमो उर धरि परम सुप्रीति ।
तीर्थराज जिनन्द जी, चोबीसो धरि चीत ।।१।।

Closing : सम्वत् विक्रम भूप के जुग गतिग्रह ससि जान ।
यह रचना पूरी भई मगल मुद सुखथान ।।
सिखिरचद कृत पाठ यह वन्यौ अनुपम राम,
जो पढसी मन लाय के पासी पुण्य सुवास ।।

Colophon : इति श्री जिनसहस्रनाम पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मिति पौषशुद्ध ८ बार सुभ बुध समत् १९४२ । को पूर्ण हुई सो जयवंत प्रवर्तो । श्रीकल्याणमस्तु । सिखिरचंद अग्रवाल गोइल गोती कवि श्री वृंदावन के लघु सुअन कृत जयवतो ।

१६२५ सकलीकरण

Opening इन्द्रश्चैत्यालय गत्वा वीक्ष्य यज्ञागसज्जिनान ।
यागमगनपूजाय परिक मचिगेदिदम ।।१।।

Closing सिद्धाधान अभिमन्त्र्य परमत्रण सवविघ्नोघ समर्थान सवदिक्षु क्षिपेत् ।।

Colophon इति सकलीकरण मपूणम् ।

देख दि० जि० ग्र० र पृ० १६४ ।

१६२६ सकलीकरण विधि

Opening ध ता ावरधादहारपटकं ग्रवेयका नार
कयरागदर्मा वधुरकर्नी सूत्रा च मुद्राक्तिम् ।
चत्र कु डल ण ुग्ममल पाणिद्वय कक्णम
मजीर कटकपते जिनपत श्रीगधमुद्राक्ति ।।

Closing मवराजभय छि० सवचोरभय छि० मवदृष्टिभय छि० सव दृष्टिमृगभय छि० सवसपभय छि० मववृश्चिकभय छि० सव ग्रहभय चि० सवदोषभय छि० सवव्या — ।

Colophon अनुपलब्ध ।

१६२७ सकलीकरण विधि

Opening वासपूज्य जगत्पूज्य लाकालाकप्रकाशकम् ।
नत्वा वक्ष्येत्र पूजाना मत्रा पवपुराणत ।।

Closing : लोक्याचोक्त श्री सोमसेनमुनिभि शुभमत्रपूवम् ।

Colophon : इति श्री सकलीकरण विधि सम्पूणम् स० १६२१ ।

१६२८ सकलीकरण विधि

Opening : देखे, क्र० १६२५ ।

Closing : देखे, क्र० १६२५ ।

Colophon : इति सकलीकरण सम्पूर्णम् । ह० पंडित परमानंदेन बाबू धर्म-कुमारस्य पठनार्थं मिति आषाढ़ शुक्लपक्षे शनिवासरे संवत् १६५५ का । शुभ भूयात् ।

१६२६. समाधिमरण

Opening : गौतम स्वामी वंदु सिरनामी मरण समाधि भला है ।
मोक्ष पाऊ नीस दिन ध्याउ गाउ वचन कलायें ॥१॥

Closing : हास आवे शीत्र पद पावे बील सुख अनन्ता ।
द्यानत सोगत होय हमारी जैनधर्म जइवत ॥२०॥

Colophon : इति श्री समाधिमरण समाप्तः ॥

१६३०. सामायिकपाठ

Opening : आदि ऋषभ सनमति चरम तीर्थंकर चउबीस ।
सिद्ध सूरि उवझाय मुनि नमो धारि कर सीस ॥

Closing : ऐसे सामायिक पढौ सार जान मुनिवृंद ।
धर्मराग मति अल्प फुनि भाषामय जयचंद ॥

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्नम् ।

१६३१. सामायिक वचनिका

Opening : देखें, क्र० १६३० ।

Closing : देखे, क्र० १६३० ।

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्णम् ।

१६३२. समवशरण

Opening : आज गई थी समोसरण मैं कहाँ कहुँ हीत हेत री ।
बार बार दरवाजे चहुदिस परखा कोट समेत री ॥१॥

Closing : परम सरस्वती सिव -- - गहे निज ग्याने तीन जु वरी ।
कहे दीप याते तुम सेवा भजै भावकर उरसो री ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६३३. समवशरन

Opening : धूल साल देखे मूल साल नरहत,
डर मानथल देखें जो ईमान महामानी को ।
वेदी के विलोकै आप वेदी पर वेदी होत,
निरवेद पद पावै याते है कहानी को ।

Closing : घरि लई सुध अनुभूत की ज्ञानलोग भोगी लयो ।
अनुभाग बध स्थिति भागतें, भागगागदारिद गयला ॥

Colophon : इति श्री मोक्षमार्ग सम्पूर्णम् । सवत् १७७४ वर्षे पोसमासे शुक्लपक्षे सप्तमी शनिवासरे लिखितम् । शुभमस्तु ।

१६३४ सम्मेदाचल-पूजा

Opening : मुक्तिकान्ता प्रदातारं स्थानेषु स्थानमुत्तमम् ।
मुक्ति तीर्थंकर प्राप्य वदे शैलेन्द्रसिद्धिदम् ॥१॥

Closing : बत्रीचद्रप्रतेंद्रपेद्रतरणी ··· ·· प्राप्नुवन्ति शिवम् ॥१३॥

Colophon : इति सम्मेदाचल पूजनविधान समाप्तम् । सवत् १८२६ भाद्र बदि १२ भौम दिने लिखि ।

१९३५ सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : गिरसम्मेदतैं बीस जिनेश्वर शिव गए,
अवर असंखित मुनि तहां तैं सिद्ध भए।
वंदौ मन वच काय नमौ सिर नायकैं,
तिष्ठौ श्री महाराज सबै इति आयकैं ॥

Closing : ए बीस जिनेश्वर नमित सुरेश्वर नित मघवा पूजन आवैं।
नर नारी ध्यावैं सो सुख पावैं रामचन्द्र जिन सिर नावैं ॥११॥

Colophon इति सम्मेदशिखर पूजा सम्पूर्णम्।

१९३६. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : परमपूज्य जिन बीस जहां ते शिव लये,
और बहुत मुनीश शिवालै सुखमये।
ऐसे श्री सम्मेद शिखर नमिहू मुदा,
दरब साजि शुचि रुचि युत पूज रचा सदा ॥

Closing : जय एक बार बंदे जु कोय
तसु नर्क तिर्यंच कुगत न होय।
इत्यादि घनी महिमा अपार
प्रणमो मनवचकर सीसधार ॥

Colophon : 'इति'।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I क्र० ६४३।

१९३७ सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्टसुख थान।
शिखर समेद सदानमो होई पाप की हान ॥

Closing : नेमीनाथ श्री अरहनाथ श्री मल्लाना के पूजे पाये,
श्रीधमनाथ श्री सुविधपद्म श्री मुनिसुव्रत को निचै जाये ।
श्रीचन्द्रप्रभु कोस एक पर लौट फेर मुनसोव्रत आये ।
शीतल अनत सभव अभिनदन चित्त भाये वदो सुख पाये ।

Colophon : इति कवित्त सपूर्णम् ।
मती भादो, वदी ५, बारगुरु सम्वत् १६२६ ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४२ ।

१६३८. सम्मेदशिखरपूजा-विधान

Opennig : प्रणम्य सर्वज्ञमनतवोद्यामाप्तप्रद सद्गुणरत्नसिद्धम् ।
कुर्व्वेत्रिशुध्या सुभ्रतां हि तीर्थं सम्मेदशैलस्थजिनेन्द्रपूजाम् ।।

Closing : चतु: मुनीन्द्रिर्भि श्लोकैमानुछदोवचोमये ।
ज्ञातव्या ग्रथसख्या नृगणकै. लेखकोत्तमैं । ५।।

Colophon : इति भट्टारक श्री धर्म्मचद्र विनुत्त र पडित गगादास कृत सम्मेदा-
चलपूजा समाप्तम् ।

१६३६. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : पन परमगुरु ··· · सारदा मीस ।।१।।

Closing : सिखरसम्मेद ···· ···· ··· भानिये ।।

Colophon : इति सवैया सपूर्णम् ।

१६४०. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : देखे क्र० १६३७ ।

Closing : तुच्छ बुद्ध मोरी सही पढीन करो विचार ।
भूल चूक अब होई जहां लीजौ चतुर सुधार ।।६।।

Colophon । इति श्री सम्मेदसिखर जी सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम् ।

१९४१. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : अमल गग सुवारिणा भरि झारिणा सुखकारिणा.,
भवतापनिवारिणा. मलहारिणा. कर्मवारिणा; ।
सम्मेदाचलपर्वत अपवर्गत सुखअर्पितम्,
वीसतीर्थसुपूजित भववार्जित मुक्तिसर्जितम् ।।

Closing : य: यात्राकरि भावसुद्धमनसा ते स्वर्गमुक्तिप्रदा
ते नारकतिर्य चगतिविमुखा सद्भावनाभावत ।
तेषा पुत्रकलत्रमित्रभवता मल्लक्ष्मी लीलाकरा:
सत्समेदगिरिसु धर्ममतं कुर्वन्तु वो मगलम् ।।

Colophon : इति श्री सम्मेद जी की पूजा समाप्ता: ।

१९४२. समुच्चय चौवीसी पूजा

Opening । रिषभ अजित ... ... पूजत सुरराय ।।
Closing : मुक्ति मुक्ति दातार — ... सिव लहै ।।
Colophon इति श्री समुच्चय पूजा सपूर्णम् ।

१९४३. शातिनाथ-पूजा

Opening । शांति जिनेश्वर नमू तीर्थ वसु दुगुनही ।
पचमचक्री अनता दुविधि षटगुनीही ।।
तृणवत् रिधि सब छारि धरि तप सिववरी ।
आह्वानन विधि करू बार त्रय उच्चरी ।।

Closing : प्रभु कै चैय प्रमाण सुरतन धरि सेवा करत सोहयो ।
देवी वृंद जिनवर को जनम कल्याणक गायो ।।

Colophon : इति श्री सपूर्णम् ।

१६४४. शांतिनाथ-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६४३ ।

Closing : इति जिनमाला अमल रसाला ‥ — सुंदर ततखिन वरई ।।

Colophon : इति श्री शांतिनाथ जी की पूजा सपूर्णम् ।

१६४५. शांतिपाठ

Opening : शांतिजिनशशिनिर्मलवक्त्र सीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।
अष्टमहरसुलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममबुजनेत्रम् ।

Closing : क्षेम सर्वप्रजाना प्रभवतु बलवान् धार्मिका भूमिपाल:,
काले काले च सम्यक् वर्षतु मघवान व्याधयो यातु नाशम् ।
दुर्भिक्ष चौरमारिक्षणमपि जगत मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्र धर्मचक्र प्रभवतु सतत सर्व शौख्यप्रदायि ।।

Colophon : इति श्री शांतिजिनस्तोत्रम् ।

देखे, जै० मि० भ० ग्र० I, क्र० ६५६ ।

१६४६. शांतिपाठ

Opening : देखें, १६४५ ।

Closing : मंत्रहीनं क्रियाहीनं श्रद्धाहीनं तथैव च ।
स्तवनभक्तिः न जानामि क्षमस्व परमेश्वर; ।।

Colodhon : इति विसर्जन मत्र सम्पूर्णम् ।

१६४७ शांतिपाठ

Opening : देखे, क्र० १६४५ ।

Closing : आह्वानाय पुरादेव लब्धभागा यथाक्रमम् ।
मयाभ्यचिता भक्ता सर्वे यातु यथा स्थितिम् ।

Colophon : इति श्री शांति सम्पूर्णम् ।

१६४८ शांतिपाठ

Opening : देखे क्र० १६४५ ।

Closing : आह्वानन नैव जानामि नैव जानामि पूजनम ।
विसर्जन नैव जनामि क्षमस्व परमेश्वर ।
स्वस्व स्थान गच्छन्तु स्वाहा ।

Colophon : इति शांति पाठ ।

१६४९. शान्तिचक्र-पूजा

Opening : अर्हन्बीजमनाहत च हृदये ··· यद्वाछितम् ।।

Closing निःशषश्रुतबोधवृत्तमतिभि प्राज्ञैरुदारैरपि
स्तोत्रैय्यस्य गुणार्णवस्य हरिभि ·· ।
– ··· श्री शांतिनाथ सदा ।।

Colophon : इति श्री शांतिचक्र पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० ३७६ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १९६ ।

१९५०. शांतिधारा

Opening : श्री खण्डोद्रवकर्दमेसु रूचिरै. कर्पूरचूर्णै.मितै:
समिश्रैरूतिगधिलैं नदनदिकमारकूपादिभि: ।
... ... देवां जिनंस्थापये ॥१॥

Closing : सर्व्वदेशमारी छिद-२ भिद-२ सर्व्वविषमयं छिद-२ भिद-२
सर्व्वकूररोगवैतालशाकिनी डाकिनी भय छिद-२ भिद-२ सर्व-
वेदनी छिद२ भिद-२ सर्वमोहनी ... ... ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१९५१. शांतिधारा

Opening : सिद्धावल श्री ललनाललाम मही महीयो महिमाभिरामम् ।
आसार संसार यथोपपराम नमामिनाभेय जिनं निकामम् ॥१॥

Closing : नेत्रे दंद्वरूजाविनाशनकरं ... ... स्नानस्य गंधोदिकम् ॥

Colophon : इति शांतिधारा ।

१९५२ शांतिधारा

Opening : ॐ ह्री श्रीं क्ली रों हुं बं मं हं सं त पं बं व मं मं हं हं सं सं
तं तं पं पं ... ... ।

Closing : देखें, क्र० १९५१ ।

Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् । इति सिंहासन प्रतिष्ठा संपूर्ण ।
शुभमस्तु ।

१६५३. सप्तर्षि-पूजा

Opening : श्रीमद्गणीद्र-हिमवन्मुखकंदरायाः वाग्भीसप्तसुररितिचारू विनिर्गतायाम् ।
स्नातानतेकविधधर्मतरंगिकायां योगीश्वरानघरत्नधरान् समर्च्चे ।

Closing , असमसुखसार तीक्ष्णदंष्ट्राकरालं स्वकरकरजटिल दीर्घजिह्वा-करालम् ।
सुघटविकृतचक्रं शांतिदासप्रसस्य भजतु नमतु जैनं भैरवं क्षेत्रपालम् ।।१।।

Colophon . अनुपलब्ध है ।

१६५४. सप्तर्षि-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : ए रिसि व्रत .... वसुरिद्धिहं ।।

Colophon : इति सप्तऋषि पूजा समाप्तम् ।

१६५५. सप्तर्षि-पूजा

Opening : वंदेहं विश्वसेनेश .... ज्ञानरूपं निरंजनम् ।।१।।

Closing : मानव विकृति येषां .... तस्य तत्वार्थवेदिनः ।।१४।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६५६. सरस्वती-पूजा

Opening : ॐ नमः प्रगटित-परमार्थशुद्धसिद्धांतसारे,
जिनपतिसमयेऽस्मिन् सारतां संदधानः ।
जगति समयसारकीर्त्तंतः सन्मुनिन्द्रैः
स बसतु मम चित्ते सच्छ्रुतज्ञानरूपः ।

Closing : अज्ञान तिमिरहर ज्ञान दिवाकर, पढ़े सुणे जे भाव धनी ।
ब्रह्म जिनदास भासि विविध प्रकासि मनवंछित फल बुद्धिघणी ।।

Colophon : इति सरस्वति जयमाला संपूर्णम् ।

१६५७. शास्त्र-पूजा

Opening : पयः पयोधेस्त्रिदशापगायाः पयः पयः पेयतयोपयोग्यम् ।
समंतभद्रा श्रुतदेवतायैः भक्त्या परार्थैः परया ददामि ।।१।।

Closing : जिनवाणी के ज्ञान तैं सूझे लोक अलोक ।
द्यानत जग जैवत को सदा देत है धोक ।।११।।

Colophon : इति शास्त्र पूजा ।

१६५८. शास्त्र-पूजा

Opening : जननमृत्युजराक्षयकारण ··· ··· ··· अह परिपूजये ।।१।।

Closing : मलयकीर्ति कृतामपि सस्तुति पठति यः सतत मतिमान्नरः ।
विजयकीर्त्तिगुरुकृतमादरात् सुमतिकल्पलताफलमस्तुति ।।१०।।

Colophon : इति सरस्वति स्तुति विधानम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १९८ ।

१६५९. शास्त्र-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : दुरिततिमिरहंस मोक्षलक्ष्मी सरोजम्,
मदन भुजगमंत्र चित्तमातंगसिंहम् ।
विसनघनसमीरं विश्वतत्त्वैकदीपम्,
विषयरसकरीजाल ज्ञानमाराधीयत्वम् ।।

Colophon : इति शास्त्रपूजा समाप्तम् ।

१६६०. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क० १६५८ ।

Closing : देखें, क० १६५७ ।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा जी समाप्तम् ।

१६६१. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क० १६५८ ।

Closing : स्तुत्वेति ········ समुद्धरेत् ।।१।

Colophon : इति शास्त्रपूजा समाप्ता ।

१६६२. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क० १६५८ ।

Closing : देखें, क० १६५८ ।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा सम्पूर्णम् ।

१६६३. शास्त्र जयमाला

Opening : सपयसुहकारण ··· ···· संममकरणं ।।१।

Closing : इय जिनवरवाणी ··· ···· णवि उत्तरई ॥१३॥

Colophon : इति श्री शास्त्रजिनवाणी की जयमाल सम्पूर्णम् ।

१६६४. शत्रुञ्जयगिरिपूजा

Opening : सिद्धं सिद्धार्थदं सुद्धं सिद्धात्मानं स्ववर्गगम् ।
ध्रौव्योत्पादगुणे युक्त वदे त जगद्धेतवे ॥

Closing : विश्वभूषण तस्य पट्टे प्रसिद्धः कविनायकः ।
तेनेव रचितः पाठः शत्रुंजयाख्याभिधानकः ॥

Colophon : इति श्री विशालकीर्त्यात्मजो श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते शत्रुंजयगिरि पूजा समाप्तम् संवत् से १० ? वर्षे अश्विनी शुक्ल द्वितीयां पटनानामनगरे श्रीमूलसघे अबावती गच्छ भट्टारकाधिराज श्री सुरेंद्रकीर्तिजी तच्छिष्येण विनय तावद तेजपालेनेयं पूजा लिखिता । सत्रुंजय पूजाया: कमलानि प्रथम वलये ।१॥ द्वितीय वलये ॥८॥ तृतीये ॥१२॥ चतुर्थे ॥१३॥ पचमे ॥३२ एव ६६॥ कल्याणमस्तु । इति सपूणम् ।

१६६५. सिद्धपूजा

Opening : उर्ध्वाधोरयुतं सबिंदुसपर ब्रह्मासुरावेष्टितम्,
वर्गापूरितदिग्गतांबुजदल तत्संधितत्वान्वितम् ।
अतः पत्रतटेष्वनाहतयुत ह्रींकार सवेष्टितम् ,
देव ध्यायति सुमुक्ति सुभगो वैरीभकंठीरव ॥१॥

Closing : असमसमयसारं चारुचैतन्यचिन्हम्,
परपरणतिमुक्तं पद्मनंदीन्द्रवद्यम् ।
निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्र विशुद्धम्,
स्मरति नमति यो वा स्तोति सोभ्येति मुक्तिम् ।

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र० पृ० २००

जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६६० ।

१९६६. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : आवृष्ट सुरसपदं विदधति ' ..... मारायनादेवता ।।

Colophon ; इति सिद्धपूजा जयमाला समाप्ता ।

१९६७. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : देखें, क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा जयमाला समाप्तम् ।

१९६८. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : देखें, क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा समाप्ता ।

१९६९. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : देखें, क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा समाप्ता ।

१६७०. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १६६५ ।

Closing : जो पूजै गावै थुत चढावै मन लगावैं प्रीति सौं ।
घुस्याल चन्द कहैं कहां लौं जस जिनौ का रीतसौं ।
जे नाम अक्षर जपैं हरषैं धन्य ते नरनारि हैं ।
प्रभु पतित तारन दुःख निवारन भगत को निरतार हैं ।

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा जी समाप्तम् ।

१६७१. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १६६५ ।

Closing : देखें, क० १६६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजन प्रतिष्ठा सम्पूर्णम् ।

१६७२ सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १६७० ।

Closing : देखें, क० १६७० ।

Colophon इति श्री सिद्धमहाराज की पूजा सम्पूर्णम् ।

१६७३. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १६६५ ।

Closing : सिद्ध बरै ससार, सिद्धन की पूजा करो ।
आवागमन निवार, मन वच तन पूजा करो ।।

Colophon : इति सिद्धपूजा सपूर्णम् ।

१९७४. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु सुदृष्टिरस्तु धनधान्य समृद्धि-
रस्तु आरोग्यमस्तु विजयोरस्तु भयोरस्तु पुत्रपौत्रोद्भवोरस्तु तव
सिद्धप्रसादात् ॥१॥

Colophon : इति सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

१९७५. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : कृत्याकृत्तिमचार्वचैत्यनिलयान् ... दुष्कर्मणा शान्तये ॥

Colophon : नहीं है ।

१९७६ सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : देखें, क० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा ।

१९७७. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : देखें, क० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा माला सम्पूर्णम् ।

१९७८. सिद्धपूजा

Opening : परम ब्रह्म परमातमा परम जोत परमीस ।
परम निरंजन परम सिव नमो सिद्ध जगदीस ॥१॥

Closing : सुद्ध विसुद्ध सदा अविनासी ······ जाने सो दीवाना आतम को यह ॥

Colophon : संपूर्ण ।

१९७९. सिद्धपूजा

Opening : इत्थ चक्रमुपास्य दिव्य ध्यानं फल न्यस्तुते ॥

Closing : आकृष्टं सुरसपदा विदधति मुक्तिश्रियोवश्यताम् ········ पायात्पचनम. कृपाक्षरमयी साराघनादेवता ॥१॥

Colophon : नहीं है ।

१९८०. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : परम पूज्य चौबीस जिह जिह थानक सिव गये ।
सिद्ध भूमि निस दीस मन वच तन पूजा करो ॥१॥

Closing : जो तीरथ जावै पाप मिटावैं ध्यावै गावै भक्ति करै ।
ताके जस कहिए सपति लहिए गिर के गुन को बुद्ध उचरै ॥१०॥

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१९८१. सिद्धचक्र-पूजा

Opening : जिनाधीस सिवईस नमि सहस गुणित विस्तार ।
सिद्ध चक्र पूजा रचों शुद्ध त्रियोग संभार ॥

Closign । जिन गुण करण आरंभ हास्य कोधाम है।
वायस का नहि सिंधु तारण को काम है ।।

Colophon : इति श्री सिद्धचक्रपाठभाषा समाप्तम् ।
सवत् १९६४ फाल्गुन शुक्ल ६ लिखितम् ।।

१६८२. सिद्धचक्र-पूजा

Opening : अरिहंत पद ध्यातो थको दव्वह गुण परजाय रे।
भेद छेद करि आत्मा अरिहतरूपी थाय रे ।।

Closing : योग असख्य ते जिण कह्या नत्र पद मोक्ष ने जाणो रे।
एह तणे अविलवने आतम ध्यान प्रमाणो रे । २१ वी० ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६८३. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : वंदौ श्री भगवानकूं भावभगत सिरनाय ।
पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।।

Closing : सवत् अप्टादश सही सत्तर एक महान ।
भादौ कृष्ण जु सप्तमी पूरन भयौ सुजान ।।

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम् ।

१६८४. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : श्री आदीश्वर वदौ महान, कैलास सिखर तै मोक्ष जांन।
चपापुर तै श्री वासपूज, तिन मुकति लहीं अति हरषि हूज
।।१।।

Closing : देखें, क्र० १६८३ ।

Colophon : इति सिद्धक्षेत्र पूजा ।

१६८५. शिखर-विलास-पूजा

Opening : जेठ शुक्ल चतुर्थ दिवस ········करिकै बहुत उछाह ।।

Closing : ···· ···· ध्यावै सो सुख पावै रामचंद्र निति सिरनावै ।।

Colophon : इति श्री शिखर विलास जी की पूजा सम्पूर्णम् । लिखते सीकर-मध्ये — मिति फाल्गुन सुदि अठाई संवत् १६४२ । का लिखते बेठराज दिवाण जी सुखलाल जी का पोता भूल चूक सुद्ध करो।

विशेष—इसके Closing के पहले का बहुत से पत्र गायब हैं।

१६८६. सील-बत्तीसी

Opening : सीलवतीमीवर्णवउ ·· ···· ·· सदा सुमरो ग्सिहेश्वर ।१।।

Closing : हरिहर इंद नरिंद नरसुर जप हिए कान्ताजेन नारी।
सजम धरम सुगण अकू जंपहि जसु ते हरि ।।

Colophon : इति सीलवतीसी समाप्तम् ।

१६८७. सिंहासन-प्रतिष्ठा

Opening : श्रीमद्वीरजिनेशानां प्रणिपत्य महोदयम् ।
नव्याशनस्य सूत्रेण शुद्धि वक्ष्ये यथागम् ।।

Closing : नेत्रे द्व द्वरुजाविनाशनकरं गात्र पवित्रीकरम्
वात. पित्तकफादिदोषरहित सूत्र च सूत्र भवेत् ।
पाप कर्म कुरोगनाशनपरं राहुक्षय कुर्वते,
श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रपादयुगल स्नानस्य गधोदकम् ।

Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । पौषमासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ सवत् १६५५ । श्री इद पुस्तकं लिखावा भगवानदीन पंडित ।

देखें, जै. सि. भ. ग्र., क्र. ६६४ ।

१९८८. शीतलनाथ पूजा

Opening : सीतल जगपद नमूं धर्मदसधा इम भाष्यौ,
उत्तमषिमा सु आदि अंत ब्रह् मचर्य सन्ध्यायो ।
सुनि प्रतिबोध हुयो भवि मोक्ष मारग कौं लागै,
आह् वानन विधि करं चलण जुग करि अनुरागै ।।१।।

Closing : पूर्वाषाढ़ नक्षत्र माघ वदि द्वादशी,
जनमैं श्री जिननाथ नियोगे सब हुसी ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

विशेष— इसके बाद अनन्तनाथ, पार्श्वनाथपूजा, शान्तिनाथ पूजा तथा पद्मावती पूजा अधूरी-अधूरी लिखी गई है ।

१९८९. स्नानपूजा-विधि

Opening : प्रथम हुँ निस्सही पूर्वक देह रै जी आवी अंग,
सुद्ध करी नवा वस्त्र पहरी स्वभाल तिलक करिनै ।

Closing : देवचन्द्र जिन पूजतां करता भवपार ।
जिन प्रतिमा जिन सारखी कही सूत्र मझार ।।

Colophon : इति स्नानपूजा विधि संपूर्णम् ।

१९९०. सोलहकारण-पूजा

Opening : एन्द्रं पदं प्राप्य पर प्रमोदं धन्यात्मनामात्मनिमन्यमान ।
दृक्-शुद्धिमुख्यादि जिनेन्द्रलक्ष्मी महामोह षोडशकारणानि ।।

Closing : भक्ति प्रदा सुरेन्द्रसंस्तुतमिद तीर्थंकराणां पदम्,
लब्धुं वांछति योनि (पि) वा चतुरं संसारभीताशयैः ।।
श्रीमद्दर्शनशुद्धिमूरिविनयं ज्ञानं तथा तत्फलम् ।
भवत्या षोडशकारणानि सततं संपूज्य वाराधयेत् ।।

Colophon : नहीं है ।

१६६१. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क० १६६० ।

Closing : इय सोलाकारण — ···· – सिद्धवर गणहियइ हरा ।

Colophon : इति सोलाकारण पूजा जयमाल संपूर्णम् ।

१६६२. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क० १६६० ।

Closing : इण बहु भविय – — ··· संकम्पवि — ··· ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६६३. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क० १६६० ।

Closing : देखें, क० १६६१

Colophon : इति श्री सोलहकारण पूजा सम्पूर्णम् ।

१६६४. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखे, क० १६६० ।

Closing : देखें, क० १६६१ ।

Colophon : इति षोडसकारण अंग पूजा समाप्ता। ।

१६६५. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क० १६६० ।

Closing : एई सोले भावना सहित धरै व्रत जोइ ।
देव इन्द्र नरविंद पद द्यानत शिव पद होइ ॥

Colophon : इति श्री सोलै कारण पूजा जी समाप्तम् ।

१९९६. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १९९० ॥

Closing : एते षोडशभावना - ... मोक्ष च सौख्यास्पदम् ॥

Colophon : इति श्री षोडशकारण जयमाला भाषा सस्कृत पूजा समाप्तम् ।

१९९७. सोलहकारणपूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।

Closing : देखे, क्र० १९९१ ।

Colophon : इति षोडशकारण पूजा ।

१९९८. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।

Closing : भविभवियणिवारण सोलहकारण पयडमिगुण-गण-सायर ।
पणविवि तित्थंकर — ... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१९९९. सोलहकारण-पूजा

Openign : सरव परव मैं बडा अठाई परव है,
नदीश्वर स्वर जांहि लिए बहु दरव है ।
हमे सकति सो नाहि इहां करि थापना,
पूजे जिनग्रह प्रतिमा है हित आपना ॥

Closing : देखें, क्र० १९९५ ।

Colophon : इति सोलैकारण पूजा ।

२०००. सोलहकारण-पूजा

Opening : मैया मेरी कूरिया हसुन ?
आवे मेरी कूरिया हसुन ।
लै खोज मेरी हम वहहमको न विसरो ये कहमा ।
कर हे सीता वीसेर हम ॥१॥

Closing : सांझ सुबेरा वेर न जाने न जाने धूप अब बरखा जी ॥

Colophon : नहीं है ।

२००१. सोलहकारण-पूजा

Opening : सोलैकारन भाय तीर्थंकर जे भये,
हर्षे इन्द्र अपार मेरु पै ले गए ।
पूजा करि निज धन्य लख्यौ बहु चावसौं,
हमहूँ षोडस भावन भावें भाव सौं ॥

Closing : देखें, क्र० १९९५ ।

Colophon : इति सोलह कारन पूजा सपूर्णम् । भाद्र शुक्ल १० गुरु सं० १९९५ आरा मे बाबू हरिदास ने लिखा बाबू अनतकुमार के पढ़ने हेतु । शुभम् ।

२००२. सोनागिरि-पूजा

Opening : जंबूद्वीप मंझार भरत क्षेत्तर कह्यौ,
आरज षंड सुजान बद्र देसै लह्यौ ॥

सोनागिर अभिराम सुपर्वत है तहाँ।
पंच कोडि अर अरध मुक्ति पहुचे तहाँ ॥

Closing : सोनागिर जैमाल का लघुमति कहि बनाय।
पढ़ै गुनै जो प्रेम सो तिनको पातक जाय ॥१७॥

Colophon : इति सोनागिरि पूजा संपूर्णम्।

२००३. स्तवन जयमाल

Opening : श्रीमत् श्रीजिनराजजन्मसमये इंद्रादिहर्षायमान्।
हस्तारूढविराजमानत्रिपुरीपुष्पांजलि दापयन्।
इन्द्राणीपरिवारभृत्यसहिताः देवांगनानृत्यवान,
नानागीतविनोदमगलविधौ पूजार्थमादसौ ॥१॥

Closing : जिनवर वरमातामाननीय समर्थो स जयति जिनराज लालचन्द्र विनोदी।
जिनवरपदपूज्यं भावनेंद्रसुपूज्य सकलमलविमुक्त ते लभते विमुक्तिम्।

Colophon : इति श्री स्तवन जयमाल सम्पूर्णम्।

२००४. स्वाध्याय पाठ

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभानवे।
नमः श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमान-जिनेशिने ॥१॥

Closing : उज्जोवण मुज्जोवण णिव्वाहण ··· — ···· भणिया ॥३॥

Colophon : इति स्वाध्याय पाठः।

२००५. श्यामलयक्ष पूजा

Opening : महिषासीनकराष्ठासित नख-शिखसुन्दररूप।
स्थापित यक्ष अष्टमजिना श्यामलरूप अनूप ॥

Closing : श्यामल यक्ष समर्थ अर्घ पूजे जो प्राणी ।
तनमन कर आह् लाद प्रगति रुचि हृदि हरषानि ।।
तेइ अन्न धन सौभाग्य अष्टगत पद मिलि जावैं ।
अजितदास मन आस पूज ए हि गहि सुख पावैं ।।

Colophon : इति श्री श्यामल-यक्ष पूजा सम्पूर्णम् ।

२००६. तत्वार्थसूत्राष्टक-जयमाला

Opening : उदधिक्षीरसुनीरसुनिर्म्मलैः कलशकांचनपूरितशीतलैः ।
पवनपावनश्रीश्रुतपूजनैः जिनजुहे जिनसूत्रमहं भजे ।।१।।

Closing : इति जिनमतसूत्रे ··· — ··· मोक्षमार्गस्य भानुः ।।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्राष्टक जयमालसहित समाप्ता ।

२००७. तेरहद्वीप-पूजा

Opening : श्री अरिहंत प्रमाण करि पंच परमगुरु ध्याइ ।
तिनके गुन बरनंन करौं, मन वच सीस नवाइ ।।

Closing : अचल मेरु पश्चिम सुखकार कुमुद देश वसै निरधार ।
जिन मंदिर तहाँ पूजौ जाइ. रूपाचल पर अरघ चढ़ाइ ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

२००८. तीनलोक-संबंधी-पूजा

Opening : यह विधि ठाड़ौ होय कैं प्रथम पढ़ै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नासै कर्म जु आठ ।।

Closing : तिहु जग भीतर श्री जिन मंदिर बने अकिर्त्तम महासुखदाय ।

नर सुर खग कर वंदनीक जे तिनको भविजन पाठ कराय ।।
धन धान्यादिक संपति तिनकैं पुत्र पौत्र सुख होउ भलाय ।
चक्रिपद सुरपद खग इंद्र होय कै करम नास शिवपुर सुखपाय ।।

Colophon : इति श्री तीनलोक-संबंधी पूजा संपूर्णम् ।

२००९. तीसचौवीसी-पूजा

२००९

Opening : संवौषडाह्वानम् मंयुक्तान् ठः ठ. स्थापन-निष्टितार्थान् .... ।।

Closing : सकलसुखधामात्रिकालस्य ...... शिवकान्ति ।।

Colophon : इति चौवीसी पूजा समाप्तम् ।

२०१०. तीसचौबीसी-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय णमोऽस्तु णमोऽस्तु णमोऽस्तु ... सव्वसाहूण ।।

Closing : जम्बूघातकपुष्करेषु .... - नित्यमाप्नुते ।।

Colophon : इति मधुकरविनियोगात् स्रवणविभावशर्म्मणाविहिता सुहितकरो-भव्यानां नंद्यादचन्द्र ताराकनि इति पंडित श्री भावशर्मकृत मधु-करकारितं त्रिशतचतुर्विंशतिकार्चन समाप्तम् ।

२०११. उद्यापन

Opening : भवांभोधिनिमग्नानां जन्तुनां तारणे क्षम ।
संस्थापयामि दशधा धर्म्मशर्म्मैककारणम् ।।

Closing : श्रीनाभीजिनींदो परमानंदो परमसुखकरकारम् ।
भवसागरपारं दुरघनिवारं परम ... . सुखकारम् ।।

Colophon : इति ।

२०१२. वर्द्धमान-पूजा

Opening : श्रीमतवीर हरै भवपीर भरै सुख सीर अनाकुल ताई ।
केहरि अंक अरी करि दंक नये सिव पंकज मोलि सुआई ।।
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु भक्त समेत हिये हरिषाई ।
हे करुना धन धारक देव इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ।

Closing : श्री सनमति के जुगल पद जो पूजै धरि प्रीत ।
वृंदावन सो चतुर नर लहै मुक्त नवनीत ।।

Colophon : इति श्री वीर वर्द्धमान पूजा समाप्तम् ।

२०१३. वर्तमानचौबीसी-पाठ

Opening : वंदो पाँचो परमगुरु सुरगुरवंदत जास ।
विघन हरन मंगल करन पूजत परम प्रकाश ।।

Closing : रिषभ देव को आदि अंत श्री वर्द्धमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरन कमल को पूजै जो प्रानी गुनमाल उचार ।।
ताके पुत्र मित्र धन जोवन सुख समाज गुन मिले अपार ।
सुरपद भोग भोगि चक्री ह्वै अनुक्रम लहै मोक्ष पदसार ।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौबीस तीर्थंकर जिन पूजापाठ वृंदावन कृत सम्पूर्णम् । ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे तिथौ १५, भृगुवासरे सवत् १९५२ ।

विशेष—इसके नीचे कवि नाम वर्णन भी दिया गया है ।

२०१४. वर्तमानचौवीसी-पूजा

Opening : श्री आदीश्वर आदि जिन अंतनाम महावीर ।
बन्दौ मन वच काय सौ मेटौ भव भय भीर ।।१।।

Closing : चौबीसों जिनराज की महिमा कही बताई ।
पढ़ें सुनें नरनारी सब सुर शिव पहुँचे जाई ।।४३।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौबीसी बास ठिठाने ? की पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु सिद्धिरस्तु । कल्यानमस्तु शुभ सम्वत् १८६० । मासोत्तमे मास अग्रहने मास शुक्लपक्षे द्वादश्यां चन्द्रवासरे पुस्तकमिद रघुनाथ सर्मने लेखि पट्टनपुरमध्ये आलमगज निवसतु । लेखक पाठकयो मगलमस्तु ।। शुभ भूयात् ।

२०१५. वर्तमानजिननाम

Opening : नत्वा सिद्धसमूह च ज्ञानमूर्तिजिनप्रभम् ।
भरतैरावतास्थाना निर्नः साक विदेहजै ।।

Closing : भूतानागतवर्तमानिजिन ... सद्भव्यसप्रार्थनात् ।।३०।।

Clolophon : इति श्री अतीतवर्तमानागतपचभरतैरावतत्रिशच्चतुर्विंशतिका लौकिकाव्यवस्थया वीक्ष्य कृता शुभचन्द्रेण जिनभक्तिरागाश्चिर नन्दतु । इति त्रिंशत्चतुर्विंशतिका पूजा समाप्ता ।

२०१६. विद्यमान-बीरातीर्थ कर-पूजा

Opening : पूर्वापरविदेहेषु विद्यमान-जिनेश्वर· ।
स्थापयामि अहम् अत्र शुद्धसम्यक्तहेतवे ।।१।।

Closing : श्री मदिरादियुग देवमजित वीर्यमुनमम् ।
भूयात् भव्य सता सौख्य स्वर्ग-मुक्ति-सुखप्रदः ।।

Colophon : इति श्री बीस विद्यमान पूजा संपूर्णम् ।

२०१७. विद्यमान बीस पूजा

Opening देखे, क्र० २०१६ ।

Closing : ए बीस जिणेसर णमिय सुरासुर,
बिहरमाण मय संथुणिमा ।
जे भणई भणावइ अरु मणभ बइ,
ते पावइ सिव परमपय ।।

Colophon : इति बीस बहुरमाण की पूजा जयमाल समाप्तम् ।

२०१८. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा विधान

Opening : वंदो श्री जिनबीसको वि हमान सुखखान ।
दीप अढाई क्षेत्र मे श्री विदेह शुभ थान ।।१।।

Closing : सम्वत्सर विक्रम विगत वसु जुगग्रहगसि कद ।
ज्येष्ट शुद्ध प्रतिपद सुरि पूरन भयो सुछन्द ।।

Colophon : इति श्री सीमन्धरादि बीस तीर्थंकर पूजा समाप्तम् । शुभमस्तु ।
लिखा शिखिरचन्द भाद्रपद कृष्ण ग्यारह (एकादशी) वार
शुक्रको शुभ बेला पूर्ण करी । सो जयवन्त प्रवर्त्तो ।

२०१९. विद्यमान बीस तीर्थंकर-पूजा

Opening : श्रीमज्जबूधातुकीपूष्कराद्व द्वीपेषु पंचविदेहा. शर स्यु ।
वेदा वेदा विद्यमानाजिनेद्रा प्रत्येक तास्तेषु नित्य यजामि ।।१।।

Closing : एते विंशति तीर्थंरा अघहरा: कर्म्मारिविध्वंसका,
ससारार्णव तारणैकचतुरा इंद्रादिदेवीर्चिता ।
अतातितगुणाकरा सुखकरा मोहांधकाराषहा,
मुक्ति श्रीललनाविलास ललिता रक्षतु वो भाक्तिकान् ।।१२।।

Colophon : इति विंशतिविद्यमान तीर्थंकर पूजा समाप्ता ।

२०२०. व्रत-विधान

Opening : चौदाशि ग्यारस ११ आठं ८ तीज ३ चौथ ४ एवं उपवास ४५
भावनांपचीसी व्रत दसें १० पून्यो १५ एवं उपवास २५ भावना
वत्तीसी व्रत ।

Closing : आश्विनन्या पूर्वमुपवास एक पूर्ण सप्तविंशति,
नक्षत्रव्रते द्वितीयमुपवासन्या क्रियते ।।

Colophon इति व्रत विधानम् ।